मुहूर्त चिन्तामणि

|| श्रीः ||

221

दैवज्ञानन्तसुतरामाचार्यप्रणीतः

मुहूर्तचिन्तामणिः

सपरिहार-वरवध्वोर्मङ्गलीकादि-क्रूरग्रहविचार-सहितः

स्मार्तकर्मानुष्ठाननिष्ठस्वधर्मधुरन्धर-श्रीजयकृष्णशर्म्मतनुजनि-

दैवज्ञवाचस्पति-

पण्डितप्रवर-श्रीयोगेश्वरपाठककृत-

सान्वय-सुबोध-भाषाटीका-समलङ्कृतः

ज्योतिषाचार्य पं० उमाशङ्करशुक्ल एम. ए. (गणित)

इत्यनेन सम्पादितः

प्रकाशकः

श्री ठाकुर प्रसाद पुस्तक भण्डार

कचौड़ीगली, वाराणसी-२२१००१

फोन : ०५४२-२३९२५४३, २३९२४७१

सन् २०१२ ई०] पुनर्मुद्रणाधिकार

डीलक्स मल्यम 100/-

भूमिका

सिद्धान्त-संहिता-होरारूप-स्कन्धत्रयात्मकम् ।
वेदस्य निर्मलं चक्षुर्ज्योतिःशास्त्रमकल्मषम् ।।

सिद्धान्त, संहिता और होरास्वरूप स्कन्धत्रयात्मक ज्योतिष शास्त्र को वेद का नेत्र कहा गया है। इसके बिना श्रुति-स्मृति-पुराणोपपादित कोई भी क्रिया सम्पन्न नहीं होती है। इन्हीं बातों को ध्यान में रखकर दैवज्ञ अनन्तसुत रामाचार्य ने लोकोपकार की भावना से प्रेरित होकर इस मुहूर्तचिन्तामणि नामक ग्रन्थ का निर्माण किया और विभिन्न देशसम्मत अविगीत शिष्टाचार-प्रणाली को भी यथासम्भव इस ग्रन्थ में स्थान दिया। यही कारण है कि, मुहूर्त के समस्त ग्रन्थों में इस ग्रन्थ का अद्वितीय स्थान है और ज्योतिषशास्त्र के विद्यानुरागी इस ग्रन्थ की मुक्तकण्ठ से प्रशंसा करते हुए इसी को अध्ययन-अध्यापन के लिये अपनाते हैं।

यद्यपि इस ग्रन्थ के अनेक संस्करण निकल चुके हैं, तथापि उनमें इस संस्करण का अपना अनूठा स्थान है। इस संस्करण में 'परिशिष्ट' एवं वर-वधू मेलापक, बालवैधव्य, विषकन्या योग आदि के विवेचन के साथ ही मूलविषय को स्पष्ट करने के लिए चक्र तथा टिप्पणी को भी दिया गया है। टिप्पणी के द्वारा "संक्षिप्त-सारार्थ" स्थलों को पूर्णरूप से स्पष्ट किया गया है। अतः मुहूर्तचिन्तामणि का यह संस्करण ज्योतिष-विद्यानुरागियों के लिए विशेष महत्त्व का है।

गच्छतः स्खलनं क्वापि भवत्येव प्रमादतः ।
हसन्ति दुर्जनास्तत्र समादधति सज्जनाः ।।

संस्कर्त्ता-
उमाशङ्कर शुक्ल

विषयानुक्रमणिका

इति विषयानुक्रमणिका । ❑

मुहूर्तचिन्तामणिः

सान्वय-सुबोधभाषाटीका-सहितः

तत्रादौ प्रथमं शुभाऽशुभप्रकरणमारभ्यते

मङ्गलाचरणार्या

गाणपतपादयुगलममरगिरा देवीं प्रणम्य चादौ
ज्योतिर्वित्परितुष्ट्यै मौहूर्तिकाम्भोधिमामथ्य ।।
दैवज्ञवाचस्पति-श्रीमद्विनायकशास्त्रिवेताल-
श्रीचन्द्रदेवदीक्षित-''घाटे'' श्रीमहादेचशास्त्रि -
प्रभृतिसद्गुरुत्रितयीं ध्यायं ध्यायंसनतिनमोवाकम्।
यागेश्वरो वितनुते मुहूर्तचिन्तामणिव्याख्याम् ।।

ग्रन्थकारकृतं मङ्गलाचरणम्

गौरीश्रवः केतकपत्रभङ्गमाकृष्य हस्तेन ददन्मुखाग्रे ।
विघ्नं मुहूर्ताकलितद्वितीय-दन्तप्ररोहो हरतु द्विपास्यः ।।१।।

अन्वयः-मुहूर्ताकलितद्वितीयदन्तप्ररोहः द्विपास्यः हस्तेन गौरीश्रवः केतकपत्र-भङ्गम् आकृष्य मुखाग्रे ददन् विघ्नं हरतु।।१।।

भाषा-भगवती पार्वती के कानों में शोभा के लिए अलङ्कारकी तरह लगाये हुये केवड़े के फूल के टुकड़े को हस्त (सूँड) से खींचकर मुख के अग्रभाग में लगाने पर उत्पन्न हुए दूसरे दाँत का थोड़ी देर के लिए भ्रम कराने वाले श्रीगणेशजी प्रस्तुत ग्रन्थ के समाप्त होने में उपस्थित होने वाले विघ्नों का नाश करें।।१।।

इस श्लोक में गणेश जी को द्विपास्य की उपमा दी गई है पर द्विप (हाथी) द्विदन्त है और गणेशजी एकादन्त हैं, इस पारस्परिक असंगति को सुसंगत करने के लिए ही मानों अपनी लोकोत्तर सूझसे कवि ने दाँत की जगह केतकी पुष्प के टुकड़े की कल्पना द्वारा उनका द्विदन्तत्व सिद्ध करने का प्रयत्न किया है।

गणेशजी के 'द्विपास्य' नाम के सम्बन्ध में भी पौराणिकी संक्षिप्त कथा यह है कि -

गणेशजन्म के सुअवसर पर आशीर्वाद देने के लिए अनेक देवताओं के साथ आँखों पर पट्टी बाँधकर शनि भगवान् भी आये। श्रीपार्वती जी के आग्रह से उन्होंने

आँखों की पट्टी खोलकर आशीर्वाद दिया, पर इसका परिणाम यह हुआ कि पट्टी के खुलते ही श्रीगणेशजी का गले से ऊपर का भाग खण्डित हो गया। जो कोई शनि भगवान् के दृष्टिपथ में आते हैं, वे शिरविहीन होते हैं, ऐसी प्रसिद्धि भी है। इसके बाद अपने पुत्र की इस अवस्था को देखकर शोकातुरा पार्वती विष्णु के निकट आई। पार्वती के इस असह्य दुःख को देखकर विष्णु भगवान् ने जिस-किसी के भी शिर को लाकर गणेश जी के मस्तक पर उसे बैठा देने का निश्चय किया। उस समय वहाँ समीप ही में हाथी का बच्चा दिखाई दिया। बस, उसी को मारकर गणेश जी के गले पर उसका मस्तक बैठा दिया। उसी समय से उनका द्विपास्य नाम पड़ा।।१।। (ब्रह्मवैवर्तपुराण-गणेशजन्मखण्ड)

ग्रन्थ का विषय और नामनिरूपण-

क्रियाकलापप्रतिपत्तिहेतुं संक्षिप्तसारार्थविलासगर्भम् ।
अनन्तदैवज्ञसुतः स रामो मुहूर्तचिन्तामणिमातनोति ।।२।।

अन्वयः- अनन्तदैवज्ञसुतः सः रामः क्रियाकलापप्रतिपत्तिहेतुं संक्षिप्तसारार्थविलासगर्भं मुहूर्तचिन्तामणिम् आतनोति।।२।।

भाषा- सुप्रसिद्धअनन्त दैवज्ञ के पुत्र रामाचार्य, जातकर्म, नामकरण आदि समस्त संस्कार समूह के कालज्ञान के कारणीभूत और सारभूत विशेष अर्थ से पूर्ण थोड़े शब्दों में मुहूर्तचिन्तामणि नामक ग्रन्थ को बनाते हैं।।२।।

क्रमानुसार प्रतिपदादि तिथियों के स्वामी-

तिथीशा वह्निकौ गौरी गणेशोऽहिर्गुहो रविः ।
शिवो दुर्गान्तको विश्वे हरिः कामः शिवः शशी ।।३।।

अन्वयः-वह्निकौ, गौरी, गणेशः, अहिः, गुहः, रविः, शिवः, दुर्गा, अन्तकः, विश्वे, हरिः, कामः, शिवः, शशी एते (क्रमेण) तिथीशाः,भवन्ति।।३।।

भाषा-अग्नि, ब्रह्मा, गौरी, गणेश, सर्प, कार्तिकेय, सूर्य, शिव, दुर्गा, यम, विश्वेदेव, विष्णु, कामदेव, शिव और चन्द्रमा ये क्रम से प्रतिपदादि तिथियों के स्वामी हैं।।३।।

तिथीशचक्रम्

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	तिथयः
अग्नि	ब्रह्मा	गौरी	गणेश	सर्प	कार्तिकेय	रवि	शिव	दुर्गा	यम	विश्वेदेव	हरि	काम	शिव	शशी	ईशाः

नन्दादिसंज्ञा और सिद्धयोग-

नन्दा च भद्रा च जया च रिक्ता पूर्णेति तिथ्योऽशुभमध्यशस्ताः ।
सितेऽसिते शस्तसमाधमाः स्युः सितज्ञभौमार्किगुरौ च सिद्धाः ।।४।।

अन्वयः–सिते (शुक्लपक्षे) नन्दा च भद्रा च जया च रिक्ता पूर्णा इति (त्रिरावृत्य) तिथ्यः अशुभ-मध्य-शस्ता ज्ञेयाः। असिते (कृष्णपक्षे)शस्तसमाधमाः स्युः। तथा सितज्ञभौमार्किगुरौ च सिद्धाः (सिद्धयोगा भवन्ति) ।।४।।

भाषा–शुक्लपक्षकी प्रतिपदासे पन्द्रहों तिथियाँ क्रम से नन्दा, भद्रा, जया, रिक्ता तथा पूर्णा संज्ञक कहलाती हैं। जैसे प्रतिपदा नन्दा, द्वितीया भद्रा, तृतीया जया, चतुर्थी रिक्ता, पञ्चमी पूर्णा संज्ञक है। इसी प्रकार आगे समझना चाहिये अर्थात् १।६।११ नन्दा, २।७।१२ भद्रा, ३।८।१३ जया, ४।९।१४ रिक्ता, ५।१०।१५ पूर्णा। यहाँ पूर्णा में पूर्णिमा और अमावस्या दोनों का ग्रहण करना चाहिये। ये तिथियाँ शुक्लपक्ष में पहले अशुभ,फिर मध्यम और फिर शुभ होती हैं। कृष्णपक्ष में पहले शुभ फिर मध्यम, अन्तिम अशुभ हैं। [1]शुक्रमें नन्दा, बुधमें भद्रा, मंगलमें जया, शनिमें रिक्ता, गुरुमें पूर्णा ये सिद्धयोग हैं।।४।।

नन्दादितिथिसंज्ञाचक्रम् –

वाराः	नन्दादयः	तिथयः
शुक्रवार	नन्दा	१-६-११
बुधवार	भद्रा	२-७-१२
मंगलवार	जया	३-८-१३
शनिवार	रिक्ता	४-९-१४
गुरुवार	पूर्णा	५-१०-१५

तिथिशुभाशुभबोधकचक्रम् –

तिथि	१,२,३,४,५,	६,७,८,९,१०,	११,१२,१३,१४,१५
शुक्ल	अशुभ	मध्यम	शस्त
कृष्ण	शस्त	मध्यम	अधम

रवि आदि वारों में मृत तिथि तथा दग्ध नक्षत्र-

नन्दाभद्रानन्दिकाख्या जया च रिक्ता भद्रा चैव पूर्णा मृतार्कात् ।
याम्यं त्वाष्ट्रं वैश्वदेवं धनिष्ठार्यम्णं ज्येष्ठान्त्यं रवेर्दग्धभं स्यात् ।।५।।

अन्वयः–अर्कात् (आरभ्य क्रमेण) नन्दा, भद्रा, नन्दिकाख्या, जया, रिक्ता, भद्रा, पूर्णा च मृता स्यात् । रवेः याम्यं, त्वाष्ट्रं, वैश्वदेवं, धनिष्ठा, अर्यम्णं, ज्येष्ठा, अन्त्यं दग्धभं स्यात् ।।५।।

---

१. जैसा कि कश्यप और वशिष्ठने भी कहा है कि–

नन्दाः तिथिः शुक्रवारे सौम्ये भद्रा कुजे जया ।
रिक्ता मन्दे गुरोवरि पूर्णा सिद्धाह्वया तिथिः ।।
शुक्रज्ञकुजमन्देज्यवारेषु नन्दादिषु क्रमात् ।
सिद्धा तिथिः सिद्धिदा स्यात्सर्वकार्येषु सर्वदा ।।

भाषा–रविवार से आरम्भ कर सातों दिनों में जैसे–रवि में नन्दा, सोम में भद्रा, मंगल में नन्दा, बुध में जया, गुरु में रिक्ता, शुक्र में भद्रा, शनि में पूर्णा, यदि हो तो ये अशुभ योग होते हैं। अब नक्षत्रवशसे अधम योग कहते हैं, रवि में भरणी, सोममें चित्रा, मंगलमें उत्तराषाढ़ा, बुधमें धनिष्ठा, गुरुमें उत्तराफाल्गुनी, शुक्र में ज्येष्ठा और शनिमें रेवती हो तो ये दग्ध योग हैं।।५।।

अधमयोग–

षष्ठ्यादितिथयो मन्दाद् विलोमं प्रतिपद् बुधे ।
सप्तम्यर्केऽधमाः षष्ठ्याद्यामाश्च रदधावने ।।६।।

अन्वयः–मन्दात् (शनिवासरात्) विलोमं (विपरीतक्रमेण)। षष्ठ्यादितिथयः अधमा भवन्ति । बुधे प्रतिपद्, अर्के सप्तमी (अधमा भवति) षष्ठ्याद्यामाः रदधावने अधमा ज्ञेयाः।।६।।

भाषा–षष्ठीसे द्वादशी तककी तिथि को शनिवार से उल्टा दिनोंमें गिने, जैसे शनिमें षष्ठी, शुक्रमें सप्तमी, गुरुमें अष्टमी, बुधमें नवमी, मंगलमें दशमी, सोममें एकादशी और रवि में द्वादशी हो तो अधमयोग कहा गया है तथा बुध को प्रतिपदा, रविको सप्तमी ये संवर्त योग नाम से प्रसिद्ध अधमयोग है। ६।१।३० षष्ठी, प्रतिपद् और अमावस्या ये तीनों तिथियाँ दन्तधावनमें निषिद्ध हैं।।६।।

कार्यविशेष में निषिद्ध तिथि–

षष्ठ्यष्टमीभूतविधुक्षयेषु नो सेवेत ना तैलपले क्षुरं रतम् ।
नाभ्यञ्जनं विश्वदशद्विके तिथौ धात्रीफलैःस्नानममाद्रिगोष्वसत्।।७।।

अन्वयः–षष्ठ्यष्टमीभूतविधुक्षयेषु तिथिषु क्रमेण ना पुरुषः, तैलपले, क्षुरं, रतं, नो सेवेत। विश्वदशद्विके तिथौ अभ्यञ्जनं (उद्वर्तनम्) न, अमाद्रिगोषु (३०।७।९) तिथिषु धात्रीफलैः स्नानं असत् अशुभमुक्तम् ।।७।।

भाषा–षष्ठी, अष्टमी, चतुर्दशी, अमावस्या इन तिथियों में पुरुष क्रमसे तेल, मांस, क्षौर और मैथुन न करे और त्रयोदशी, दशमी, द्वितीया में उबटन न लगावे, अमावस्या, सप्तमी एवं नवमीको आँवला लगाकर स्नान नहीं करना चाहिये।।७।।

दग्ध, विष, हुताशन और यमघण्टयोग–

सूर्येशपञ्चाग्निरसाष्टनन्दा वेदाङ्गसप्ताश्विगजाङ्कशैलाः ।
सूर्य्याङ्गसप्तोरगगोदिगीशा दग्धा विषाख्याश्च हुताशनाश्च ।।८।।
सूर्यादिवारे तिथयो भवन्ति मघाविशाखाशिवमूलवह्निः ।
ब्राह्मं करोऽर्काद्यमघण्टकाश्च शुभे विवर्ज्या गमनेत्ववश्यम् ।।९।।

अन्वयः–सूर्यादिवारे (क्रमेण) सूर्येशपञ्चाग्निरसाष्टनन्दाः,वेदाङ्गसप्ताश्विगजाङ्कशैलाः, सूर्य्याङ्गसप्तोरगगोदिगीशाः एतास्तिथयः यथाक्रमेण, दग्धाः,विषाख्याः, हुताशनाः योगाः स्युः। च (पुनः) मघाविशाखाशिवमूलवह्निः, ब्राह्मं करः (हस्तः) यमघण्टकाः भवन्ति। (एते योगाः) शुभे विवर्ज्याः, गमने तु अवश्यं विवर्ज्याः।।८-९।।

भाषा-सूर्यादि वारों में क्रमसे, सूर्य द्वादश हैं, इसलिये सूर्य शब्दसे द्वादशी, ईशा=एकादशी, पञ्चमी, अग्नि=तृतीया, रस=षष्ठी, अष्टमी और नवमी ये सात तिथियाँ पड़ें तो दग्धयोग माना गया है। चतुर्थी, षष्ठी, सप्तमी, द्वितीया, अष्टमी, नवमी और सप्तमी ये सात तिथियाँ रव्यादिवारोंमें क्रमसे पड़ें तो विषनामक योग होता है। इसी तरह द्वादशी, षष्ठी, सप्तमी, अष्टमी, नवमी, दशमी और एकादशी रवि आदि वारोंमें क्रमसे पड़ें तो हुताशन योग होता है। अब नक्षत्र वशसे यमघण्ट योग कहते हैं। रव्यादि वारोंमें क्रमसे, मघा, विशाखा, शिव=आर्द्रा, मूल, वह्नि=कृत्तिका, ब्राह्म=रोहिणी, कर=हस्त ये नक्षत्र पड़ें तो यमघण्टयोग होता है। ये चारों योग शुभ कार्य में त्याज्य हैं परन्तु यात्रा में तो अवश्य ही छोड़ देना चाहिये॥८-९॥

चैत्रादिक मासों में शून्य तिथियाँ-

भाद्रे चन्द्रदृशौ नभस्यनलनेत्रे माधवे द्वादशी
पौषे वेदशरा इषे दशशिवा मार्गेऽद्रिनागा मधौ ।
गोऽष्टौ चोभयपक्षगाश्च तिथयः शून्या बुधैः कीर्तिताः
ऊर्जाषाढतपस्यशुक्रतपसां कृष्णे शराङ्गाब्धयः ॥१०॥
शक्राः पञ्च सिते शक्राद्र्यग्निविश्वरसाः क्रमात् ।

अन्वयः-भाद्रे चन्द्रदृशौ, नभसि (श्रावणे) अनलनेत्रे, माधवे (वैशाखे) द्वादशी, पौषे वेदशराः, इषे (आश्विने) दशशिवाः, मार्गे अद्रिनागाः मधौ गोऽष्टौ, उभयपक्षगाः (एताः) तिथयः बुधैः शून्याः कीर्तिताः। ऊर्जाषाढतपस्यशुक्रतपसां कृष्णे क्रमात् शराङ्गाब्धयः शक्राः पञ्च, सिते शक्राद्र्यग्निविश्वरसाः तिथयः शून्याः कीर्तिताः॥१०॥

भाषा-भाद्रपदमासकी प्रतिपदा, द्वितीया, श्रावणमें तृतीया, द्वितीया, वैशाख में द्वादशी, पौषमें चतुर्थी, पञ्चमी, आश्विन में दशमी, एकादशी, मार्गशीर्षमें सप्तमी, अष्टमी, चैत्र में नवमी, अष्टमी ये तिथियाँ कृष्ण और शुक्ल दोनों पक्षों में शून्य कही गयी हैं। अब विशेष कार्तिक, आषाढ़, फाल्गुन, ज्येष्ठ और माघके कृष्णपक्ष में क्रम से पञ्चमी, षष्ठी, चतुर्थी, चतुर्दशी, पञ्चमी और शुक्लपक्षमें चतुर्दशी, सप्तमी, तृतीया, त्रयोदशी, षष्ठी ये तिथियाँ क्रमसे शून्य कही गयी हैं॥१०॥

तिथि और नक्षत्रके सम्बन्धसे निन्द्य दिवस-

तथा निन्द्यं शुभे सार्पं द्वादश्यां वैश्वमादिमे ॥११॥
अनुराधा द्वितीयायां पञ्चम्यां पित्र्यभं तथा ।
त्र्युत्तराश्च तृतीयायामेकादश्याञ्च रोहिणी ॥१२॥
स्वातीचित्रे त्रयोदश्यां सप्तम्यां हस्तराक्षसे ।
नवम्यां कृत्तिकाऽष्टम्यां पूभा षष्ठ्याञ्च रोहिणी ॥१३॥

अन्वयः-शुभे (मङ्गलकार्ये) द्वादश्यां सार्पं, आदिमे वैश्वम् निन्द्यम् द्वितीयायां अनुराधा,

पञ्चम्यां पित्र्यभम्, तृतीयायां त्र्युत्तरा, एकादश्यां रोहिणी, त्रयोदश्यां स्वातीचित्रे, सप्तम्यां हस्तराक्षसे, नवम्यां कृत्तिका, अष्टम्यां पूभा, षष्ठ्यां रोहिणी निन्द्या भवति।।११-१३।।

भाषा–हर एक शुभकार्य में द्वादशी तिथि में आश्लेषा, प्रतिपदा में उत्तराषाढ़ा, द्वितीया में अनुराधा, पञ्चमी में मघा, तृतीया में तीनों उत्तरा–उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तरभाद्रपदा; एकादशी में रोहिणी, त्रयोदशी में स्वाती और चित्रा, सप्तमी में हस्त, मूल, नवमी में कृत्तिका, अष्टमी में पूर्वाभाद्रपद और षष्ठी में रोहिणी ये निन्द्य हैं, अतः इन्हें मंगलकार्य में छोड़ देना चाहिये।।११-१३।।

चैत्रादि मासपरत्वेन शून्य नक्षत्र-

कदास्रभे त्वाष्ट्रवायू विश्वेज्यौ भगवासवौ।
वैश्वश्रुती पाशिपौष्णे अजपादग्निपित्र्यभे।।१४।।
चित्राद्वीशौ शिवाश्व्यर्काः श्रुतिमूले यमेन्द्रभे।
चैत्रादिमासे शून्याख्यास्तारा वित्तविनाशदाः।।१५।।

अन्वयः–चैत्रादिमासे क्रमशः कदास्रभे, त्वाष्ट्रवायू, विश्वेज्यौ, भगवासवौ, वैश्वश्रुती, पाशिपौष्णे, अजपात्, 'अग्निपित्र्यभे, चित्राद्वीशौ, शिवाश्व्यर्काः, श्रुतिमूले, यमेन्द्रभे 'एताः' यदि भवेयुः, तदा ताराः वित्तविनाशदाः शून्याख्याः भवन्ति।।१४-१५।।

भाषा–चैत्र आदि मासों में क्रमसे चैत्र में रोहिणी और अश्विनी, वैशाख में चित्रा और स्वाती, ज्येष्ठमें उत्तराषाढ़ा और पुष्य, आषाढ़में पूर्वाफाल्गुनी और धनिष्ठा, श्रावणमें उत्तराषाढ़ा और श्रवण, भाद्र में शतभिषा और रेवती, आश्विनमें पूर्वाभाद्रपदा, कार्तिक में कृत्तिका, मघा, मार्गशीर्षमें चित्रा, विशाखा, पौष में आर्द्रा, अश्विनी और हस्त, माघमें श्रवण और मूल, फाल्गुनमें भरणी और ज्येष्ठा ये नक्षत्र शून्य क[illegible] हैं। इनमें किया हुआ कार्य धनको नाश करने वाला कहा जाता है।।१४-१५।।

मासों की शून्य राशियाँ–

घटो झषो गौर्मिथुनं मेषकन्यालितौलिनः।
धनुः कर्को मृगः सिंहश्चैत्रादौ शून्यराशयः।।१६।।

अन्वयः–घटः झषः, गौः, मिथुनं, मेषकन्यालितौलिनः, धनुः, कर्क, मृगः, सिंहः चैत्रादौ मासेषु (यथाक्रमं) शून्यराशयः (भवन्ति)।।१६।।

भाषा–चैत्रमें कुम्भ, वैशाख में मीन, ज्येष्ठमें वृष, आषाढ़ में मिथुन, श्रावण में मेष, भाद्रपद में कन्या, आश्विन में वृश्चिक, कार्तिक में तुला, अगहनमें धनु, पौष में कर्क, माघ में मकर और फल्गुनमें सिंह ये राशियाँ शून्य कही गयी हैं अर्थात् इनमें शुभकार्य न करे।।१६।।

विषम तिथियों में दग्ध लग्न–

पक्षादितस्त्वोजतिथौ धदैणौ मृगेन्द्रनक्रौ मिथुनाङ्गने च।
चापेन्दुभे कर्कहरी हयान्त्यौ गोऽन्त्यौ च नेष्टे तिथिशून्यलग्ने।।१७।।

अन्वयः-पक्षादितः ओजतिथौ क्रमेण धटैणौ, मृगेन्द्रनक्रौ, मिथुनाङ्गने, चापेन्दुभे कर्कहरी, हयान्त्यौ, गोऽन्त्यौ तिथिशून्यलग्ने नेष्टे भवतः।।१७।।

भाषा-दोनों पक्षों की आदिसे विषम तिथियों में क्रमसे जैसे-प्रतिपदामें तुला और मकर, तृतीया में सिंह और मकर, पञ्चमी में मिथुन और कन्या, सप्तमी में धनु और कर्क, नवमी में कर्क और सिंह, एकादशी में धनु और मीन, त्रयोदशी में वृष और मीन, इन-इन तिथियों में कहे हुए लग्नों को दग्धलग्न कहा गया है, इनमें मंगल कार्य नहीं करना चाहिए।।१७।।

दुष्टयोगों का परिहार-

तिथयो मासशून्याश्च शून्यलग्नानि यान्यपि ।
मध्यदेशे विवर्ज्यानि न दूष्याणीतरेषु तु ।।१८।।

अन्वयः-मासशून्याः तिथयः, अपि च यानि शून्यलग्नानि तानि मध्यदेशे[1] विवर्ज्यानि इतरेषु अन्यदेशेषु तु न दूष्याणि भवन्ति ।।१८।।

भाषा-'भाद्रे चन्द्रदृशौ' और 'पक्षादितस्त्वोजतिथौ' इन श्लोकों द्वारा यथाक्रम कही गई मासशून्य तिथियाँ तथा शून्य लग्न मध्यदेश में वर्जित हैं अन्य देश में नहीं।।१८।।

शुभ कृत्य करने की आवश्यकता पड़ने पर पङ्गु आदि लग्न और

राशियों का परिहार-

पङ्ग्वन्धकाणलग्नानि मासशून्याश्च राशयः ।
गौडमालवयोस्त्याज्या अन्यदेशे न गर्हिताः ।।१९।।

अन्वयः-पङ्ग्वन्धकाणलग्नानि मासशून्या राशयः च एते गौडमालवयोः देशयोः त्याज्याः, अन्यदेशे गर्हिताः न भवन्ति।।१९।।

भाषा-पंगु, अंध तथा काण लग्न और मासों में कही हुई शून्य राशियाँ गौड़ और मालव देश में त्याज्य हैं, अन्य देश में नहीं।।१९।।

तिथि, नक्षत्र और वार तीनों के योग से अशुभत्व-

वर्जयेत् सर्वकार्येषु हस्तार्के पञ्चमीतिथौ ।
भौमाश्विनीञ्च सप्तम्यां षठ्यां चन्द्रैन्दवं तथा ।।२०।।
बुधानुराधामष्टम्यां दशम्यां भृगुरेवतीम् ।
नवम्यां गुरुपुष्यञ्चैकादश्यां शनिरोहिणीम् ।।२१।।

---

१. हिमवद्विन्ध्ययोर्मध्यं यत्प्राग्विनशनादपि ।
प्रत्यगेव प्रयागाच्च मध्यदेशः प्रकीर्तितः ।।

मनुस्मृतौ अ. २ श्लोक २१

भद्रारिमेदमाण्डव्यशाल्वनीपोज्जिहानसंख्याताः ।
मरुवत्स-घोष-यामुन-सारस्वत-मत्स्य-माध्यमिकाः ।।

वराहसंहितायाम् अ. १४ श्लोक २

अन्वयः–पञ्चमीतिथौ हस्तार्कं, सप्तम्यां भौमाश्विनीम् , षष्ठ्यां चन्द्रैन्दवं, अष्टम्यां बुधानुराधां, दशम्यां भृगुरेवतीं, नवम्यां गुरुपुष्यं, च एकादश्यां शनिरोहिणीं सर्वकार्येषु वर्जयेत् ।।२०-२१।।

भाषा–यदि पञ्चमीको हस्त नक्षत्र तथा रविवार हो तो वह शुभ कर्मों में त्याज्य है। उसी प्रकार सप्तमी को अश्विनी नक्षत्र, मङ्गलवार, षष्ठी को मृगशिरा नक्षत्र, सोमवार, अष्टमी को अनुराधा नक्षत्र, बुधवार, दशमी को शुक्रवार और रेवती, नवमीको गुरुवार और पुष्य नक्षत्र, एकादशीको रोहिणी नक्षत्र, शनिवार हो तो ये योग सभी कार्यों में त्याज्य हैं। इनको त्रितयज कुयोग कहते हैं।।२०-२१।।

गृहप्रवेशादि में त्याज्य शुभयोग–

गृहप्रवेशे यात्रायां विवाहे च यथाक्रमम् ।
भौमाश्विनीं शनौ ब्राह्मं गुरौ पुष्यं विवर्जयेत् ।।२२।।

अन्वयः–**गृहप्रवेशे यात्रायां विवाहे च यथाक्रमं भौमाश्विनीं, शनौ ब्राह्मं, गुरौ पुष्यं विवर्जयेत् ।।२२।।**

भाषा–गृहप्रवेशमें, यात्रामें तथा विवाहमें यथाक्रम-मंगलवार में अश्विनीनक्षत्र, शनिवार में रोहिणीनक्षत्र, गुरुवारमें पुष्यनक्षत्रको त्याग देना चाहिये।।२२।।

आनन्दादि २८ योग–

आनन्दाख्यः कालदण्डश्च धूम्रो धाता सौम्यो ध्वांक्षकेतू क्रमेण ।
श्रीवत्साख्यो वज्रकं मुद्गरश्च छत्रं मित्रं मानसं पद्मलुम्बौ ।।२३।।
उत्पातमृत्यू किल काणसिद्धी शुभोऽमृताख्यो मुसलं गदश्च ।
मातङ्गरक्षश्चरसुस्थिराख्य-प्रवर्धमानाः फलदाः स्वनाम्ना ।।२४।।

अन्वयः–**आनन्दाख्यः कालदण्डः च (पुनः) धूम्रः, धाता, सौम्यः, ध्वांक्षकेतू, श्रीवत्साख्यः, वज्रकं च (पुनः) मुद्गरः छत्रं मित्रं, मानसं, पद्मलुम्बौ, उत्पातमृत्यू, किल काणसिद्धी, शुभः, अमृताख्यः, मुसलं, गदः, मातङ्गरक्षश्चरसुस्थिराख्यप्रवर्धमानाः एते सर्वे योगाः स्वनाम्ना फलदाः भवन्ति।।२३-२४।।**

भाषा–आनन्द, कालदण्ड, धूम्र, धाता, सौम्य, ध्वांक्ष, केतु, श्रीवत्स, वज्र, मुद्गर, छत्र, मित्र, मानस, पद्म, लुम्ब, उत्पात, मृत्यु, काण, सिद्धि, शुभ, अमृत, मुसल, गद, मातंग, रक्ष, चर, सुस्थिर तथा प्रवर्द्धमान ये अट्ठाइस योग अपने-अपने नामके सदृश फल देनेवाले होते हैं।।२३-२४।।

योगचक्रम्–

सं	यो.	रवि.	चंद्र.	मंगल.	बुध.	बृहस्प.	शुक्र.	शनि.	फलम्
१	आनंद	अश्वि.	मृग.	श्लेषा	हस्त	अनुरा.	उ.षा.	शत.	सिद्धि
२	काल	भरणी	आर्द्रा	मघा	चित्रा	ज्येष्ठा	अभि.	पू.भा.	मृत्यु
३	धूम्र	कृत्ति.	पुनर्व.	पू.फा.	स्वाती	मूल	श्रवण	उ.भा.	असुख

सं	यो.	रवि.	चंद्र.	मंगल.	बुध.	बृहस्प.	शुक्र.	शनि.	फलम्
४	धाता	रोहि.	पुष्य	उ.फा.	विशा.	पू.षा.	धनि.	रेवती	सौभाग्य
५	सौम्य	मृग	श्लेषा	हस्त	अनुरा.	उ.षा.	शत.	अश्वि.	बहुमुख
६	ध्वांक्ष	आर्द्रा	मघा	चित्रा	ज्येष्ठा	अभि.	पू.भा.	भरणी	धनक्षय
७	ध्वज	पुनर्व.	पू.फा.	स्वाती	मूल	श्रवण	उ.भा.	कृत्तिका	सौभाग्य
८	श्रीवत्स	पुष्य	उ.फा	विशा.	पू.षा.	धनि.	रेवती	रोहि.	सौख्यसम्पद्
९	वज्र	श्लेषा	हस्त	अनुरा.	उ.षा.	शत.	अश्वि.	मृग.	क्षय
१०	मुद्गर	मघा	चित्रा	ज्येष्ठा	अभि.	पू.भा.	भरणी	आर्द्रा	लक्ष्मीक्षय
११	छत्र	पू.फा.	स्वाती	मूल	श्रवण	उ.भा.	कृत्ति.	पुनर्व.	राजसम्मान
१२	मित्र	उ.फा.	विशा.	पू.षा.	धनि.	रेवती	रोहि.	पुष्य	पुष्टि
१३	मानस	हस्त	अनुरा.	उ.षा.	शत.	अश्वि.	मृग.	श्लेषा	सौभाग्य
१४	पद्म	चित्रा	ज्येष्ठा	अभि.	पू.भा.	भरणी	आर्द्रा	मघा	धनागम
१५	लुम्बक	स्वाती	मूल	श्रवण	उ.भा.	कृत्ति.	पुनर्व.	पू.फा.	धनक्षय
१६	उत्पात	विशा.	पू.षा.	धनि.	रेवती	रोहि.	पुष्य	उ.फा.	प्राणनाश
१७	मृत्यु	अनुरा.	उ.षा.	शतभि.	अश्वि.	मृग.	श्लेषा	हस्त	मृत्यु
१८	काण	ज्येष्ठा	अभि.	पू.भा.	भरणी	आर्द्रा	मघा	चित्रा	क्लेश
१९	सिद्धि	मूल	श्रवण	उ.भा.	कृत्ति.	पुनर्व.	पू.फा.	स्वाती	कार्यसिद्धि
२०	शुभ	पू.षा.	धनि.	रेवती	रोहि.	पुष्य	उ.फा.	विशा.	कल्याण
२१	अमृत	उ.षा.	शत.	अश्वि.	मृग.	श्लेषा	हस्त	अनु.	राजसम्मान
२२	मुसल	अभि.	पू.भा.	भरणी	आर्द्रा	मघा	चित्रा	ज्येष्ठा	धनक्षय
२३	गद	श्रवण	उ.भा.	कृत्ति.	पुन.	पू.फा.	स्वाती	मूल	अक्षयविद्या
२४	मातंग	धनि.	रेवती	रोहि.	पुष्य	उ.फा.	विशा.	पू.षा.	कुलवृद्धि
२५	राक्षस	शतभि.	अश्वि.	मृग.	श्लेषा	हस्त	अनु.	उ.षा.	महाकष्ट
२६	चर	पू.भा.	भरणी	आर्द्रा	मघा	चित्रा	ज्येष्ठा	अभि.	कार्यसिद्धि
२७	स्थिर	उ.भा.	कृत्ति.	पुनर्व.	पू.फा.	स्वाती	मूल	श्रवण	गृहारम्भ
२८	प्रवर्ध.	रेवती	रोहि.	पुष्य	उ.फा.	विशा.	पू.षा.	धनि.	विवाह

आनन्दादि योग जानने की रीति–

दास्रादर्के मृगादिन्दौ सार्पाद्भौमे कराद् बुधे ।
मैत्राद् गुरौ भृगौ वैश्वाद् गण्या मन्दे च वारुणात् ।।२५।।

अन्वयः–अर्के दास्रात् , इन्दौ मृगात् , भौमे सार्पात् , बुधे करात् , गुरौ मैत्रात्, भृगौ वैश्वात् , मन्दे वारुणात् (एते आनन्दादयो योगाः) गण्याः।।२५।।

भाषा–रविवार में अश्विनी से, सोमवार में मृगशिरा से, मंगलवार में आश्लेषा से, बुधवार में हस्त से, गुरुवार में अनुराधा से, शुक्रवार में उत्तराषाढ़ा से, शनिवार में शतभिषा से, जिस दिन का योग जानना हो उपरोक्त कहे हुए के अनुसार उस दिन तक गिनकर जो संख्या आती हो उसी संख्या वाला योग उस दिन आनन्दादि योगों में से समझना चाहिये। स्पष्ट पीछे चक्र में देखिये।।२५।।

आनन्दादि योगों में जो दुष्ट योग हैं, उनके रहते कार्य करना आवश्यक होने पर उनका परिहार–

ध्वाङ्क्षे वज्रे मुद्गरे चेषुनाड्यो वर्ज्या वेदाः पद्मलुम्बे गदेश्वाः।
धूम्रे काणे मौसले भूर्द्वयं द्वे रक्षोमृत्यूत्पातकालाश्च सर्वे ।।२६।।

अन्वयः–ध्वाङ्क्षे, वज्रे, मुद्गरे (योगे) इषुनाड्यः, पद्मलुम्बे वेदाः, गदे अश्वाः नाड्यः वर्ज्याः धूम्रे भूः (एका) नाडी, काणे द्वये, मौसले द्वे,रक्षोमृत्यूत्पातकालाः सर्वे वर्ज्याः।।२६।।

भाषा–ध्वांक्ष, वज्र, मुद्गर इन योगों के आदि की पाँच घटी, पद्म लुम्ब में आदि की ४ घटी, गदयोग में आदि की ७ घटी, धूम्र योग की १ घटी, काण योग की २ घटी, मुसल योग की २ घटी छोड़कर उनकी शेष घटियों में मांगलिक कार्य किया जा सकता है। राक्षस, मृत्यु, उत्पात एवं काल इन योगों की पूरी घटियाँ अर्थात् सम्पूर्ण योग ही त्याज्य है।।२६।।

दोषनाशक रवियोग–

सूर्यभाद्वेदगोतर्कदिग्विश्वनखसम्मिते ।
चन्द्रर्क्षे रवियोगाः स्युर्दोषसङ्घविनाशकाः ।।२७।।

अन्वयः–सूर्यभात् , वेद-गो-तर्क-दिग्विश्व-नख-सम्मिते चन्द्रर्क्षे दोषसङ्घविनाशकाः रवियोगाः स्युः।।२७।।

भाषा–सूर्य जिस नक्षत्र पर हो उस नक्षत्र से चन्द्र के नक्षत्र तक अर्थात् दिन के नक्षत्र तक गिनने पर यदि ४,९,६,१०,१३,२० नक्षत्र की संख्या आवे तो रवियोग होता है, यह योग दोष के समूह को नाश करता है।।२७।।

उदाहरण–अश्विनी नक्षत्र पर यदि सूर्य हो और आर्द्रा पर चन्द्रमा हो तो सूर्याक्रांत अश्विनी से आर्द्रा तक गिनने पर छः संख्या आई, इसलिये यह रवियोग हुआ। इसी प्रकार सूर्याक्रांत अन्य नक्षत्रों से चन्द्र नक्षत्र तक गणना समझनी चाहिये।।२७।।

रवि आदि वारों में नक्षत्रयोग से सर्वार्थसिद्धियोग–

सूर्येऽर्कमूलोत्तरपुष्यदास्रं चन्द्रे श्रुतिब्राह्मशशीज्यमैत्रम् ।
भौमेऽश्व्यहिर्बुध्न्यकृशानुसार्पं ज्ञे ब्राह्ममैत्रार्ककृशानुचान्द्रम् ।।२८।।

जीवेऽन्त्यमैत्राश्व्यदितीज्यधिष्ण्यं शुक्रेऽन्त्यमैत्रा[1] श्व्यदितिश्रवोभम्।
शनौ श्रुतिब्राह्मसमीरभानि सर्वार्थसिद्ध्यै कथितानि पूर्वैः ।।२९।।

अन्वयः–सूर्ये (रविवारे), अर्कमूलोत्तरपुष्यदास्रं, चन्द्रे श्रुतिब्राह्मशशीज्यमैत्रम् , भौमे अश्व्यहिर्बुध्न्यकृशानुसार्पम् , ज्ञे (बुधे) ब्राह्ममैत्रार्ककृशानुचान्द्रम् , जीवे (गुरौ) अन्त्यमैत्राश्व्यदितीज्यधीष्ण्यम् ,शुक्रे अन्त्यमैत्राश्व्यदितीश्रवोभम् , शनौ श्रुतिब्राह्म-समीरभानि पूर्वैः (पूर्वाचार्यैः) सर्वार्थसिद्ध्यै कथितानि।।२८-२९।।

भाषा–रविवार को हस्त, मूल, तीनों उत्तरा, पुष्य और अश्विनी; सोमवार को श्रवण, रोहिणी, मृगशिरा, पुष्य, अनुराधा; मङ्गलवार को अश्विनी, उत्तरभाद्रपद, कृत्तिका, आश्लेषा; बुधवार को रोहिणी, अनुराधा, हस्त, कृत्तिका, मृगशिरा; गुरुवार को रेवती, अनुराधा, अश्विनी, पुनर्वसु, पुष्य; शुक्रवार को रेवती, अनुराधा, अश्विनी, पुनर्वसु, श्रवण; शनिवार को श्रवण, रोहिणी, स्वाती ये नक्षत्र होवें तो पूर्वाचार्यों ने इन योगों को सर्वार्थसिद्धि योग कहा है।।२८-२९।।

सर्वार्थसिद्धियोगबोधकचक्रम् –

दिनों में	रवि	सोम	मंगल	बुध	बृहस्प.	शुक्र.	शनि.
नक्षत्रा.	हस्त	श्रवण	अश्वि.	रोहि.	रेवती .	रेवती	श्रवण
	मूल	रोहि.	उ.भा.	अनुरा.	अनुरा.	अनुरा.	रोहि.
	उ ३	मृग.	कृत्ति.	हस्त	अश्वि.	अश्वि.	स्वाती
	पुष्य	पुष्य	आश्ले.	कृत्ति.	पुनर्व.	पुनर्व.	
	अश्वि.	अनुरा.		मृगशि.	पुष्य	श्रवण	
नक्षत्र संख्या	७	५	४	५	५	५	३

उत्पात, मृत्यु, काण और सिद्धियोग–

द्वीशात्तोयाद्वासवात् पौष्णभाच्च ब्राह्मात् पुष्यादर्यमर्क्षाच्चतुर्भैः।
स्यादुत्पातो मृत्युकाणौ च सिद्धिर्वारेऽर्काद्ये तत्फलं नामतुल्यम् ।।३०।।

अन्वयः–अर्काद्ये वारे क्रमेण द्वीशात् ,तोयात् , वासवात् , पौष्णभात् ,ब्राह्मात्, पुष्यात् , अर्यमर्क्षात् , चतुर्भैः उत्पातः मृत्युकाणौ च (पुनः) सिद्धिः स्यात् । तत्फलं (एषां उत्पातादीनां फलम्) नामतुल्यं भवति।।३०।।

भाषा–रविवार में विशाखा से चार नक्षत्र, सोमवार में पूर्वाषाढ़ा से चार नक्षत्र,मङ्गलवार में धनिष्ठा से चार नक्षत्र, बुध में रेवती से चार नक्षत्र, गुरु में रोहिणी से चार नक्षत्र, शुक्र में पुष्य से चार नक्षत्र, शनि में उत्तराफाल्गुनी से चार नक्षत्र होने से क्रम से उत्पात, मृत्यु, काण और सिद्धियोग होते हैं, इन योगों का नामानुसार ही फल होता है।।३०।।

१–'भाग्याश्व्यदिति' इति पाठभेदः पीयूषधारायाम् ।

स्पष्टार्थचक्रम् –

वार नाम	सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	फल
उत्पात	वि.	पू.षा.	ध.	रे.	रो.	पुष्य	उ.फा.	अशुभ
मृत्यु	अनु.	उ.षा.	श.	अश्वि.	मृ.	श्लेषा	ह.	अशुभ
काण	ज्ये.	अभि.	पू.भा.	भ.	आ.	म.	चित्रा	अशुभ
सिद्धि	मू.	श्र.	उ.भा.	कृ.	पुनर्व.	पू.फा.	स्वा.	शुभ

देशभेद से दुष्टयोगों का परिहार–

कुयोगास्तिथिवारोत्थास्तिथिभोत्था भवारजाः ।
हूणबङ्गखशेष्वेव वर्ज्यास्त्रितयजास्तथा ।।३१।।

अन्वयः–तिथिवारोत्थाः, तिथिभोत्थाः, भवारजाः तथा त्रितयजाः (तिथि-वारभोत्थाः) कुयोगाः हूणबङ्गखशेष्वेव देशेषु वर्ज्याः।।३१।।

भाषा–तिथि और वार से उत्पन्न, तिथि और नक्षत्र से उत्पन्न, दिन और नक्षत्र से उत्पन्न, कुयोग तथा तिथि, दिन, नक्षत्र इन तीनोंसे उत्पन्न, कुयोग हूण, बंग और खश (नेपाल) देशों में ही त्याज्य है।।३१।।

शुभ कार्यों में त्याज्य समय–

सर्वस्मिन् विधुपापयुक्तनुलवावर्द्धे निशाह्नोर्घटी-
त्र्यंशं वै कुनवांशकं ग्रहणतः पूर्वं दिनानां त्रयम् ।
उत्पातग्रहतोऽद्र्यहांश्च शुभदोत्पातैश्च दुष्टं दिनं
षण्मासं ग्रहभिन्नभं त्यज शुभे यौद्धं तथोत्पातभम् ।।३२।।

अन्वयः–विधुपापयुक्तनुलवौ, निशाह्नोः अर्धे घटीत्र्यशं ग्रहणतः पूर्वं दिनानां त्रयं, उत्पातग्रहतः अद्र्यहान् (सप्तदिवसान्) शुभदोत्पातैः दुष्टं दिनं सर्वस्मिन् शुभे कार्ये त्यज। ग्रहभिन्नभं, यौद्धं (नक्षत्रं) तथा उत्पातभं षण्मासं सर्वस्मिन् शुभे त्यज।।३२।।

भाषा–चन्द्रमा और पापग्रह से युक्त लग्न और नवांश, रात और दिन का मध्यभाग अर्थात् मध्यरात्रि और मध्याह्न इनकी १ घड़ी का तृतीयांश, पापग्रह के नवांश, ग्रहण पूर्व के तीन दिन उत्पात, भूकम्प आदि और ग्रहण के आगे सात दिन, शुभद उत्पात से युक्त दुष्ट दिन, ये सब मांगलिक कार्य में वर्जित हैं। इसी तरह मङ्गल आदि ग्रह से विद्ध नक्षत्र, जिसमें ग्रहों का युद्ध हुआ हो वह नक्षत्र तथा भौम एवं दिव्य, आकाशीय उत्पातों से दूषित नक्षत्र को छः महीना तक छोड़ देना चाहिये।।३२।।

ग्रहणवाले नक्षत्रों के निषिद्धकाल–

नेष्टं ग्रहर्क्षं सकलार्द्धपादग्रासे क्रमात् तर्कगुणेन्दुमासान् ।
पूर्वं परस्तादुभयोस्त्रिघस्रा ग्रस्तेऽस्तगे वाऽभ्युदितेऽर्द्धखण्डे ।।३३।।

अन्वयः-सकलार्घपादग्रासे क्रमात् तर्कगुणेन्दुमासान् ग्रहर्क्षं नेष्टम् (निषिद्धम्) ग्रस्तेऽस्तगे पूर्वं त्रिघस्रा नेष्टाः, ग्रस्तेऽभ्युदिते परस्तात् त्रिघस्रा नेष्टाः। अर्धखण्डे ग्रासे उभयोः त्रिघस्राः नेष्टाः।।३३।।

भाषा-सम्पूर्ण, आधा अथवा चौथाई ग्रास होने पर क्रम से ६ मास ३ मास और १ मास तक ग्रहण नक्षत्र अशुभ रहता है। ग्रस्तास्त ग्रस्तोदय और खण्ड ग्रहण होने पर क्रम से पहले ३ दिन, बाद के तीन दिन और आगे-पीछे के तीन-तीन दिन त्याज्य हैं।।३३।।

वर्ज्य पञ्चाङ्ग दोष-

जन्मर्क्षमासतिथयो व्यतिपातभद्रा
वैधृत्यमापितृदिनानि तिथिक्षयर्द्धी ।
न्यूनाधिमासकुलिकप्रहरार्द्धपाताः
विष्कम्भवज्रघटिकात्रयमेव वर्ज्यम् ।।३४।।

अन्वयः-जन्मर्क्षमासतिथयः, व्यतिपातभद्रावैधृत्यमापितृदिनानि, तिथिक्षयर्द्धी न्यूनाधिमासकुलिकप्रहरार्धपाताः वर्ज्याः। विष्कम्भवज्रघटिकात्रयम् पूर्वं वर्ज्यम् (एतयोः घटीत्रयमेव त्याज्यम्) ।।३४।।

भाषा-जन्मनक्षत्र, जन्ममास, जन्मतिथि, व्यतिपात, भद्रा, वैधृति, अमावस्या, माता-पिता का श्राद्धदिन, तिथिक्षय एवं तिथिवृद्धि, क्षयमास, मलमास, कुलिक, अर्धप्रहर पात त्याज्य है। परन्तु विषकुंभ और वज्र योगों की आरम्भ से केवल तीन-तीन घटी ही त्याज्य है।।३४।।

परिघ आदि योगों की निन्द्य घटी-

परिघार्द्धं पञ्च शूले षट् च गण्डातिगण्डयोः ।
व्याघाते नव नाड्यश्च वर्ज्याः सर्वेषु कर्मसु ।।३५।।

अन्वयः-सर्वेषु कर्मसु परिघार्धं वर्ज्यम् । शूले पञ्च (घटिकाः), गण्डातिगण्डयोः षट् (घटिकाः) व्याघाते नव (घटिकाः) वर्ज्याः।।३५।।

भाषा-सभी शुभकार्यों में परिघयोग की घटी का पहला आधा भाग, शूल के आरंभ की पाँच घटी, गण्ड और अतिगण्डयोग की ६ घटी, व्याघात की ९ घटी त्याज्य है।।३५।।

असत् तिथि-

वेदाङ्गाष्टनवार्केन्द्रपक्षरन्ध्रतिथौ त्यजेत् ।
वस्वङ्कमनुतत्त्वाशाः शरा नाडीः पराः शुभाः ।।३६।।

अन्वयः-वेदाङ्गाष्टनवार्केन्द्रपक्षरन्ध्रतिथौ क्रमशः वस्वङ्कमनुतत्त्वाशाः शरा नाडीः त्यजेत् । पराः शुभाः (भवन्ति)।।३६।।

भाषा–दोनों पक्ष की चतुर्थी, षष्ठी, अष्टमी, नवमी, द्वादशी, चतुर्दशी ये तिथियाँ पक्षरन्ध्र संज्ञक हैं। इनमें क्रमशः ८।९।१४।२५।१० और ५ घटी शुभ कार्य में त्याज्य हैं, शेष घटियाँ शुभ हैं।।३६।।

कुलिकादियोग–

कुलिकः कालवेला च यमघण्टश्च कण्टकः।
वाराद् द्विघ्ने क्रमान्मन्दे बुधे जीवे कुजे क्षणः।।३७।।

अन्वयः–वारात् (वर्तमानदिवसात्) मन्दे, बुधे, जीवे, कुजे, द्विघ्ने (द्विगुणिते सति) क्रमात् कुलिकः कालवेला, यमघण्टः, कण्टकः क्षणः स्यात् ।।३७।।

भाषा–वर्तमान दिन से शनि तक गणना करने से जो संख्या हो उसको दूना करे, दूना करने पर जो संख्या आवे उस संख्या वाला मुहूर्त कुलिक योग हुआ। इसी प्रकार बुध तक गिन कर दूना करे तो कालवेला, गुरु तक गिनकर दूना करे तो यमघण्ट, मङ्गल तक गिनकर दूना करे तो कण्टक योग होता है।।३७।।

उदाहरण–जैसे सोमवार को कुलिक आदि योग जानना है तो सोम से शनि तक की संख्या ६ से दूना करने से १२वाँ कुलिक हुआ। सोमवार से बुध तक की संख्या ३ को दूना करने से छठाँ कालवेला, गुरुवार तक की संख्या ४ को दूना करने से ८वाँ यमघण्ट और मङ्गल तक की संख्या २ को दूना करने से चौथा कण्टक मुहूर्त हुआ। इसी प्रकार सब वारों में जानना चाहिये।

मध्यम मान से २,२, घटी का एक-एक मुहूर्त होता है। स्पष्टमान से दिनमान का १५वाँ भाग दिन का मुहूर्त और रात्रिमान का १५वाँ भाग रात्रि का मुहूर्त समझना चाहिये।।३७।।

कुलिकादियोगबोधकचक्रम्–

	रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
कुलिक	१४	१२	१०	८	६	४	२
कालवेला	८	६	४	२	१४	१२	१०
यमघण्ट	१०	८	६	४	२	१४	१२
कण्टक	६	४	२	१४	१२	१०	८

सूर्यादि वारों के दुष्ट मुहूर्त–

सूर्ये षट्स्वरनागदिङ्-मनुमिताश्चन्द्रेऽब्धिषट्कुञ्जरा-
ङ्कर्काविश्वपुरन्दराः क्षितिसुते द्व्यब्ध्यग्नितर्कादिशः।
सौम्ये द्व्यब्धिगजाङ्कदिङ्मनुमिता जीवे द्विषट्भास्कराः
शक्राख्यास्तिथयः कलाश्च भृगुजे वेदेषु तर्कग्रहाः।।३८।।

दिग्भास्करामनुमिताश्च शनौ शशिद्वि-
नागा दिशो भवदिवाकरसम्मिताश्च ।
दुष्टा क्षणः कुलिककण्टककालवेलाः
स्युश्चार्द्धयामयमघण्टगताः कलांशाः ।।३९।।

अन्वयः-सूर्ये षट्स्वरनागदिङ्मनुमिताः कलांशाः, चन्द्रे अब्धिषट्कुञ्जराङ्कार्का विश्वपुरन्दराः,क्षितिसुते द्व्यब्ध्यग्नितर्का दिशः, सौम्ये द्व्यब्धिगजाङ्कदिङ्मनुमिताः, जीवे द्विषड्भास्कराः शक्राख्यास्तिथयः कलाश्च, भृगुजे वेदेषुतर्कग्रहाः दिग्भास्करा मनुमिताश्च, शनौ शशिद्विनागा दिशः भवदिवाकरसंमिताश्च कलांशाः (षोडशांशाः) दुष्टः क्षणः स्यात् । एतेषु केषुचित् कुलिक-कण्टक-कालवेला भवन्ति, केषुचिच्च अर्धयामयमघण्टाः भवन्ति, अतः सर्वेऽपीमे मुहूर्ताः शुभकर्मसु त्याज्या भवन्ति, कुलिककण्टककालवेला अर्धयामयमघण्टगताः स्युः ।।३८-३९।।

भाषा-रविवारमें ६।७।८।१०।१४ वाँ, सोमवारमें ४।६।८।९।१२।१३ और १४वाँ, मङ्गलवारमें २।४।३।६ और १०वाँ, बुधवारमें २।४।८।९।१० १४वाँ, गुरुवारमें २।६।१२।१४।१५।१६वाँ, शुक्रवारमें ४।५।६।९।१०।१२ और १४वाँ, शनिवारमें १।२।८।१०।११ और बारहवाँ कलांश (दिनमान का सोलहवाँ भाग) दुष्टक्षण दुर्मुहूर्त कहा जाता है। इनमें सभी मुहूर्त, कण्टक, कालवेला,अर्धयाम, यमघण्ट इत्यादि वाले दोषों में से किसी-न-किसी दोष में दूषित है, इसलिये शुभ कार्यों में त्याज्य हैं।।३८-३९।।

होलिकाष्टक का निषेध-

विपाशेरावतीतीरे शुतुद्र्याश्च त्रिपुष्करे ।
विवाहादिशुभे नेष्टं होलिकाप्राग्दिनाष्टकम् ।।४०।।

अन्वयः-विपाशेरावतीतीरे शुतुद्र्याश्च तीरे त्रिपुष्करे (देशे च) विवाहादि शुभे कार्ये होलिकाप्राग्दिनाष्टकम् नेष्टं (निषिद्धं) वर्तते।।४०।।

भाषा-विपाशा, इरावती, शुतुद्रु यथाक्रम पंजाबकी व्यास, रावी और सतलज नदियों के किनारे के देशों में और त्रिपुष्कर देश में विवाहादि शुभ कार्य के लिये होली से पहले ८ दिन त्याज्य हैं। दूसरे देश में शुभ है।।४०।।

मृत्यु, क्रकच आदि योगों का परिहार-

मृत्युक्रकचदग्धादीनिन्दौ शस्ते शुभान् जगुः ।
केचिद् यामोत्तरं चान्ये यात्रायामेव निन्दितान् ।।४१।।

अन्वयः-इन्दौ शस्ते, मृत्युक्रकचदग्धादीन् (योगान्) शुभान् जगुः, केचित् यामोत्तरं (शुभान् जगुः)। अन्ये यात्रायामेव निन्दितान् जगुः।।४१।।

भाषा-गोचर में चन्द्रमा के शुद्ध और सम्मुख रहने पर मृत्युयोग, क्रकचयोग

और दग्धादियोग शुभ होते हैं। कुछ आचार्यों का मत है कि एक पहर के बाद शुभ होते हैं और कोई आचार्य कहते हैं कि केवल यात्रा में ही ये योग अशुभ हैं, इसलिये यात्रा में इनको छोड़ देना चाहिये।।४१।।

सुयोग से कुयोग का परिहार–

अयोगे सुयोगोऽपि चेत् स्यात्तदानीमयोगं निहत्यैष सिद्धिं तनोति।
परे लग्नशुद्ध्या कुयोगादिनाशं दिनार्द्धोत्तरं विष्टिपूर्वञ्च शस्तम् ।।४२।।

अन्वयः–चेत् अयोगे सुयोगः अपि स्यात् तदानीं एषः (सुयोगः) अयोगं निहत्य सिद्धिं तनोति। परे आचार्याः लग्नशुद्ध्या कुयोगादिनाशं कथयन्ति। विष्टिपूर्वं दिनार्द्धोत्तरं शस्तं कथयन्ति।।४२।।

भाषा–खराब (क्रकच) आदि योग अयोग (कुयोग) में यदि शुभयोग आ जाय तो वह अशुभ योग का नाश कर शुभ फल देता है। दूसरे आचार्य का मत है कि लग्न शुद्धि से सब अशुभों का नाश होता है। दोपहर के बाद भद्रा आदि कुयोग शुभ होता है अर्थात् मध्याह्न तक का ही काल अशुभ होता है।

जैसा कहा भी है कि-

विष्टिरङ्गारकश्चैव व्यतिपातश्च वैधृतिः ।
प्रत्यरिर्जन्मनक्षत्रं मध्याह्नात्परतः शुभम् ।।४२।।

भद्रा की स्थिति–

शुक्ले पूर्वार्द्धेऽष्टमीपञ्चदश्योर्भद्रैकादश्यां चतुर्थ्यां परार्द्धे ।
कृष्णेऽन्त्यार्द्धे स्यात् तृतीयादशम्योः पूर्वे भागे सप्तमीशम्भुतिथ्योः।।४३।।

अन्वयः–शुक्ले (पक्षे) अष्टमीपञ्चदश्योः पूर्वार्द्धे भद्रा भवति। एकादश्यां चतुर्थ्यां च परार्द्धे भद्रा भवति। कृष्णपक्षे तृतीयादशम्योः अन्त्यार्धे,सप्तमीशम्भुतिथ्योः पूर्वे भागे भद्रा भवति।।४३।।

भाषा–शुक्लपक्ष में अष्टमी और पूर्णिमा के पूर्वार्ध में, एकादशी और चतुर्थी के परार्ध में भद्रा होती है। कृष्णपक्ष में तृतीया और दशमी के उत्तरार्ध में तथा सप्तमी और चतुर्दशी के पूर्वार्ध में भद्रा होती है।।४३।।

भद्रा के मुख और पुच्छ का विभाग–

पञ्चद्व्यद्रिकृताष्टरामरसभूयामादिघट्यः शराः
विष्टेरास्यमसद्गजेन्दुरसरामाद्र्यश्विबाणाब्धिषु
यामेष्वन्त्यघटीत्रयं शुभकरं पुच्छं तथा वासरे
विष्टिस्तिथ्यपरार्धजा शुभकरी रात्रौ तु पूर्वार्द्धजा ।।४४।।

अन्वयः–पञ्चद्व्यद्रिकृताष्टरामरसभूयामादिघट्यः शराः (पञ्चघट्यः) विष्टेः आस्यम् असत् (अशुभम्) प्रोक्तम्, तथा गजेन्दुरसरामाद्र्यश्विबाणाब्धिषु यामेषु अन्त्यघटीत्रयं पुच्छं शुभकरं प्रोक्तम् । वासरे दिने तिथ्यपरार्धजा विष्टिः तथा रात्रौ पूर्वार्धजा शुभकरी (भवति)।।४४।।

भाषा-शुक्लपक्ष की चतुर्थी में ५ वें प्रहर की आदि की ५ घटी, अष्टमी में दूसरे प्रहर की आदि की ५ घटी, एकादशी में ७ वें प्रहर के आदि की ५ घटी, पूर्णिमा में चौथे प्रहर की आदि की ५ घटी और कृष्णपक्ष की तृतीया में ८ वें प्रहर के आदि की ५ घटी, सप्तमी में तीसरे प्रहर के आदि की ५ घटी, दशमी में छठें प्रहर के आदि की ५ घटी, चतुर्दशी में प्रथम प्रहर के आदि की ५ घटी भद्रा का मुख है, यह अशुभ होता है। इसी तरह शुक्लपक्ष की चतुर्थी में ८ वें प्रहर की अन्तिम ३ घटी, अष्टमी में प्रथम प्रहर की तीन घटी, एकादशी में छठें प्रहर की अन्तिम ३ घटी, पूर्णिमा में तीसरे प्रहर की अन्तिम ३ घटी, इसी तरह कृष्णपक्ष में क्रम से तृतीया, सप्तमी, दशमी, चतुर्दशी में सातवें, दूसरे, पाँचवें और चौथे प्रहर की अन्तिम ३ घटी भद्रा का पुच्छ है, यह शुभ होता है। दिन में तिथि के उत्तरार्ध की भद्रा और रात्रि में पूर्वार्ध की भद्रा शुभ है।।४४।।

भद्राज्ञानचक्रम् -

	शुक्लपक्ष				कृष्णपक्ष			
तिथि	४	८	११	१५	३	७	१०	१४
भद्रा	उ.	पू.	उ.	पू.	उ.	पू.	उ.	पू.
प्रहर	५	२	७	४	८	३	६	१
मुख घटी	५	५	५	५	५	५	५	५
प्रहर	८	१	६	३	७	२	५	४
पुच्छघटी	३	३	३	३	३	३	३	३

भद्रा का निवास और उसका फल-

कुम्भकर्कद्वये मर्त्ये स्वर्गेऽब्जेऽजात्त्रयेऽलिगे ।
स्त्रीधनुर्जूकनक्रेऽधो भद्रा तत्रैव तत्फलम् ।।४५।।

अन्वयः-कुम्भकर्कद्वये अब्जे (चन्द्रे) मर्त्ये (मृत्युलोके निवसति)। अजात् त्रये अलिगे (चन्द्रे) स्वर्गे, स्त्रीधनुर्जूकनक्रे अधः (पाताले) भद्रा तिष्ठति (यत्र भद्रा तिष्ठति) तत्रैव तत्फलं (भवति)।।४५।।

भाषा-कुम्भ, मीन, कर्क और सिंह राशि में चन्द्रमा हो तो भद्रा मर्त्य (मनुष्य लोक) में रहती है। मेष, वृष, मिथुन और वृश्चिक राशि में चन्द्रमा हो तो पाताल में भद्रा रहती है। भद्रा का जहाँ वास होता है वहीं उसका फल होता है।।४५।।

गुरु शुक्र के अस्तादि में वर्ज्य कार्य-

वाप्यारामतडागकूपभवनारम्भप्रतिष्ठे व्रता-
रम्भोत्सर्ग-वधूप्रवेशन-महादानानि सोमाष्टके ।

गोदानाग्रयण-प्रपाप्रथमकोपाकर्म्म-वेदव्रतं
नीलोद्वाहमथातिपन्नशिशुसंस्कारान् सुरस्थापनम् ।।४६।।
दीक्षा-मौञ्जि-विवाह-मुण्डनमपूर्व-देवतीर्थेक्षणं
संन्यासाग्निपरिग्रहौ नृपतिसन्दर्शाभिषेकौ गमम् ।
चातुर्मास्यसमावृती श्रवणयोर्वेधं परीक्षां त्यजेत्-
वृद्धत्वास्तशिशुत्व इज्यसितयोर्न्यूनाधिमासे तथा ।।४७।।

अन्वयः–इज्यसितयोः वृद्धत्वास्तशिशुत्वे तथा न्यूनाधिमासे वाप्यारामतडाग-कूपभवनारम्भप्रतिष्ठे, व्रतारम्भोत्सर्गवधूप्रवेशनमहादानानि, सोमाष्टके गोदानाग्रयण-प्रपाप्रथमकोपाकर्म वेदव्रतम् , नीलोद्वाहम् अथ अतिपन्नशिशुसंस्कारान् , सुरस्थापनम्, दीक्षामौञ्जिविवाहमुण्डनम् ,अपूर्वदेवतार्थेक्षणम् , संन्यासाग्निपरिग्रहौ नृपतिसन्दर्शाभिषेकौ, गमम् , चातुर्मास्यसमावृती, श्रवणयोः वेधं परीक्षां त्यजेत् ।।४६-४७।।

भाषा–वापी (बावली), उपवन, तालाब, कुवाँ और भवन का आरम्भ-नवनिर्माण, प्रतिष्ठा एवं गृहप्रवेश, अनन्त और शिवरात्रि आदि व्रतों का आरम्भ और उत्सर्ग-उद्यापन, वधूप्रवेश, षोडश महादान, सोमयज्ञ, अष्टकाश्राद्ध, गोदान-केशान्तकर्म, आग्रयण-नवान्न भोजन, जलशाला (पौसरा-प्याऊ), प्रथम श्रावणी कर्म, वेदव्रत-उपनिषद्व्रत-महानाम्नी व्रत और वेद इनका आरम्भ, नीलवृषोत्सर्ग, समय पर नहीं हुए बालकोंका संस्कार, देवताकी स्थापना, गुरु से मन्त्र ग्रहण करना, उपनयन, विवाह, मुण्डन, प्रथम देवता दर्शन और तीर्थगमन, संन्यास, अग्निहोत्र, राजदर्शन,राज्याभिषेक, यात्रा, चातुर्मास्ययाग, समावर्तन, कणविध, दिव्यपरीक्षा ये सब कार्य, गुरु और शुक्र के वृद्धत्व, अस्त और बालत्व में,मलमास तथा क्षयमास में त्याग देना चाहिये।।४६-४७।।

सिंहस्थ गुर्वादित्य दोष–

अस्ते वर्ज्यं सिंहनक्रस्थजीवे वर्ज्यं केचिद् वक्रगे चातिचारे ।
गुर्वादित्ये विश्वघस्रेऽपि पक्षे प्रोचुस्तद्वन्तरत्नादिभूषाम् ।।४८।।

अन्वयः–अस्ते वर्ज्यं (यत्कर्म तत्) सिंहनक्रस्थजीवेऽपि वर्ज्यम् , केचित् (आचार्याः) वक्रगे अतिचारे च (जीवे) गुर्वादित्ये, विश्वघस्रे पक्षेऽपि च तद्वत् दन्तरत्नादिभूषां वर्ज्यं प्रोचुः।।४८।।

भाषा–जो कार्य गुरु के अस्त में वर्जित है वह सिंह और मकरस्थ गुरु में भी वर्जित है। कोई-कोई आचार्य कहते हैं कि, गुरु के वक्र और अतिचारी होने पर तथा सूर्य और गुरु एक राशि में हो तो तब और १३ दिन के पक्ष में भी शुभकर्म करना वर्जित है। इसी प्रकार हाथी के दाँत और रत्नादि से बने आभूषण बनवाना और पहनना भी वर्जित है।।४८।।

सिंहस्थ गुरु का परिहार-

सिंहे गुरौ सिंहलवे विवाहो नेष्टोऽथ गोदोत्तरतश्च यावत् ।
भागीरथीयाम्यतटं हि दोषो नान्यत्र देशे तपनेऽपि मेषे ।।४९।।

अन्वयः-सिंहे सिंहलवे वा गुरौ (सति) विवाहः नेष्टः। अथ गोदोत्तरतः भागीरथीयाम्यतटं यावत् दोषः अन्यत्र न दोषः। मेषे तपनेऽपि न दोषः स्यात् ।।४९।।

भाषा-गुरु सिंह राशि में और सिंह के ही नवमांश में हो तो विवाह अशुभ है। गोदावरी नदी से उत्तर और गङ्गा के दक्षिण तट पर्यन्त भाग में आने वाले मध्यप्रान्त और राजस्थान आदि देशों में सिंह के बृहस्पति में शुभ कार्य नहीं करना चाहिये। अन्य देशों में यह दोष नहीं होगा। यदि मेष राशि का सूर्य हो तो किसी भी देश में सिंहस्थ गुरु का दोष नहीं लगता है।।४९।।

सिंहस्थ गुरु के निषेध का निर्णय-

मघादिपञ्चपादेषु गुरुः सर्वत्र निन्दितः ।
गङ्गागोदान्तरं हित्वा शेषाङ्घ्रिषु न दोषकृत् ।।५०।।
मेषेऽर्के सन् व्रतोद्वाहौ गङ्गागोदान्तरेऽपि च ।
सर्वः सिंहगुरुर्वर्ज्यः कलिङ्गे गौडगुर्जरे ।।५१।।

अन्वयः-मघादिपञ्चपादेषु गुरुः सर्वत्र निन्दितः। शेषाङ्घ्रिषु गङ्गागोदान्तरं हित्वा दोषकृत् न स्यात् । मेषे अर्के गङ्गगोदान्तरेऽपि व्रतोद्वाहौ सन् (शुभः)। कलिंगे गौडगुजरे (देशे) सर्वः सिंहगुरुः वर्ज्यः।।५०-५१।।

भाषा-मघा के चार चरण तथा पूर्वाफाल्गुनी का एक चरण इस तरह पाँच चरण तक सिंहस्थ गुरु सब देशों में निन्दित है। शेष पूर्वाफाल्गुनी के तीन चरण और उत्तराफाल्गुनीका एक चरण इस तरह चार चरण गङ्गा और गोदावरी के मध्य के देशों में ही निन्दित है। अन्य देशों में नहीं। मेष का सूर्य रहे तो गङ्गा और गोदावरी के बीच के देशों में उपनयन, विवाह आदि करना शुभ है। परन्तु कलिंग, गौड़ और गुर्जर देश में सम्पूर्ण सिंह का गुरु वर्जित है।।५०-५१।।

मकरस्थ गुरु का परिहार-

रेवापूर्वे गण्डकीपश्चिमे च शोणस्योदग्दक्षिणे नीचइज्यः ।
वर्ज्यो नायं कौङ्कणे मागधे च गौडे सिन्धौ वर्जनीयः शुभेषु ।।५२।।

अन्वयः-रेवापूर्वे, गण्डकीपश्चिमे, शोणस्य उदक् दक्षिणे (तीरे) नीच इज्यः न वर्ज्यः, कौङ्कणे, मागधे, गौडे, सिन्धौ च अयं शुभेषु वर्जनीयः।।५२।।

भाषा- रेवा-नर्मदा नदी, जो जबलपुर आदि देशों से होकर बहती है उसके पूर्व, गण्डकी नदी जो पटना के पास गङ्गामें जाकर गिल जाती है उसके पश्चिम और शोणनदी के उत्तर तथा दक्षिण देशों में नीच (मकर) का गुरु वर्जित नहीं है। यह नीच (मकर) का गुरु कोङ्कण, दक्षिण भारत के अन्तर्गत कनाडा,

रत्नागिरि, कोलाबा, बम्बई और थाना आदि भाग में मगध (बिहार प्रांत का दक्षिण भाग) में, गौड़ और सिंधु देश में शुभ कार्य के लिये त्याज्य है।।५२।।

लुप्तसंवत्सरदोष और तज्जन्यदोष का अपवाद–

गोऽजान्त्य-कुम्भेतरभेऽतिचारो नो पूर्वराशिं गुरुरेति वक्रितः ।
तदा विलुप्ताब्द इहातिनिन्दितः शुभेषु रेवासुरनिम्नगान्तरे ।।५३।।

अन्वयः–गोऽजान्त्यकुम्भेतरभे अतिचारगः वक्रितः गुरुः यदा पूर्वराशिं न एति तदा स विलुप्ताब्दः (कथ्यते)। स इह रेवासुरनिम्नगान्तरे शुभेषु अतिनिन्दितः (भवति)।।५३।।

भाषा–वृष, मेष, मीन, कुम्भ इनमें भिन्न राशियों में गुरु अतिचारी होकर यदि फिर पूर्व राशि में नहीं आवे तो लुप्तसंवत्सर होता है। यह लुप्त संवत्सर गङ्गा और नर्मदा नदी के बीच के देश (मध्य भारत और राजस्थान आदि) में शुभ कार्य के लिये अत्यन्त निन्दित है।।५३।।

वारप्रवृत्ति–

पादोनरेखापरपूर्वयोजनैः पलैर्युतोनास्तिथयो दिनार्धतः ।
ऊनाधिकास्तद्विवरोद्भवैः पलैरूर्ध्वं तथाधो दिनपप्रवेशनम् ।।५४।।

अन्वयः–पादोनरेखापरपूर्वयोजनैः पलैः क्रमशः युतोनाः तिथयः (पञ्चदशघट्यः) यदि दिनार्धतः ऊनाधिकास्तदा तद्विवरोद्भवैः पलैः ऊर्ध्वं तथा अधः दिनपप्रवेशनम् (स्यात्)।।५४।।

भाषा–रेखा-भूमध्यरेखा (लंका से सुमेरु तक किये हुए सूत्र के नीचे आने वाले देशों को मध्यरेखा[1] कहते हैं) इससे जितने योजन पश्चिम में वार प्रवृत्ति का विचार करना हो तो योजन के चतुर्थांश को योजन में घटाकर शेष को पल मान कर १५ घटी में जोड़ दे और पूर्व के बाद देश में १५ घटी में घटा दे। यदि यह घटी दिनार्ध से अल्प हो तो सूर्योदय के बाद उतनी घटी पर वारप्रवृत्ति होगी और यदि दिनार्ध से अधिक हो तो उतनी ही घटी सूर्योदय से पहले वार-प्रवेश समझना चाहिये।।५४।।

उदाहरण–जैसे रेखा देश से ७६ योजन पूर्व प्रयाग है तो ७६ में इसके चतुर्थांश १९ को घटाने से पहले ५७ पल हुए, इसको पूर्व होने के कारण १५ घटी में घटाने से १४।३ बचा, इष्ट दिनका दिनार्ध १६ घटी १५ पल है तो इन दोनों के अन्तर २ घटी २२ पल तुल्य सूर्योदय के बाद प्रयाग में वार-प्रवेश समझना। शेष यदि दिनार्ध से अधिक हो तो उतनी ही घटी सूर्योदय से पहिले ही वार-प्रवेश समझा जाता है।।५४।।

१–पुरी रक्षसा देवकन्याथ काञ्ची सितः पर्वतः पर्यलीवत्सगुल्मम् ।
पुरी चोज्जयिन्याह्वया गर्गराटं कुरुक्षेत्रमेरुभुवो मध्यरेखा ।।
– करणकुतूहले भास्करः।

काल होरेश जानने का प्रकार–

वारादेर्घटिका द्विघ्नाः स्वाक्षहृच्छेषवर्जिताः ।
सैकास्तष्टा नगैः कालहोरेशा दिनपात् क्रमात् ।।५५।।

अन्वयः–वारादेः घटिका द्विघ्नाः स्वाक्षहृच्छेषवर्जिताः, सैकाः नगैः तष्टाः, दिनपात् क्रमात् कालहोरेशाः (भवन्ति)।।५५।।

भाषा–वार प्रवृत्ति से इष्ट घटी तक जो घटी हो उनको दूना कर दो जगह रक्खे। दूसरे जगह ५ का भाग देकर जो शेष बचे उसको प्रथम स्थान की द्विगुणित घटी में घटाकर जो शेष बचे उसमें एक जोड़कर सात का भाग देने पर जो शेष बचे वह दिनपति के क्रम से काल होरेश होगा।।५५।।

उदाहरण–जैसे शुक्रवार में प्रवेश से १६ घटी पर कालहोरेश जानना है तो ∴ इष्ट घटी को दूना करने से ३२ इसमें ५ के भाग से शेष २ को घटाने से ३० फिर इसमें १ जोड़कर ७ के भाग देकर शेष ३ शुक्रवार से गिनने पर रवि कालहोरेश हुआ।।५५।।

कालहोरा का प्रयोजन–

वारे प्रोक्तं कालहोरासु तस्य धिष्ण्ये प्रोक्तं स्वामितिथ्यंशकेऽस्य ।
कुर्य्यादिक्छूलादि चिन्त्यं क्षणेषु नैवोल्लङ्घ्यः पारिघश्चापि दण्डः ।।५६।।

अन्वयः–वारे प्रोक्तं कर्म तस्य (दिनस्य) कालहोरासु कुर्यात् । धिष्ण्ये प्रोक्तं अस्य (धिष्ण्यस्य) तिथ्यंशके कुर्यात् , दिक्शूलादि क्षणेषु चिन्त्यम् । पारिघः दण्डश्च नैव उल्लंघ्यः।।५६।।

भाषा–जिस दिन में जो कार्य कहा गया है, वह दिन यदि दूषित हो और उस दिन वह कर्म करना आवश्यक हो तो उस दिन की कालहोरा में भी किया जा सकता है। इसी तरह जिस नक्षत्र में जो कार्य कहे गये हैं वह कार्य उस नक्षत्र के स्वामी के तिथ्यंश (तिथि स्वामी के मुहूर्त) में भी किये जा सकते हैं। मुहूर्त में वारशूल,नक्षत्रशूल और लालाटिक योग का विचार अवश्य ही करना चाहिये। परिघदण्ड का उल्लंघन तो कभी भी किसी प्रकार नहीं करना चाहिये।।५६।।

मन्वादि और युगादि तिथि–

मन्वाद्यास्त्रितिथी मधौ तिथिरवी ऊर्जे शुचौ दिक्तिथौ
ज्येष्ठेऽन्त्ये च तिथिस्त्विषे नव तपस्यश्वाः सहस्ये शिवाः ।
भाद्रेऽग्निश्च सिते त्वामाष्ट नभसः कृष्णे युगाद्याः सिते
गोऽग्नी बाहुलराधयोर्मदनदर्शौ भाद्रमाघासिते ।।५७।।

अन्वयः–मधौ त्रितिथी, ऊर्जे तिथिरवी, शुचौ दिक्तिथी, ज्येष्ठे अन्त्ये च तिथिः, इषे नव, तपसि अश्वाः, सहस्ये शिवाः, भाद्रे अग्निः (एते) सिते पक्षे तथा नभसः कृष्णे अमाष्ट मन्वाद्याः (कथ्यन्ते) बाहुलराधयोः सिते गोऽग्नी भाद्रमाघासिते (पक्षे) मदनदर्शौ युगाद्याः कथ्यन्ते।।५७।।

भाषा-चैत्र शुक्ल की ३।१५, कार्तिक शुक्ल की १५।१२, आषाढ़ शुक्ल की १०।१५, ज्येष्ठ शुक्ल की १५, फाल्गुन शुक्ल की १५, आश्विन शुक्ल की ९, माघ शुक्ल की ७, पौष शुक्ल की ११, भाद्र शुक्ल की ३, और श्रावण कृष्ण की अमावस्या और अष्टमी ये १४ मन्वादि तिथियाँ हैं, इनमें स्वायम्भु, स्वारोचिष, औत्तम, तामस, रैवत, चाक्षुष, वैवस्वत, सावर्णि, दक्षसावर्णि, ब्रह्मसावर्णि, धर्मसावर्णि, रुद्रसावर्णि, देव सावर्णि और इन्द्रसावर्णि आदि मन्वादि का आरम्भ होता है। इसलिये इनको मन्वादितिथि कहते हैं। कार्तिकशुक्ल की ९,वैशाखशुक्ल की ३,भाद्रकृष्ण की १३, और माघ कृष्ण की ३० ये युगादि तिथियाँ हैं, इनमें कोई शुभ कार्य नहीं करना चाहिये।।५७।।

इति शुभाशुभप्रकरणं समाप्तम् ।।

नक्षत्रप्रकरणम्

नक्षत्रों के स्वामी-

नासत्यान्तकवह्निधातृशशभृद्रुद्रादितीज्योरगाः
ऋक्षेशाः पितरो भगोऽर्यमरवी त्वष्टा समीरः　क्रमात् ।
शक्राग्नी खलु मित्रशक्रनिर्ऋतिक्षीराणि विश्वे　विधि-
र्गोविन्दो　वसुतोयपाजचरणाऽहिर्बुध्न्यपूषाभिधाः ।।१।।

अन्वयः-नासत्यान्तकवह्निधातृशशभृद्रुद्रादितीज्योरगाः, पितरः, भगः, अर्यमरवी, त्वष्टा, समीरः,शक्राग्नी, मित्रः, शक्रनिर्ऋतिक्षीराणि, विश्वे, विधिः, गोविन्दः, वसुतोयपाजचरणाऽहिर्बुध्न्यपूषाभिधाः एते क्रमात् ऋक्षेशाः ज्ञेयाः।।१।।

भाषा-अश्विनी के अश्विनीकुमार, भरणी के यम, कृत्तिका के अग्नि, रोहिणी के ब्रह्मा, मृगशिरा के चन्द्रमा, आर्द्रा के शिव, पुनर्वसु के अदिति,पुष्य के बृहस्पति, आश्लेषा के सर्प, मघा के पितर, पूर्वाफाल्गुनी के भग (सूर्य विशेष), उत्तराफाल्गुनी के अर्यमा (सूर्यविशेष), हस्त के रवि, चित्रा के विश्वकर्मा, स्वाती के वायु, विशाखा के शक्राग्नि, अनुराधा के मित्र, ज्येष्ठा के इन्द्र, मूल के राक्षस, पूर्वाषाढ़ा के जल, उत्तराषाढ़ा के विश्वेदेव, अभिजित् के विधि, श्रवण के गोविन्द, धनिष्ठा के वसु, शतभिषा के वरुण, पूर्वभाद्रपद के अजचरण, उत्तरभाद्रपद के अहिर्बुध्न्य और रेवती के पूषा (सूर्य-विशेष) स्वामी हैं।।१।।

नक्षत्रों के स्वामी जानने का चक्र-

नक्षत्र	देवता	तारा	रूप	अवकहडा	गण	योनि	नाड़ी
अश्विनी	अ०कु०	३	घोड़ा	चू चे चो ला	दे.	अश्व	१
भरणी	यमराज	३	भग	ली लू ले लो	मनु.	गज	२

नक्षत्र	देवता	तारा	रूप	अवकहडा	गण	योनि	नाड़ी
कृत्तिका	अग्नि	६	छूरी	अ इ उ ए	राक्ष.	छाग	३
रोहिणी	ब्रह्मा	५	गाड़ी	ओ बा बी बू	म.	नाग	३
मृगशिरा	चन्द्रमा	३	हरिण	बे बो का की	दे.	नाग	२
आर्द्रा	शिव	१	मणि	कू घ ङ छ	म.	श्वान	१
पुनर्वसु	अदिति	४	मकान	क को हा ही	दे.	मार्जा.	१
पुष्य	बृहस्पति	३	बाण	हू हे हो डा	दे.	छाग	२
श्लेषा	सर्प	५	चक्र	डी डू डे डो	रा.	मार्जा.	३
मघा	पितर	५	घर	मा मी मू मे	रा.	मूषक	३
पू.फा.	भग	२	मचान	मो टा टी टू	म.	मूषक	२
उ.फा.	अर्यमा	२	शय्या	टे टो पा पी	म.	गौ	१
हस्त	सूर्य	५	हाथ	पू ष ण ठ	दे.	महि.	१
चित्रा	त्वष्टा	१	मोती	पे पो रा री	रा.	व्याघ्र	२
स्वाती	पवन	१	मूँगा	रू रे रो ता	दे.	महि.	३
विशाखा	इन्द्राग्नि	४	तोरण	ती तू ते तो	रा.	व्याघ्र	३
अनुराधा	मित्र	४	भात	न नी नू ने	दे.	मृग	२
ज्येष्ठा	इन्द्र	३	कुण्डल	नो य यी यू	रा.	मृग	१
मूल	राक्षस	११	सिंहपुच्छ	ये यो भा भी	रा.	श्वान	१
पू.षा.	जल	२	हाथीदाँत	भू ध फ ढ	म.	मर्कट	२
उ.षा.	विश्वेदेव	२	मचान	भे भो ज जी	म.	नेवला	३
अभिजि.	विधि	३	त्रिकोण	जू जे जो ख.	दे.	नेवला	०
श्रवण	विष्णु	३	वामन	खि खू खे खो	दे.	वानर	३
धनिष्ठा	वसु	४	मृदङ्ग	ग गी गू गे	रा.	सिंह	२
शतभिषा	वरुण	१००	वृत्त	गो सा सी सू	रा.	अश्व	१
पू.भा.	अजपाद	२	मञ्च	से सो दा दी	म.	सिंह	१
उ.भा.	अहिर्बुध्न्य	२	यमल	दु थ झ ञ	म.	गौ	२
रेवती	पूषा	३२	मृदङ्ग	दे दो चा ची	दे.	गज	३

ध्रुवसंज्ञक नक्षत्र तथा उनमें किये जाने वाले कृत्य–

उत्तरात्रयरोहिण्यो भास्करश्च ध्रुवं स्थिरम् ।
तत्र स्थिरं बीजगेहशान्त्यारामादिसिद्धये ।।२।।

अन्वयः-उत्तरात्रयरोहिण्यः च (पुनः) भास्करः (रविः) ध्रुवं (ध्रुवसंज्ञकम्) स्थिरं (स्थिरसंज्ञकं) च वर्तते। तत्र स्थिरं (स्थिरकर्म) बीजगेहशान्त्यारामादि कर्म च सिद्धये (भवति)।।२।।

भाषा-तीनों उत्तरा (उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़, उत्तरभाद्रपद), रोहिणी और रविवार ये ध्रुव और स्थिरसंज्ञक हैं, इनमें स्थिरकर्म जैसे गृहारम्भ, बीजवपन, शान्तिकर्म (ग्रहादिक शान्ति), बगीचा लगाना आदि कार्य तथा मृदुनक्षत्रोक्त कार्य करना शुभ है।।२।।

चरसंज्ञक नक्षत्र-

स्वात्यादित्ये श्रुतेस्त्रीणि चन्द्रश्चापि चरं चलम्।
तस्मिन् गजादिकारोहो वाटिकागमनादिकम्।।३।।

अन्वयः-स्वात्यादित्ये श्रुतेः त्रीणि (श्रवण-धनिष्ठा-शततारा) तथा चन्द्रः (चन्द्रवारः) चरं (चरसंज्ञकं) चलं (चलसंज्ञकं च ज्ञेयम्)। तस्मिन् गजादिकारोहः वाटिकागमनादिकञ्च शुभं स्यात्।।३।।

भाषा-स्वाती, पुनर्वसु, श्रवण से तीन (श्रवण-धनिष्ठा-शतभिषा) ये नक्षत्र और सोमवार ये चर और चलसंज्ञक हैं, इनमें हाथी, घोड़ा पर चढ़ना, फुलवारी आदि लगाना और यात्रादि तथा लघुसंज्ञक नक्षत्रोक्त कर्म करना भी शुभ है।।३।।

उग्रसंज्ञक नक्षत्र-

पूर्वात्रयं याम्यमघे उग्रं क्रूरं कुजस्तथा।
तस्मिन् घाताग्निशाठ्यानि विषशस्त्रादि सिद्ध्यति।।४।।

अन्वयः-पूर्वात्रयं याम्यमघे तथा कुजः (भौमवारः) इति उग्रं क्रूरञ्च (उग्रसंज्ञकं क्रूरसंज्ञकञ्च) ज्ञेयम्। तस्मिन् धाताग्निशाठ्यानि विषशस्त्रादि सिद्ध्यति।।४।।

भाषा-तीनों पूर्वा (पू.फा.,पू.षा.,पू.भा.), भरणी, मघा और मङ्गलवार ये उग्र और क्रूरसंज्ञक हैं, इनमें घात (मारण), अग्निकार्य, शठता, विषादिका प्रयोग, शस्त्र बनाना तथा दारुण संज्ञक नक्षत्रों के कार्य शुभ होते हैं।।४।।

मिश्रसंज्ञक नक्षत्र-

विशाखाग्नेयभे सौम्यो मिश्रं साधारणं स्मृतम्।
तत्राग्निकार्य्यं मिश्रञ्च वृषोत्सर्गादि सिद्ध्यति।।५।।

अन्वयः-विशाखाग्नेयभे तथा सौम्यः (बुधवारः) मिश्रं तथा साधारणं स्मृतम्। तत्र (तस्मिन्) मिश्रं अग्निकार्यं वृषोत्सर्गादि च सिद्ध्यति।।५।।

भाषा-विशाखा, कृत्तिका और बुधवार ये मिश्र और साधारण संज्ञक हैं, इनमें अग्निकार्य, मिश्र (अन्य नक्षत्रों में कहे हुए कार्य) और वृषोत्सर्ग, आदि शब्द से उग्रसंज्ञक नक्षत्र के भी कार्य करना शुभ होता है।।५।।

क्षिप्र और लघुसंज्ञक नक्षत्र और इनमें किये जानेवाले कर्म-

हरताश्विपुष्याभिजितः क्षिप्रं लघु गुरुस्तथा ।
तस्मिन् पण्यरतिज्ञानभूषाशिल्पकलादिकम् ।।६।।

अन्वयः-हस्ताश्विपुष्याभिजितः गुरुः (गुरुवारः) क्षिप्रं क्षिप्रसंज्ञकम् लघु (लघुसंज्ञकम्) भवति, तस्मिन् पण्यरतिज्ञानभूषाशिल्पकलादिकञ्च शुभं ज्ञेयम् ।।६।।

भाषा-हस्त, अश्विनी, पुष्य, अभिजित् नक्षत्र और गुरुवार, क्षिप्र और लघुसंज्ञक हैं, इनमें दूकान लगाना, रति, ज्ञान (शास्त्राध्ययन), आभूषण बनाना या बनवाना, शिल्प (चित्र रचना), कला (नृत्य आदि ६४ कलाएँ) सीखना और आदि शब्द से चर संज्ञक नक्षत्रों में कहे हुए कार्यों को करना भी शुभ है।।६।।

मृदुसंज्ञक नक्षत्र-

मृगान्त्यचित्राभित्रर्क्षं मृदु मैत्रं भृगुस्तथा ।
तत्र गीताम्बरक्रीडामित्रकार्यविभूषणम् ।।७।।

अन्वयः-मृगान्त्यचित्रामित्रर्क्षं तथा भृगुः, मृदु, मैत्रं, (भवति) तत्र (तस्मिन्) गीताम्बरक्रीडा मित्रकार्यं विभूषणं च (शुभं भवति)।।७।।

भाषा-मृगशिरा, रेवती, चित्रा, अनुराधा और शुक्रवार ये मृदु और मैत्र संज्ञक हैं, इनमें गीत, वस्त्र, खेल, मित्रकार्य (मित्र का कार्य करना), और आभूषण (गहना) बनाना या धारण करना शुभ है।।७।।

तीक्ष्णसंज्ञक और दारुणसंज्ञक नक्षत्र-

मूलेन्द्रार्द्राहिभं सौरिस्तीक्ष्णं दारुणसंज्ञकम् ।
तत्राभिचारघातोग्रभेदाः पशुदमादिकम् ।।८।।

अन्वयः-मूलेन्द्रार्द्राहिभं सौरिः तीक्ष्णं दारुणसंज्ञकञ्च भवति। तत्र अभिचार-घातोग्रभेदाः पशुदमादिकं (सिद्ध्यति)।।८।।

भाषा-मूल, ज्येष्ठा, आर्द्रा, आश्लेषा और शनिवार ये तीक्ष्ण और दारुण संज्ञक हैं, इनमें अभिचार (मारणादि प्रयोग), घात (हथियार से मारना), उग्रकार्य (भयङ्कर कृत्य), भेद (फूट करवाना), अत्यन्त घनिष्ट मित्रों में परस्पर कलह, पशुदम (पशु-शिक्षा) आदि सब कार्य सिद्ध होता है।।८।।

ऊर्ध्वमुख, अधोमुख और तिर्यङ्मुख नक्षत्र-

मूलाहिमिश्रोग्रमधोमुखं भवेदूर्ध्वास्यमार्द्रेज्यहरित्रयं ध्रुवम् ।
तिर्यङ्मुखं मैत्रकरानिलादितिज्येष्ठाश्विभानीदृशकृत्यमेषु सत् ।।९।।

अन्वयः-मूलाहिमिश्रोग्रं अधोमुखं भवेत् । आर्द्रेज्यहरित्रयं ध्रुवं ऊर्ध्वास्यं (स्यात्)। मैत्रकरानिलादितिज्येष्ठाश्विभानि तिर्यङ्मुखं (भवन्ति) एषु ईदृशं कृत्यं सत् ।।९।।

भाषा-मूल, आश्लेषा, कृत्तिका और विशाखा, तीनों पूर्वा, भरणी और मघा ये नव नक्षत्र अधोमुख हैं। आर्द्रा, पुष्य, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, तीनों

उत्तरा और रोहिणी ये नव नक्षत्र ऊर्ध्वमुख हैं। मृग., रेवती, चित्रा, अनुराधा, हस्त, स्वाती, पुनर्वसु, ज्येष्ठा, अश्विनी ये सब नक्षत्र तिर्यङ्मुख नक्षत्र हैं। इन नक्षत्रों के मुख के अनुसार उसी तरह का कार्य सिद्ध होता है। जैसे अधोमुख में कुँआ वगैरह खुदवाना, ऊर्ध्वमुख में मकान वगैरह बनवाना, तिर्यङ्मुख में बाँध बँधवाना, यात्रा और चक्र, रथ इत्यादि बनवाना शुभ है।।९।।

मूँगा, हाथी दाँत के कड़े आदि का धारण मुहूर्त–

पौष्णध्रुवाश्विकरपञ्चकवासवेज्या-
दित्ये प्रवालरदशङ्खसुवर्णवस्त्रम् ।
धार्यं विरिक्तशनिचन्द्रकुजेऽह्नि रक्तं
भौमे ध्रुवादितियुगे शुभगा न दध्यात् ।।१०।।

अन्वयः–पौष्णध्रुवाश्विकरपञ्चकवासवेज्यादित्ये (नक्षत्रे) विरिक्तशनिचन्द्रकुजेऽह्नि प्रवालरदशङ्खसुवर्णवस्त्रं च धार्यम् । भौमे रक्तं वस्त्रं च धार्यम् । ध्रुवादितियुगे (नक्षत्रे) शुभगा (सधवा स्त्री) नववस्त्रादिकं न दध्यात् ।।१०।।

भाषा–रेवती, ध्रुवसंज्ञक, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपदा, अश्विनी, हस्त से पाँच नक्षत्र, हस्त , चित्रा, स्वाती, विशाखा, अनुराधा, वासव-धनिष्ठा, इज्य-पुष्य, आदित्य, पुनर्वसु इन नक्षत्रों में रिक्ता-चतुर्थी, नौमी, चतुर्दशी को छोड़कर अन्य तिथियों, सोम, मङ्गल, शनि इन वारों को छोड़कर अन्य वारों में प्रवाल (मूँगा),हाथी के दाँत का कङ्गन, सोना, श्वेत वस्त्र धारण करे। मङ्गलवार को रक्त वस्त्र धारण करे। ध्रुवसंज्ञक तथा पुनर्वसु और पुष्य नक्षत्र में सौभाग्यवती स्त्री नूतन वस्त्रादिक धारण नहीं करे।।१०।।

वस्त्राणां नवभागकेषु च चतुष्कोणेऽमरा राक्षसा
मध्यत्र्यंशगता नरास्तु सदशे पाशे च मध्यांशयोः ।
दग्धे वा स्फुटितेऽम्बरे नवतरे पङ्कादिलिप्ते न सद् -
रक्षोंऽशे नृसुरांशयोः शुभमसत् सर्वांशके प्रान्ततः ।।११।।

अन्वयः–वस्त्राणां नवभागकेषु चतुष्कोणे अमराः (देवाः) मध्यत्र्यंशगताः राक्षसाः तु (पुनः) मध्यांशयोः सदशे पाशे नराः (ज्ञेयाः) तत्र रक्षोंऽशे नवतरे अम्बरे दग्धे स्फुटिते पङ्कादिलिप्ते वा सति न सत् (अशुभं भवति) । नृसुरांशयोः शुभं, प्रान्ततः सर्वांशके असत् (अशुभम्)।।११।।

भाषा–नव भागों में बाँटे हुए वस्त्र जलने और फटने आदि के शुभाशुभ फल को जानने के लिए नव कोष्ठक (खाना) का चक्र बना कर उसके चारों कोनों में अमर (देवता) की कल्पना करना और बीच के तीनों खानों में राक्षस की तथा मध्य अंश के आदि और अन्त के दोनों खानों में मनुष्य की कल्पना करे। यदि

राक्षसों के अंश में नया कपड़ा जल जाय अथवा फट जाय किंवा कीचड़ आदि से गीला हो जाय तो वह वस्त्र अशुभ होता है। व्यवहार में ऐसे वस्त्र को नहीं लाना चाहिए। मनुष्य और देवता के अंश में यदि जल जाय, फट जाय अथवा कीचड़ आदि से गीला हो जाय तो वह शुभ है। अगर किनारे-किनारे सबों के ही अंश में ऐसा हो जाय तो वह अशुभ है।।११।।

वस्त्रचक्रम् –

देव	राक्षस	देव
मनुष्य	राक्षस	मनुष्य
देव	रांक्षस	देव

विशेष–

विप्राज्ञया तथोद्वाहे राज्ञा प्रीत्यार्पितञ्च यत् ।
निन्द्येऽपि धिष्ण्ये वारादौ वस्त्रं धार्य्यं जगुर्बुधाः ।।१२।।

अन्वयः–विप्राज्ञया तथा उद्वाहे (विवाहकर्मणि) राज्ञा प्रीत्यार्पितञ्च यत् वस्त्रं तत् निन्द्येऽपि धिष्ण्ये वारादौ धार्यम् इति बुधा जगुः।।१२।।

भाषा–निन्दित नक्षत्र, वार, तिथि, व्यतीपात और भद्रा आदि दुष्ट योगों में भी ब्राह्मण की आज्ञा से तथा विवाह में प्रसन्नता पूर्वक राजा द्वारा दिये हुये वस्त्र को धारण करना चाहिये ऐसा विद्वानों ने कहा है।।१२।।

लता, वृक्षारोपण तथा राजदर्शन (अधिकारी से मिलना) मुहूर्त–

राधामूलमृदुध्रुवर्क्षवरुणक्षिप्रैर्लतापादपा-
रोपोऽथो नृपदर्शनं ध्रुवमृदुक्षिप्रश्रवोवासवैः ।
तीक्ष्णोग्राम्बुपभेषु मद्यमुदितं क्षिप्रान्त्यवह्नीन्द्रभा-
दित्येन्द्राम्बुपवासवेषु हि गवां शस्तः क्रयो विक्रयः ।।१३।।

अन्वयः–राधामूलमृदुध्रुवर्क्षवरुणक्षिप्रैः (नक्षत्रैः) लतापादपारोपः (शुभः)। अथ ध्रुवमृदुक्षिप्रश्रवोवासवैः (नक्षत्रैः) नृपदर्शनम् (शुभम्)। तीक्ष्णोग्राम्बुपभेषु मद्यम् उदितम्। क्षिप्रान्त्यवह्नीन्द्रभादित्येन्द्राम्बुपवासवेषु हि गवां क्रयः विक्रयः शस्तः (स्यात्) ।।१३।।

भाषा–विशाखा, मूल, मृदुसंज्ञक-चित्रा, अनुराधा, मृगशिरा और रेवती, ध्रुवसंज्ञक-रोहिणी और तीनों उत्तरा, वारुण-शतभिषा तथा क्षिप्र संज्ञक अश्विनी, पुष्य और अभिजित् नक्षत्रों में लता और वृक्षों का लगाना शुभ है। ध्रुवसंज्ञक, मृदुसंज्ञक, क्षिप्रसंज्ञक, श्रवण, धनिष्ठा इन नक्षत्रों में राजा (बड़े आदमियों) से मुलाकात करना शुभ है। तीक्ष्ण संज्ञक, उग्रसंज्ञक, शतभिषा इन नक्षत्रों में मद्य बनाना शुभ है। क्षिप्रसंज्ञक, रेवती, विशाखा, पुनर्वसु, ज्येष्ठा, शतभिषा, धनिष्ठा इन नक्षत्रों में गौ का खरीदना और बेचना शुभ है।।१३।।

पशुरक्षा एवं स्थितिनिवेश–

लग्ने शुभे चाष्टमशुद्धिसंयुते रक्षा पशूनां निजयोनिभे चरे ।
रिक्ताष्टमीदर्शकुजश्रवोध्रुवत्वाष्ट्रेषु यानं स्थितिवेशनं न सत् ।।१४।।

अन्वयः–अष्टमशुद्धिसंयुते शुभे लग्ने च (पुनः) निजयोनिभे, चरे पशूनां रक्षा शुभा भवति। रिक्ताष्टमीदर्शकुजश्रवोध्रुवत्वाष्ट्रेषु दिनतिथिनक्षत्रेषु (पशूनां) यानं स्थितिवेशनं च न सत् ।।१४।।

भाषा–अष्टम स्थान शुद्ध (ग्रह से रहित) हो और लग्न में शुभग्रह की राशि हो, अपनी योनि के नक्षत्र (विवाहोक्त नक्षत्र) हो और चर नक्षत्र हो तो पशुओं की रक्षा शुभ है। तथा रिक्ता, अष्टमी, अमावस्या तिथि, मङ्गलवार, श्रवण, ध्रुवसंज्ञक और चित्रा नक्षत्र इनमें गौ का घर से बाहर निकालना, घर में रखना और पालन करने का प्रारम्भ करना अशुभ होता है।।१४।।

औषधि निर्माण और भक्षण मुहूर्त–

भैषज्यं सल्लघुमृदुचरे मूलभे द्व्यङ्गलग्ने
शुक्रेन्दिवज्ये विदि च दिवसे चापि तेषां रवेश्च ।
शुद्धे रिःफद्यूनमृतिगृहे सत्तिथौ नो जनेर्भे
सूचीकर्म्माप्यदितिवसुभत्वाष्ट्रमित्राश्विपुष्ये ।।१५।।

अन्वयः–लघुमृदुचरे मूलभे शुक्रेन्द्विज्ये विदि च द्व्यङ्गलग्ने तेषां रवेश्च दिवसे रिःफद्यूनमृतिगृहे शुद्धे सत्तिथौ च भैषज्यं सत् स्यात् । जनेर्भे नो सत् । अदितिवसुभत्वाष्ट्रमित्राश्विपुष्ये सूचीकर्मापि सत् स्यात् ।।१५।।

भाषा–लघुसंज्ञक, हस्त, अश्विनी पुष्य, अभिजित्, मृदुसंज्ञक-मृगशिरा रेवती, चित्रा, अनुराधा, चरसंज्ञक-स्वाती, पुनर्वसु, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा और मूलनक्षत्र में तथा द्विस्वभाव लग्न में, शुक्र, सोम, गुरु, बुध और रविवार में, लग्न मे बारहवें, सातवें और आठवें स्थान शुद्ध हों तो शुभ तिथि में औषधि सेवन और ८ [illegible] ा शुभ है। जन्म नक्षत्र में शुभ नहीं है। पुनर्वसु, धनिष्ठा, चित्रा, अनुराधा, अश्विनी और पुष्य इनमें कपड़ा सीना शुभ है।।१५।।

क्रय-विक्रय विचार–

क्रयर्क्षे विक्रयो नेष्टो विक्रयर्क्षे क्रयोऽपि न ।
पौष्णाम्बुपाश्विनीवातश्रवश्चित्राः क्रये शुभाः ।।१६।।

अन्वयः–**क्रयर्क्षे विक्रयः नेष्टः, विक्रयर्क्षे क्रयः अपि न। पौष्णाम्बुपाश्विनीवातश्रवश्चित्राः क्रये शुभाः।।१६।।**

भाषा–क्रय (खरीदना) के नक्षत्र में विक्रय (बेचना) तथा विक्रय (बेचने) के नक्षत्र में क्रय (खरीदना) नहीं करना चाहिये। रेवती, शततारका, अश्विनी,

स्वाती, श्रवण और चित्रा नक्षत्र में क्रय करना (खरीदना) शुभ है, विक्रय करना अशुभ है।।१६।।

बिक्री करने का तथा दुकान खोलने का मुहूर्त–

पूर्वाद्वीशकृशानुसार्पयमभे केन्द्रत्रिकोणे शुभैः
षट्त्र्यायेष्वशुभैर्विना घटतनुं सन्विक्रयः सत्तिथौ ।
रिक्ताभौमघटान्विना च विपणिर्मैत्रध्रुवक्षिप्रभै -
र्लग्ने चन्द्रसिते व्ययाष्टरहितैः पापैः शुभैर्द्व्यायखे ।।१७।।

अन्वयः–पूर्वाद्वीशकृशानुसार्पयमभे, शुभैः केन्द्रत्रिकोणे, अशुभैः षट्त्र्यायेषु, घटतनुं बिना सत्तिथौ विक्रयः सत् स्यात् । रिक्ताभौमघटान् बिना च मित्रध्रुवक्षिप्रभैः चन्द्रसिते लग्ने, पापैः व्ययाष्टरहितैः शुभैः द्व्यायखे विपणिः शुभा स्यात् ।।१७।।

भाषा–तीनों पूर्वाद्वीश-विशाखा, कृशानु-कृत्तिका, सार्प-आश्लेषा, यम-भरणी ये नक्षत्र और केन्द्र १।४।७।१०, त्रिकोण ९।५ इनमें शुभ ग्रह हों; ६।३।११ इनमें पाप ग्रह हों और कुम्भ लग्न को छोड़कर अन्य लग्न में, शुभ तिथि में विक्रय शुभ है। रिक्ता ९।४।१४ तिथि, मङ्गलवार और कुम्भ लग्न को छोड़कर मित्रसंज्ञक, ध्रुवसंज्ञक, क्षिप्रसंज्ञक नक्षत्रों में और लग्न में शुभ ग्रह हो तो दुकान लगाना शुभ है।।१७।।

घोड़ा-हाथी खरीदने-बेचने का मुहूर्त–

क्षिप्रान्त्यवस्विन्दुमरुज्जलेशादित्येष्वरिक्तारदिने प्रशस्तम् ।
स्यादादिकृत्यं त्वथ हस्तिकार्यं कुर्य्यान्मृदुक्षिप्रचरेषु विद्वान् ।।१८।।

अन्वयः–क्षिप्रान्त्यवस्विन्दुमरुज्जलेशादित्येषु, अरिक्तारदिने वाजिकृत्यं प्रशस्तम्। अथ मृदुक्षिप्रचरेषु विद्वान् हस्तिकार्यं कुर्यात् ।।१८।।

भाषा–क्षिप्रसंज्ञक, रेवती, धनिष्ठा, मृगशिरा, स्वाती, शतभिषा, पुनर्वसु नक्षत्रों में, रिक्ता तिथि को छोड़कर अन्य तिथि और मङ्गलवार को छोड़कर अन्य दिनों में घोड़ा खरीदना, बेचना या सवारी में लाना शुभ है। इसी तरह मृदुसंज्ञक, क्षिप्रसंज्ञक और चरसंज्ञक नक्षत्रों में हाथी का खरीदना आदि शुभ है।।१८।।

गहना बनवाने और पहिनने का मुहूर्त–

स्याद् भूषाघटनं त्रिपुष्करचरक्षिप्रध्रुवे रत्नयुक्
तत्तीक्ष्णोग्रविहीनभे रविकुजे मेषालिसिंहे तनौ ।
तन्मुक्तासहितं चरध्रुवमृदुक्षिप्रे शुभे सत्तनौ
तीक्ष्णोग्राशिवमृगे द्विदैवदहने शस्त्रं शुभं घट्टितम् ।।१९।।

अन्वयः–त्रिपुष्करचरक्षिप्रध्रुवे भूषाघटनं (शुभं स्यात्) तीक्ष्णोग्रविहीनभे, रविकुजे मेषालिसिंहे तनौ रत्नयुक् तत् (भूषाघटनं) सत् । चरध्रुवमृदुक्षिप्रे शुभम् सत्तनौ मुक्तासहितं तत् (भूषाघटनं) शुभम् । तीक्ष्णोग्राश्विमृगे द्विदैवदहने घट्टितं शुभं स्यात् ।।१९।।

भाषा–नक्षत्र प्रकरण के ५० वें श्लोक में कहे हुए त्रिपुष्कर योग में, चरसंज्ञक (स्वाती, पुनर्वसु, श्रवण,धनिष्ठा,शतभिषा), क्षिप्रसंज्ञक (हस्त,अश्विनी, पुष्य, अभिजित्) तथा ध्रुवसंज्ञक (तीनों उत्तरा, रोहिणी) नक्षत्रों में आभूषण बनवाना शुभ है। यदि रत्नसहित आभूषण बनवाना हो तो उसके लिये तीक्ष्ण संज्ञक, उग्रसंज्ञक नक्षत्रों को छोड़कर शेष १८ नक्षत्रों में और रवि, मङ्गल का दिन और मेष, वृश्चिक तथा सिंह लग्न शुभ है। चरसंज्ञक, ध्रुवसंज्ञक, मृदुसंज्ञक, क्षिप्रसंज्ञक नक्षत्रों में, शुभ लग्न में मुक्तासहित आभूषण बनवाना शुभ है। तीक्ष्णसंज्ञक, उग्रसंज्ञक, अश्विनी, मृगशिरा, विशाखा, कृत्तिका इन नक्षत्रों में शस्त्र बनवाना शुभ है।।१९।।

रुपये-पैसे ढालने और कपड़े धुलाने का मुहूर्त-

मुद्राणां पातनं सद्ध्रुवमृदुचरभक्षिप्रभैर्वीन्दुसौरे
घस्रे पूर्णाजयाख्ये न च गुरुभृगुजास्ते विलग्ने शुभैः स्यात् ।
वस्त्राणां क्षालनं सद्वसुहयदिनकृत्पञ्चकादित्यपुष्ये
नो रिक्तापर्वषष्ठीपितृदिनरविजज्ञेषु कार्य्यं कदापि ।।२०।।

अन्वयः–ध्रुवमृदुचरभक्षिप्रभैः नक्षत्रैः, वीन्दुसौरे घस्रे, पूर्णाजयाख्ये (तिथौ) न गुरुभृगुजास्ते, शुभैः विलग्ने स्थितैः मुद्राणां पातनं सत् , वसुहय-दिनकृत्पञ्चकादित्यपुष्ये वस्त्राणां क्षालनं सत् । रिक्तापर्वषष्ठीपितृदिनरविजज्ञेषु वस्त्राणां क्षालनं कदापि नो कार्यम् ।।२०।।

भाषा–ध्रुवसंज्ञक, मृदुसंज्ञक, चरसंज्ञक और क्षिप्रसंज्ञक नक्षत्रों में, सोम, शनि को छोड़कर, पूर्णा और जया तिथियों में, गुरु और शुक्र अस्त नहीं हों और शुभग्रह लग्न में हों तो मुद्रा ढालना शुभ है। धनिष्ठा, अश्विनी, हस्त से पाँच नक्षत्र (हस्त, चित्रा, स्वाती, विशाखा, अनुराधा), पुनर्वसु, पुष्य इन नक्षत्रों में कपड़ा धुलवाना शुभ है। रिक्ता तिथि, पर्वदिन, षष्ठी, माता-पिता के श्राद्ध दिन, शनि और बुध को कपड़ा नहीं धुलावे।।२०।।

शस्त्र धारण करने का मुहूर्त-

सन्धार्याः कुन्तवर्म्मेष्वसनशरकृपाणासिपुत्र्यो विरिक्ते
शुक्रेज्यार्केऽह्नि मैत्रध्रुवलघुसहितादित्यशाक्रद्विदैवे ।
स्युर्लग्नेऽपि स्थिराख्ये शशिनि च शुभदृष्टे शुभैः केन्द्रगैः स्याद्-
भोगःशय्यासनादेर्ध्रुवमृदुलघुहयन्तकादित्य इष्टः ।।२१।।

अन्वयः–विरिक्ते तिथौ शुक्रेज्यार्केऽह्नि, मैत्रध्रुवलघुसहितादित्यशाक्रद्विदैवे (नक्षत्रे), स्थिराख्ये लग्नेऽपि, शशिनि शुभदृष्टे, शुभैः केन्द्रगैः, कुन्तवर्म्मेष्वसनशरकृपाणासिपुत्र्यः सन्धार्याः स्युः, ध्रुवमृदुलघुहयन्तकादित्ये (नक्षत्रे) शय्यासनादेः भोग इष्टः स्यात् ।।२१।।

भाषा-रिक्ता तिथि को छोड़कर शुक्र, गुरु और रविवार में, मैत्रसंज्ञक, ध्रुवसंज्ञक, लघुसंज्ञक, आदित्य-पुनर्वसु, शाक्र-ज्येष्ठा, द्विदैव-विशाखा इन नक्षत्रों में, स्थिर लग्न में, चन्द्रमा को शुभग्रह देखता हो और शुभग्रह केन्द्र में हो तो बरछी (भाला), कवच, धनुष, बाण, कृपाण (तलवार), छूरी धारण करे। ध्रुवसंज्ञक, मृदुसंज्ञक, लघुसंज्ञक और हय-अश्विनी, अन्तक-भरणी, आदित्य-पुनर्वसु इन नक्षत्रों में शय्या, ऊर्णासन और मृगछाला आदि पर बैठना शुभ है।।२१।।

अन्धादि नक्षत्र-

अन्धाक्षं वसुपुष्यधातृजलभद्वीशार्य्यमान्त्याभिधं
मन्दाक्षं रविविश्वमैत्रजलपाश्लेषाश्विचान्द्रं भवेत् ।
मध्याक्षं शिवपित्रजैकचरणत्वाष्ट्रेन्द्रविध्यन्तकं
स्वक्षं स्वात्यदितिश्रवोदहनभाहिर्बुध्न्यरक्षो भगम् ।।२२।।

अन्वयः-**वसुपुष्यधातृजलभद्वीशार्यमान्त्याभिधं अन्धाक्षं (भवेत्)। रविविश्व-मैत्रजलपाश्लेषाश्विचान्द्रं मन्दाक्षं भवेत् । शिवपित्रजैकचरणत्वाष्ट्रेन्द्रविध्यन्तकं मध्याक्षं भवेत् । स्वात्यदितिश्रवोदहनभाहिर्बुध्न्यरक्षो भगं स्वक्षं भवेत् ।।२२।।**

भाषा-धनिष्ठा, पुष्य, रोहिणी, पूर्वाषाढ़, विशाखा, उत्तराफाल्गुनी और रेवती ये अन्ध नक्षत्र हैं । हस्त, उत्तराषाढ़, अनुराधा, शतभिषा, आश्लेषा, अश्विनी, मृगशिरा ये मन्दाक्ष (कमदृष्टि) संज्ञक नक्षत्र हैं। आर्द्रा, मघा, पूर्वाभाद्रपद , चित्रा, ज्येष्ठा, अभिजित् , भरणी ये नक्षत्र मध्याक्ष (मध्यम दृष्टि) संज्ञक हैं। स्वाती, पुनर्वसु, श्रवण, कृत्तिका, उत्तराभाद्रपद, मूल, पूर्वाफाल्गुनी ये नक्षत्र सुलोचन संज्ञक हैं।।२२।।

अन्धादि नक्षत्रों का फल-

विनष्टार्थस्य लाभोऽन्धे शीघ्रं मन्दे प्रयत्नतः ।
स्याद् दूरे श्रवणं मध्ये श्रुत्याप्ती न सुलोचने ।।२३।।

अन्वयः-**अन्धे विनष्टार्थस्य शीघ्रं लाभः। मन्दे प्रयत्नतः लाभः। मध्ये दूरे श्रवणम्। सुलोचने श्रुत्याप्ती न स्याताम् ।।२३।।**

भाषा-अन्ध नक्षत्र में खोया हुआ धन शीघ्र मिलता है, मन्दाक्ष में प्रयत्न करने पर, मध्याक्ष में दूर से केवल श्रवण मात्र होता है कि अमुक स्थान पर है परन्तु मिलता नहीं। सुलोचन में न प्राप्त होता है, न पता ही चलता है।।२३।।

नष्ट वस्तु ज्ञान के लिए अन्धाक्षादि चक्र-

नक्षत्राणि							संज्ञा	फलम्
धनि.	पुष्य	रोहि.	पू.षा.	विशा.	उ.फा.	रेवती	अन्धाक्ष	शीघ्रलाभ
हस्त	उ.षा.	अनुरा.	शतभि.	आश्ले.	अश्विनी	मृगशि.	मन्दाक्ष	प्रयत्नलाभ
आर्द्रा	मघा	पू.भा.	चित्रा	ज्येष्ठा	अभि.	भरणी	मध्याक्ष	दूरेश्रवणम्
स्वाती	पुनर्वसु	श्रवण	कृत्ति.	उ.भा.	मूल	पू.फा.	स्वक्ष	अलाभ

धन के लेन-देन में वर्ज्य नक्षत्र–

तीक्ष्णमिश्रध्रुवोग्रैर्यद् द्रव्यं दत्तं निवेशितम् ।
प्रयुक्तञ्च विनष्टञ्च विष्ट्यां पाते न चाप्यते ।।२४।।

अन्वयः–तीक्ष्णमिश्रध्रुवोग्रैः तथा विष्ट्यां पाते च यत् द्रव्यं दत्तं निवेशितं प्रयुक्तं च विनष्टं च तत् न आप्यते।।२४।।

भाषा–तीक्ष्णसंज्ञक, मिश्रसंज्ञक, ध्रुवसंज्ञक और उग्रसंज्ञक नक्षत्रों में दिया अथवा गाड़कर रखा हुआ, प्रयोग में लगाया गया अथवा नष्ट हुआ धन नहीं मिलता है और भद्रा तथा व्यतिपात योग में भी व्यवहार में लाया हुआ धन वापस नहीं आता है।।२४।।

कुँआ खोदने और उसके बाँधने का मुहूर्त–

मित्रार्कध्रुव-वासवाम्बुपमघातोयान्त्यपुष्येन्दुभिः
पापैर्हीनबलैस्तनो सुरगुरौ ज्ञे वा भृगौ खे विधौ ।
आप्ये सर्वजलाशयस्य खननं व्यम्भोमघैः सेन्द्रभै -
स्तैर्नृत्यं हिबुके शुभैस्तनुगृहे ज्ञेऽब्जे ज्ञराशौ शुभम् ।।२५।।

अन्वयः–मित्रार्कध्रुव-वासवाम्बुपमघातोयान्त्यपुष्येन्दुभिः, पापैर्हीनबलैः, सुरगुरौ ज्ञे वा तनौ, भृगौ खे, विधौ आप्ये, सर्वजलाशयस्य खननं शुभं भवति। व्यम्भोमघैः सेन्द्रभैः तैः (पूर्वोक्तनक्षत्रैः) शुभैः हिबुके, ज्ञे तनुगृहे, अब्जे ज्ञराशौ नृत्यं शुभं स्यात् ।।२५।।

भाषा–अनुराधा, हस्त, ध्रुवसंज्ञक, धनिष्ठा, शतभिषा, मघा, पूर्वाषाढ़, रेवती, पुष्य, मृगशिरा इन नक्षत्रों में, पापग्रह निर्बल हों, लग्न में गुरु वा बुध हो, लग्न से दशम स्थान में शुक्र हो, जलचर राशि का चन्द्रमा हो तो ऐसे में कुँआ, तालाब, पोखरा खुदवाना शुभ है। पूर्वाषाढ़ और मघा इन नक्षत्रों को छोड़कर ज्येष्ठा और ऊपर कहे हुए नक्षत्रों में, चतुर्थ स्थान में शुभ ग्रह और लग्न में बुध हो, कन्या अथवा मिथुन में चन्द्रमा हो तो नृत्यारम्भ शुभ होता है।।२५।।

नौकरी करने का मुहूर्त–

क्षिप्रे मैत्रे वित्सितार्केज्यवारे सौम्ये लग्नेऽर्के कुजे वा खलाभे ।
योनेर्मैत्र्यां राशिपोश्चापि मैत्र्यां सेवा कार्या स्वामिनः सेवकेन ।।२६।।

अन्वयः–क्षिप्रे मैत्रे वित्सितार्केज्यवारे सौम्ये लग्ने, अर्के खलाभे वा कुजे खलाभे, योनेः मैत्र्यां च राशिपोः अपि मैत्र्यां सेवकेन स्वामिनः सेवा कार्या।।२६।।

भाषा–क्षिप्रसंज्ञक, मैत्रसंज्ञक नक्षत्र में, बुध, गुरु, शुक्र, रवि इन वारों में, शुभ ग्रह लग्न में हो, रवि और मङ्गल दशवें अथवा ग्यारहवें स्थान में हो, सेव्य और सेवक दोनों की योनि और राशीशों की मैत्री हो तो ऐसे मुहूर्त में सेवक स्वामी की सेवा (नौकरी) करे।।२६।।

कर्ज देने-लेने का मुहूर्त-

स्वात्यादित्यमृदुद्विदैवगुरुभे कर्णत्रयाश्वे चरे
लग्ने धर्म्मसुताष्टशुद्धिसहिते द्रव्यप्रयोगः शुभः ।
नारे ग्राह्यमृणन्तु संक्रमदिने वृद्धौ करेऽर्केऽह्नि यत्
तद्वंशेषु भवेदृणं न च बुधे देयं कदाचिद् धनम् ।।२७।।

अन्वयः-स्वात्यादित्यमृदुद्विदैवगुरुभे कर्णत्रयाश्वे नक्षत्रे, धर्मसुताष्टशुद्धिसहिते चरे लग्ने, द्रव्यप्रयोगः शुभः। आरे तु पुनः संक्रमदिने वृद्धौ, करे अर्केऽह्नि ऋणं न ग्राह्यम् । यत् ऋणं तत् तद्वंशेषु भवेत् । च (पुन) बुधे कदाचित् धनं न देयम् ।।२७।।

भाषा-स्वाती, पुनर्वसु, मृदुसंज्ञक, विशाखा, पुष्य, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, अश्विनी नक्षत्रों में, चर लग्न में, ९।८।५ ये स्थान ग्रहरहित हो तो द्रव्य सूद पर लगाना शुभ है। मङ्गलवार, संक्रान्ति दिन, वृद्धि योग, हस्त नक्षत्र और रविवार इनमें ऋण नहीं ले क्योंकि इनमें ऋण लेने से वह वंश सदा ऋणी बना रहता है। कभी भी बुधवार को ऋण न दे।।२७।।

हल चलाने का मुहूर्त-

मूलद्वीशमघाचरध्रुवमृदुक्षिप्रैर्विनार्क शनिं
पापैर्हीनबलैर्विधौ जललवे शुक्रे विधौ मांसले ।
लग्ने देवगुरौ हलप्रवहणं शस्तं न सिंहे घटे
कर्काजैणघटे तनौ क्षयकरं रिक्तासु षष्ठ्यां तथा ।।२८।।

अन्वयः-मूलद्वीशमघाचरध्रुवमृदुक्षिप्रैः अर्क शनिं बिना, पापैः हीनबलैः विधौ जललवे, शुक्रे विधौ मांसले, देवगुरौ लग्ने (सति)हलप्रवहणं शस्तं (शुभं भवति), सिंहे घटे कर्काजैणघटे तनौ तथा रिक्तासु षष्ठ्यां वा हलप्रवहणं क्षयकरं कथितम् ।।२८।।

भाषा-मूल, विशाखा, मघा, चरसंज्ञक, ध्रुवसंज्ञक, मृदुसंज्ञक, क्षिप्रसंज्ञक नक्षत्रों में रवि और शनिवार से इतर दिनों में, पापग्रह बलहीन होने पर, चन्द्रमा जलचर राशि के नवमांश में हों,शुक्र और चन्द्रमा बलवान् हो, लग्न में गुरु हो तो हलप्रवहण (हल जोतना) शुभ है। सिंह, कुम्भ, कर्क, मेष, मकर और तुला लग्न में तथा रिक्ता और षष्ठी में हल जोतना हानिकारक है।।२८।।

बीज बोने का मुहूर्त-

एतेषु श्रुतिवारुणादितिविशाखोडूनि भौमं विना
वीजोप्तिर्गदिता शुभा त्वगुभतोऽष्टाग्नीन्दुरामेन्दवः ।
रामेन्द्वग्नियुगान्यसत् शुभकराण्युप्तौ हलेऽर्कोज्झिताद्
भाद्रामाष्टनवाष्टभानि मुनिभिः प्रोक्तान्यसत् सन्ति च ।।२९।।

अन्वयः-श्रुतिवारुणादितिविशाखोडूनि भौमं विना एतेषु (पूर्वकथित-नक्षत्रदिनेषु)

बीजोप्तिः शुभा गदिता। तु (पुनः) अगुभतः (राहुभात्) अष्टाग्नीन्दुरामेन्दवः रामेन्द्वग्नियुगानि उप्तौ (वपने)असत् शुभकराणि च प्रोक्तानि। हले अर्कोज्झितात् भात् मुनिभिः रामाष्टनवाष्टाभानि असत्सन्ति च प्रोक्तानि।।२९।।

भाषा–श्रवण, शतभिषा, पुनर्वसु, विशाखा नक्षत्रों को और मङ्गलवार को छोड़कर पूर्व श्लोक में कहे हुए मुहूर्त में बीज बोना शुभ है। राहु जिस नक्षत्र में हो उस नक्षत्र से ८ नक्षत्र अशुभ, ३ शुभ, १ अशुभ, ३ शुभ, १ अशुभ, ३ शुभ, १ अशुभ, ३ शुभ, ४ अशुभ होता है और हल में जिस नक्षत्र में सूर्य हो उससे पहले का नक्षत्र सहित ३ नक्षत्र अशुभ, ८ शुभ, ९ अशुभ और फिर ८ शुभ होते हैं।।२९।।

राहु के नक्षत्र से बीजोप्ति चक्र–

८	३	१	३	१	३	१	३	४
अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ

विरेचन वमन और धर्मकार्य करने का मुहूर्त–

त्वाष्ट्रान्मित्रकभाद् द्वयेऽम्बुपलघुश्रोत्रे शिरामोक्षणं
भौमार्केज्यदिने विरेकवमनाद्यं स्याद् बुधार्की विना ।
मित्रक्षिप्रचरध्रुवे रविशुभाहे लग्नवर्गे विदो
जीवस्यापि तनौ गुरौ निगदिता धर्म्मक्रिया तद्बले ।।३०।।

अन्वयः–**त्वाष्ट्रान्मित्रकभाद् द्वये अम्बुपलघुश्रोत्रे (नक्षत्रे), भौमार्केज्यदिने शिरामोक्षणं, बुधार्की विना विरेकवमनाद्यञ्च (शुभं) स्यात् । मित्रक्षिप्रचरध्रुवे रविशुभाहे विदः जीवस्यापि लग्नवर्गे, तनौ गुरौ, तद्बले (गुरुबले) धर्मक्रिया शुभा निगदिता।।३०।।**

भाषा–चित्रा, स्वाती, अनुराधा, ज्येष्ठा, रोहिणी, मृगशिरा, शतभिषा और लघुसंज्ञक तथा श्रवण नक्षत्रों में मङ्गल, गुरु और रविवार में शिरा खुलवाना शुभ है। बुध और शनिवार को छोड़कर ऊपर कहे हुए नक्षत्रों में जुलाब लेना तथा वमन क्रिया करना शुभ है। अनुराधा, क्षिप्रसंज्ञक, चरसंज्ञक, ध्रुवसंज्ञक नक्षत्र, रविवार और शुभ दिन, लग्नमें गुरु का षड्वर्ग हो, लग्न में गुरु हो और वह बली हो तो धर्मकार्य प्रारम्भ करना शुभ है।।३०।।

धान्य काटने का मुहूर्त–

तीक्ष्णाजपादकरवह्निवसुश्रुतीन्दु-
स्वातीमघोत्तरजलान्तकतक्षपुष्ये ।
मन्दाररिक्तरहिते दिवसेऽतिशस्ता
धान्यच्छिदा निगदिता स्थिरभे विलग्ने ।।३१।।

अन्वयः–तीक्ष्णाजपादकरवह्निवसुश्रुतीन्दुस्वातीमघोत्तरजलान्तकतक्षपुष्ये (नक्षत्रे) मन्दाररिक्तरहिते दिवसे, स्थिभे (स्थिरराशौ) विलग्ने धान्यच्छिदा अतिशस्ता निगदिता।।३१।।

भाषा–तीक्ष्णसंज्ञक, पूर्वभाद्रपद, हस्त, कृत्तिका, धनिष्ठा, श्रवण, मृगशिरा, स्वाती, मघा, तीनों उत्तरा, पूर्वाषाढ़, भरणी, चित्रा और पुष्य नक्षत्रों में, शनिवार, मङ्गलवार और रिक्ता तिथि को छोड़कर स्थिर लग्न में धान्यादि का छेदन (काटना) शुभ है।।३१।।

धान्य मींजने और रोपने का मुहूर्त–

भाग्यार्यमश्रुतिमघेन्द्रविधातृमूल–
मैत्रान्त्यभेषु कथितं कणमर्दनं सत्।
द्वीशाजपान्निर्ऋतिधातृशतार्यमर्क्षे
सस्यस्य रोपणमिहार्किकुजौ विना सत्।।३२।।

अन्वयः–भाग्यार्यमश्रुतिमघेन्द्रविधातृमूलमैत्रान्त्यभेषु कर्णमर्दनं सत् कथितम्। द्वीशाजपान्निर्ऋतिधातृशतार्यमर्क्षे, अर्किकुजौ विना सस्यस्य रोपणं सत् कथितम् ।।३२।।

भाषा–पूर्वाफाल्गुनी, उत्तराफाल्गुनी, श्रवण, मघा, ज्येष्ठा, रोहिणी, मूल, अनुराधा, रेवती नक्षत्रों में धान्यमर्दन शुभ है। विशाखा, पूर्वाभाद्रपद, मूल, रोहिणी, शतभिषा, उत्तराफाल्गुनी इन नक्षत्रों में, शनि मङ्गल को छोड़कर अन्य दिनों में धान्य रोपना शुभ है।।३२।।

धान्य रखने एवं ब्याज पर देने का मुहूर्त–

मिश्रोग्ररौद्रभुजगेन्द्रविभिन्नभेषु
कर्काजतौलिरहिते च तनौ शुभाहे।
धान्यस्थितिः शुभकरी गदिता ध्रुवेज्य–
द्वीशेन्द्रदस्रचरभेषु च धान्यवृद्धिः।।३३।।

अन्वयः–मिश्रोग्ररौद्रभुजगेन्द्रविभिन्नभेषु च कर्काजतौलिरहिते तनौ शुभाहे धान्यस्थितिः शुभकरी गदिता। (पुनः) ध्रुवेज्यद्वीशेन्द्रदस्रचरभेषु धान्यवृद्धिः शुभकरी गदिता।।३३।।

भाषा–मिश्रसंज्ञक, उग्रसंज्ञक, आर्द्रा, श्लेषा, ज्येष्ठा इनसे भिन्न नक्षत्र में, कर्क, मेष, तुला इन लग्नों को छोड़कर अन्य लग्न में, शुभ दिन में धान्य रखना शुभ है। ध्रुवसंज्ञक, पुष्य, विशाखा, ज्येष्ठा, अश्विनी और चरसंज्ञक नक्षत्र में धान्य ब्याज पर लगाना शुभ है।।३३।।

शान्ति पौष्टिक पुरश्चरण का मुहूर्त–

क्षिप्रध्रुवान्त्यचरमैत्रमघासु शस्तं
स्यात् शान्तिकं च सह मङ्गलपौष्टिकाभ्याम्।

खेऽर्के विधौ सुखगते तनुगे गुरौ नो
मौढ्यादिदुष्टसमये शुभदं निमित्ते ।।३४।।

अवन्यः–क्षिप्रध्रुवान्त्यचरमैत्रमघासु (नक्षत्रेषु) अर्के खे, विधौ सुखगते, गुरौ तनुगे (सति) मङ्गलपौष्टिकाभ्यां सह शान्तिकं शस्तं स्यात् । मौढ्यादिदुष्टसमये नो शुभदम् । निमित्ते शुभदं भवति।।३४।।

भाषा–क्षिप्रसंज्ञक, ध्रुवसंज्ञक, रेवती, चरसंज्ञक, अनुराधा, मघा इन नक्षत्रों में, सूर्य दसवें में हों और चौथे स्थान में चन्द्रमा हो तथा लग्न में गुरु हो तो मङ्गल पौष्टिकादि कार्य और रोगादि शमनार्थ पुरश्चरण करना शुभ होता है। गुरु शुक्रास्तादि समय में शुभ कर्म ठीक नहीं है परन्तु निमित्त (आवश्यकता पड़ने पर) केतु आदि की ग्रहशान्ति अस्त समय में भी करना शुभ है।।३४।।

हवन के समय आहुति किस ग्रह के मुख में पड़ना ठीक है–

सूर्यभात् त्रित्रिभे चान्द्रे सूर्यविच्छुक्रपङ्गवः ।
चन्द्रारेज्यागुशिखिनो नेष्टा होमाहुतिः खले ।।३५।।

अन्वयः–सूर्यभात् त्रित्रिभे चान्द्रे सूर्यविच्छुक्रपङ्गवः चन्द्रारेज्यागुशिखिनः (ज्ञेयाः) खले होमाहुतिः नेष्टा।।३५।।

भाषा–सूर्य के नक्षत्र से तीन-तीन नक्षत्र क्रम से सूर्य, बुध, शुक्र, शनि, चन्द्र, मङ्गल, गुरु, राहु और केतु इन ग्रहों के होते हैं,पापग्रह के नक्षत्र में आहुति शुभ नहीं होती है।।३५।।

सूर्य के नक्षत्र से हवन चक्र

३	३	३	३	३	३	३	३	३
सू०	बु०	शु०	श०	च०	मं०	बृ०	रा०	के०
अशुभ	शुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	अशुभ

अग्नि का निवास–

सैका तिथिर्वारयुता कृताप्ता शेषे गुणेऽभ्रे भुवि वह्निवासः ।
सौख्याय होमे शशियुग्मशेषे प्राणार्थनाशौ दिवि भूतले च ।।३६।।

अन्वयः–सैका तिथिर्वारयुता कृताप्ता गुणेऽभ्रे शेषे सति भुवि वह्निवासः होमे सौख्याय (भवति)। च (पुनः) शशियुग्मशेषे दिवि भूतले च वह्निवासः ज्ञेयः, तत्र प्राणार्थनाशौ स्याताम् ।।३६।।

भाषा–जिस दिन और तिथि में होम करना हो शुक्लपक्ष की प्रतिपदा से वर्तमान तिथि और रविवार से लेकर वर्तमान दिन तक गिने, दोनों संख्या को जोड़कर उसमें १ जोड़ दे फिर ४ से भाग दे, शेष यदि तीन या शून्य (३, ०) बचे तो पृथ्वी पर अग्नि रहती है, इसमें होम करने से सुख मिलता है। यदि १ बचे तो

आकाश में अग्नि का वास रहता है, यह प्राण का नाश करता है। २ बचे तो पाताल में अग्नि का वास रहता है, यह धन नाश करता है॥३६॥

नवान्न ग्रहण का मुहूर्त–

नवान्नं स्यात् चरक्षिप्रमृदुभे सत्तनौ शुभम् ।
बिना नन्दाविषघटीमधुपौषार्किभूमिजान् ॥३७॥

अन्वयः–चरक्षिप्रमृदुभे, सत्तनौ नन्दाविषघटीमधुपौषार्किभूमिजान् विना नवान्नं (नवान्नग्रहणं) शुभं स्यात् ॥३७॥

भाषा–चरसंज्ञक, क्षिप्रसंज्ञक, मृदुसंज्ञक नक्षत्रों में, शुभ लग्न में, नन्दातिथि, विषघटी, चैत्र और पौष मास, शनि, मङ्गल इन सबों को छोड़कर नवान्न ग्रहण शुभ है॥३७॥

नौका और जहाज बनाने का मुहूर्त –

याम्यत्रयविशाखेन्द्रसार्पपित्र्येशभिन्नभे ।
भृग्विज्यार्कदिने नौकाघटनं सत्तनौ शुभम् ॥३८॥

अन्वयः–याम्यत्रयविशाखेन्द्रसार्पपित्र्येशभिन्नभे भृग्विज्यार्कदिने सत्तनौ (शुभेलग्ने) नौकाघटनं शुभं भवति॥३८॥

भाषा–भरणी, कृत्तिका, ज्येष्ठा, रोहिणी, विशाखा, श्लेषा, मघा, आर्द्रा इनसे भिन्न नक्षत्रों में, शुक्र, गुरु, रविवार में, शुभलग्न में नौका बनवाना शुभ है॥३८॥

वीरसाधन और अभिचार–

मूलार्द्राभरणीपित्र्यमृगे सौम्ये घटे तनौ ।
सुखे शुक्रेऽष्टमे शुद्धे सिद्धिर्वीराभिचारयोः ॥३९॥

अन्वयः–मूलार्द्राभरणीपित्र्यमृगे (नक्षत्रे) घटे तनौ सौम्ये, शुक्रे, सुखे, अष्टमे शुद्धे सति वीराभिचारयोः सिद्धिः स्यात् ॥३९॥,

भाषा–मूल, आर्द्रा, भरणी, मघा, मृगशिरा नक्षत्रों में, कुम्भ लग्न बुध से युत हो, चतुर्थ स्थान में शुक्र हो, अष्टम स्थान ग्रहरहित हो तो वीरकर्म साधन और अभिचार (मारणादि प्रयोग) सिद्ध होते हैं॥३९॥

रोगमुक्तस्नान मुहूर्त–

व्यन्त्यादितिध्रुवमघानिलसार्पधिष्ण्ये
रिक्ते तिथौ चरतनौ विकवीन्दुवारे ।
स्नानं रुजाविरहितस्य जनस्य शस्तं
हीने विधौ खलखगैर्भवकेन्द्रकोणे ॥४०॥

अन्वयः–व्यन्त्यादितिध्रुवमघानिलसार्पधिष्ण्ये, रिक्ते तिथौ, चरतनौ, विकवीन्दुवारे, विधौ हीने, खलखगैः भवकेन्द्रकोणे रुजाविरहितस्य जनस्य स्नानं शस्तं भवति॥४०॥

भाषा–रेवती, पुनर्वसु, ध्रुवसंज्ञक और मघा, स्वाती, श्लेषा इनसे भिन्न नक्षत्रों में, रिक्ता तिथि में, चर लग्न में, शुक्र, सोमवार को छोड़कर, निर्बल चन्द्रमा हो, पापग्रह ग्यारहवें, केन्द्र और त्रिकोण में हो तो रोग से मुक्त व्यक्ति को स्नान करना शुभ है।।४०।।

शिल्पशिक्षा मुहूर्त–

मृदुध्रुवक्षिप्रचरे ज्ञे गुरौ वा खलग्नगे।
विधौ ज्ञजीववर्गस्थे शिल्पविद्या प्रशस्यते।।४१।।

अन्वयः–**मृदुध्रुवक्षिप्रचरे नक्षत्रे ज्ञे खलग्नगे वा गुरौ विधौ ज्ञजीववर्गस्थे सति शिल्पविद्या प्रशस्यते।।४१।।**

भाषा–मृदुसंज्ञक, ध्रुवसंज्ञक, क्षिप्रसंज्ञक नक्षत्रों में, बुध और गुरु लग्न या दशम स्थान में हो, बुध और गुरु के षड्वर्ग में चन्द्रमा हो तो शिल्प (कारीगरी, चित्रकारी आदि) सीखना शुभ है।।४१।।

मित्रता का मुहूर्त–

सुरेज्यमित्रभाग्येषु चाऽष्टम्यां तैतिले हरौ।
शुक्रदृष्टे तनौ सौम्यवारे सन्धानमिष्यते।।४२।।

अन्वयः–**सुरेज्यमित्रभाग्येषु च (पुनः) अष्टम्यां वा हरौ, तैतिले, शुक्रदृष्टे तनौ, सौम्यवारे सन्धानं (मैत्रीकरणं) इष्यते।।४२।।**

भाषा–पुष्य, अनुराधा, पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्रों में, अष्टमी, द्वादशी तिथि में, तैतिल करण में, शुक्र लग्न को देखता हो और बुधवार हो तो सन्धि करना शुभ है।।४२।।

दिव्य परीक्षा करने का मुहूर्त–

त्यक्त्वाष्टभूतशनिविष्टिकुजान् जनुर्भ-
मासौ मृतौ रविविधू अपि भानि नाड्यः।
द्व्यङ्गे चरे तनुलवे शशिजीवतारा-
शुद्धौ करादितिहरीन्द्रकपे परीक्षा।।४३।।

अन्वयः–**अष्टभूतशनिविष्टिकुजान् जनुर्भमासौ मृतौ रविविधू अपि नाड्यः भानि त्यक्त्वा द्व्यङ्गे चरे तनुलवे सति शशिजीवताराशुद्धौ (सत्यां), करादितिहरीन्द्रकपे परीक्षा कार्या।।४३।।**

भाषा–अष्टमी और चतुर्दशी तिथि, शनि और मङ्गलवार, भद्रा, जन्मनक्षत्र, जन्ममास, अपने जन्म राशि से अष्टम सूर्य और चन्द्रमा, नाड़ी के नक्षत्र १।१०।११।१६।२५।१८।२३ इनको छोड़कर द्विस्वभाव लग्न, चर लग्न और इन्हीं के नवमांश में, चन्द्रमा, गुरु और तारा शुद्ध हो तथा हस्त, पुनर्वसु, श्रवण, ज्येष्ठा, शतभिषा इन नक्षत्रों में सत्य-असत्य की परीक्षा शुभ है।।४३।।

सामान्य प्रकार से शुभ कार्यक्रम के आरम्भ करने का मुहूर्त–

व्ययाष्टशुद्धोपचये लग्नगे शुभदृग्युते।
चन्द्रे त्रिषडदशायस्थे सर्वारम्भः प्रसिद्ध्यति ।।४४।।

*अन्वयः–*व्ययाष्टशुद्धोपचये लग्नगे शुभदृग्युते, चन्द्रे च त्रिषड्दशायस्थे (सति) सर्वारम्भः प्रसिद्ध्यति।।४४।।

भाषा–द्वादश स्थान और अष्टम स्थान शुद्ध हो और जन्म राशि अथवा जन्म लग्न से उपचय ३।६।१०।११ इनमें से कोई राशि लग्न में हो, शुभ ग्रह से युत किंवा दृष्ट हो, चन्द्रमा लग्न से ३।६।१०।११ इनमें से किसी स्थान में हो तो उस मुहूर्त में आरम्भ किये हुए सभी कार्य सफल हुआ करते हैं।।४४।।

नक्षत्र पर से रोगोत्पत्ति तथा सर्प के काटने का फल–

स्वातीन्द्रपूर्वाशिव-सार्पभे मृति-
ज्वरेऽन्त्यमैत्रे स्थिरता भवेद्रुजः।
याम्यश्रवोवारुणतत्क्षभे शिवा
घस्रा हि पक्षो द्व्यधिपार्कवासवे ।।४५।।
मूलाग्निदास्रे नव पित्र्यभे नखा
बुधन्यार्यभेज्यादितिधातृभे नगाः।
मासोऽब्जवैश्वेऽथ यमाहिमूलभे
मिश्रेशपित्र्ये फणिदंशने मृतिः ।।४६।।

*अन्वयः–*स्वातीन्द्रपूर्वाशिवसार्पभे ज्वरे सति मृतिः। अन्त्यमैत्रे रुजः स्थिरता भवेत्। याम्यश्रवोवारुणतत्क्षभे शिवाः घस्राः, द्व्यधिपार्कवासवे पक्षः। हि मूलाग्निदास्रे नव, पित्र्यभे नखाः, बुधन्यायभेज्यादितिध्रातृभे नगाः, अब्जवैश्वे मासः (मासपर्यन्तं रोगस्थिरता भवेत्)। अथ यमाहिमूलभे मिश्रेशपित्र्ये फणिदंशने सति मृतिः स्यात् ।।४५-४६।।

भाषा–स्वाती, ज्येष्ठा, तीनों पूर्वा, आर्द्रा और आश्लेषा नक्षत्रों में ज्वर हो तो मृत्यु होती है। रेवती, अनुराधा इनमें रोग होने से रोग स्थिर रहता है (अर्थात् जल्दी नहीं छूटता है)। भरणी, श्रवण, शतभिषा, चित्रा नक्षत्रों में ११ दिन रोग रहता है। विशाखा, हस्त, धनिष्ठा इन नक्षत्रों में १५ दिन रोग रहता है। मूल, कृत्तिका, अश्विनी इनमें ९ दिन तक रोग रहता है। मघा नक्षत्र में रोग हो तो २० दिन रहता है। उत्तराभाद्रपद, उत्तराफाल्गुनी, पुष्य, पुनर्वसु, रोहिणी इन नक्षत्रों में रोग आरम्भ होने से ७ दिन रहता है। मृगशिरा, उत्तराषाढ़ नक्षत्र में रोग आरम्भ होने से १ महीना रहता है। भरणी, श्लेषा, मूल, मिश्रसंज्ञक (कृत्तिका-विशाखा) और आर्द्रा, मघा नक्षत्रों में सर्प काटे तो मृत्यु होती है।।४५-४६।।

रोगी का शीघ्र मरणयोग–

रौद्राहिशाक्राम्बुपयाम्यपूर्वाद्विदैववस्वाग्निषु पापवारे ।
रिक्ताहरिस्कन्ददिने च रोगे शीघ्रं भवेद्रोगिजनस्य मृत्युः ।।४७।।

अन्वयः–रौद्राहिशाक्राम्बुपयाम्यपूर्वाद्विदैववस्वग्निषु नक्षत्रेषु पापवारे रिक्ताहरिस्कन्ददिने च रोगे सति गेगिजनस्य शीघ्रं मृत्युः भवेत् ।।४७।।

भाषा–आर्द्रा, श्लेषा, ज्येष्ठा, शतभिषा, भरणी, तीनों पूर्वा, विशाखा, धनिष्ठा, कृत्तिका नक्षत्रों में पापदिन (रवि,मङ्गल,शनि) में, रिक्ता, द्वादशी, षष्ठी तिथियों में रोग आरम्भ हो तो रोगी की शीघ्र मृत्यु हो जाती है।।४७।।

यहाँ 'दिने' रिक्ताहरिस्कन्ददिने के स्थान में 'तिथौ' का पाठ होना चाहिये क्योंकि दिन तो पहले ही 'पापवारे' से कहा जा चुका है ।।४७।।

प्रेतदाह का मुहूर्त–

क्षिप्राहिमूलेन्दुहरीशवायुभे प्रेतक्रिया स्याज्झषकुम्भगे विधौ।
प्रेतस्य दाहं समदिग्गमं त्यजेत् शय्यावितानं गृहगोपनादि च।।४८।।

अन्वयः–क्षिप्राहिमूलेन्दुहरीशवायुभे प्रेतक्रिया स्यात् । विधौ (चन्द्रे) झषकुम्भगे प्रेतस्य दाहं यमदिग्गमं शय्यावितानं गृहगोपनादि च त्यजेत् ।।४८।।

भाषा–क्षिप्रसंज्ञक, श्लेषा, मूल, मृगशिरा, श्रवण, आर्द्रा, स्वाती इन नक्षत्रों में प्रेत की क्रिया श्राद्ध आदि करना शुभ है। कुम्भ एवं मीन के चन्द्रमा में प्रेत [illegible], दक्षिण दिशा की यात्रा, शय्या (बिछावन), वितान (सामियाना) और घर छवाना छोड़ देना चाहिये, क्योंकि धनिष्ठा के दो चरण से लेकर रेवती के अन्तिम चरण तक धनिष्ठादि पञ्चक कहलाता है। इसमें घर के लिए काष्ठ वगैरह भी इकट्ठा न करे।।४८।।

काष्ठसंग्रह मुहूर्त–

सूर्यर्क्षात् रसभैरधःस्थलगतैः पाको रसैः संयुतः
शीर्षे युग्ममितैः शवस्य दहनं मध्ये युगैः सर्पभीः ।
प्रागाशादिषु वेदभैः स्वसुहृदां स्यात्सङ्गमो रोगभीः
क्वाथादेः करणं सुखं च गदितं काष्ठादिसंस्थापने ।।४९।।

अन्वयः–सूर्यर्क्षात् अधःस्थलगतैः रसभैः काष्ठादिसंस्थापने रसैः संयुतः पाकः स्यात्। शीर्षे युग्ममितैः शवस्य दहनं भवेत् । मध्ये युगैः सर्पभीः स्यात् । प्रागाशादिषु वेदभैः क्रमेण स्वसुहृदां सङ्गमः रोगभीः क्वाथादेः करणं सुखं च गदितम् (कथितम्)।।४९।।

भाषा–सूर्य के नक्षत्र से नीचे के ६ नक्षत्रों में लकड़ी रखने से पाक (रसोई) रसयुक्त होता है। उसके आगे के २ नक्षत्र सिर के हैं इनमें लकड़ी रखने से मुर्दा जलाने के काम आती है। मध्य के चार नक्षत्र में सर्प का भय होता है और पूर्वादि

दिशा के चार नक्षत्र में क्रम से मित्र का मिलन, रोगभय, काढ़ा निर्माण और सुख प्राप्त होता है।।४९।।

सूर्य के नक्षत्र से काष्ठसञ्चय चक्र—

६	२	४	४	४	४	४
अधः	शीर्षे	मध्ये	पूर्वे	दक्षिणे	पश्चिमे	उत्तरे
रसयुक्त	शवदाह	सर्पभय	मित्रागम	रोगभय	काढ़ादिके लिये	सुख

त्रिपुष्करयोग-

भद्रातिथी रविभूतनयार्कवारे द्वीशार्यमाजचरणादितिवह्निवैश्वे ।
त्रैपुष्करो भवति मृत्युविनाशवृद्धौ त्रैगुण्यदो द्विगुणकृद्वसुतक्षचान्द्रे।।५०।।

अन्वयः-भद्रातिथी, रविजभूतनयार्कवारे द्वीशार्यमाजचरणादितिवह्निवैश्वे नक्षत्रे, मृत्युविनाशवृद्धौ त्रैगुण्यदः त्रैपुष्करः (एतन्नामा योगः) भवति। भद्रातिथौ रविजभूत-नयार्कवारे, वसुतक्षचान्द्रे मृत्युविनाशवृद्धौ द्विगुणकृत् (द्विपुष्करः योगः स्यात्)।।५०।।

भाषा-भद्रासंज्ञक (द्वितीया, सप्तमी, द्वादशी) तिथि, शनि, मङ्गल, रवि तथा विशाखा, उत्तराफाल्गुनी, पूर्वाभाद्र, पुनर्वसु, कृत्तिका, उत्तराषाढ़ नक्षत्र इन तीनों का जब योग हो तो त्रिपुष्कर नाम का योग होता है। यह त्रिपुष्कर योग, मृत्यु, विनाश और वृद्धि में त्रिगुण फल देता है। उपर्युक्त दिन व तिथि तथा धनिष्ठा,चित्रा,मृगशिरा नक्षत्र हो तो द्विपुष्कर योग होता है, यह द्विगुण फल देता है।।५०।।

पुत्तलदाह का मुहूर्त-

शुक्रारार्किषु दर्शभूतमदने नन्दासु तीक्ष्णोग्रभे
पौष्णे वारुणभे त्रिपुष्करदिने न्यूनाधिमासेऽयने ।
याम्येऽब्दात्परतश्च पातपरिघे देवेज्यशुक्रास्तके
भद्रावैधृतयोः शवप्रतिकृतेर्दाहो न पक्षे सिते ।।५१।।

अन्वयः-शुक्रारार्किषु (दिनेषु), दर्शभूतमदने नन्दासु तिथिषु, तीक्ष्णोग्रभे पौष्णे वारुणभे (नक्षत्रे) त्रिपुष्करदिने, न्यूनाधिमासे,अब्दात्परतः याम्ये (अयने), च पातपरिघे, देवेज्यशुक्रास्तके, भद्रावैधृतयोः सिते पक्षे, शवप्रतिकृतेर्दाहः न शुभः स्यात् ।।५१।।

भाषा-शुक्र, मंगल और शनिवार, अमावस्या, चतुर्दशी, त्रयोदशी, नन्दा १।६।११ इन तिथियों में और तीक्ष्णसंज्ञक, उग्रसंज्ञक, रेवती, शतभिषा, त्रिपुष्करयोग, क्षयमास-अधिमास (मलमास) में, एक वर्ष के बाद दक्षिणायन में व्यतीपातयोग और परिघयोग में, गुरु और शुक्र के अस्त में, भद्रा में और वैधृति (महापात) में और शुक्लपक्ष में मुर्दे के बने आकृति (पुत्तल) का दाह शुभ नहीं होता है।।५१।।

जन्मप्रत्यरितारयोर्मृतिसुखान्त्येऽब्जे च कर्त्तुर्न सन्
मध्यो मैत्रभगादितिध्रुवविशाखाद्व्यंघ्रिभे ज्ञेऽपि च ।
श्रेष्ठोऽर्केज्यविधोर्दिने श्रुतिकरस्वात्यशिवपुष्ये तथा
त्वाशौचात् परतो विचार्य्यमखिलं मध्ये यथासम्भवम् ।।५२।।

अन्वयः–जन्मप्रत्यरितारयोः अब्जे च मृतिसुखान्त्ये सति कर्तुः न सत् स्यात् । मध्यो मैत्रभगादितिध्रुवविशाखाद्व्यङ्घ्रिभे च (पुनः) ज्ञेऽपि कर्तुः मध्यः स्यात् । अर्केज्यविधोर्दिने श्रुतिकरस्वात्यशिवपुष्ये कर्तुः श्रेष्ठः स्यात् । अखिलं आशौचात् परतः विचार्यम् । मध्ये तु यथासम्भवं कर्म कार्यम् ।।५२।।

भाषा–जन्मतारा और प्रत्यरितारा में तथा ८।४।१२ वें चन्द्रमा हो तो कर्ता प्रेत की क्रिया न करे। अनुराधा, पूर्वाफाल्गुनी, पुनर्वसु, ध्रुवसंज्ञक, विशाखा, मृगशिरा, चित्रा, धनिष्ठा ये नक्षत्र और बुधवार प्रेत कर्म में मध्यम है। रवि, गुरु और सोमवार में, श्रवण, हस्त, स्वाती, अश्विनी, पुष्य इन नक्षत्रों में प्रेतक्रिया श्रेष्ठ है। यह विचार अशौच के बाद करना चाहिये, अशौच के बीच में जैसा सम्भव हो वैसा करना चाहिये।।५२।।

अभुक्त मूल का प्रमाण–

अभुक्तमूलं घटिकाचतुष्टयं ज्येष्ठान्त्यमूलादिभवं हि नारदः ।
वसिष्ठ एकद्विघटीमितं जगौ बृहस्पतिस्त्वेकघटीप्रमाणकम् ।।५३।।

अन्वयः–ज्येष्ठान्त्यमूलादिभवं घटिकाचतुष्टयं अभुक्तमूलं नारदः जगौ। ज्येष्ठान्त्यमूलादिभवं एकद्विघटीमितं अभुक्तमूलं वसिष्ठः जगौ। ज्येष्ठान्त्यमूलादिभवं एकघटी-प्रमाणकं अभुक्तमूलं बृहस्पतिः जगौ।।५३।।

भाषा–अभुक्त मूल का प्रमाण ज्येष्ठा के अन्त और मूल के आदि की ४+४ घटी मिलाकर अभुक्त मूल होता है, यह नारद मुनि का वाक्य है। ज्येष्ठा की १ और मूल की दो घटी मिलाकर अभुक्त मूल वशिष्ठजी कहते हैं और ज्येष्ठा के अन्त की आधी तथा मूल के आदि की आधी मिलाकर १ घटी अभुक्त मूल बृहस्पति कहते हैं।।५३।।

अभुक्त मूल में विशेष —

अथोचुरन्ये प्रथमाष्टघट्यो मूलस्य शाक्रान्तिमपञ्चनाड्यः ।
जातं शिशुं तत्र परित्यजेद्वा मुखं पितास्याष्टसमा न पश्येत् ।।५४।।

अन्वयः–अथ मूलस्य प्रथमाष्टघट्यः शाक्रान्तिमपञ्चनाड्यः अभुक्तमूलं अन्ये ऊचुः। तत्र जातं शिशुं परित्यजेत्, वा अस्य पिता अष्टसमाः मुखं न पश्येत् ।।५४।।

भाषा–अन्य आचार्य कहते हैं कि, मूल के आदि की ८ घटी और ज्येष्ठा के अन्त की ५ घटी दोनों मिलाकर १३ घटी अभुक्त मूल का मान है, इस

अभुक्त मूल में जो सन्तान पैदा हो उसको त्याग दे अथवा उसका मुख उसका पिता ८ वर्ष तक न देखे।।५४।।

मूल-आश्लेषा का फल-

आद्ये पिता नाशमुपैति मूलपादे द्वितीये जननी तृतीये।
धनं चतुर्थोऽस्य शुभोऽथ शान्त्या सर्वत्र सत्स्यादहिभे विलोमम् ।।५५।।

अन्वयः-आद्ये मूलपादे पिता नाशं उपैति, द्वितीये जननी, तृतीये धनं नाशमुपैति। अस्य चतुर्थः शुभ. स्यात् । शान्त्या सर्वत्र सत् स्यात् । अहिभे विलोमं ज्ञेयम् ।।५५।।

भाषा-मूल के प्रथम चरण में जन्म हो तो पिता का नाश, दूसरे चरण में जन्म हो तो माता का नाश, तीसरे चरण में जन्म हो तो धन का नाश और चौथे चरण में जन्म हो तो शुभ होता है। आश्लेषा का प्रथम चरण शुभ, दूसरे में धन का नाश, तीसरे में माता का नाश, चौथे में पिता का नाश होता है। नक्षत्रों की दोष निवृत्ति के लिए शान्ति करने पर शुभ होता है।।५५।।

मूल नक्षत्र का निवास-

स्वर्गे शुचिप्रौष्ठपदेषमाघे भूमौ नभःकार्तिकचैत्रपौषे ।
मूलं ह्यधस्तात् तु तपस्यमार्ग-वैशाखशुक्रेष्वशुभञ्च तत्र ।।५६।।

अन्वयः-शुचिप्रौष्ठपदेषमाघे मूलं स्वर्गे तिष्ठति, नभःकार्तिकचैत्रपौषे मूलं भूमौ तिष्ठति, तपस्यमार्गवैशाखशुक्रेषु मूलं अधस्तात् तिष्ठति। मूलं यत्र तिष्ठति तत्रैव अशुभं ज्ञेयम् ।।५६।।

भाषा-आषाढ़, भाद्रपद, आश्विन, माघ इन महीनों में मूल नक्षत्र स्वर्ग में रहता है। श्रावण, कार्तिक, चैत्र और पौष में भूमि में तथा फाल्गुन, अगहन, वैशाख, ज्येष्ठ इनमें पाताल में मूलनक्षत्र वास करता है। मूल नक्षत्र जहाँ रहता है वहीं अशुभ फल देता है।।५६।।

सन्तानोत्पत्ति में अशुभ काल-

गण्डान्तेन्द्रभशूलपातपरिघव्याघातगण्डावमे
संक्रान्तिव्यतिपातवैधृतिसिनीवालीकुहूदर्शके ।
वज्रे कृष्णचतुर्दशीषु यमघण्टे दग्धयोगे मृतौ
विष्टौ सोदरभे जनिर्न पितृभे शस्ता शुभा शान्तितः ।।५७।।

अन्वयः-गण्डान्तेन्द्रभशूलपातपरिघव्याघातगण्डावमे संक्रान्तिव्यतिपात-वैधृतिसिनीवालीकुहूदर्शके वज्रे कृष्णचतुर्दशीषु यमघण्टे दग्धयोगे मृतौ विष्टौ सोदरभे पितृभे जनिः न शस्ता (किन्तु) शान्तितः शुभा भवति।।५७।।

भाषा-गण्डान्त, ज्येष्ठानक्षत्र, शूलयोग, पात, परिघयोग, व्याघातयोग, गण्डयोग, क्षयतिथि, संक्रान्ति, व्यतीपातयोग, वैधृतियोग, सिनीवाली, कुहू

(अमावस्या), वज्रयोग, कृष्णपक्ष की चतुर्दशी, यमघण्टयोग, दग्धयोग, मृत्युयोग, भद्रा, सोदर का जन्मनक्षत्र, माता-पिता के जन्म नक्षत्र, इनमें यदि जन्म हो तो अशुभ है, शान्ति करने से शुभ होता है।।५७।।

नक्षत्रों की तारासंख्या–

त्रित्र्यङ्गपञ्चाग्निकुवेदवह्नयः शरेषुनेत्राश्विशरेन्दुभूकृताः ।
वेदाग्निरुद्राश्वियमाग्निवह्नयोऽब्धयः शतं द्विद्विरदा भतारकाः ।।५८।।

अन्वयः–त्रित्र्यङ्गपञ्चाग्निकुवेदवह्नयः शरेषुनेत्राश्विशरेन्दुभूकृताः वेदाग्निरुद्राश्वियमाग्निवह्नयोः अब्धयः शतं द्विद्विरदा भतारकाः ज्ञेयाः।।५८।।

भाषा–अश्विनी आदि नक्षत्रों के क्रम से ३।३।६।५।३।१।४।३।५।५।-२।२।५।१।१।४।४।३।११।२।२।३।३।४।१००।२।२।३२। नक्षत्रों की तारा समझना चाहिये।।५८।।

नक्षत्रों के स्वरूप–

अश्व्यादिरूपं तुरगास्ययोनिःक्षुरोऽन एणास्यमणिर्गृहञ्च ।
पृषत्कचक्रे भवनञ्च मञ्च शय्या करो मौक्तिविद्रुमञ्च ।।५९।।
तोरणं बलिनिभञ्च कुण्डलं सिंहपुच्छगजदन्तमञ्चकाः ।
त्र्यस्त्रि च त्रिचरणाममर्दलौ वृत्तमञ्चयमलाभमर्दलाः ।।६०।।

अन्वयः–तुरगास्ययोनिःक्षुरः, अनः, एणास्यमणिः, गृहं च पृषत्कचक्रे भवनं च मञ्चः शय्याकरः मौक्तिविद्रुमं च तोरणं बलिनिभं कुण्डलं सिंहपुच्छगजदन्तमञ्चकाः त्र्यस्त्रि च त्रिचरणाभमर्दलौ वृत्तमञ्चयमलाभमर्दलाः इति अश्व्यादिरूपं (ज्ञेयम्)।।५९-६०।।

भाषा–अश्विनी नक्षत्र का घोड़े के मुख ऐसा स्वरूप, भरणी का भग, कृत्तिका का छूरा, रोहिणी का गाड़ी, मृगशिरा का हरिण के मुख जैसा, आर्द्रा का मणि, पुनर्वसु का गृह, पुष्य का बाण, श्लेषा का चक्र, मघा का भवन, पूर्वाफाल्गुनी का मञ्च,उत्तराफाल्गुनी का शय्या, हस्त का हाथ, चित्रा का मोती, स्वाती का मूँगा, विशाखा का तोरण, अनुराधा का भात, ज्येष्ठा का कुण्डल, मूल का सिंहपुच्छ, पूर्वाषाढ़ा का हाथी-दाँत, उत्तराषाढ़ा का मञ्च, अभिजित् का त्रिकोण, श्रवण का त्रिचरण, धनिष्ठा का मृदंग, शतभिषा का गोलाकार, पूर्वाभाद्रपद का मञ्च, उत्तराभाद्रपद का जुड़वाँ और रेवती का मृदंग के समान स्वरूप है। यह नक्षत्रों का स्वरूप हुआ।।५९-६०।।

जलाशय, बगीचा तथा देवप्रतिष्ठा मुहूर्त–

जलाशयारामसुरप्रतिष्ठा सौम्यायने जीवशशाङ्कशुक्रे ।
दृश्ये मृदुक्षिप्रचरध्रुवे स्यात्पक्षे सिते स्वर्क्षतिथिक्षणे वा ।।६१।।
रिक्तारवर्ज्ये दिवसेऽतिशस्ता शशाङ्कपापैस्त्रिभवाङ्गसंस्थैः ।
व्यन्त्याष्टमैः सतखचरैर्मृगेन्द्रे सूर्यो घटे को युवतौ च विष्णुः ।।६२।।

शिवो नृयुग्मे द्वितनौ च देव्यः क्षुद्राश्चरे सर्व इमे स्थिरर्क्षे ।
पुष्ये ग्रहा विघ्नपयक्षसर्पभूतादयोऽन्त्ये श्रवणे जिनश्च ।।६३।।

अन्वयः-सौम्यायने जीवशशाङ्कशुक्रे दृश्ये मृदुक्षिप्रचरध्रुवे, सिते पक्षे वा स्वर्क्ष-तिथिक्षणे, रिक्तारवर्ज्ये दिवसः, शशाङ्कपापैः त्रिभवाङ्गसंस्थैः सत्खचरैः व्यन्त्याष्टगैः जलाशयारामसुरप्रतिष्ठा अतिशस्ता। मृगेन्द्रे सूर्यः, घटे कः (ब्रह्मा), युवतौ विष्णुः, नृयुग्मे शिवः, च (पुनः) द्वितनौ देव्यः, चरे क्षुद्राः, इमे सर्वे स्थिरर्क्षे (स्थाप्याः) । पुष्ये ग्रहाः अन्त्ये विघ्नपयक्षसर्पभूतादयः श्रवणे जिनः (स्थाप्यः)।।६१-६३।।

भाषा-उत्तरायण के सूर्य में, गुरु, चन्द्रमा, शुक्र के उदय में, मृदुसंज्ञक, क्षिप्रसंज्ञक, चरसंज्ञक, ध्रुवसंज्ञक नक्षत्र में, शुक्लपक्ष में, जिस देव की स्थापना करनी हो उस देवता के नक्षत्र, तिथि और मुहूर्त में, रिक्ता तिथि और मंगल दिन को छोड़कर अन्य तिथि और दिन में, चन्द्रमा और पापग्रह ३।६।११ इन स्थानों में से किसी एक में हों, शुभग्रह ८।१२ इन स्थान से रहित अन्य स्थान में हो तो तालाब, बगीचा, देवमन्दिर वगैरह की प्रतिष्ठा शुभ है। अब विशेष कहते हैं कि, सिंह लग्न में सूर्य की, कुम्भ लग्न में ब्रह्मा, कन्या लग्न में विष्णु, मिथुन में शिव, द्विस्वभाव लग्न में देवी भगवती आदि की, चर लग्न में क्षुद्र देवता और स्थिर लग्न में सब देवताओं की, चतुःषष्ठी आदि और स्थिर लग्न में सब देवताओं की, पुष्य नक्षत्र में चन्द्रादि आठ ग्रहों की, गणेश, यक्ष, नाग, भूत आदि की स्थापना, रेवती में और बुद्धदेव की श्रवण नक्षत्र में स्थापना करे।।६१-६३।।

इति नक्षत्रप्रकरणं समाप्तम् ।

संक्रान्तिप्रकरणम्

संक्रान्तियों के नाम तथा फल-

घोरार्कसंक्रमणमुग्ररवौ हि शूद्रान्
ध्वांक्षी विशो लघुविधौ च चरर्क्षभौमे ।
चौरान् महोदरयुता नृपतीन् ज्ञमैत्रे
मन्दाकिनी स्थिरगुरौ सुखयेच्च मन्दा ।।१।।
विप्रांश्च मिश्रभभृगौ तु पशूंश्च मिश्रा
तीक्ष्णार्कजेऽन्त्यजसुखा खलु राक्षसी च ।

अन्वयः-उग्ररवौ अर्कसंक्रमणं घोरा, सा शूद्रान् सुखयेत् । लघुविधौ ध्वांक्षी सा विशः, च (पुनः) चरर्क्षभौमे महोदरयुता, सा चौरान् , ज्ञमैत्रे मन्दाकिनी, सा नृपतीन् ,स्थिरगुरौ मन्दा, सा विप्रान् , मिश्रभभृगौ मिश्रा, सा पशून् सुखयेत् , तीक्ष्णार्कजे राक्षसी, सा अन्त्यजसुखा भवति!!१।।

भाषा–उग्रसंज्ञक नक्षत्र या रविवार को सूर्य संक्रान्ति होने से घोरा नामक संक्रान्ति होती है, यह शूद्रों को सुख देनेवाली होती है। लघुसंज्ञक नक्षत्र और सोमवार को संक्रान्ति हो तो ध्वांक्षी नाम की वैश्यों को सुख देती है। चरसंज्ञक नक्षत्र और मंगलवार को संक्रान्ति हो तो महोदरी नामक वह चोरों को सुख देती है। मैत्र संज्ञक बुधवारको संक्रान्ति हो तो मन्दाकिनी नाम की क्षत्रियों को सुख देती है। स्थिर संज्ञक गुरुवार को संक्रान्ति हो तो मन्दा नाम की ब्राह्मणों को सुख देती है। मिश्रसंज्ञक शुक्रवार को संक्रान्ति हो तो मिश्रा नामक संक्रान्ति पशुओं को सुख देती है। तीक्ष्णसंज्ञक नक्षत्र शनिवार को संक्रान्ति हो तो राक्षसी नामक संक्रान्ति अन्त्यजों को सुख देती है॥१॥

संक्रान्तिचक्र –

सं० ना	घोरा	ध्वांक्षी	महोदरी	मन्दाकिनी	मन्दा	मिश्रा	राक्षसी
वा.	रवि	सोम	मंगल.	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि
नक्षत्र	पू० ३ भरणी मघा	हस्त अश्वि. पुष्य अभि.	स्वाती,पुन. श्रवण,धनि. शतभिषा	मृगशिरा रेवती चित्रा अनुराधा	उत्तरा ३ रोहिणी	विशाखा कृत्तिका	मूल ज्येष्ठा आर्द्रा आश्लेषा
फलम्	शूद्र सुखदा	वैश्य सुखदा	चोर सुखदा	क्षत्रिय सुखदा	ब्राह्मण सुखदा	पशु सुखदा	चांडालादि सुखदा

त्र्यंशे दिनस्य नृपतीन् प्रथमे निहन्ति
मध्ये द्विजानपि विशः परके च शूद्रान् ॥२॥
अस्ते निशाप्रहरकेषु पिशाचकादीन्
नक्तञ्चरानपि नटान् पशुपालकांश्च ।
सूर्योदये सकललिंगिजनञ्च सौम्य-
याम्यायनं मकरकर्कटयोर्निरुक्तम् ॥३॥

अन्वयः–**दिनस्य प्रथमे त्र्यंशे (अर्कसंक्रमणं) नृपतीन् निहन्ति, मध्ये द्विजान्, परके विशः, च (पुनः) अस्ते शूद्रान्। निशाप्रहरकेषु पिशाचकादीन् नक्तञ्चरान्, अपि च नटान्, पशुपालकान् निहन्ति। सूर्योदये सकललिङ्गिजनं निहन्ति च (पुनः) मकरकर्कटयोः संक्रमणं सौम्यायनं निरुक्तम् ॥२-३॥**

भाषा–**दिन के प्रथम तृतीयांश में सूर्य की संक्रान्ति हो तो क्षत्रियों का, मध्य समय में ब्राह्मणों का, तृतीय भाग में वैश्यों का और अस्त समय में शूद्रों का**

नाश करती है। रात्रि के प्रथम प्रहर में संक्रान्ति हो तो पिशाचादिकों का, द्वितीय प्रहर में राक्षसों का, तृतीय प्रहर में नर्तकों का, चतुर्थ प्रहर में पशुपालकों का और सूर्योदय काल में पाखण्डियों का नाश करती है। मकर राशि में संक्रान्ति सौम्यायन (उत्तरायण) और कर्क राशि की संक्रान्ति दक्षिणायन कहलाती है।।२-३।।

अन्य संक्रान्तियों की संज्ञा-

षडशीत्याननं चापनृयुक्कन्याझषे भवेत् ।
तुलाजौ विषुवं विष्णुपदं सिंहालिगोघटे ।।४।।

अन्वयः-चापनृयुकूकन्याझषे षडशीत्याननं, तुलाजौ विषुवं, सिंहालिगोघटे विष्णुपदं (संक्रमणं) भवेत् ।।४।।

भाषा-धनु, मिथुन, कन्या और मीन राशि में संक्रान्ति हो तो षडशीति मुख नामक संक्रान्ति होती है, मेष तुला की विषुवती नामक होती है। सिंह, वृश्चिक, वृष तथा कुम्भ की संक्रान्ति विष्णुपद नाम की होती है।।४।।

संक्रान्ति का पुण्यकाल -

संक्रान्तिकालादुभयत्र नाडिकाः पुण्या मताः षोडश षोडशोष्णगोः।
निशीथतोऽर्वागपरत्र संक्रमे पूर्वापराहान्तिमपूर्वभागयोः ।।५।।

अन्वयः-उष्णगोः संक्रान्तिकालात् उभयत्र षोडश षोडश नाडिकाः पुण्या मताः। निशीथतः अर्वागपरत्र संक्रमे सति क्रमेण पूर्वापराहान्तिमपूर्वभागयोः पुण्यघटिका भवन्ति।।५।।

भाषा-सूर्य के संक्रान्ति समय से १६ घटी पूर्व (पहले) और १६ घटी बाद पुण्यकाल होता है, अर्धरात्रि के पूर्व संक्रान्ति हो तो पहले दिन का उत्तरार्ध पुण्यकाल होता है और अर्धरात्रि के बाद संक्रान्ति हो तो दूसरे दिन का पूर्वार्ध पुण्यकाल होता है।।५।।

अर्धरात्रि की संक्रान्ति में विशेषता-

पूर्णे निशीथे यदि संक्रमः स्याद्दिनद्वयं पुण्यमथोदयास्तात् ।
पूर्वं परस्तात् यदि याम्यसौम्यायने दिने पूर्वपरे तु पुण्ये ।।६।।

अन्वयः-पूर्णे निशीथे यदि संक्रमः स्यात् (तदा) दिनद्वयं पुण्यं (कथितम्) । अथ उदयास्तात् पूर्वं परस्तात् यदि याम्यसौम्यायने संक्रमणे भवेतां, तदा पूर्वपरे दिने पुण्ये।।६।।

भाषा-यदि अर्धरात्रि में सूर्य की संक्रान्ति हो तो दोनों दिन पुण्यकाल होता है। अब मकर और कर्क में विशेषता कहते हैं कि, सूर्योदय से पहले यदि कर्क की संक्रान्ति हो तो पहले दिन पुण्यकाल होता है और सूर्यास्त के बाद मकर संक्रान्ति हो तो दूसरे दिन पुण्यकाल होता है।।६।।

सन्ध्याकाल में विशेषता –

सन्ध्या त्रिनाडीप्रमितार्कबिम्बादर्धोदितास्तादध ऊर्ध्वमत्र ।
चेद्याम्यसौम्ये अयने क्रमात् स्तः पुण्यौ तदानीं परपूर्वघस्रौ ।।७।।

अन्वयः–अर्द्धोदितास्तात् अर्कबिम्बात् अधः ऊर्ध्वं च त्रिनाडीप्रमिता संध्या (प्रोक्ता)। अत्र चेत् याम्यसौम्ये अयने संक्रमणे भवेतां तदानीं क्रमात् परपूर्वघस्रौ पुण्यौ स्तः।।७।।

भाषा–आधा सूर्य बिम्ब के उदय होने के पहले ३ घटी प्रातः सन्ध्या और आधा सूर्य बिम्ब अस्त होने के बाद ३ घटी सायं सन्ध्या होती है, यदि प्रातः सन्ध्या में कर्क की संक्रान्ति हो तो परदिन सम्पूर्ण पुण्यकाल रहता है और सायं सन्ध्या में मकर की संक्रान्ति हो तो पूर्व दिन, दिन भर पुण्यकाल होता है।।७।।

याम्यायने विष्णुपदे आद्या मध्या तुलाजयोः ।
षडशीत्यानने सौम्ये परा नाड्योऽतिपुण्यदाः ।।८।।

अन्वयः–याम्यायने विष्णुपदे च आद्यः नाड्यः, तुलाजयोः मध्याः नाड्यः, षडशीत्यानने सौम्ये च परा नाड्यः अतिपुण्यदाः कथिताः।।८।।

भाषा–कर्क, वृष, वृश्चिक, सिंह, कुम्भ के संक्रान्तिकाल से पहले की सोलह घटी विशेष पुण्यकाल होता है। मेष और तुला की संक्रान्ति की मध्य की सोलह घटी विशेष पुण्यकाल होता है। मिथुन, कन्या, धनु, मीन और मकर इनमें संक्रान्ति के बाद की सोलह घटी में विशेष पुण्यकाल होता है।।८।।

सायनांश संक्रान्ति में पुण्यकाल–

तथायनांशाः खरसाहताश्च स्पष्टार्कगत्या विहता दिनाद्यैः ।
मेषादितः प्राक्चलसंक्रमाः स्युर्दाने जपादौ बहुपुण्यदास्ते ।।९।।

अन्वयः–अयनांशाः खरसाहताः स्पष्टार्कगत्या विहतालब्धैः दिनाद्यैः मेषादितः प्राक् चलसंक्रमाः स्युः। ते च दाने जपादौ तथा बहुपुण्यदाः कथिताः।।९।।

भाषा–अयनांश को ६० से गुणाकर स्पष्ट सूर्य की गति से भाग दे, जो लब्धि हो उतने दिन मेषादि संक्रान्ति समय से पहले चल (सायन) संक्रान्ति होती है। वह सायन संक्रान्ति दान और जपादि में उसी प्रकार अत्यन्त पुण्यदायक होती है जैसे निरयन संक्रान्ति।।९।।

नक्षत्रों की जघन्यादि सञ्ज्ञा–

समं मृदुक्षिप्रवसुश्रवोऽग्निमघात्रिपूर्वास्त्रपभं बृहत्स्यात् ।
ध्रुवद्विदैवादितिभं जघन्यं सार्पाम्बुपार्द्रानिलशाक्रयाम्यम् ।।१०।।

अन्वयः–मृदुक्षिप्रवसुश्रवोऽग्निमघात्रिपूर्वास्त्रपभं समं समसंज्ञकं स्यात् । ध्रुवद्विदैवादितिभं बृहत् बृहत्संज्ञकं स्यात् । सार्पाम्बुपार्द्रानिलशाक्रयाम्यं जघन्यं जघन्यसंज्ञकं स्यात् ।।१०।।

भाषा–मृदुसंज्ञक, क्षिप्रसंज्ञक, धनिष्ठा, श्रवण, कृत्तिका, मघा, तीनों पूर्वा, मूल इन नक्षत्रों की समसंज्ञा (नाम) है। ध्रुवसंज्ञक, विशाखा, पुनर्वसु ये बृहत्संज्ञक नक्षत्र हैं। आश्लेषा, शतभिषा, आर्द्रा, स्वाती, ज्येष्ठा, भरणी ये जघन्य संज्ञक नक्षत्र हैं ॥१०॥

संक्रान्ति के मुहूर्त और फल–

जघन्यभे संक्रमणे मुहूर्ताः शरेन्दवो बाणकृता बृहत्सु ।
खरामसंख्याः समभे महर्घसमर्घसाम्यं विधुदर्शनेऽपि ॥११॥

अन्वयः–जघन्यभे संक्रमणे सति शरेन्दवः मुहूर्ताः। बृहत्सु बाणकृताः मुहूर्ताः। समभे खरामसंख्याः मुहूर्ताः (भवन्ति)। तत्र संक्रमणे विधुदर्शनेऽपि च महर्घसमर्घसाम्यफलं ज्ञेयम् ॥११॥

भाषा–जघन्य नामक नक्षत्र में संक्रान्ति हो तो १५ मुहूर्त, बृहत्संज्ञक नक्षत्र में ४५ और समसंज्ञक नक्षत्र में ३० मुहूर्त संक्रान्ति काल होता है। जो संक्रान्ति १५ मुहूर्त हो उसमें अन्न महँगा, ४५ मुहूर्त में सस्ता और ३० मुहूर्त में अन्न सम (न महँगा, न सस्ता) रहेगा। इसी प्रकार इन नक्षत्रों में चन्द्रमा के उदय होने से भी विचार करना चाहिये॥११॥

कर्क की संक्रान्ति वश सम्वत्सर का विंशोपक–

अर्कादिवारे संक्रान्तौ कर्कस्याब्दविंशोपकाः ।
दिशो नखा गजाः सूर्य्या धृत्योऽष्टादश सायकाः ॥१२॥

अन्वयः–अर्कादिवारे कर्कस्य संक्रान्तौ क्रमात् दिशः, नखाः, गजाः, सूर्य्याः, धृत्यः, अष्टादश, सायकाः अब्दविंशोपकाः भवन्ति॥१२॥

भाषा–रव्यादि वारों में कर्क की संक्रान्ति हो तो क्रम से १०।२०।८।१२। १८।१८।५ वर्ष विंशोपक होता है। जिस दिन कर्क की संक्रान्ति होती है उसी दिन के अनुसार पंचांग में विंशोपक (विस्वा) लिखा जाता है॥१२॥

कर्क संक्रान्ति में अब्द विंशोपकचक्र–

र०	सो०	मं०	बु०	बृ०	शु०	श०
१०	२०	८	१२	१८	१८	५

संक्रान्ति की स्थिति तथा फल–

स्यात् तैतिले नागचतुष्पदे रविः सुप्ता निविष्टस्तु गरादिपंचके ।
किंस्तुघ्न ऊर्ध्वः शकुनौ सकौलवे नेष्टः समः श्रेष्ठ इहार्घवर्षणे ॥१३॥

अन्वयः–तैतिले नागचतुष्पदे (करणे) रविः सुप्तः सन् तु (पुनः) गरादिपञ्चके निविष्टः सन्, किंस्तुघ्ने, सकौलवे शकुनौ च ऊर्ध्वः (सन् संक्रमणं करोति) इह अर्घवर्षणे (क्रमशः) नेष्टः समश्रेष्ठश्च भवति॥१३॥

भाषा–तैतिल, नाग, चतुष्पद करणों में संक्रान्ति, रवि की सुप्तावस्था में, गरादि पञ्चक करण में (गर, वणिज, विष्टि, बव और बालव में), बैठकी की अवस्था में, किंस्तुघ्न, शकुनि और कौलव करण में खड़ी अवस्था में संक्रान्ति होती है। ये क्रम से अर्घ (अन्नादि के मूल्य) और वर्षण (जलवृष्टि) में अनिष्ट, सम और श्रेष्ठ होते हैं। अर्थात् सुप्तावस्था में अनिष्ट, बैठे हुए में सम और उठे हुए में श्रेष्ठ होता है॥१३॥

संक्रान्ति वाहन, वस्त्र आदि का फल–

सिंहव्याघ्रवराहरासभगजा वाहद्विषट्घोटकाः
श्वाजो गौश्चरणायुधश्च बवतो वाहौ रवेः संक्रमे।
वस्त्रं श्वेतसुपीतहारितकपांडूवारक्तकालासितं
चित्रं कम्बलदिग्घनाभमथ शस्त्रं स्याद्भुशुण्डी गदा॥१४॥
खड्गो दण्डशरासतोमरमथ कुन्तश्च पाशांकुशो-
ऽस्त्रं बाणस्त्वथ भक्ष्यमन्नपरमान्नं भैक्ष्यपक्वानकम्।
दुग्धं दध्यापि चित्रितान्नगुडमध्याज्यं तथा शर्करा-
ऽथो लेपो मृगनाभिकुङ्कुममथो पाटीरमृद्रोचनम्॥१५॥
यावश्चोतुमदो निशाञ्जनमथो कालागुरुश्चन्द्रको
जातिर्दैवतभूतसर्पविहगाः पश्वेणविप्रास्ततः।
क्षत्रीवैश्यकशूद्रसङ्करभवाः पुष्पञ्च पुन्नागकं
जातीबाकुलकेतकानि च तथा बिल्वार्कदूर्वाम्बुजम्॥१६॥
स्यान्मल्लिका पाटलिका जपा च संक्रान्तिवस्त्राशनवाहनादेः।
नाशश्च तद्वृत्युपजीविनाच्च स्थितोपविष्टस्वपतां च नाशः॥१७॥

अन्वयः–बवतः रवेः संक्रमे सति क्रमशः सिंहव्याघ्रवराहरासभगजाः वाहद्विषट्घोटकाः श्वा अजः गौः चरणायुधः वाहाः स्युः। श्वेतसुपीतहारितकपांडूवारक्तकालासितं चित्रं कम्बलदिग्घनाभं वस्त्रं ज्ञेयम्। अथ भुशुंण्डी गदा खड्गः दण्डशरासतोमरं अथो कुन्तः पाशः अङ्कुशः अस्त्रं बाणः शस्त्रं स्यात्। अथ अन्नपरमान्नं भैक्ष्यपक्वान्नकं दुग्धं दधि अपि चित्रितान्नगुडमध्याज्यं तथा शर्करा च भक्ष्यं (भोजनं) स्यात्। अथ मृगनाभिकुङ्कुमम् अथो पाटीरमृद्रोचनम् यावः च ओतुमदः निशाञ्जनम् अथ कालागुरुः लेपः स्यात्। दैवतभूतसर्पबिहगाः पश्वेणविप्राः क्षत्रीवैश्यकशूद्रसंकरभवा जातिः, चन्द्रकः तथा च जातीवाकुलकेतकानि तथा बिल्वार्कदूर्वाम्बुजमल्लिका पाटलिका जपा पुष्पं स्यात्। संक्रान्तिवस्त्राशनवाहनादेः तद्वृत्त्युपजीविनां च नाशः तथा स्थितोपविष्टस्वपतां च नाशः स्यात्॥१४-१७॥

भाषा-बवादि ११ करण में सूर्य की संक्रान्ति हो तो क्रम से सिंह, व्याघ्र, वराह, हाथी, भैंसा, घोड़ा, कुत्ता, मेष (भेड़ा), वृष,मुर्गा ये संक्रान्ति के वाहन और उजला, पीला, हरा, पाण्डुवर्ण, लाल, काला, कज्जल वर्ण, अनेक प्रकार के रंग, कम्बल, दिग्वस्त्र, मेघ सदृश वर्ण ये वस्त्र होते हैं। भुशुण्डी, गदा, खड्ग, दण्ड, धनुष, तोमर, भाला, पाश, अङ्कुश, अस्त्र, बाण ये शस्त्र हैं। अन्न, खीर, भीख में प्राप्त अन्न, पक्वान्न, दूध, दधि, चित्रान्न, गुड़, शहद, घृत, शक्कर ये भोजन हैं। कस्तूरी, कुकुंम, लाल चन्दन, मिट्टी, गोरोचन, महावर, ओतुमद, हल्दी, सुरमा, अगर, कपूर ये लेपन (शरीर में लगानेवाला) हैं। देवता, भूत, सर्प,पक्षी, पशु, मृग, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, वर्णशङ्कर ये जातियाँ हैं। पुन्नाग, चमेली, मौलश्री, केतकी, बेल के फूल, मन्दार,दूर्वा, कमल, चमेली, पाटलिका, अड़हुल का फूल ये पुष्प हैं। अर्थात् बवनामक करण में सिंह वाहन, श्वेत वस्त्र, भुशुण्डी शस्त्र, अन्न खाती हुई, कस्तूरी लगाये, देवता जाति और हाथ में पुन्नाग का फूल ऐसा स्वरूप संक्रान्ति का समझना चाहिये। इसी प्रकार आगे भी जिस मास की संक्रान्ति के जो वाहन कहे गये हैं उसे मासमें उन वस्तुओं का नाश तथा उनसे जीविका चलानेवालों का नाश होता है, उससे पहले श्लोक में जो अवस्था कही गयी है उसमें वर्तमान सोये, उठे और बैठे हुए प्राणियों का नाश होता है॥१४-१७॥

संक्रान्ति से शुभाशुभ फल का ज्ञान-

संक्रान्तिधिष्ण्याधरधिष्ण्यतस्त्रिभे स्वभे निरुक्तं गमनं ततोऽङ्गभे।
सुखं त्रिभे पीडनमङ्गभेंऽशुकं त्रिभेऽर्थहानी रसभे धनागमः ॥१८॥

अन्वयः-संक्रान्तिधिष्ण्याधरधिष्ण्यतः त्रिभे स्वभे सति गमनं निरुक्तम्, ततः अङ्गभे सुखम्, त्रिभे पीडनम्, अङ्गभे अंकुशम्, त्रिभे अर्थहानिः, रसभे धनागमः स्यात्॥१८॥

भाषा-संक्रान्ति जिस नक्षत्र में हो उससे पूर्व नक्षत्र से गिनने से यदि अपना जन्मनक्षत्र ३ नक्षत्र के भीतर पड़े तो यात्रा (गमन), फिर छठे नक्षत्रमें पड़े तो शरीर में सुख, फिर तीसरे नक्षत्र में पड़े तो पीड़ा, फिर छठे नक्षत्र में पड़े तो नवीन वस्त्र की प्राप्ति, फिर तीसरे नक्षत्र में पड़े तो धन की हानि और उसके बाद ६ में पड़े तो धनागम हो॥१८॥

संक्रान्तिनक्षत्र से जन्मनक्षत्र का शुभाशुभफल बोधक चक्र-

३	६	३	६	३	६
गमन	सुख	व्यथा	वस्त्र प्राप्ति	हानि	धन प्राप्ति

विशेष कार्य में ग्रहों के बल का ज्ञान -

नृपेक्षणं सर्वकृतिश्च संगरः शास्त्रं विवाहो गमदीक्षणे रवेः ।
वीर्येऽथ ताराबलतः शुभो विधुर्विधोर्बलेऽर्कोऽर्कबले कुजादयः ॥१९॥

अन्वयः–रवेः सूर्यादिः वीर्ये क्रमेण नृपेक्षणं, सर्वकृतिः, संगरः, शास्त्रं, विवाहः, गमदीक्षणे (शुभे स्याताम्)। ताराबलतः विधुः शुभः, विधोः बलात् रविः शुभः, अर्कबले परे कुजादयः शुभाः भवन्ति॥१९॥

भाषा–रवि आदि ग्रह बली हों तो क्रम से राजा का दर्शन, सर्वकार्यारम्भ, युद्ध, शास्त्राभ्यास, विवाह, यात्रा, दीक्षा (मन्त्र) ग्रहण करना शुभ है। तारा बलवती हो तो अशुभ भी चन्द्रमा शुभ होता है। इसी प्रकार यदि चन्द्रमा बली हो तो अशुभ सूर्य भी शुभ होता है। सूर्य बलवान् हो तो मंगलादि सब ग्रह शुभ होते हैं॥१९॥

संक्रान्ति से क्षयमास एवं अधिकमास का निर्णय–

स्पष्टार्कसंक्रान्तिविहीन उक्तो मासोऽधिमासः क्षयमासकस्तु।
द्विसंक्रमस्तत्र विभागयोः स्तस्तिथेर्हि मासो प्रथमान्त्यसंज्ञौ॥२०॥

अन्वयः–स्पष्टार्कसंक्रान्तिविहीनः मासः अधिमासः उक्तः। तु पुनः द्विसंक्रमः मासः क्षयमासकः स्यात्। तत्र तिथेः विभागयोः प्रथमान्त्यसंज्ञौ मासौ स्तः॥२०॥

भाषा–जिस चान्द्रमास में स्पष्ट सूर्य की संक्रान्ति नहीं हो तो वह अधिमास (मलमास) कहलाता है और जिस चान्द्रमास में सूर्य की दो संक्रान्ति हो वह क्षयमास कहलाता है, १ क्षयमास में २ मास व्यतीत हो जाते हैं इसलिये शुक्लपक्ष पहला और कृष्णपक्ष दूसरा महीना हुआ। यदि तिथि के पूर्वार्ध में जन्म या मरण हो तो पहले मास में उसका क्षयाह और जन्मदिन माना जाता है, उत्तरार्ध हो तो दूसरे मास में माना जाता है॥२०॥

इति संक्रान्तिप्रकरणम्।

ग्रहगोचरप्रकरणम्

गोचर में ग्रह वश शुभाशुभ फल–

सूर्य्यो रसान्त्ये खयुगेऽग्निनन्दे शिवाक्षयोर्भौमशनी तमश्च।
रसाङ्क्योर्लाभशरे गुणान्त्ये चन्द्रोऽम्बराब्धौ गुणनन्दयोश्च॥१॥
लाभाष्टमे चाद्यशरे रसान्त्ये नगद्वये ज्ञो द्विशरेऽब्धिरामे।
रसाङ्क्योर्नागविधौ खनागे लाभव्यये देवगुरुः शराब्धौ॥२॥
[illegible]चान्त्ये नवांशे द्विगुणे शिवाहौ शुक्रः कुनागे द्विनगेऽग्निरूपे।
वेदाम्बरे पञ्चनिधौ गजेषौ नन्देशयोर्भानुरसे शिवाग्नौ॥३॥
क्रमाच्छुभो विद्ध इति ग्रहः स्यात् पितुः सुतस्यात्र न वेधमाहुः।
दुष्टोऽपि खेटो विपरीतवेधात् शुभो द्विकोणे शुभदः सितेऽब्जः॥४॥

अन्वयः–सूर्यः स्वजन्मराशेः रसान्त्ये, खयुगे, अग्निनन्दे, शिवाक्षयोः च पुनः भौमशनी तमः रसाङ्क्योः, लाभशरे, गुणान्त्ये च, तथा चन्द्रः अम्बराब्धौ, गुणनन्दयोः, लाभाष्टमे,

आद्यशरे, रसान्त्ये नागद्वये, ज्ञः (बुधः), द्विशरे, अब्धिसमे, रसांकयोः, नागविधौ खनागे, लभव्यये, देवगुरुः, शराब्धौ, द्व्यन्त्ये, नवांशे, द्विगुणे, शिवाहौ, शुक्रः कुनागे, द्विनगे, अग्निरूपे, वेदाम्बरे, पञ्चनिधौ,गजेषो, नन्देशयोः, भानुरसे, शिवाग्नौ इति क्रमात् ग्रहः शुभः तथा बिद्धः स्यात् । अत्र पितुः सुतस्य वेधं न आहुः । तथा दुष्टः अपि खेटः ग्रहः विपरीतवेधात् शुभः स्यात् । तथा सिते अब्दः द्विकोणे शुभदः स्यात् ।।१-४।।

भाषा–अपनी जन्म राशि से छठे और बारहवें स्थान स्थित सूर्य क्रम से शुभ और बिद्ध होता है। जैसे, छठे भाव में सूर्य शुभ है और जन्मराशि से बारहवें स्थान में शनि को छोड़कर अन्य ग्रह हो तो वह बिद्ध होता है, अर्थात् अशुभ होता है। दशमभावस्थित सूर्य शुभ होता है और चौथे में शनि को छोड़कर अन्य ग्रह हो तो अशुभ होता है। तृतीय भावस्थित सूर्य शुभ है, परन्तु शनि को छोड़कर अन्य ग्रह नवमभाव में हो तो वह अशुभ है, एकादश भावस्थित सूर्य शुभ है और यदि पञ्चम में अन्य ग्रह हो तो वह अशुभ है। मंगल, शनि, राहु, केतु ये छठें में शुभ, नवें में अन्य ग्रह रहने से विद्ध अर्थात् अशुभ है। ११वें में शुभ, ५वें में कोई ग्रह हो तो अशुभ, ३ में शुभ, १२वें में ग्रह होने से अशुभ परन्तु शनि सूर्य से विद्ध नहीं होता है। १०वें में चन्द्रमा शुभ है, यदि बुध को छोड़कर चौथे में अन्य ग्रह हो तो विद्ध है। इसी तरह ३।९ में, ११।८ में, पहला पाँचवाँ में, ६।२ में, ७।२ में क्रमानुसार शुभ और विद्ध होता है। इसी प्रकार चन्द्रमा के वेधस्थान में २।५ में, ४।३ में, ६।९ में, ८।१ में, १०।८ में, ११।१२ में, बुध, चन्द्रमा को छोड़कर अन्य ग्रह हो तो वह शुभ और अशुभ होता है। बृहस्पति ५।४ में, २।१२ में, ९।१०में, २।३में, ११।८में शुभ अन्य ग्रह से विद्ध होने पर अशुभ होता है। शुक्र १।८ में, २।७ में,३।१ में, ४।१० में, ५।९ में, ८।५ में, ९।११ में, १२।६ में परस्पर शुभ और विद्ध समझना चाहिये और पिता पुत्र का वेध नहीं कहा गया है और विपरीत वेध होने पर शुभ कहा गया है। सूर्य को शनि का और चन्द्रमा को बुध का परस्पर वेध होने पर भी सूर्य और चन्द्रमा शुभ फल ही देते हैं,अशुभ फल नहीं देते। शुक्लपक्ष का चन्द्रमा २।९।५ इन स्थानों में रहने पर भी शुभ है, यदि क्रम से ६।८।४ इन स्थानों में कोई हो तब।।१-४।।

उदाहरण–जैसे जिसकी जन्म राशि मेष है उसके लिए कन्या का सूर्य शुभप्रद होगा। यदि शनि को छोड़कर कोई अन्य ग्रह मीन में नहीं हो तब,क्योंकि छठे स्थान के लिए १२वाँ वेध का स्थान है। तथा मीन राशि का सूर्य १२वाँ होने से अशुभ होगा। यदि उसके विपरीत वेध होता हो अर्थात् शनि को छोड़कर कोई अन्य ग्रह यदि कन्या में हो तो १२वाँ सूर्य भी शुभ समझा जायेगा। इसी प्रकार प्रत्येक शुभ और वेध स्थान का विचार करना चाहिये।।१-४।।

ग्रहों के शुभ और विद्ध जानने का चक्र–

ग्रह	रवि				चन्द्र						भौ. श. रा. के.		
शुभ	६	१०	३	११	१०	३	११	१	६	७	६	११	३
विद्ध	१०	४	९	५	४	९	८	५	१२	२	९	५	१२

ग्रह	बुध						गुरु					शुक्र								
शुभ	२	४	६	८	१०	११	५	२	९	७	११	१	२	३	४	५	८	९	१२	११
विद्ध	५	३	९	१	८	१२	४	१२	१०	३	८	८	७	३	१०	९	५	११	६	३

वेध में दो प्रकार का फल –

स्वजन्मराशेरिह वेधमाहुरन्ये ग्रहाधिष्ठितराशितः सः ।
हिमाद्रिविन्ध्यान्तर एव वेधो न सर्वदिशेष्विति काश्यपोक्तिः ।।५।।

अन्वयः–इह स्वजन्मराशेः सकाशात् वेधं आहुः। अन्ये ग्रन्थकर्तारः ग्रहाधिष्ठितराशितः सः वेधः हिमाद्रिविन्ध्यान्तरे एव देशे (ज्ञेयः) सर्वदिशेषु वेधः न इति काश्यपोक्तिः।।५।।

भाषा–इस वेध को अपने जन्मराशि से कहा है परन्तु कश्यपादि अन्य आचार्यों ने उस वेध को जिस घर में ग्रह बैठा हो उसी स्थान से लिया है। वह भी केवल हिमालय और विन्ध्याचल के बीच के देशों में ही माना गया है, अन्य देशों में नहीं।।५।।

ग्रहण का फल–

जन्मर्क्षे निधनं ग्रहे जनिभतो घातः क्षतिः श्रीर्व्यथा
चिन्तासौख्यकलत्रदौःस्थ्यमृतयः स्युर्माननाशः सुखम् ।
लाभोऽपाय इति क्रमात्तदशुभध्वस्त्यै जपः स्वर्णगो-
दानं शान्तिरथो ग्रहं त्वशुभदं नो वीक्ष्यमाहुः परे ।।६।।

अन्वयः–जन्मर्क्षे (जन्मनक्षत्रे) ग्रहे सति निधनं (स्यात्) जनिभतः (जन्मराशितः) ग्रहणे घातः, क्षतिः, श्रीः, व्यथा,चिन्तासौख्यं, कलत्रदौःस्थ्यमृतयः, माननाशः, सुखं, लाभः, अपायः इति क्रमात् फलानि स्युः। तदशुभध्वस्त्यै जपः कार्यः, स्वर्णं, गोदानं, शान्तिः कार्या। अथो परे (अन्ये) तु अशुभदं ग्रहं नो वीक्ष्य आहुः।।६।।

भाषा–जन्म नक्षत्र में यदि सूर्य या चन्द्रमा का ग्रहण हो तो मरण होता है। जन्म राशि से क्रम से ग्रहण का फल समझना चाहिये, जैसे जन्म राशि में घात, दूसरे में हानि, तीसरे में लक्ष्मी, चौथे में व्यथा, ५ वें में चिन्ता, छठें में सौख्य, ७वें में स्त्री कष्ट, ८वें में मरण, ९वें मे माननाश, १०वें में सुख, ११वें में लाभ, १२वें में मरण होता है। इन अशुभ फलों के नाश करने के लिये जप, सुवर्णदान, गोदान करना चाहिये, परन्तु दूसरे आचार्य का मत है कि ग्रहण ही न देखे।।६।।

चन्द्रबल में विशेष विचार–

पापान्तःपापयुग्द्यूने पापाच्चन्द्रः शुभोऽप्यसत् ।
शुभांशे चाधिमित्रांशे गुरुदृष्टोऽशुभोऽपि सत् ।।७।।

अन्वयः–चन्द्रः पापान्तः, पापयुक् , पापात् द्यूने शुभोऽपि असत् , शुभांशे वा अधिमित्रांशे गुरुदृष्टः अशुभः अपि सत् स्यात् ।।७।।

भाषा–चन्द्रमा दो पापग्रहों के बीच में हो अथवा पापग्रह से युत हो अथवा पापग्रह से सातवें स्थान में हो तो शुभ रहने पर भी अशुभ फल देता है। और वही चन्द्रमा शुभ ग्रहों के नवांश में वा अपने अधिमित्र के नवांश में गुरु से दृष्ट हो (देखा जाता हो) तो अशुभ भी चन्द्रमा शुभ फल देता है।।७।।

शुक्लपक्षादि से चन्द्रबल–

सितासितादौ सद्दृष्टे चन्द्रे पक्षौ शुभावुभौ ।
व्यत्यासे च शुभौ प्रोक्तौ संकटेऽब्जबलं त्विदम् ।।८।।

अन्वयः–सितासितादौ सद्दृष्टे चन्द्रे सति उभौ पक्षौ प्रोक्तौ । व्यत्यासे च अशुभौ प्रोक्तौ। इदं अब्जबलं संकटे आवश्यके विचार्यम् ।।८।।

भाषा–शुक्लपक्ष के प्रतिपद् में जिसका चन्द्रमा शुभ हो और कृष्णपक्ष की प्रतिपदा में अशुभ हो तो भी दोनों पक्ष शुभ होता है। इसके विपरीत दशा में यदि चन्द्रमा शुक्लपक्ष की प्रतिपदा में अशुभ और कृष्णपक्ष के प्रतिपद् में शुभ हो तो भी दोनों पक्ष में अशुभ फल देता है। यह चन्द्रबल आवश्यक कार्य में ही विचार करना चाहिये।।८।।

ग्रहदोषनिवारणार्थ रत्नधारण–

वज्रं शुक्रेऽब्जे सुमुक्ता प्रवालं भौमेऽगौ गोमेदमार्कौ सुनीलम् ।
केतौ वैदूर्यं गुरौ पुष्पकं ज्ञे पाचिः प्राङ्माणिक्यमर्के तु मध्ये ।।९।।

अन्वयः–शुक्रे वज्रं अब्जे सुमुक्ता, भौमे प्रवालं, अगौ गोमेदम् , आर्कौ सुनीलम्, केतौ वैदूर्यम् , गुरौ पुष्पकं, ज्ञे पाचिः इति प्राक् । पूर्वादिदिशाक्रमेण (मुद्रिकायां रत्नानि धार्याणि), अर्के मध्ये माणिक्यं धार्यम् ।।९।।

भाषा–अँगूठी में पूर्वादि क्रम से शुक्र के वास्ते वज्र, चन्द्र के लिये मुक्ता, मङ्गल के लिये मूँगा, राहु के लिये गोमेद, शनि के लिए नीलम, केतु के लिये वैदूर्य, गुरु के लिए पन्ना और सूर्यग्रह के लिये मध्य में माणिक्य धारण करने से ग्रहों के दोष से उत्पन्न पीड़ा शान्त होती है।।९।।

सूर्यादिग्रहों के भिन्न-भिन्न रत्न–

माणिक्यमुक्ताफलविद्रुमाणि गारुत्मकं पुष्पकवज्रनीलम् ।
गोमेदवैदूर्य्यकमर्कतः स्यू रत्नान्यथो ज्ञस्य मुदे सुवर्णम् ।।१०।।

अन्वयः–माणिक्यमुक्ताफलविद्रुमाणि गारुत्मकं पुष्पकवज्रनीलम् गोमेदवैदूर्य्यकम् अर्कतः रत्नानि धार्याणि। अथो ज्ञस्य मुदे सुवर्णं धार्यम् ॥१०॥

भाषा–माणिक, मोती, मूँगा, पन्ना, पुखराज, हीरा, नीलम, गोमेद, वैदूर्य ये क्रम से सूर्यादि ग्रहों को प्रसन्न करने के लिये धारण करने चाहिये और बुध की तुष्टि के लिये सोना धारण करना चाहिये॥१०॥

रत्नधारण और तारा का प्रकार–

धार्यं लाजावर्त्तकं राहुकेत्वो रौप्यं शक्रेन्द्वोश्च मुक्ता गुरोस्तु ।
लोहं मन्दस्यारभान्वोः प्रवालं तारा जन्मर्क्षात्त्रिरावृत्तितः स्यात् ॥११॥

अन्वयः–राहुकेत्वोः लाजावर्तकं, शुक्रेन्द्वोः च रौप्यं, गुरोः मुक्ता, तु पुनः मन्दस्य लोहं, आरभान्वोः प्रवालं (धार्यम्)। जन्मर्क्षात् त्रिरावृत्तितः तारा ज्ञेयाः॥११॥

भाषा–राहु, केतु के लिये लाजावर्त, शुक्र और चन्द्रमा के लिये चाँदी, गुरु के लिये मुक्ता, शनि के लिये लोहा, मङ्गल और सूर्य के लिये प्रवाल (मूँगा) धारण करना चाहिये। जन्म नक्षत्र से अभीष्ट दिन नक्षत्र तक गिनने से जितनी संख्या हो उसमें ९ का भाग दे,जो शेष बचे वह तारा होती है। जैसे, किसी का जन्म नक्षत्र अनुराधा है और वर्तमान दिन नक्षत्र शतभिषा है तो अनुराधा से शतभिषा ८ नक्षत्र हुआ अर्थात् यही आठवीं तारा हुई॥११॥

नौ ताराओं के नाम–

जन्माख्यसम्पद्विपदः क्षेमप्रत्यरिसाधकाः ।
वधमैत्रातिमैत्राः स्युस्तारा नामसदृक्फलाः ॥१२॥

अन्वयः–जन्माख्यसम्पद्विपदः क्षेमप्रत्यरिसाधकाः वधमैत्रातिमैत्राः एताः ताराः नामसदृक्फलाश्च स्युः॥१२॥

भाषा–जन्म नक्षत्र से दिन नक्षत्र तक की संख्या में ९ का भाग देने से १ शेष में जन्म, २ में सम्पत् , ३ में विपत् , ४ में क्षेम, ५ में प्रत्यरि, ६ में साधक, ७ में वध, ८ में मैत्र, ९ में अतिमैत्र ये नवों ताराएँ अपने नाम के अनुसार फल देती हैं॥१२॥

आवश्यकता पड़ने पर दुष्ट तारा के लिए दान–

मृत्यौ स्वर्णतिलान्विपद्यपि गुडं शाकं त्रिजन्मस्वथो
दद्यात् प्रत्यरितारकासु लवणं सर्वो विपत्प्रत्यरिः ।
मृत्युश्चादिमपर्यये न शुभदोऽथैषां द्वितीयेंऽशका-
नादिप्रान्त्यतृतीयका अथ शुभाः सर्वे तृतीये स्मृताः ॥१३॥

अन्वयः–मृत्यौ स्वर्णतिलान् दद्यात् । विपदि गुडं, त्रिजन्मसु शाकं, प्रत्यरितारकासु लवणं दद्यात् । आदिमें पर्यये विपत्, प्रत्यरिः मृत्युश्च सर्वो न शुभः । एषां

विपत्प्रत्यरिभृत्यूनाम् द्वितीये पर्यायि आदिप्रान्त्यतृतीयकाः अंशकाः न शुभदाः। अथ (तृतीयावृत्तौ) सर्वे शुभाः स्मृताः।।१३।।

भाषा–वध तारा में स्वर्ण और तिल, विपद् में गुड़, जन्म तारा में शाक, प्रत्यरि तारा में लवण दान करने से शुभ होता है। तारा की तीन आवृत्ति होती है। पहली आवृत्ति में विपद् , प्रत्यरि और वध सम्पूर्ण अशुभ होता है। और दूसरी आवृत्ति में विपद् के प्रथम चरण अशुभ और बाकी शुभ होते हैं। प्रत्यरि का चतुर्थ चरण अशुभ होता है और वध का तृतीय चरण अशुभ होता है। और तीसरी आवृत्ति में सब ताराएँ शुभ होती हैं।।१३।।

चन्द्र की अवस्था और गणना–

षष्ठिघ्नं गतभं भुक्तघटीयुक्तं युगाहतम् ।
शराब्धिहल्लब्धतोऽर्कशेषेऽवस्थाः क्रियाद्विधोः ।।१४।।

अन्वयः–गतभं षष्ठिघ्नं भुक्तघटीयुक्तं युगाहतं शराब्धिहल्लब्धतः अर्कशेषे क्रियात् (मेषात् क्रमशः) विधोः अवस्थाः स्युः।।१४।।

भाषा–गत नक्षत्र की संख्या को ६० से गुणाकर (यहाँ नक्षत्र की गिनती अश्विनी से होती है) उसमें वर्तमान नक्षत्र की भुक्त घटी जोड़कर ४ से गुणाकर फिर ४५ का भाग दे, जो लब्धि हो उसमें १२ के भाग से जो शेष बचे वह मेषादि राशि स्थित चन्द्रमा की भुक्त अवस्था होती है। लब्धि यदि बारह से अधिक हो तो उसमें १२ का भाग दे जो शेष बचे वही चन्द्रमा की भुक्त अवस्था होगी।।१४।।

चन्द्र की बारह अवस्थाओं के नाम–

प्रवासनाशौ मरणं जयश्च हास्यारतिक्रीडितसुप्तभुक्ताः ।
ज्वराख्यकम्पस्थिरता अवस्था मेषात्क्रमान्नामसदृक् फलाः स्युः।।१५।।

अन्वयः–प्रवासनाशौ मरण जयः हास्यारतिक्रीडितसुप्तभुक्ताः ज्वराख्यकम्पस्थिरताः मेषात् क्रमात् नामसदृक्फलाः अवस्थाः स्युः।।१५।।

भाषा–एकादि शेष में चन्द्रमा की अवस्था का फल इस प्रकार होता है। १ में प्रवास, २ में नाश, ३ में मरण, ४ में जय, ५ में हास्य, ६ में रति, ७ में क्रीड़ा, ८ में सुप्त, ९ में भुक्त, १० में ज्वर, ११ में कम्प, १२ में स्थिरता ये मेषादि क्रम से होते हैं और अपने नाम के अनुसार फल देते हैं।।१५।।

ग्रहों के दोष निवारणार्थ औषधि स्नान और दान–

लाजाकुष्ठबलाप्रियंगुघनसिद्धार्थैर्निशादारुभिः
पुङ्खालोध्रयुतैर्जलैर्निगदितं स्नानं ग्रहोत्थाघहृत् ।
धेनुः कम्ब्वरुणो वृषश्च कनकं पीताम्बरं घोटकः
श्वेतो गौरसिता महासिरज इत्येता रवेर्दक्षिणाः ।।१६।।

अन्वयः–लाजाकुष्ठबलाप्रियंगुघनसिद्धार्थैः निशादारुभिः पुङ्खालोध्रयुतैः जलैः ग्रहोत्थाघहृत् स्नानं निगदितम् । धेनुः, कम्बुः (शङ्खः), अरुणः वृषः, च कनकं, पीताम्बरं, श्वेतः घोटकः, असिता गौः, महासिः, अजः इति एता रवेर्दक्षिणाः स्युः।।१६।।

भाषा–धान का लावा, कूठ, बरियार, ककुनी, पोस्ता (अफीम का बीज) पीली सरसों, हल्दी, देवदारु, शरफोंका, लोध इन औषधियों को जल में मिलाकर स्नान करने से ग्रहजनित दोष दूर हो जाते हैं। अब ग्रह के दोष-शान्त्यर्थ दान कहते हैं। रवि में धेनु (सवत्सा गौ), चन्द्र में शङ्ख, मङ्गल में लाल (गेहुआँ रङ्ग का) बैल, बुध में सोना, गुरु में पीत वस्त्र, शुक्र में उजला घोड़ा, शनि में काली गौ, राहु में तलवार और केतु में बकरी (वा बकरा) दान करना चाहिये।।१६।।

ग्रहों के राश्यन्तर में जाने का फल–

सूर्य्यारसौम्यास्फुजितोऽक्षनागसप्ताद्रि घस्रान्विधुरग्निनाडीः ।
तमोयमेज्यास्त्रिरसाश्विमासान् गन्तव्यराशेः फलदाः पुरस्तात् ।।१७।।

अन्वयः–सूर्यारसौम्यास्फुजितः गन्तव्यराशेः पुरस्तात् अक्षनागसप्ताद्रिघस्रान् फलदाः (भवन्ति)। विधुः अग्निनाडीः फलदाः तमोयमेज्याः त्रिरसाश्विमासान् फलदाः भवन्ति।।१७।।

भाषा–गन्तव्य राशि (आगे की राशि) में जाने के दिन से पहले, सूर्य ५ दिन, मङ्गल ८ दिन, बुध ७ दिन, शुक्र ७ दिन, चन्द्रमा ३ घटी, राहु केतु ३ मास, शनि ६ मास, गुरु २ मास पहले ही फल को देने लग जाते हैं।।१७।।

दुष्ट योग आदि का दान–

दुष्टे योगे हेम चन्द्रे च शंखं धान्यं तिथ्यर्द्धे तिथौ तण्डुलांश्च ।
वारे रत्नं भे च गां हेम नाड्यां दद्यात् सिंधूत्थञ्च तारासु राजा ।।१८।।

अन्वयः–योगे दुष्टे हेम च (पुनः) चन्द्रे शंखं, तिथ्यर्द्धे धान्यं, तिथौ तण्डुलान् , च वारे रत्नं, भे गां, नाड्यां हेमं, तारासु राजा सिन्धूत्थं सैन्धवं लवणं दद्यात् ।।१८।।

भाषा–यात्रा या आवश्यक कार्य में दुष्ट योग हो तो सोना, चन्द्रमा दुष्ट हो तो शङ्ख, करण खराब हो तो धान्य, तिथि दुष्ट हो तो चावल, दिन दुष्ट हो तो रत्न नक्षत्र दुष्ट हो तो गौ, मुहूर्त दुष्ट हो तो हेम (सोना) और तारा दुष्ट हो तो यात्रा करने वाला राजा सेंधा नमक दान करे। यहाँ राजा एक निमित्त रख दिया गया है, दान सभी कर सकते हैं।।१८।।

ग्रहों के क्रम से राशि के पूर्व-पश्चात् का फल–

राश्यादिगौ रविकुजौ फलदौ सितेज्यौ
मध्ये सदा शशिसुतश्चरमेऽब्जमन्दौ ।
अध्वान्नवह्निभयसन्मतिवस्त्रसौख्य-
दुःखानि मासि जनिभे रविवासरादौ ।।१९।।

अन्वयः–रविकुजौ राश्यादिगौ फलदौ, सितेज्यौ, मध्ये फलदौ, शशिसुतः सदा फलदः, अब्जमन्दौ चरमे फलदौ। रविवासरादौ जनिभे मासि (क्रमेण) अध्वान्न-वह्निभयसन्मतिवस्त्रसौख्यदुःखानि भवन्ति।।१९।।

भाषा–सूर्य, मङ्गल ये राशि के आदि भाग में फल देते हैं, गुरु, शुक्र मध्य भाग ११ अंश से २० अंश तक में फल देते हैं, बुध सम्पूर्ण राशि में फल देता है, चन्द्रमा और शनि अंतिम भाग २१ अंश से ३० अंश तक फल देते हैं। महीने के अन्दर में यदि जन्म नक्षत्र रविवार को पड़े तो मार्ग गमन, सोमवार को अन्न लाभ, मङ्गल को अग्नि भय, बुध को सुन्दर बुद्धि, गुरु को वस्त्र, शुक्र को सुख और शनि को दुःख होता है।।१९।।

इति ग्रहगोचरप्रकरणम् । ❑

संस्कारप्रकरणम्

आद्यं रजः शुभं माघमार्गराधेषफाल्गुने ।
ज्येष्ठश्रावणयोः शुक्ले सद्वारे सत्तनौ दिवा ।।१।।

अन्वयः–माघमार्गराधेषफाल्गुने ज्येष्ठश्रावणयोः शुक्ले सद्वारे सत्तनौ दिवा आद्यं रजः शुभं स्यात् ।।१।।

भाषा–माघ, अगहन, वैशाख, आश्विन, फाल्गुन, ज्येष्ठ, श्रावण इन सात मासों के शुक्ल पक्ष में, शुभ ग्रह के दिन में, शुभ लग्न में और दिन में स्त्री को प्रथम मासिक धर्म हो तो शुभ है।।१।।

रजोदर्शन में नक्षत्र फल–

श्रुतित्रयमृदुक्षिप्रध्रुवस्वातौ सिताम्बरे ।
मध्यञ्च मूलादितिभे पितृमिश्रे परेष्वसत् ।।२।।

अन्वयः–श्रुतित्रयमृदुक्षिप्रध्रुवस्वातौ सिताम्बरे आद्यं रजः शुभं, मूलादितिभे पितृमिश्रे मध्यं, परेषु असत् भवति।।२।।

भाषा–श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, मृदुसंज्ञक, क्षिप्रसंज्ञक, ध्रुवसंज्ञक, स्वाती इन नक्षत्रों में प्रथम मासिक धर्म होना शुभ है। मूल, पुनर्वसु, मघा और मिश्रसंज्ञक नक्षत्र में होना मध्यम है। तथा अन्य नक्षत्र में होना अशुभ है और सफेद साड़ी पहने हुए में हो तो शुभ है।।२।।

रजःकाल में निषिद्ध समय–

भद्रानिद्रासंक्रमे दर्शरिक्तासन्ध्याषष्ठीद्वादशीवैधृतेषु ।
रोगेऽष्टम्यां चन्द्रसूर्योपरागे पाते चाद्यं नो रजोदर्शनं सत् ।।३।।

अन्वयः–भद्रानिद्रासंक्रमे दर्शरिक्तासन्ध्याषष्ठीद्वादशीवैधृतेषु रोगे अष्टम्यां चन्द्रसूर्योपरागे पाते च आद्यं (प्रथमं) रजोदर्शनं नो सत् ।।३।।

भाषा–भद्रा में, सुप्तावस्था में, संक्रान्ति में, अमावस्या में, रिक्तातिथि

सन्ध्याकाल, षष्ठी, द्वादशी तिथियों में, वैधृतियोग में, रुग्णावस्था में, अष्टमी में, चन्द्र और सूर्य के ग्रहण समय में, पातयोग में, प्रथम रजोदर्शन अशुभ है।।३।।

रजस्वला होने के बाद स्नान-मुहूर्त–

हस्तानिलाश्विमृगमैत्रवसुध्रुवाख्यैः
शक्रान्वितैः शुभतिथौ शुभवासरे च ।
स्नायादथार्त्तववती मृगपौष्णवायु-
हस्ताश्विधातृभिररं लभते च गर्भम् ।।४।।

अन्वयः–हस्तानिलाश्विमृगमैत्रवसुध्रुवाख्यैः शक्रान्वितैः शुभतिथौ शुभवासरे च आर्तववती स्नायात् । मृगपौष्णवायुहस्ताश्विधातृभिः (स्नाता) अरं (शीघ्रं) गर्भं लभते (प्राप्नोति)।।४।।

भाषा–हस्त, स्वाती, अश्विनी, मृगशिरा, अनुराधा,धनिष्ठा, ध्रुवसंज्ञक, ज्येष्ठा इन नक्षत्रों में, शुभ तिथि और शुभ वार में, प्रथम रजोवती स्त्रीका स्नान करना शुभ है। मृगशिरा, रेवती, स्वाती, हस्त, अश्विनी, रोहिणी इन नक्षत्रों में स्नान करे तो शीघ्र गर्भ धारण करती है।।४।।

गर्भाधान में त्याज्य–

गण्डान्तं त्रिविधं त्यजेन्निधनजन्मर्क्षे च मूलान्तकं
दास्रं पौष्णमघोपरागदिवसान् पातं तथा वैधृतिम् ।
पित्रोः श्राद्धदिनं दिवा च परिघाद्यर्धं स्वपत्नीगमे
भान्युत्पातहतानि मृत्युभवनं जन्मर्क्षतः पापभम् ।।५।।

अन्वयः–त्रिविधं गण्डान्तं निधनजन्मर्क्षे च (पुनः) मूलान्तकं दास्रं पौष्णमघोपरागदिवसान् पातं तथा वैधृतिं पित्रोः श्राद्धदिनं, दिवा परिघाद्यर्धं , उत्पातहतानि भानि, जन्मर्क्षतः मृत्युभवनम् पापभं एतानि स्वपत्नीगमे त्यजेत् ।।५।।

भाषा–रजस्वला के स्नान के बाद अपनी स्त्री के पास जाने में तीनों प्रकार के गण्डान्त (नक्षत्र गण्डान्त, तिथि गण्डान्त और लग्न गण्डान्त), जन्म नक्षत्र से सातवाँ नक्षत्र (वध तारा), मूल, भरणी, अश्विनी, रेवती, मघा, सूर्य और चन्द्रग्रहण के दिन, पात, वैधृतियोग, माता-पिता के श्राद्ध दिन, दिन में, परिघयोग के पूर्वार्ध, उत्पात से हत नक्षत्र, जन्म राशि और लग्न से आठवाँ लग्न, पापग्रह के नक्षत्र ये सब छोड़ देना चाहिये।।५।।

गर्भाधान का मुहूर्त–

भद्रा षष्ठी पर्वरिक्ताश्च सन्ध्याभौमार्कार्कीनाद्यरात्रीश्चतस्रः ।
गर्भाधानं त्र्युत्तरेन्द्वर्कमैत्र-ब्राह्मस्वातीविष्णुवस्वम्बुपे सत् ।।६।।

अन्वयः–भद्रा षष्ठी पर्वरिक्ताः च (पुनः) सन्ध्याभौमार्कार्कीन् चतस्रः आद्यरात्रीः (स्वपत्नीगमे त्यजेत्) त्र्युत्तरेन्द्वर्कमैत्रब्राह्मस्वातीविष्णुवस्वम्बुपे गर्भाधानं सत् (शुभं) भवति।।६।।

भाषा–भद्रा षष्ठी, पर्व के दिन १४।८।३०।१५ और संक्रान्ति, रिक्ता ४।९।१४ तिथि, सन्ध्याकाल, मंगलवार, रविवार, शनिवार और रजोदर्शन से ४ रात्रि इन सबों को गर्भाधान में छोड़कर तीनों उत्तरा, मृगशिरा, हस्त, अनुराधा, रोहिणी,स्वाती, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा इन नक्षत्रों में (शुभ वार, शुभ लग्न, शुभ तिथि, शुभ योग में), गर्भाधान शुभ होता है।।६।।

गर्भाधान में लग्न शुद्धि–

केन्द्रत्रिकोणेषु शुभैश्च पापैस्त्र्यायारिगैः पुंग्रहदृष्टलग्ने ।
ओजांशगेऽब्जेऽपि च युग्मरात्रौ चित्रादितीज्याश्विषु मध्यमं स्यात् ।।७।।

अन्वयः–शुभैः शोभनग्रहैः, केन्द्रत्रिकोणेषु स्थितैः, पापैः, त्र्यायारिगैः, पुंग्रहदृष्टलग्ने (सति) अब्जे ओजांशगे (विषमराशिनवमांशस्थिते), (च पुनः) युग्मरात्रौ शुभं भवति। चित्रादितीज्याश्विषु गर्भाधानं मध्यमं स्यात् ।।७।।

भाषा–लग्न से केन्द्र त्रिकोण १।४।७।१०।९।५ इन स्थानों में, शुभग्रह और पापग्रह ३।६।११ में हो, लग्न को पुरुष ग्रह देखते हों, चन्द्रमा विषम राशि और विषम राशि के नवांश में हो, समरात्रि हो, जैसे ६।८।१० इत्यादि, तो गर्भाधान शुभ होता है। चित्रा, पुनर्वसु, पुष्य, अश्विनी इन नक्षत्रों में गर्भाधान मध्यम कहा गया है।।७।।

सीमन्तसंस्कार का मुहूर्त–

जीवार्कारदिने मृगेज्यनिर्ऋतिश्रोत्रादितिब्रध्नभैः
रिक्तामार्करसाष्टवर्ज्यतिथिभिर्मासाधिपे पीवरे ।
सीमन्तोऽष्टमषष्ठमासि शुभदैः केन्द्रत्रिकोणे खलै-
र्लाभारित्रिषु वा ध्रुवान्त्यसदहे लग्ने च पुंभांशके ।।८।।

अन्वयः–जीवार्कारदिने मृगेज्यनिर्ऋतिश्रोत्रादितिब्रध्नभैः एभिर्नक्षत्रैः, रिक्तामार्करसाष्टवर्ज्यतिथिभिः, मासाधिपे पीवरे (बलवति) सति, अष्टमषष्ठमासि, शुभदैः शुभग्रहैः केन्द्रत्रिकोणे स्थितैः, खलैः (पापग्रहैः) लाभारित्रिषु स्थितैः ध्रुवान्त्यसदहे, पुंभांशके लग्ने, सीमन्तः (सीमन्ताख्यसंस्कारः) शुभः (स्यात्)।।८।।

भाषा–गुरु, रवि और मंगल के दिन, मृगशिरा, पुष्य, मूल, श्रवण, पुनर्वसु, हस्त नक्षत्रों में, रिक्ता, अमावस्या, द्वादशी, षष्ठी,अष्टमी तिथि को छोड़कर अन्य तिथियों में, मासेश्वर बलवान् हो, गर्भाधान से छठे, आठवें मास में, केन्द्र त्रिकोण में शुभग्रह हो, पापग्रह ११।६।३ में हो, ध्रुवसंज्ञक नक्षत्र अथवा रेवती नक्षत्र में, पुरुषग्रह के लग्न और नवांश में सीमन्त कर्म करना शुभ है।।८।।

गर्भकालीन दस मास तक के स्वामी और चन्द्रबल–

मासेश्वराः सितकुजेज्यरवीन्दुसौरि-
चन्द्रात्मजास्तनुपचन्द्रदिवाकराः स्युः ।

स्त्रीणां विधोर्बलमुशन्ति विवाहगर्भ-
संस्कारयोरितरकर्मसु भर्तुरेव ।।९।।

अन्वयः–सितकुजेज्यरवीन्दुसौरिचन्द्रात्मजाः, तनुपचन्द्रदिवाकराः एते क्रमशः मासेश्वराः स्युः। विवाहगर्भसंस्कारयोः स्त्रीणां विधोः च बलं उशन्ति। इतरकर्मसु भर्तुः एव विधोः बलं उशन्ति।।९।।

भाषा–गर्भाधान समय से १० मास तक के क्रम से शुक्र, मङ्गल, गुरु, रवि, चन्द्रमा, शनि, बुध, लग्नेश, चंद्रमा और सूर्य मासाधिप होते हैं। विवाह और गर्भादि संस्कार में स्त्री के चंद्रबल का विचार करना चाहिए। अन्य कार्यों में उसके स्वामी का चंद्रबल देखना चाहिए।।९।।

विष्णुपूजा का मुहूर्त–

पूर्वोदितैः पुंसवनं विधेयं मासे तृतीये त्वथ विष्णुपूजा ।
मासेऽष्टमे विष्णुविधातृजीवैर्लग्ने शुभे मृत्युगृहे च शुद्धे ।।१०।।

अन्वयः–पूर्वोदितैः सीमन्तसंस्कारोक्तैः (दिनतिथ्यादिभिः) तृतीये मासे पुंसवनं विधेयम् । अथ अष्टमे मासे, विष्णुविधातृजीवैः शुभे लग्ने, मृत्युगृहे शुद्धे सति विष्णुपूजा कर्तव्या।।१०।।

भाषा–सीमन्त संस्कार में कहे हुए तिथि, वार, दिन, नक्षत्र और गर्भाधान समय से ३रे महीने में पुंसवन संस्कार करना चाहिये। आठवें मास में, श्रवण, रोहिणी और पुष्य नक्षत्रों में, शुभ ग्रह के लग्न में, आठवाँ स्थान ग्रहरहित हो तो विष्णु भगवान् का पूजन करना शुभ है।।१०।।

जातकर्म मुहूर्त–

तज्जातकर्मादि शिशोर्विधेयं पर्वाख्यरिक्तोनतिथौ शुभेऽह्नि ।
एकादशे द्वादशकेऽपि घस्रे मृदुध्रुवक्षिप्रचरोडुषु स्यात् ।।११।।

अन्वयः–पर्वाख्यरिक्तोनतिथौ, शुभेऽह्नि एकादशके द्वादशके अपि घस्रे मृदुक्षिप्रचरोडुषु भेषु शिशोः तत् जातकर्मादि विधेयम् ।।११।।

भाषा–पर्व के दिन और रिक्ता तिथि को छोड़कर अन्य तिथियों में, शुभ दिन में, जन्मकाल से ११वें, १२वें दिन में, मृदुसंज्ञक, ध्रुवसंज्ञक, क्षिप्रसंज्ञक नक्षत्रों में, बालक का जातकर्म और नामकर्म करना शुभ है।।११।।

प्रसूति के स्नान का मुहूर्त–

पौष्णध्रुवेन्दुकरवातहयेषु सूती-
स्नानं समित्रभरवीज्यकुजेषु शस्तम् ।
नार्द्रात्रयश्रुतिमघान्तकमिश्रमूल-
त्वाष्ट्रे ज्ञसौरिवसुषड्विरिक्ततिथ्याम् ।।१२।।

अन्वयः–समित्रभरवीज्यकुजेषु पौष्णध्रुवेन्दुकरवातहयेषु भेषु सूतीस्नानं शस्तं

स्यात्। आर्द्रात्रयश्रुतिमघान्तकमिश्रमूलत्वाष्ट्रे, ज्ञसौरिवसुषड्विरिक्ततिथ्याम् सूतीस्नानं न शस्तम् ।।१२।।

भाषा–रेवती, ध्रुवसंज्ञक, मृगशिरा, हस्त, स्वाती, अश्विनी, अनुराधा नक्षत्रों में, रवि, मङ्गल, गुरु वारों में प्रसूता स्त्री के लिये स्नान करना शुभ है। आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, श्रवण, मघा, भरणी, मिश्रसंज्ञक नक्षत्र, मूल, चित्रा इन नक्षत्रों में बुध, शनि दिनों में, अष्टमी, षष्ठी, द्वादशी और रिक्ता तिथि में प्रसूता स्नान न करे।।१२।।

बालक के प्रथमादि मास में दाँत निकलने का फल-

मासे चेत्प्रथमे भवेत्सदशनो बालो विनश्येत् स्वयं
हन्यात् स क्रमतोऽनुजातभगिनीमात्रग्रजान्द्व्यादिके ।
षष्ठादौ लभते हि भोगमतुलं तातात्सुखं पुष्टतां
लक्ष्मी सौख्यमथो जनौ सदशनोवोर्ध्वं स्वपित्रादिहा ।।१३।।

अन्वयः–चेत् (यदि) प्रथमे मासे बालः सदशनः स्यात् तदा सः स्वयं विनश्येत् । द्व्यादिके मासे चेत् सदशनो भवेत्तदा क्रमतः सः अनुजातभगिनीमात्रग्रजान् हन्यात् । षष्ठादौ मासे क्रमतः अतुलं भोगं, तातात्सुखं, पुष्टतां, लक्ष्मीं, सौख्यं च लभते। अधो जनौ जन्मकाले सदशनः बालः स्वपित्रादिहा स्यात् ।।१३।।

भाषा–पहले मास में यदि बालक को दाँत की उत्पत्ति हो तो बालक स्वयं मर जाता है। दूसरे मास में उत्पत्ति हो तो भाई का, तीसरे मास में बहन का, चौथे मास में माता का, पाँचवें मास में बड़े भाई का नाश करता है। छठे मास में अतुलनीय सुख, सातवें मास में पिता से सुख, आठवें मास में स्वास्थ्य लाभ, ९ में लक्ष्मी, दसवें में सुख होता है। यदि बालक दाँत सहित उत्पन्न हो तो अपने का नाश करनेवाला होता है। इसी तरह निषिद्ध काल में ऊपर की पंक्ति में पहले दाँत हो तो अपने माता, पिता, भाई-बन्धु का नाश करने वाला होता है।।१३।।

प्रथमादि मास में बालकों के दाँत निकलने का फल ज्ञानार्थ चक्र-

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	मास
स्वयं-नाश	भ्रातृ-नाश (कनिष्ठ)	भगिनी-नाश	मातृ-नाश	ज्येष्ठ-भ्रातृ-नाश	सुभोग	पितृ-सुख	स्वास्थ्य-लाभ	लक्ष्मी	सौख्यं	सौख्यं	धन-सम्पत्ति	फल

दोलाचक्र-

दोलारोहेऽर्कभात् पञ्चशरपञ्चेषुसप्तमैः ।
नैरुज्यं मरणं कार्श्यं व्याधिः सौख्यं क्रमाच्छिशोः ।।१४।।

अन्वयः–अर्कभात् सूर्यनक्षत्रात् पञ्चशरपंचेपुसप्तमैः नक्षत्रैः दोलारोहे क्रमात् शिशोः नैरुज्यं, मरणं, कार्श्यं (दुर्बलत्वम्), व्याधिः सौख्यं च स्यात् ।।१४।।

५	५	५	५	७	नक्षत्र संख्या
आरोग्य	मरण	कृशता	व्याधि	सुख	फलम्

भाषा–सूर्य जिस नक्षत्र में हो उससे ५ नक्षत्र तक यदि बालक को झूला पर बैठाकर झुलावे तो निरोग, उसके आगे के ५ में मरण, उसके आगे के ५ में दुर्बलता, उसके आगे के ५ में व्याधि, फिर ७ में सुख होता है।।१४।।

बालक के दोलारोहण और बाहर लाने का मुहूर्त–

दन्तार्कभूपधृतिदिङ्मितवासरे स्या-
द्वारे शुभे मृदुलघुध्रुवभैः शिशूनाम् ।
दोलाधिरूढिरथ निष्क्रमणं चतुर्थ-
मासे गमोक्तसमयेऽर्कमितेऽह्नि वा स्यात् ।।१५।।

अन्वयः–दन्तार्कभूपधृतिदिङ्मितवासरे, शुभे वारे, मृदुलघुध्रुवभैः एभिर्नक्षत्रैः शिशूनां दोलाधिरूढिः स्यात् । अथ चतुर्थमासे वा अर्कमिते अह्नि (द्वादश वासरे) वा गमोक्तसमये यात्राविहितकाले शिशूनां निष्क्रमणं स्यात् ।।१५।।

भाषा–जन्म के दिन से आरम्भ कर ३२, १२, १६, १८, १०वें दिन, शुभ ग्रह के दिन, मृदुसंज्ञक और लघुसंज्ञक नक्षत्रमें बालक को पहले पहल झूले पर बैठाना शुभ है। जन्म मास से चौथे में, कहे हुए तिथि, वार, नक्षत्र, योग में बालक को घर से बाहर निकालना शुभ है। अथवा बारहवें रोज यात्रा में कहे हुए काल के अनुसार बालक को बाहर निकालना शुभ है।।१५।।

प्रसूता स्त्री का जलपूजन मुहूर्त–

कवीज्यास्तचैत्राधिमासे न पौषे जलं पूजयेत्सूतिकामासपूर्तौ ।
बुधेन्द्विज्यवारे विरक्ते तिथौ हि श्रुतीज्यादितीन्द्वर्कनैर्ऋत्यमैत्रैः ।।१६।।

अन्वयः–कवीज्यास्तचैत्राधिमासे पौषे मासपूर्तौ सूतिका जलं न पूजयेत् । बुधेन्द्विज्यवारे विरक्ते तिथौ, श्रुतीज्यादितीन्द्वर्कनैर्ऋत्यमैत्रैः नक्षत्रैः जलं पूजयेत् ।।१६।।

भाषा–शुक्र, गुरु के अस्त में, चैत्र और मलमास में, पौष मास में, मास पूर्ति होने पर भी प्रसूता स्त्री जल का पूजन न करे। बुध, सोम, गुरु वारों में, रिक्ता तिथि को छोड़कर दूसरी तिथियों में, श्रवण, पुष्य, पुनर्वसु, मृगशिरा, हस्त, मूल, अनुराधा इन नक्षत्रों में प्रसूता स्त्री जल की पूजा करे।।१६।।

अन्नप्राशन का मुहूर्त–

रिक्तानन्दाष्टदर्शं हरिदिवसमथो सौरिभौमार्कवारान्
लग्नं जन्मर्क्षलग्नाष्टमगृहलवगं मीनमेषालिकं च ।

हित्वा षष्ठात्समे मास्यथ हि मृगदृशां पञ्चमादोजमासे
नक्षत्रैः स्यात् स्थिराख्यैः समृदुलघुचरैर्बालकान्नाशनं सत् ।।१७।।

अन्वयः–रिक्ता, नन्दाष्टदर्शं, हरिदिवसं, सौरिभौमार्कवारान्, जन्मर्क्षलग्नाष्टमगृहलवगं, मीनमेषालिकं च लग्नं हित्वा, बालकानां षष्ठात् समे मासि, अथ हि मृगदृशां कन्यकानां पञ्चमात् ओजमासे समृदुलघुचरैः स्थिराख्यैः नक्षत्रैः बालकान्नाशनं सत् भवति।।१७।।

भाषा–रिक्ता (९।४।१४), १।६।११।८।१२।३० इन तिथियों को छोड़कर शनि, मङ्गल, रवि इन वारों को छोड़कर, जन्म राशि अथवा जन्म लग्न से आठवीं राशि वा उसका नवांश, मीन, मेष, वृश्चिक लग्न को छोड़कर अन्य लग्नों में, छह, आठ इत्यादि सम मासों में बालकों को और पंचमादि विषम मासों में कन्या को मृदुसंज्ञक, लघुसंज्ञक और स्थिरसंज्ञक नामक नक्षत्रों में अन्नप्राशन कराना शुभ है।।१७।।

लग्नशुद्धि–

केन्द्रत्रिकोणसहजेषु शुभैः खशुद्धे
लग्ने त्रिलाभरिपुगैश्च वदन्ति पापैः ।
लग्नाष्टषष्ठरहितं शशिनं प्रशस्तः
मैत्राम्बुपानिलजनुर्भमसच्च केचित् ।।१८।।

अन्वयः–शुभैः केन्द्रत्रिकोणसहजेषु स्थितैः, खशुद्धे लग्ने, त्रिलाभरिपुगैः पापैः, लग्नाष्टषष्ठरहितं शशिनं (बालकान्नाशने) प्रशस्तं वदन्ति (मुनयः) । केचित् मैत्राम्बुपानिलजनुर्भं असत् (अशुभं) वदन्ति।।१८।।

भाषा–केन्द्र १।४।७ यहाँ यद्यपि केन्द्र शब्द से दशम स्थान भी लिया जाना चाहिए परन्तु चिन्तामणिकार ने ही "खशुद्धे" कह कर दशम स्थान को ग्रह रहित कह दिया है। त्रिकोण ९।५, सहज ३ इन स्थानों में शुभ ग्रह हो और दसवाँ स्थान ग्रह से रहित हो, ३।६।११ इन स्थानों में पापग्रह हो तथा लग्न, छठें और आठवें स्थान से भिन्न घर में चन्द्रमा हो तो बालक का अन्नप्राशन शुभ है। किसी के मत से अनुराधा, शतभिषा, स्वाती और जन्मनक्षत्र बालकों के अन्नप्राशन में अशुभ है।।१८।।

ग्रहों के स्थानवश फल–

क्षीणेन्दुपूर्णचन्द्रेज्यज्ञभौमार्कार्किभार्गवैः ।
त्रिकोणव्ययकेन्द्राष्टस्थितैरुक्तं फलं ग्रहैः ।।१९।।
भिक्षाशी यज्ञकृद्दीर्घजीवी ज्ञानी च पित्तरुक् ।
कुष्ठी चान्नक्लेशवातव्याधिमान् भोगभागिति ।।२०।।

अन्वयः-क्षीणेन्दुपूर्णचन्द्रेज्यज्ञभौमार्कार्किभार्गवैः एभिर्ग्रहैः त्रिकोणव्ययकेन्द्राष्टस्थितैः भिक्षाशी, यज्ञकृत्, दीर्घजीवी, ज्ञानी, पित्तरुक्, कुष्ठी च पुनः अन्नक्लेशवातव्याधिमान्, भोगभाक्, इति फलानि ज्ञेयानि।।१९-२०।।

भाषा-अन्नप्राशन समय के लग्न से १।४।७।९।५।१२ और अष्टम स्थान में क्षीण चन्द्रमा हो तो बालक भीख माँगकर खानेवाला अर्थात् दरिद्र होगा, पूर्ण चन्द्रमा हो तो यज्ञ करने वाला, उक्त स्थानों में से किसी स्थान में बृहस्पति हो तो दीर्घायु, बुध हो तो ज्ञानी, मंगल हो तो पित्तरोगी, सूर्य हो तो कोढ़ी, शनि हो तो अन्न से क्लेशित और वातव्याधि से दुःखी तथा शुक्र हो तो भोगी होता है।।१९-२०।।

बालक के भूमि पर बैठाने का मुहूर्त-

पृथ्वीं वराहमभिपूज्य कुजे विशुद्धे-
ऽरिक्ते तिथौ व्रजति पञ्चममासि बालम्।
बद्ध्वा शुभेऽह्नि कटिसूत्रमथ ध्रुवेन्दु-
ज्येष्ठर्क्षमैत्रलघुभैरुपवेशयेत्कौ ।।२१।।

अन्वयः-पृथ्वीं वराहं अभिपूज्य कुजे विशुद्धे सति अरिक्ते रिक्तावर्जिते तिथौ पञ्चममासि व्रजति सति शुभेऽह्नि ज्येष्ठर्क्षमैत्रलघुभैः कटिसूत्रं बध्वा बालं कौ पृथिव्यां उपवेशयेत् ।।२१।।

भाषा-पाँचवें मास में, रिक्ता तिथि को छोड़कर अन्य तिथियों में, शुभवार में, ध्रुवसंज्ञक, ज्येष्ठा, अनुराधा और लघुसंज्ञक नक्षत्रों में, मंगल बलवान् हो तब पृथ्वी और वराह भगवान् की पूजा करके कमर में करधनी बाँधकर बालक को भूमि पर बैठावे।।२१।।

आजीविका की परीक्षा-

तस्मिन् काले स्थापयेत्तत्पुरस्ताद्
वस्त्रं शस्त्रं पुस्तकं लेखनी च।
स्वर्णं रौप्यं यच्च गृह्णाति बाल-
स्तैराजीवैस्तस्य वृत्तिः प्रदिष्टा ।।२२।।

अन्वयः-तस्मिन् काले तत्पुरस्तात् वस्त्रं, शस्त्रं, पुस्तकं, लेखनी, स्वर्णं, रौप्यं च स्थापयेत्। बालः यद् वस्तु गृह्णाति तैः आजीवैः तस्य वृत्तिः प्रदिष्टा उक्ता।।२२।।

भाषा-भूमि पर बैठाने के समय में बालक के आगे वस्त्र, शस्त्र, पुस्तक, कलम, सोना, चाँदी आदि रखें। जिस वस्तु को बालक उठा ले उसी पर उसकी जीविका आधारित है, ऐसा समझना चाहिए।।२२।।

पान खिलाने का मुहूर्त

वारे भौमार्किहीने ध्रुवमृदुलघुभैर्विष्णुमूलादितीन्द्र-
स्वातीवस्वभ्युपेतैर्मिथुनमृगसुताकुम्भगोमीनलग्ने ।
सौम्यैः केन्द्रत्रिकोणैरशुभगगनगैः शत्रुलाभत्रिसंस्थै-
स्ताम्बूलं सार्द्धमासद्वयमितसमये प्रोक्तमन्नाशने वा ।।२३।।

अन्वयः–भौमार्किहीने वारे, ध्रुवमृदुलघुभैः विष्णुमूलादितीन्द्रस्वातीवास्वभ्युपेतैः एभिर्नक्षत्रैः, मिथुनमृगसुताकुम्भगोमीनलग्ने, सौम्यैः केन्द्रत्रिकोणैः अशुभमृगनगैः पापग्रहैः शत्रुलाभत्रिसंस्थैः, सार्धमासद्वयमितसमये, अन्नाशने (बालकान्नप्राशनसमये) वा ताम्बूलं प्रोक्तम् ।।२३।।

भाषा–मंगल, शनि को छोड़कर अन्य दिनों, ध्रुवसंज्ञक, लघुसंज्ञक, मृदुसंज्ञक, श्रवण, मूल, पुनर्वसु, ज्येष्ठा, स्वाती, धनिष्ठा इन नक्षत्रों में, मिथुन, मकर, कन्या, कुम्भ, वृष और मीन लग्नों में, शुभ ग्रह केन्द्र त्रिकोण में हो, पापग्रह ६।३।११ इन स्थानों में हो तो ढाई महीने के समय में या अन्नप्राशनोक्त समय में ताम्बूल (पान) खिलाना शुभ है।।२३।।

कर्णविध का मुहूर्त-

हित्वैतांश्चैत्रपौषावमहरिशयनं जन्ममासं च रिक्तां
युग्माब्दं जन्मताराऋतुमुनिवसुभिः सम्मिते मास्यथो वा ।
जन्माहात् सूर्यभूपैः परिमितदिवसे ज्ञेज्यशुक्रेन्दुवारे-
ऽथोजाब्दे विष्णुयुग्मादितिमृदुलघुभैः कर्णविधः प्रशस्तः ।।२४।।

अन्वयः–चैत्रपौषावमहरिशयनं जन्ममासं रिक्तां च हित्वा युग्माब्दं जन्मतारां एतान् हित्वा ऋतुमुनिवसुभिः सम्मिते मासि, अथो वा जन्माहात् सूर्यभूपैः परिमितदिवसे, ज्ञेज्यशुक्रेन्दुवारे, अथ ओजाब्दे, विष्णुयुग्मादितिमृदुलघुभैः कर्णविधः प्रशस्तः ।।२४।।

भाषा–चैत्र और पौष मास, तिथि क्षय, हरिशयन-(आषाढ़ शुक्ल ११ से भगवान् सोते हैं और कार्तिक शुक्ल ११ को उठते हैं, इतना समय हरिशयन कहलाता है), जन्ममास, रिक्तातिथि, सम वर्ष, जन्म तारा इन सबों को छोड़कर, छठें, सातवें और आठवें महीने में अथवा जन्म दिन से १२।१६ वें दिन में, बुध, शुक्र, सोमवार में, विषम वर्ष में, श्रवण, धनिष्ठा, पुनर्वसु, मृदुसंज्ञक और लघुसंज्ञक नक्षत्र में कर्णविध शुभ है।।२४।।

कर्णविध में शुभ लग्न-

संशुद्धे मृतिभवने त्रिकोणकेन्द्र-
त्र्यायस्थैः शुभखचरैः कवीज्यलग्ने ।
पापाख्यैररिसहजायगेहसंस्थै-
र्लग्नस्थे त्रिदशगुरौ शुभावहः स्यात् ।।२५।।

अन्वयः-मृतिभवने संशुद्धे सति, शुभखचरैः त्रिकोणकेन्द्रत्र्यायस्थैः, कवीज्यलग्ने, पापाः, अरिसहजायगेहसंस्थैः त्रिदशगुरौ लग्नस्थे सति शुभावहः स्यात् ।।२५।।

भाषा-लग्न से अष्टमस्थान शुद्ध हो, केन्द्र में, त्रिकोण में और ३।११ में शुभ ग्रह हो, लग्न में गुरु, शुक्र की राशि हो, ६।३।११ में पाप ग्रह हो, लग्न में गुरु हो तो कणविध शुभ है।।२५।।

शुभ कार्यों का निषेध समय-

गीर्वाणाम्बुप्रतिष्ठापरिणयदहनाधानगेहप्रवेशा-
श्चौलं राज्याभिषेको व्रतमपि शुभदं नैव याम्यायने स्यात् ।
नो वा बाल्यास्तवार्द्धे सुरगुरुसितयोर्नैव केतूदये स्यात्
पक्षं वार्द्धञ्च केचिज्जहति तमपरे यावदीक्षां तदुग्रे ।।२६।।

अन्वयः-याम्यायने सूर्ये सति गीर्वाणाम्बुप्रतिष्ठापरिणयदहनाधानगेहप्रवेशाः, चौलं राज्याभिषेकः व्रतमपि, नैव शुभदं स्यात् । सुरगुरुसितयोः गुरुशुक्रयोः बाल्यास्तवार्द्धे वा नैव शुभदं केतूदयेऽपि नैव शुभदं भवति। केचित् केतूदयं पक्षं अर्धं वा जहति (परित्यजन्ति) अपरे तदुग्रे ब्रह्मपुत्रं ईक्षां यावत् जहति।।२६।।

भाषा-दक्षिणायन में, गुरु शुक्र के बाल्य तथा वृद्धत्व और अस्त में केतु के उदय में देवता और जलाशय की प्रतिष्ठा, विवाह, अग्न्याधान, गृहप्रवेश, मुण्डन, राज्याभिषेक और उपनयन ये कर्म करना शुभ नहीं है (वर्जित है)। किसी-किसी आचार्य के मत में केतु का उदय एक पक्ष अर्थात् १५ दिन वा आधा पक्ष (७।। दिन) अशुभ और कितने तो जब तक दिखाई दे तब तक छोड़ना चाहिए ऐसा कहते हैं।।२६।।

गुरु-शुक्र का बाल्य और वृद्धत्व-

पुरः पश्चाद् भृगोर्बाल्यं त्रिदशाहं च वार्द्धकम् ।
पक्षं पञ्चदिनं ते द्वे गुरोः पक्षमुदाहृते ।।२७।।

अन्वयः-भृगोः पुरः पश्चात् (क्रमेण) त्रिदशाहं बाल्यं च पुनः पक्षं पञ्चदिनं वार्द्धकं प्रोक्तम् । गुरोः बृहस्पतेः ते द्वे पक्षं पञ्चदशदिवसं यावत् उदाहृते (कथिते)।।२७।।

भाषा-शुक्र पूर्व दिशा में उदय होने पर उनका ३ दिन बालत्व, १० दिन वृद्धत्व, पश्चिम में उदय होने पर १० दिन बालत्व और ५ दिन वृद्धत्व रहता है, गुरु के दोनों दिशा (पूर्व-पश्चिम) में उदय से १५ दिन बाल्य और अस्त से पूर्व १५ दिन वृद्धत्व रहता है।।२७।।

बालवृद्धत्व के विषय में मतभेद-

ते दशाहं द्वयोः प्रोक्ते कैश्चित् सप्तदिनं परैः ।
त्र्यहं त्वात्ययिकेऽप्यन्यैरर्धाहं च त्र्यहं विधोः ।।२८।।

अन्वयः-कैश्चित् द्वयोः ते दशाहं प्रोक्ते। परैस्तु सप्तदिनं, अन्यैः आत्ययिके त्र्यहं प्रोक्ते, विधोः अर्धाहं त्र्यहं च प्रोक्ते।।२८।।

भाषा-किसी-किसी ने तो गुरु और शुक्र के बाल्य और वृद्धत्व का दस-दस दिन कहा है और किसी ने ७ दिन कहा है। अन्य आचार्य ने आवश्यक कार्य में ३ दिन ही कहा है और चन्द्रमा की बाल्यावस्था आधा दिन और वृद्धावस्था ३ दिन होती है।।२८।।

मुण्डन का मुहूर्त-

चूडा वर्षात् तृतीयात्प्रभवति विषमेऽष्टार्करिक्ताद्यषष्ठी-
पर्वोनाहे विचैत्रोदगयनसमये ज्ञेन्दुशुक्रेज्यकानाम् ।
वारे लग्नांशयोश्चास्वभनिधनतनौ नैधने शुद्धियुक्ते
शाक्रोपेतैर्विमैत्रैर्मृदुचरलघुभैरायषट्त्रिस्थपापैः ।।२९।।
क्षीणचन्द्रकुजसौरिभास्करैर्मृत्युशस्त्रमृतिपङ्गुताज्वराः ।
स्युः क्रमेण बुधजीवभार्गवैः केन्द्रगैश्च शुभमिष्टतारया ।।३०।।

अन्वयः-तृतीयात् वर्षात् विषमे अष्टार्करिक्ताद्यषष्ठीपर्वोनाहे विचैत्रोदगयनसमये, ज्ञेन्दुशुक्रेज्यकानाम् वारे, लग्नांशयोश्च, अस्वभनिधनतनौ, नैधने शुद्धियुक्ते सति, शाक्रोपेतैः विमैत्रैः मृदुचरलघुभैः, आयषट्त्रिस्थपापैः चूडा (शुभा) प्रभवति। क्षीणचन्द्रकुजसौरिभास्करैः केन्द्रगैः क्रमेण मृत्युशस्त्रमृतिपङ्गुता ज्वराः स्युः। तथा बुधजीवभार्गवैः केन्द्रगैः, इष्टतारया च चूडाकर्म शुभं प्रोक्तम् ।।२९-३०।।

भाषा-जन्म समय वा गर्भाधान समय से तीसरे वर्ष से लेकर विषम वर्ष में,द्वादशी, रिक्ता (४,९,१४), प्रतिपद्, षष्ठी, पर्वतिथियाँ (पूर्णिमा, अमावस्या) इनको छोड़कर, उत्तरायण सूर्य में, चैत्रमास को छोड़कर, बुध, चन्द्र, शुक्र, गुरुवार में, इन्हीं ग्रहों के लग्न और नवमांश में, बालक के जन्म लग्न वा राशि से आठवें लग्न को छोड़कर ज्येष्ठा, मृदुसंज्ञक, चरसंज्ञक, लघुसंज्ञक नक्षत्रों में, पापग्रह ११।३।६ स्थान में हो, तो बालक का प्रथम केशच्छेदन कर्म (मुण्डन) शुभ है। यदि क्षीण चन्द्रमा केन्द्र में हो तो मुण्डन कराने से मृत्यु, मङ्गल हो तो शस्त्र से मृत्यु, शनि हो तो पंगुता और रवि केन्द्र में हो तो ज्वर होता है। बुध गुरु शुक्र में हो और शुभ तारा हो तो मुण्डन शुभ है।।२९-३०।।

माता के गर्भवती होने पर मुण्डन का निर्णय-

पञ्चमासाधिके मातुर्गर्भे चौलं शिशोर्न सत् ।
पञ्चवर्षाधिकस्येष्टं गर्भिण्यामपि मातरि ।।३१।।

अन्वयः-मातुः गर्भे पञ्चमासाधिके सति शिशोः चौलं चूडाकर्म न सत् । पञ्चवर्षाधिकस्य शिशोः मातरि गर्भिण्यां अपि (सत्यां) चौलं इष्टं स्यात् ।।३१।।

भाषा–बालक की माता पाँच महीने की यदि गर्भवती हो तो मुण्डन शुभ नहीं होता है। और यदि बालक ५ वर्ष से अधिक का हो तो माता के गर्भवती होने पर भी मुण्डन शुभ होता है।।३१।।

मुण्डन में दुष्ट तारा का अपवाद–

ताराद‍ौष्ट्येऽब्जे त्रिकोणोच्चगे वा क्षौरं सत्स्यात्सौम्यमित्रस्ववर्गे ।
सौम्ये भेऽब्जे शोभने दुष्टतारा शस्ता ज्ञेया क्षौरयात्रादिकृत्ये ।।३२।।

अन्वयः–तारादौष्ट्ये अब्जे त्रिकोणोच्चगे वा सौम्यमित्रस्ववर्गे सति क्षौरं मुण्डनकर्म सत् स्यात् । शोभने अब्जे सौम्ये भे क्षौरयात्रादिकृत्ये दुष्टतारा अपि शस्ता ज्ञेया।।३२।।

भाषा–यदि तारा दुष्ट भी हो परन्तु चन्द्रमा अपने उच्च का या त्रिकोण का हो अथवा शुभप्रद और मित्र के षड्वर्ग में हो तो मुण्डन शुभ होता है। चन्द्रमा शुभ ग्रह की राशि में हो, गोचर से भी शुभ हो तो क्षौर कर्म में, यात्रादि में वह दुष्ट तारा भी शुभ हो जाती है।।३२।।

मुण्डनादिक में निषिद्ध समय–

ऋतुमत्याः सूतिकायाः सूनोश्चौलादि नाचरेत् ।
ज्येष्ठापत्यस्य न ज्येष्ठे कैश्चिन्मार्गेऽपि नेष्यते ।।३३।।

अन्वयः–ऋतुमत्याः सूतिकायाः सूनोः चौलादि न आचरेत् (न कुर्यात्) ज्येष्ठापत्यस्य ज्येष्ठे (मासे) चौलं न आचरेत् । कैश्चित् मार्गेऽपि चौलं न इष्यते।।३३।।

भाषा–बालक की माता ऋतुमती या प्रसूता हो तो बालक का मुण्डन कर्म नहीं करना चाहिये और ज्येष्ठ सन्तान का ज्येष्ठ मास में मुण्डन न करे। अन्य आचार्य मार्गशीर्ष (अगहन) में भी ज्येष्ठ सन्तान का मुण्डन संस्कार न करे ऐसा कहते हैं।।३३।।

साधारण क्षौर का मुहूर्त तथा निषिद्ध काल–

दन्तक्षौरनखक्रियात्र विहिता चौलादिते वारभे
पातङ्ग्यारखीविनू विहाय नवमं घस्रं च सन्ध्यां तथा ।
रिक्तां पर्व निशां निरासनरणग्रामप्रयाणोद्यत-
स्नाताभ्यक्तकृताशनैर्न हि पुनः कार्य्या हितप्रेप्सुभिः ।।३४।।

अन्वयः–पातङ्ग्यारखीन् विहाय, पुनः नवमं घस्रं, संध्यां, रिक्तां, पर्व, निशां च विहाय परित्यज्य चौलादिते वारभे दन्तक्षौरनखक्रिया विहिता कथिता। अत्र निरासनरणग्रामप्रयाणोद्यतस्नाताभ्यक्तकृताशनैः हितप्रेप्सुभिः कल्याणमिच्छद्भिः दन्तक्षौरनखक्रिया न हि कार्या।।३४।।

भाषा–शनि, मंगल और रविवार को छोड़कर और पहले किये हुए क्षौर दिन से नौवें दिन, सन्ध्या काल, रिक्ता तिथि (४-९-१४), पर्व की तिथि, रात्रि

इनको छोड़कर मुण्डन कर्म में कहे हुए दिनादि में दाँत की सफाई, बाल बनवाना, नाखून कटवाना शुभ है। अपना हित चाहने वाले बिना आसन के युद्ध क्षेत्र में, किसी अन्य गाँव के लिये यात्रा के समय में, स्नान कर, तेल लगाकर, भोजन कर दाँत की सफाई करना, नाखून काटना और क्षौर कर्म कभी भी नहीं करे।। ३ ४।।

क्षौर के लिए विशेष समय–

क्रतुपाणिपीडमृतिबन्धमोक्षणे क्षुरकर्म च द्विजनृपाज्ञयाचरेत् ।
शववाहतीर्थगमसिन्धुमज्जनं क्षुरमाचरेन्न खलु गर्भिणीपतिः ।।३ ५।।

अन्वयः–क्रतुपाणिपीडमृतिबन्धमोक्षणे द्विजनृपाज्ञया क्षुरकर्म आचरेत् । खलु निश्चयेन गर्भिणीपतिः शववाहतीर्थगमसिन्धुमज्जनं क्षुरं न आचरेत् ।।३५।।

भाषा–यज्ञ, विवाह, गुरुजनों के मरने पर, जेल से आने पर, ब्राह्मण और राजा की आज्ञा से, निन्द्य समय में भी बाल बनवाना चाहिये। जिसकी स्त्री गर्भवती हो तो उसको मुर्दा लेकर श्मशान जाना, तीर्थ यात्रा करना, समुद्र स्नान करना और बाल बनवाना छोड़ देना चाहिये।। ३ ५।।

श्मश्रु और क्षौर में वर्जित नक्षत्र–

नृपाणां हितं क्षौरभे श्मश्रुकर्म
दिने पञ्चमे पञ्चमेऽस्योदये वा ।
षडग्निस्त्रिमैत्रोऽष्टकः पञ्चपित्र्यो-
ऽब्दतोऽब्ध्यर्यमा क्षौरकृन्मृत्युमेति ।।३ ६।।

अन्वयः–क्षौरभे, पञ्चमे पञ्चमे दिने वा, अस्य (क्षौरविहितनक्षत्रस्य) उदये (मुहूर्ते) नृपाणां श्मश्रुकर्म हितं (शोभनं) भवति। षडग्निः, त्रिमैत्रः, अष्टकः, पञ्चपित्र्यः, अब्ध्यर्यमा, क्षौरकृत् अब्दतः मृत्युं एति प्राप्नोति।।३६।।

भाषा–बाल बनवाने के नक्षत्रादि में, वा उनके मुहूर्त में, ५ वें, ५वें दिन पर दाढ़ी का बाल बनवाना शुभ है। बाल बनवाने में एक वर्ष में कृत्तिका ६ बार, अनुराधा ३ बार, रोहिणी ८ बार, मघा ५ बार, उत्तरा फाल्गुनी ४ बार आ जाय तो एक वर्ष के भीतर क्षौर कर्म करानेवाले की मृत्यु हो जाती है।। ३ ६।।

अक्षरारम्भ का मुहूर्त–

गणेशविष्णुवाग्रमाः प्रपूज्य पञ्चमाब्दके
तिथौ शिवार्कदिग्द्विषट्शरत्रिके रवावुदक् ।
लघुश्रवोऽनिलान्त्यमादितीशतक्षमित्रभे
चरोनसत्तनौ शिशोर्लिपिग्रहः सतां दिने ।।३७।।

अन्वयः–पञ्चमाब्दके गणेशविष्णुवाग्रमाः प्रपूज्य शिवार्कदिग्द्विषट्शरत्रिके तिथौ, उदक् रवौ,लघुश्रवोऽनिलान्त्यभादितीशतक्षमित्रभे, चरोनसत्तनौ, सतां दिने शिशोः लिपिग्रहः शुभः स्यात् ।।३७।।

भाषा–पाँचवें वर्ष में गणेश, विष्णु, सरस्वती और लक्ष्मी का पूजन कर एकादशी, द्वादशी, दशमी, द्वितीया, षष्ठी, पञ्चमी, तृतीया इन तिथियों में, सूर्य उत्तरायण में हो, लघुसंज्ञक, श्रवण, स्वाती, रेवती, पुनर्वसु, आर्द्रा, चित्रा, मित्र (अनुराधा) इन नक्षत्रों में, चरलग्न को छोड़कर दूसरे लग्न में बालक को अक्षरारम्भ कराना शुभ है।।३७।।

विद्यारम्भ का मुहूर्त–

मृगात्कराच्छ्रुतेस्त्रयेऽश्विमूलपूर्विकात्रये
गुरुद्वयेऽर्कजीवविित्तिसतेऽह्नि　षट्शरत्रिके ।
शिवार्कदिग्द्विके तिथौ ध्रुवान्त्यमित्रभे परैः
शुभैरधीतिरुत्तमा त्रिकोणकेन्द्रगैः　स्मृताः ।।३८।।

अन्वयः–**मृगात् करात् श्रुतेः त्रये अश्विमूलपूर्विकात्रये, गुरुद्वये, अर्कजीवविित्तिसते अह्नि, षट्शरत्रिके शिवार्कदिग्द्विके तिथौ, परैः ध्रुवान्त्यमित्रभे नक्षत्रे, शुभैः त्रिकोणकेन्द्रगैः अधीतिः उत्तमा स्मृता।।३८।।**

भाषा–मृगशिरा से तीन नक्षत्र, हस्त से तीन नक्षत्र, श्रवण से तीन नक्षत्र, अश्विनी, मूल, तीनों पूर्वा, पुष्य और आश्लेषा तथा रविवार, गुरुवार, बुधवार और शुक्रवार के दिनों में ६।५।३।११।१२।१०।२ इन तिथियों में, शुभग्रह केन्द्र त्रिकोण में हो तो विद्या का आरम्भ शुभ है। दूसरे आचार्य कहते हैं कि ध्रुवसंज्ञक, रेवती और अनुराधा नक्षत्रों में भी विद्यारम्भ शुभ होता है।।३८।।

यज्ञोपवीत का समय–

विप्राणां व्रतबन्धनं　निगदितं　गर्भाज्जनेर्वाष्टमे
वर्षे वाप्यथ पञ्चमे क्षितिभुजां षष्ठे　तथैकादशे ।
वैश्यानां पुनरष्टमेऽप्यथ पुनः स्याद् द्वादशे वत्सरे
कालेऽथ द्विगुणे गते निगदिते गौणं तदाहुर्बुधाः ।।३९।।

अन्वयः–**गर्भात् वा जनेः (जन्मकालात्) अष्टमे वा पञ्चमे वर्षे अपि विप्राणां, एवं षष्ठे तथा एकादशे वर्षे क्षितिभुजां (क्षत्रियाणां), पुनः अष्टमे वा द्वादशे वत्सरे वैश्यानां, व्रतबन्धनं निगदितम् (प्रोक्तम्)। अथ निगदिते काले द्विगुणे गते सति बुधाः पण्डिताः तत् व्रतं गौणं आहुः।।३९।।**

भाषा–गर्भाधान समय से वा जन्म समय से ५वें अथवा ८वें वर्ष में ब्राह्मण का, ६ठें किंवा ११वें वर्ष में क्षत्रियों का, ८वें अथवा १२ वें वर्ष में वैश्यों का यज्ञोपवीत संस्कार श्रेष्ठ है। उपरोक्त समय से दूने वर्ष तक उपनयन मध्यम होता है।।३९।।

व्रतबन्ध का मुहूर्त-

क्षिप्रध्रुवाहिचरमूलमृदुत्रिपूर्वा-
रौद्रेऽर्कविद्गुरुसितेन्दुदिने व्रतं सत् ।
द्वित्रीषुरुद्ररविदिक्प्रमिते तिथौ च
कृष्णादिमत्रिलवकेऽपि न चापराह्णे ।।४०।।

अन्वयः-क्षिप्रध्रुवाहिचरमूलमृदुत्रिपूर्वारौद्रे (नक्षत्रे) अर्कविद्गुरुसितेन्दुदिने, द्वित्रीषुरुद्ररविदिक्प्रमिते तिथौ व्रतं सत् स्यात् । कृष्णादिमत्रिलवके अपि सत् । च (पुनः) अपराह्णे (दिनार्धोत्तरे) व्रतं सत् न भवति।।४०।।

भाषा-क्षिप्रसंज्ञक, ध्रुवसंज्ञक, आश्लेषा, चरसंज्ञक, मूल, मृदुसंज्ञक, तीनों पूर्वा और आर्द्रा इन नक्षत्रों में, रवि, बुध, गुरु, शुक्र, सोम इन वारों में, द्वितीया, तृतीया, पञ्चमी, एकादशी, द्वादशी, दशमी इन तिथियों में, शुक्ल पक्ष तथा कृष्ण पक्ष की पञ्चमी तक दोपहर के पहले उपनयन करना शुभ है।।४०।।

यज्ञोपवीत में निन्द्य-

कवीज्यचन्द्रलग्नपा रिपौ मृतौ व्रतेऽधमाः ।
व्ययेऽब्जभार्गवौ तथा तनौ मृतौ सुते खलाः ।।४१।।

अन्वयः-कवीज्यचन्द्रलग्नपा रिपौ मृतौ स्थिरा व्रते अधमाः प्रोक्ताः तथा अब्जभार्गवौ व्यये, खलाः तनौ मृतौ वा स्थिता अशुभा भवन्ति।।४१।।

भाषा-शुक्र, गुरु, चन्द्र और लग्नेश ये छठें और आठवें स्थान में हों तो उपनयन संस्कार अशुभ है। १२वें में चन्द्र और शुक्र हो तथा लग्नमें, आठवें में और पाँचवें स्थान में पाप ग्रह हो तो अशुभ है।।४१।।

व्रतबन्ध में लग्नशुद्धि-

व्रतबन्धेऽष्टषड्रिःफवर्जिताः शोभनाः शुभाः ।
त्रिषडाये खलाः पूर्णो गोकर्कस्थो विधुस्तनौ ।।४२।।

अन्वयः-शुभाः अष्टषड्रिःफवर्जिताः व्रतबन्धे शोभनाः भवन्ति। खलाः त्रिषडाये शोभना भवन्ति। पूर्णः विधुः गोकर्कस्थः तनौ स्थितः शोभनः स्यात् ।।४२।।

भाषा-व्रतबन्ध में (उपनयन में), लग्न से ६।८।१२ इनसे भिन्न स्थान में शुभग्रह हो, ३।६।११ इनमें पापग्रह हो और पूर्ण चन्द्रमा वृष कर्क राशि होकर लग्न में हो तो उपनयन में शुभ है।।४२।।

ब्राह्मणादि वर्ण तथा वेदों के स्वामी-

विप्राधीशौ भार्गविज्यौ कुजार्कौ
राजन्यानामोषधीशो विशां च ।
शूद्राणां ज्ञश्चान्त्यजानां शनिः स्या-
च्छाखेशाः स्युर्जीवशुक्रारसौम्याः ।।४३।।

अन्वयः-भार्गविज्यौ विप्राधीशौ, कुजार्कौ राजन्यानां ईशौ, ओषधीशः चन्द्रमाः विशां ईशः, ज्ञो बुधः शूद्राणां, शनिः अन्त्यजानां ईशः। जीवशुक्रारसौम्याः शाखेशा भवन्ति।।४३।।

भाषा-गुरु और शुक्र ब्राह्मणों के, मंगल सूर्य क्षत्रियों के, चन्द्रमा वैश्यों के, बुध शूद्रों के, शनि अन्त्यजों (चाण्डालों) के स्वामी हैं। अब वेद के स्वामी कहते हैं,-ऋग्वेद के गुरु, यजुर्वेद के शुक्र, सामवेद के मङ्गल, अथर्ववेद के बुध स्वामी हैं।।४३।।

वर्णेश और शाखेश का प्रयोजन-

शाखेशवारतनुवीर्य्यमतावशस्तं
शाखेशसूर्य्यशशिजीवबले व्रतं सत् ।
जीवे भृगौ रिपुगृहे विजिते च नीचे
स्याद्वेदशास्त्रविधिना रहितो व्रतेन ।।४४।।

अन्वयः-शाखेशवारतनुवीर्यं व्रतबन्धे अतीव शस्तं भवति। शाखेशसूर्यशशिजीवबले व्रतं सत् स्यात् । जीवे भृगौ च रिपुगृहे विजिते नीचे सति व्रतेन वेदशास्त्रविधिना रहितः स्यात् ।।४४।।

भाषा-ऊपर कहे हुए वेदों के स्वामी का दिन हो, उसी का लग्न हो तथा वे बलवान् हों तो उपनयन अति शुभदायक होता है। शाखेश और सूर्य, चन्द्रमा, गुरु बली हो तो भी उपनयन शुभ होता है। गुरु शुक्र शत्रु के घर में या किसी ग्रह से पराजित हों या नीच में हों ऐसे समय में उपनयन संस्कार किया हुआ बालक वेद शास्त्र के कथित कर्म से रहित होता है।।४४।।

यज्ञोपवीत में जन्ममासादि का अपवाद-

जन्मर्क्षमासलग्नादौ व्रते विद्याधिको व्रती ।
आद्यगर्भेऽपि विप्राणां क्षत्रादीनामनादिमे ।।४५।।

अन्वयः-विप्राणां आद्यगर्भेऽपि क्षत्रादीनां अनादिमे गर्भे जन्मर्क्षमासलग्नादौ व्रते सति व्रती विद्याधिकः स्यात् ।।४५।।

भाषा-जन्म नक्षत्र, जन्म मास, जन्म लग्न, जन्म तिथि, जन्म दिन इनमें ब्राह्मण के ज्येष्ठ बालक और क्षत्रिय, वैश्य के दूसरे गर्भ के बालक का उपनयन संस्कार हो तो वह बालक प्रसिद्ध विद्वान् होता है।।४५।।

गुरुशुद्धि-

बटुकन्याजन्मराशेस्त्रिकोणायद्विसप्तगः ।
श्रेष्ठो गुरुः खषट्त्र्याद्ये पूजयान्यत्र निन्दितः ।।४६।।

अन्वयः-बटुकन्याजन्मराशेः त्रिकोणायद्विसप्तगः श्रेष्ठः स्यात् । खषट्त्र्याद्ये पूजया शुभः स्यात् । अन्यत्र ४।८।१२ स्थानेषु निन्दितः स्यात् ।।४६।।

भाषा–बालक और कन्या के जन्म राशि से ९।५।११।२।७ इन स्थानों में गुरु श्रेष्ठ होते हैं। १०।६।३।१ इन स्थानों में पूजा द्वारा शुभ होते हैं और ४।८।१२ में वे अशुभ ही होते हैं, इनमें पूजा से भी शुभ नहीं होते हैं।।४६।।

बृहस्पति का अपवाद–

स्वोच्चे स्वभे स्वमैत्रे वा स्वांशे वर्गोत्तमे गुरुः।
रिःफाष्टतुर्यगोऽपीष्टो नीचारिस्थः शुभोऽप्यसत् ।।४७।।

अन्वयः–गुरुः स्वोच्चे स्वभे स्वमैत्रे वा स्वांशे रिःफाष्टतुर्यगोऽपि इष्टः स्यात् तथा नीचारिस्थः शुभोऽपि असत् स्यात् ।।४७।।

भाषा–अपने उच्च का, अपने राशि का, अपने मित्र के घर का, अपने नवांश का और वर्गोत्तम नवांश का गुरु यदि ४।८।१२ इन दुष्ट स्थान में हो तो भी शुभ है और नीच या शत्रु का हो तो शुभ भी अशुभ है।।४७।।

यज्ञोपवीत में वर्जित काल–

कृष्णे प्रदोषेऽनध्याये शनौ निश्यपराह्णके।
प्राक्सन्ध्यागर्जिते नेष्टो व्रतबन्धो गलग्रहे ।।४८।।

अन्वयः–कृष्णे, प्रदोषे, अनध्याये, शनौ, निशि अपराह्णके प्राक् सन्ध्यागर्जिते तथा गलग्रहे व्रतबन्धः नेष्टः।।४८।।

भाषा–कृष्ण पक्ष में, प्रदोष में (५५ श्लोक में कहेंगे), अनध्याय (५४ श्लोक में कहेंगे), शनिवार में, रात्रि में, दोपहर के बाद, प्रातः और सायंकाल मे, मेघ गर्जन पर, गलग्रह (१३।१४।३०।१।७।८।९।४) ये आठों तिथि गलग्रह कही जाती हैं। इनमें उपनयन संस्कार अशुभ कहा गया है।।४८।।

यज्ञोपवीत के समय सूर्यादिनवमांश फल–

क्रूरो जडो भवेत् पापः पटुः षट्कर्मकृद्बटुः।
यज्ञार्थभाक् तथा मूर्खो रव्याद्यंशे तनौ क्रमात् ।।४९।।

अन्वयः–रव्याद्यंशे तनौ सति बटुः क्रमात् क्रूरः, जडः, पापः, पटुः, षट्कर्मकृत्, यज्ञार्थभाक् तथा मूर्खः स्यात् ।।४९।।

भाषा–यज्ञोपवीत के लग्न में यदि सूर्य का नवांश हो तो क्रूर, चन्द्र का हो तो जड़, मंगल का हो तो पापी, बुध का हो तो चतुर, बृहस्पति का हो तो षट्कर्मी, शुक्र का नवांश हो तो यज्ञ करने वाला और धनी तथा शनि का नवांश हो तो मूर्ख होता है।।४९।

चन्द्रनवमांश फल एवं अपवाद–

विद्यानिरतः शुभराशिलवे पापांशगते हि दरिद्रतरः।
चन्द्रे स्वलवे बहुदुःखयुतः कर्णादितिभे धनवान् स्वलवे ।।५०।।

अन्वयः–चन्द्रे शुभराशिलवे सति व्रती विद्यानिरतः स्यात् । पापांशगते दरिद्रतरः स्यात् । स्वलवे चन्द्रे बहुदुःखयुतः स्यात् । स्वलवे चन्द्रे कर्णादितिभे सति धनवान् स्यात् ।।५०।।

भाषा–उपनयन काल में चन्द्रमा शुभ राशि के नवांश में हो तो जिसका यज्ञोपवीत होता है वह बालक विद्याभ्यास करने वाला होता है। पाप राशि के नवांश में चन्द्रमा हो तो दरिद्र से भी दरिद्र होता है। चन्द्रमा अपने नवांश में हो तो बहुत दुःखी और अपने नवांश में, श्रवण और पुनर्वसु नक्षत्र में हो तो बहुत धनी होता है।।५०।।

केन्द्रस्थित सूर्यादि का फल–

राजसेवी वैश्यवृत्तिः शस्त्रवृत्तिश्च पाठकः ।
प्राज्ञोऽर्थवान् म्लेच्छसेवी केन्द्रे सूर्यादिखेचरैः ।।५१।।

अन्वयः–चन्द्रे सूर्यादिखेचरैः सद्भिः व्रती क्रमशः राजसेवी, वैश्यवृत्तिः, शस्त्रवृत्तिः, पाठकः प्राज्ञः, अर्थवान् , म्लेच्छसेवी च स्यात् ।।५१।।

भाषा–यज्ञोपवीत संस्कार के समय यदि सूर्यादि ग्रह केन्द्र में हो तो क्रम से राजा का सेवक, व्यापारी,हथियार चलानेवाला, पढ़ानेवाला, पण्डित, धनवान् और यवनादि जाति का नौकर होता है।।५१।।

अन्य ग्रहों के साथ गुरु, शुक्र तथा चन्द्र के फल–

शुक्रे जीवे तथा चन्द्रे सूर्यभौमार्किसंयुते ।
निर्गुणः क्रूरचेष्टः स्यान्निर्घृणः सद्युते पटुः ।।५२।।

अन्वयः–शुक्रे, जीवे च चन्द्रे सूर्यभौमार्किसंयुते सति व्रती निर्गुणः क्रूरचेष्टः निर्घृणः च स्यात् । सद्युते पटुः स्यात् ।।५२।।

भाषा–उपनयन समय में गुरु शुक्र चन्द्रमा इनमें कोई भी ग्रह सूर्य मङ्गल और शनि से युत हो तो, क्रम से गुणहीन, निर्दयी और निर्लज्ज होता है और शुभ ग्रह से युत हो तो चतुर होता है।।५२।।

चन्द्रनवगांश का शुभाशुभ फल–

विधौ सितांशगे सिते त्रिकोणगे तनौ गुरौ ।
समस्तवेदविद्व्रती यमांशगेऽतिनिर्घृणः ।।५३।।

अन्वयः–विधौ सितांशगे, सिते त्रिकोणगे, गुरौ तनौ स्थिते सति व्रती समस्तवेदविद् भवति। यमांशगे अति निर्घृणः स्यात् ।।५३।।

भाषा–उपनयन काल में चन्द्रमा शुक्र के नवांश में हो और शुक्र ९।५ में हों, गुरु लग्न में हो तो बालक समस्त शास्त्र को जाननेवाला होता है और यदि शनि के नवांश में हो तो अत्यन्त निर्लज्ज होता है।।५३।।

यज्ञोपवीत में अनध्याय–

शुचिशुक्रपौषतपसां दिगशिवरुद्रार्कसंख्यसिततिथयः ।
भूतादित्रियाष्टभिः संक्रमणञ्च व्रतेष्वनध्यायाः ।।५४।।

अन्वयः–शुचिशुक्रपौषतपसां मासानां क्रमेण दिगशिवरुद्रार्कसंख्यसिततिथयः तथा भूतादित्रियाष्टभिः संक्रमणं च व्रतेषु अनध्यायाः प्रोक्ताः।।५४।।

भाषा–आषाढ़, ज्येष्ठ, पौष, माघ इन मासों के शुक्ल पक्ष को क्रम से १०।२।११।१२ ये तिथियाँ और साधारणतया १४।१५।३०।१।८ ये तिथियाँ और संक्रान्ति ये अनध्याय हैं। इनमें उपनयन नहीं करना चाहिये।।५४।।

प्रदोष का लक्षण–

अर्कतर्कत्रितिथिषु प्रदोषः स्यात्तदग्रिमैः ।
रात्र्यर्धसार्धप्रहरयाममध्यस्थितैः क्रमात् ।।५५।।

अन्वयः–अर्कतर्कत्रितिथिषु क्रमात् रात्र्यर्धसार्धप्रहरयाममध्यस्थितैः तदग्रिमैः तिथिभिः प्रदोषः स्यात् ।।५५।।

भाषा–१२।६।३ इन तीनों तिथियों में क्रम से द्वादशी में आधी रात के पहले त्रयोदशी, षष्ठी के दिन डेढ़ पहर रात से पूर्व सप्तमी और तृतीया में एक पहर रात बीतने पर चतुर्थी लग जाय तो प्रदोष होता है।।५५।।

ब्रह्मौदनपाक से पहले उत्पातादि की शान्ति–

प्राग्ब्रह्मौदनपाकाद् व्रतबन्धनानन्तरं यदि चेत् ।
उत्पातानध्ययनोत्पत्तावपि शान्तिपूर्वकं तत् स्यात् ।।५६।।

अन्वयः–व्रतबन्धनानन्तरे ब्रह्मौदनपाकात् प्राक् यदि चेत् उत्पातानध्ययनोत्पत्तावपि शान्तिपूर्वकं तत् स्यात् ।।५६।।

भाषा–व्रतबन्ध के बाद और ब्रह्मौदन पाक से पहले यदि उत्पात या अनध्याय पड़ जाय तो उसकी शान्ति करके ब्रह्मौदन पाक कर्म करे।।५६।।

वेद क्रम से यज्ञोपवीत में नियत नक्षत्र–

वेदक्रमाच्छशिशिवाहिकरत्रिमूल-
पूर्वासु वौष्णकरमैत्रमृगादितीज्ये ।
ध्रौवेषु चाश्विवसुपुष्यकरोत्तरेश-
कर्णे मृगान्त्यलघुमैत्रधनादितौ सत् ।।५७।।

अन्वयः–शशिशिवाहिकरत्रिमूलपूर्वासु, पौष्णकरमैत्रमृगादितीज्ये ध्रौवेषु च, अश्विवसुपुष्यकरोत्तरेशकर्णे, मृगान्त्यलघुमैत्रधनादितौ, वेदक्रमात् ऋग्यजुःसामाथर्वक्रमतः व्रतं सत् शोभनं स्यात् ।।५७।।

भाषा–मृगशिरा, आर्द्रा, आश्लेषा हस्त, चित्रा, स्वाती, मूल और तीनों

पूर्वा ये नक्षत्र ऋग्वेद के लिए, रेवती, हस्त, अनुराधा, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य और ध्रुवसंज्ञक यजुर्वेदियों के लिए, अश्विनी, धनिष्ठा, पुष्य, हस्त, तीनों उत्तरा, आर्द्रा, श्रवण ये सामवेदियों के लिए तथा मृगशिरा, रेवती, लघुसंज्ञक, धनिष्ठा और पुनर्वसु ये नक्षत्र अथर्ववेदियों के लिए उपनयन में शुभ हैं।।५७।।

शुभकार्य में रजस्वला का परिहार–

नान्दीश्राद्धोत्तरं मातुः पुष्ये लग्नान्तरे न हि।
शान्त्या चौलं व्रतं पाणिग्रहः कार्योऽन्यथा न सत् ।।५८।।

अन्वयः– **नान्दीश्राद्धोत्तरं मातुः पुष्ये सति लग्नान्तरे न हि प्राप्ते शान्त्या चौलं, व्रतं, पाणिग्रहणश्च कार्यः। अन्यथा न सत् स्यात् ।।५८।।**

भाषा–नान्दीमुख श्राद्ध के बाद यदि बालक की माता रजस्वला हो जाय और नजदीक में कोई दूसरा लग्न न मिले तो शान्ति करके मुण्डन, उपनयनादि संस्कार को करे, अन्यथा अशुभ होता है।।५८।।

क्षत्रियों को छुरिकादि बन्धन मुहूर्त–

विचैत्रव्रतमासादौ विभौमास्ते विभूमिजे।
छुरिकाबन्धनं शस्तं नृपाणां प्राग्विवाहतः ।।५९।।

अन्वयः–**विचैत्रव्रतमासादौ विभौमास्ते विभूमिजे दिने नृपाणां विवाहतः प्राक् छुरिकाबन्धनं शस्तं स्यात् ।।५९।।**

भाषा–चैत्र को छोड़कर उपनयन में कहे हुए महीनों में, मंगलादिक ग्रहों के अस्त न रहने पर, मङ्गल दिन को भी छोड़कर क्षत्रियों को विवाह से पूर्व शस्त्र बन्धन करना चाहिये।।५९।।

केशान्त और समावर्तन का मुहूर्त–

केशान्तं षोडशे वर्षे चौलोक्तदिवसे शुभम्।
व्रतोक्तदिवसादौ हि समावर्त्तनमिष्यते ।।६०।।

अन्वयः–**बालकस्य षोडशे वर्षे चौलोक्तदिवसे केशान्तं शुभं स्यात् तथा व्रतोक्तदिवसादौ हि समावर्तनं कर्म इष्यते।।६०।।**

भाषा–सोलहवें वर्ष में और मुण्डन में कहे हुए समय में केशान्त कर्म करना चाहिये। तथा उपनयन में कहे हुये समय में समावर्तन कर्म करना चाहिये।।६०।।

इति मुहूर्तचिन्तामणौ संस्कारप्रकरणं समाप्तम्।

□

विवाहप्रकरणम्

विवाह समय में विचारणीय प्रमुख बातें-

भार्या त्रिवर्गकरणं शुभशीलयुक्ता
शीलं शुभं भवति लग्नवशेन तस्याः।
तस्माद् विवाहसमयः परिचिन्त्यते हि
तन्निघ्नतामुपगताः सुतशीलधर्माः ।।१।।

अन्वयः-शुभशीलयुक्ता भार्या त्रिवर्गकरणं भवति। लग्नवशेन तस्याः शीलं शुभं भवति। तस्मात् हेतोः विवाहसमयः परिचिन्त्यते। हि यतः सुतशीलधर्माः तन्निघ्नताः उपगताः सन्ति।।१।।

भाषा-सुन्दर विचार और शिष्टाचार वाली स्त्री, धर्म, अर्थ और काम को देनेवाली होती है। उसका उस प्रकार का आचरण होना लग्न के वश होता है। इसलिए विवाह समय में इसका विचार करना चाहिये, क्योंकि पुत्र, स्वभाव, आचरण और धर्म ये सब विवाह समय के ही अधीन है।।१।।

प्रश्नलग्न द्वारा विवाहयोग-

आदौ सम्पूज्य रत्नादिभिरथ गणकं वेदयेत् स्वस्थचित्तं
कन्योद्वाहं दिगीशानलहयविशिखे प्रश्नलग्नाद्यदीन्दुः ।
दृष्टो जीवेन सद्यः परिणयनकरो गोतुलाकर्कटाख्यं
वा स्यात्प्रश्नस्य लग्नं शुभखचरयुतालोकितं तद्विदध्यात् ।।२।।

अन्वयः-आदौ रत्नादिभिः स्वस्थचित्तं गणकं सम्पूज्य अथ कन्योद्वाहं वेदयेत् , यदि चेत् इन्दुः (चन्द्रः) प्रश्नलग्नात् दिगीशानलहयविशिखे (स्थितः) जीवेन (गुरुणा) दृष्टः स्यात्तदा सद्य परिणपनकरः स्यात् । वा गोतुलाकर्कटाख्यं प्रश्नस्य लग्नं शुभखचरयुतालोकितं यदि स्यात् (तदा) तत् विदध्यात् (कुर्यात्)।।२।।

भाषा-स्वस्थ चित्त से बैठे ज्योतिषी की रत्नादि से पूजा करके कन्या के विवाह के समय का प्रश्न करे। प्रश्नकाल में यदि चन्द्रमा १०।११।३।७।५ व स्थान में-से किसी एक स्थान में हो और गुरु से देखा जाता हो अथवा प्रश्न लग्न में वृष या तुला या कर्क कोई लग्न हो और शुभग्रह से देखा जाता हो तो इस योग से भी शीघ्र विवाह होगा ऐसा कहे।।२।।

विवाह योग-

विषमभांशगतौ शशिभार्गवौ तनुगृहं बलिनौ यदि पश्यतः।
रचयतो वरलाभमिमौ यदा युगलभांशगतौ युवतिप्रदौ।।३।।

अन्वयः-यदि बलिनौ शशिभार्गवौ विषमभांशगतौ तनुगृहं पश्यतः तदा वरलाभं रचयतः। यदा इमौ शशिभार्गवौ युगलभांशगतौ तदा युवतिप्रदौ भवेताम् ।।३।।

भाषा-प्रश्नकाल में चन्द्रमा और शुक्र यदि विषम राशि या विषम राशि के नवांश में बली होकर लग्न को देखता हो, तो कन्या को वर लाभ कराता है और शुक्र चन्द्रमा यदि समराशि नवांश में हो और बली होकर लग्न को देखता हो तो वर को स्त्री लाभ कराता है।।३।।

प्रश्न लग्न से वैधव्य योग-

षष्ठाष्टस्थः प्रश्नलग्नाद्यदीन्दुर्लग्ने क्रूरः सप्तमे वा कुजः स्यात् ।
मूर्त्ताविन्दुः सप्तमे तस्य भौमो रण्डा सा स्यादष्टसंवत्सरेण ।।४।।

अन्वयः-यदि इन्दुः प्रश्नलग्नात् षष्ठाष्टस्थः, लग्ने क्रूरः, वाऽस्य सप्तमे कुजः, मूर्त्तौ इन्दुः तस्य सप्तमे भौमः स्यात्तदा सा (कन्या), अष्टसंवत्सरेण रण्डा स्यात् ।।४।।

भाषा-प्रश्न लग्न से चन्द्रमा यदि छठे स्थान में हो और लग्न में क्रूर ग्रह हो तथा सातवें में मङ्गल हो अथवा लग्न में चन्द्रमा हो और उससे ७वें स्थान में मङ्गल हो तो विवाह के ८ वर्ष के भीतर कन्या विधवा हो जाती है।।४।।

कुलटा तथा मृतवत्सा योग-

प्रश्नतनोर्यदि पापनभोगः पञ्चमगो रिपुदृष्टशरीरः ।
नीचगतश्च तदा खलु कन्या सा कुलटा त्वथवा मृतवत्सा ।।५।।

अन्वयः-यदि पापनभोगः प्रश्नतनोः सकाशात् पञ्चमगः रिपुदृष्टशरीरः नीचगतो वा तदा सा कन्या खलु (इति निश्चयेन) कुलटा अथवा मृतवत्सा स्यात् ।।५।।

भाषा-प्रश्न लग्न से यदि पाप ग्रह पञ्चम स्थान में हो और शत्रु से देखा जाता हो या नीच का हो तो स्त्री कुलटा अथवा मृतवत्सा (जिसकी सन्तान हो-होकर मर जाय उसे मृतवत्सा कहते हैं) होती है।।५।।

विवाह भङ्ग योग-

यदि भवति सितातिरिक्तपक्षे
तनुगृहतः समराशिगः शशांकः ।
अशुभखचरवीक्षितोऽरिरन्ध्रे
भवति विवाहविनाशकारकोऽयम् ।।६।।

अन्वयः-यदि शशांकः सितातिरिक्तपक्षे तनुगृहतः समराशिगः अशुभखचरवीक्षितः अरिरन्ध्रे भवति तदा अयं विवाहविनाशकारकः स्यात् ।।६।।

भाषा-कृष्णपक्ष का चन्द्रमा यदि प्रश्न लग्न से समसंख्यक राशि में हो और पापग्रह से देखा जाता हो अथवा ६ठें या आठवें स्थान में हो तो विवाह पक्का होने नहीं देता।।६।।

बालविधवा योग तथा परिहार-

जन्मोत्थञ्च विलोक्य बालविधवायोगं विधाय व्रतं
सावित्र्या उत पैप्पलं हि सुतया दद्यादिमां वा रहः ।

सल्लग्नेऽच्युतमूर्तिपिप्पलघटैः कृत्वा विवाहं स्फुटं
दद्यात् तां चिरजीविनेऽत्र न भवेद्दोषः पुनर्भूभवः ।।७।।

अन्वयः-जन्मोत्थं च बालविधवायोगं विलोक्य हि इति निश्चयेन सुतया सावित्र्या व्रतं उत वा पैप्पलं व्रतं विधाय इमां कन्यां चिरजीविने वराय दद्यात् । वा सल्लग्ने रहः अच्युतमूर्तिपिप्पलघटैः स्फुटं विवाहं कृत्वा तां चिरजीविने वराय दद्यात् । पुनर्भूभवः पुनर्विवाहभवः दोषः न भवेत्।।७।।

भाषा-जन्म काल तथा प्रश्नकाल से विधवा योग देखकर कन्या को सावित्री या पिप्पल व्रत कराकर अथवा शुभ लग्न में विष्णु भगवान् की मूर्ति, पिप्पल वृक्ष अथवा कुम्भ से विवाह कर उस कन्या का किसी चिरंजीवी वर के साथ विवाह कर दे। इसमें पुनर्विववाह का दोष नहीं होता है।।७।।

सन्तान ज्ञान प्रश्नोत्तर-

प्रश्नलग्नक्षणे यादृशापत्ययुक्
स्वेच्छया कामिनी तत्र चेदाव्रजेत् ।
कन्यका वा सुतो वा तदा पण्डितै-
स्तादृशापत्यमस्या विनिर्दिश्यते ।।८।।

अन्वयः-प्रश्नलग्नक्षणे स्वेच्छया यादृशापत्ययुक् कामिनी तत्र आव्रजेत् चेत् तदा कन्यका वा सुतः तादृशापत्यं अस्याः पण्डितैः विनिर्दिश्यते।।८।।

भाषा-प्रश्न लग्न के समय में अपनी इच्छा से कोई स्त्री जिस तरह किसी और की सन्तान अपने साथ लेकर आ जाय उसी प्रकार उस स्त्री की सन्तान होगी ऐसा विद्वान् प्रश्नकर्ता से कहे। यदि कन्या हो तो कन्या और यदि लड़का हो तो लड़का कहना चाहिये।।८।।

प्रश्न समय के शुभाशुभ फल-

शंखभेरीविपञ्चीरवैर्मङ्गलं
जायते वैपरीत्यं तथा लक्षयेत् ।
वायसो वा खरः श्वा शृगालोऽपि वा
प्रश्नलग्नक्षणे रौति नादं यदि ।।९।।

अन्वयः-प्रश्नलग्नक्षणे शंखभेरीविपञ्चीरवैः मङ्गलं जायते। वायसो वा खरः श्वा शृगालः अपि यदि नादं रौति तदा वैपरीत्यं लक्षयेत् ।।९।।

भाषा-प्रश्न समय में शंख, भेरी (नगाड़ा), वीणा इन सबका शब्द सुनाई पड़े तो वर और कन्या के लिए मंगलकारक होता है। यदि कौआ, गदहा, कुत्ता और सियार आदि जानवरों का शब्द सुन पड़े तो अमंगल होता है।।९।।

कन्यावरण का मुहूर्त–

विश्वस्वातीवैष्णवपूर्वात्रयमैत्रै-
र्वस्वाग्नेयैर्वा करपीडोचितऋक्षैः ।
वस्त्रालंकारादिसमेतैः फलपुष्पैः
सन्तोष्यादौ स्यादनु कन्यावरणं हि ।।१०।।

अन्वयः–विश्वस्वातीवैष्णवपूर्वात्रयमैत्रैः, वस्वाग्नेयैः एभिः नक्षत्रैः करपीडोचितऋक्षैर्वा आदौ वस्त्रालंकारादिसमेतैः फलपुष्पैः सन्तोष्य अनु (पश्चात्) कन्यावरणं स्यात् ।।१०।।

भाषा–उत्तराषाढ़ा, स्वाती, श्रवण, तीनों पूर्वा, अनुराधा, धनिष्ठा, कृत्तिका इन नक्षत्रों में अथवा विवाहोक्त नक्षत्रों में वस्त्र,आभूषण आदि से युक्त फल, पुष्प लेकर अपने कन्या को सन्तुष्ट कर फिर उस कन्या का वरण करे।।१०।।

वर के फलदान का मुहूर्त–

धरणिदेवोऽथवा कन्यकासोदरः
शुभदिने गीतवाद्यादिभिः संयुतः ।
वरवृत्तिं वस्त्रयज्ञोपवीतादिना
ध्रुवयुतैर्वह्निपूर्वात्रयैराचरेत् ।।११।।

अन्वयः–ध्रुवयुतैः वह्निपूर्वात्रयैः नक्षत्रैः शुभदिने धरणिदेवः अथवा कन्यकासोदरः गीतवाद्यादिभिः संयुतः सन् वस्त्रयज्ञोपवीतादिना वरवृत्तिं आचरेत् ।।११।।

भाषा–ध्रुवसंज्ञक, कृत्तिका, तीनों पूर्वा इन नक्षत्रों में, शुभ दिन में, शुभ समय में गाजे-बाजे के साथ ब्राह्मण अथवा कन्या के सोदर भाई वस्त्र, जनेऊ, द्रव्यादि से वर वरण करे।।११।।

विवाह काल और ग्रह शुद्धि–

गुरुशुद्धिवशेन कन्यकानां
समवर्षेषु षडब्दकोपरिष्टात् ।
रविशुद्धिवशाच्छुभो वराणा-
मुभयोश्चन्द्रविशुद्धितो विवाहः ।।१२।।

अन्वयः–कन्यकानां षडब्दकोपरिष्टात् समवर्षेषु गुरुशुद्धिवशेन तथा वराणां रविशुद्धिवशात् , उभयोः कन्यावरयोः चन्द्रविशुद्धितः विवाहः शुभः।।१२।।

भाषा–छः वर्ष के ऊपर सम वर्ष में गुरु शुद्धि देखकर कन्या का तथा रवि शुद्धि से वर का, चन्द्र शुद्धि से वर और कन्या दोनों का विवाह शुभ होता है।।१२।।

सूर्य-चन्द्र-गुरु शुद्धि बोधकचक्र (यज्ञोपवीत-विवाह आदि के लिए)

वर का	दोनों का	कन्या का	फल
सूर्य	चन्द्र	गुरु	ग्रह
३।६।१०।११	१।२।३।५।६।७।९।१०।११	२।५।७।९।११	शुभ
१।२।५।७।९	अमा समीप, अस्त	१।३।६।१०	सम
४।८।१२	४।८।१०	४।८।१२	अशुभ

विवाह के मास

मिथुनकुम्भमृगालिवृषाजगे मिथुनगेऽपि रवौ त्रिलवे शुचे ।
अलिमृगाजगते करपीडनं भवति कार्तिकपौषमधुष्वपि ।।१३।।

अन्वयः-मिथुनकुम्भमृगालिवृषाजगे मिथुनगे अपि वा रवौ शुचेः त्रिलवे, अलिमृगाजगते वा रवौ कार्तिकपौषमधुषु अपि करपीडनं शुभं भवति।।१३।।

भाषा-मिथुन, कुम्भ, मकर, वृश्चिक, वृष, मेष इन राशियों के सूर्य में विवाह शुभ है और मिथुन के सूर्य में आषाढ़ शुक्ल की१० तक शुभ है और वृश्चिक का सूर्य होने पर कार्तिक में, मकर का सूर्य होने पर पौष में, मेष का सूर्य हो तो चैत में भी विवाह शुभ है । अर्थात् इन महीनों में उक्त राशि में सूर्य होने पर भी विवाह होना शुभ है।।१३।।

सन्तान भेद से जन्ममासादि का फल-

आद्यगर्भसुतकन्ययोर्द्वयोर्जन्ममासभतिथौ करग्रहः ।
नोचितोऽथ विबुधैः प्रशस्यते चेद् द्वितीयजनुषो सुतप्रदः।।१४।।

अन्वयः-जन्ममासभतिथौ आद्यगर्भसुतकन्ययोः द्वयोः करग्रहः न उचितः, द्वितीयजनुषो सुतकन्ययोः सुतप्रदः विवाहः बिबुधैः प्रशस्यते।।१४।।

भाषा-जन्म मास, जन्म नक्षत्र, जन्म तिथि में प्रथम सन्तान पुत्र अथवा कन्या का विवाह शुभ नहीं होता है। द्वितीय गर्भ से उत्पन्न सन्तान संतति देने वाला होता है ऐसा विद्वानों का मत है।।१४।।

ज्येष्ठ की विशेषता-

ज्येष्ठद्वन्द्वं मध्यमं संप्रदिष्टं
त्रिज्येष्ठं चेन्नैव युक्तं कदापि ।
केचित् सूर्यं वह्निगं प्रोज्झ्य चाहु-
नैवान्योन्यं ज्येष्ठयोः स्याद्विवाहः ।।१५।।

अन्वयः-ज्येष्ठद्वन्द्वं मध्यमं सम्प्रदिष्टम् । चेत् त्रिज्येष्ठं स्यात्तदा कदापि नैव युक्तं (भवेत्)। केचित् बह्निगं प्रोज्झ्य विवाहं आहुः(कथयन्ति)! किन्तु अन्योन्यं ज्येष्ठयोः (सुतकन्ययोः) विवाहः नैव शुभः स्यात् ।।१५।।

भाषा-विवाह में ज्येष्ठ मास, ज्येष्ठ लड़का या ज्येष्ठ मास और ज्येष्ठ कन्या हो तो इनका विवाह मध्यम होता है और यदि ज्येष्ठ बालक और ज्येष्ठ कन्या तथा ज्येष्ठ महीना ये तीनों हो तो अशुभ होता है। किसी-किसी आचार्य का मत है कि आवश्यकता पड़ने पर कृतिका के सूर्य को छोड़कर तीनों ज्येष्ठ शुभ हैं परन्तु ज्येष्ठ कन्या और ज्येष्ठ वर कभी भी शुभ नहीं है।।१५।।

विवाह में विशेष विचार-

सुतपरिणयात् षण्मासान्तः सुताकरपीडनं
न च निजकुले तद्वद्वा मण्डनादपि मुण्डनम् ।
न च सहजयोर्देये भ्रात्रोः सहोदरकन्यके
न सहजसुतोद्वाहोऽब्दार्थे शुभे न पितृक्रिया ।।१६।।

अन्वयः-सुतपरिणयात् षण्मासान्तः सुताकरपीडनं न, तद्वत् निजकुले मण्डनात् मुण्डनं अपि न (कुर्यात्)। च (पुनः) सहजयोः भ्रात्रोः सहोदरकन्यके न देये। च (पुनः) अब्दार्थे सहजसुतोद्वाहः न कार्यः। शुभे (कार्ये) पितृक्रिया न (कर्त्तव्या)।।१६।।

भाषा-लड़के के विवाह के बाद ६ महीने के भीतर लड़की का विवाह नहीं करना चाहिये और लड़की के विवाह के बाद ६ महीने तक अपने कुल में किसी का मुंडन भी नहीं करना चाहिए। दो सहोदरों को दो सोदर कन्याएँ नहीं देनी चाहिये तथा ६ महीने के अन्दर दो सोदर कन्याओं का विवाह न करें। विवाहादि शुभ कार्य में पिता या माता का क्षयाह न पड़ना चाहिये।।१६।।

विपत्तिकाल में विवाह की समस्या-

वध्वा वरस्यापि कुले त्रिपूरुषे
नाशं व्रजेत् कश्चन निश्चयोत्तरम् ।
मासोत्तरं तत्र विवाह इष्यते
शान्त्याथ वा सूतकनिर्गमे परैः ।।१७।।

अन्वयः-वध्वा वा वरस्य अपि त्रिपूरुषे कुले निश्चयोत्तरं यदि कश्चन नाशं व्रजेत् चेत् तत्र मासोत्तरं विवाहः इष्यते। अथवा परैः सूतकनिर्गमे शान्त्या विवाहः इष्यते।।१७।।

भाषा-विवाह के निश्चय हो जाने पर कन्या या वर के कुल में तीन पीढ़ी तक (३ पुरुष तक) कोई मर जाय तो एक महीने के बाद विवाह करना शुभ है। आवश्यकता में अशौच के बाद शांति करके शुभ है ऐसा भी एक आचार्य का मत है।।१७।।

विशेष-

चूडा व्रतञ्चापि विवाहतो व्रताच्चूडा न नेष्टा पुरुषत्रयान्तरे ।
वधूप्रवेशाच्च सुता विनिर्गमः षण्मासतो वाऽब्दविभेदतः शुभः।।१८।।

अन्वय-पुरुषत्रयान्तरे विवाहतः चूडा नेष्टा च (पुनः) व्रतम् अपि नेष्टम्। व्रतात् चूडा अपि नेष्टा। वधूप्रवेशात् सुताविनिर्गमः षण्मासतः (नेष्टः) अथवा अब्दविभेदतः शुभः स्यात् ॥१८॥

भाषा-तीन पुरुष के भीतर यदि किसी का विवाह हो तो ६ महीने तक उस कुल में किसी का मुण्डन और उपनयन न करें। उपनयन के बाद मुण्डन और वधूप्रवेश के बाद ६ मास तक लड़की का गौना या विदाई बगैरह न करे और यदि ६ महीने के अन्दर दूसरा संवत्सर आ जाये तो यह कार्य करना शुभ है॥१८॥

मूलादि नक्षत्रों में उत्पन्न वर-कन्या का फल-

श्वश्रूविनाशमहिजौ सुतरां विधत्तः
कन्यासुतौ निर्ऋतिजौ श्वशुरं हतश्च।
ज्येष्ठाभजाततनया स्वधवाग्रजञ्च
शक्राग्निजा भवति देवरनाशकर्त्री ॥१९॥

अन्वय-अहिजौ (आश्लेषानक्षत्रजौ) कन्यासुतौ श्वसुरं हतः। ज्येष्ठाभजाततनया स्वधवाग्रजं हन्ति। शक्राग्निजा (कन्या) देवरनाशकर्त्री भवति॥१९॥

भाषा-आश्लेषा नक्षत्र में उत्पन्न हुआ बालक अथवा कन्या सास का और मूल में उत्पन्न बालक या कन्या श्वसुर का, निश्चय नाश करते हैं। ज्येष्ठा में उत्पन्न कन्या अपने पति के ज्येष्ठ भाई (भसुर) का नाश करती है और विशाखा में उत्पन्न कन्या देवर का नाश करती है॥१९॥

मूलादि जन्य दोष परिहार-

द्वीशाद्यपादत्रयजा कन्या देवरसौख्यदा।
मूलान्त्यपादसार्पाद्यपादजाते तयोः शुभे ॥२०॥

अन्वय-द्वीशाद्यपादत्रयजा कन्या देवरसौख्यदा (स्यात्), मूलान्त्यपादसार्पाद्य-पादजाते तयोः (श्वश्रूश्वशुरयोः) शुभे (स्याताम्)॥२०॥

भाषा-विशाखा के आदि से तीन चरण तक उत्पन्न कन्या देवर को सुख देने वाली होती है। मूल के चौथे चरण में उत्पन्न कन्या श्वसुर को और श्लेषा के प्रथम चरण में उत्पन्न कन्या सास को सुख देती है॥२०॥

वर्ण आदि के ३६ गुण-

वर्णो वश्यं तथा तारा योनिश्च ग्रहमैत्रकम्।
गणमैत्रं भकूटञ्च नाडी चैते गुणाधिकाः ॥२१॥

अन्वय-वर्णः, वश्यं तथा तारा योनिः, च (पुनः) ग्रहमैत्रकम्, गणमैत्रं भकूटं, नाडी च-एते (सर्वे) गुणाधिकाः भवन्ति॥२१॥

भाषा-वर्ण, वश्य, तारा, योनि, ग्रहमैत्री, गणमैत्री, भकूट, नाड़ी उत्तरोत्तर गुण में एक से एक गुण अधिक होते हैं॥२१॥

वर्णादि अष्टकूट चक्र—३६ गुण—

नाम	वर्ण	वश्य	तारा	योनि	ग्र.मै.	गण	भकूट	नाडी
गुण संख्या	१	२	३	४	५	६	७	८

वर्णज्ञान—

द्विजा झषालिकर्कटास्ततो नृपा विशोऽङ्घ्रिजाः ।
वरस्य वर्णतोऽधिका वधूर्न शस्यते बुधैः ।।२२।।

अन्वयः—झषालिकर्कट द्विजाः (सन्ति)। ततः नृपाः, ततः विशः (वैश्याः), ततः अंघ्रिजाः (शूद्राः) ज्ञेयाः। बुधैः वर्णतः वरस्य अधिका वधूर्न शस्यते।।२२।।

भाषा—मीन, वृश्चिक, कर्क ये ब्राह्मण वर्ण, मेष सिंह धनु ये क्षत्रिय, वृष मकर, कन्या ये वैश्य, कुम्भ मिथुन तुला ये शूद्र वर्ण हैं। वर के वर्ण से कन्या का वर्ण अधिक हो तो शुभप्रद नहीं है।।२२।।

वर्ण ज्ञानचक्र—

वर्ण	ब्राह्मण	क्षत्रिय	वैश्य	शूद्र
राशि	१२	१	२	३
राशि	८	९	१०	११
राशि	४	५	६	७

वश्य विचार—

हित्वा मृगेन्द्रं नरराशिवश्याः सर्वे तथैषां जलजाश्च भक्ष्याः ।
सर्वेऽपि सिंहस्य वशे विनालिं ज्ञेयं नराणां व्यवहारतोऽन्यत् ।।२३।।

अन्वयः—मृगेन्द्रं हित्वा सर्वे नरराशिवश्याः, तथा एषां जलजा राशयः भक्ष्याः भवन्ति। अलिं विना सर्वे सिंहस्य वशे (भवन्ति)। अतः अन्यत् नराणां व्यवहारतः ज्ञेयम् ।।२३।।

भाषा—सिंह को छोड़कर सब नरराशि के वश होते हैं और जल से उत्पन्न होने वाली सब नरराशि के भक्ष्य हैं, वृश्चिक को छोड़ कर सब सिंह के वश हैं। और बातें मनुष्यों के व्यवहार से जानना चाहिये।।२३।।

वश्य ज्ञानचक्र—

चतुष्पद	द्विपद	जलचर	कीट		संज्ञा
मे.वृ.सिं. धनु उत्तरार्द्ध मकर पूर्वार्द्ध	धनु पूर्वार्द्ध मिथुन कन्या तुला	कुम्भ मकर उत्तरार्द्ध मीन	कर्क	वृश्चिक	राशि

ताराविचार–

कन्यर्क्षाद्वरभं यावत् कन्याभं वरभादपि ।
गणयेन्नवहृच्छेषे त्रीष्वद्रिभमसत् स्मृतम् ।।२४।।

अन्वयः–कन्यर्क्षात् वरभं यावत् गणयेत् । वरभात् अपि कन्याभं यावत् गणयेत्। नवहृच्छेषे त्रीष्वद्रिभम् असत् स्मृतम् ।।२४।।

भाषा–कन्या के नक्षत्र से वर के नक्षत्र तक और वर के नक्षत्र से कन्या के नक्षत्र तक गिने, उसमें ९ का भाग देने से यदि ३,५,७ शेष बचे तो तारा अशुभ है।।२४।।

योनिविचार–

अश्विन्यम्बुपयोर्हयो निगदितः स्वात्यर्कयोः कासरः
सिंहो वस्वजपाद्भयोः समुदितो याम्यान्तयोः कुञ्जरः ।
मेषो देवपुरोहितानलभयोः कर्णाम्बुनोर्वानरः
स्याद्वैश्वाभिजितोस्तथैव नकुलश्चान्द्राब्जयोन्योरहिः ।।२५।।
ज्येष्ठामैत्रभयोः कुरङ्ग उदितो मूलार्द्रयोः श्वा तथा
मार्जारोऽदितिसार्पयोरथ मघायोन्योस्तथैवोन्दुरुः ।
व्याघ्रो द्वीशभचित्रयोरपि च गौरर्यम्णबुध्न्यर्क्षयो-
र्योनिः पादगयोः परस्परमहावैरं भयोन्योस्त्यजेत् ।।२६।।

अन्वयः–अश्विन्यम्बुपयोः योनिः हयः निगदितः (प्रोक्तः), एवमेव स्वात्यर्कयोः कासरः (महिषः) वस्वजपाद्भयोः सिंहः,याम्यान्त्ययोः कुञ्जरः (हस्ती), देवपुरोहितानलभयोः मेषः, कर्णाम्बुनोः वानरः, तथैव वैश्वाभिजितोः नकुलः, चान्द्राब्जयोन्योः अहिः, ज्येष्ठामैत्रभयोः कुरङ्गः, तथा मूलार्द्रयोः श्वा, अदितिसर्पयोः मार्जारः अथ मघायोन्योः उन्दुरुः, द्वीशभचित्रयोः व्याघ्रः, अपि च अर्यम्णबुध्न्यर्क्षयोः गौः योनिः (उक्ताः) पादगयोः भयोन्योः परस्परं महावैरं स्यात् तत्त्यजेत् ।।२५-२६।।

भाषा–अश्विनी और शतभिषा के घोड़ा, हस्त स्वाती के महिष, धनिष्ठा पूर्वभाद्रपद के सिंह, भरणी और रेवती के हाथी, पुष्य कृत्तिका के भेड़ा, श्रवण पूर्वाषाढ़ के वानर, उत्तराषाढ़ अभिजित् के नकुल, मृगशिरा रोहिणी के सर्प, ज्येष्ठा अनुराधा के हरिण, मूल आर्द्रा के श्वान, पुनर्वसु आश्लेषा के मार्जार (बिल्ली), मघा पूर्वाफाल्गुनी के मूषक, विशाखा चित्रा के व्याघ्र, उत्तरभाद्र, उत्तरफाल्गुनी की गाय योनि है। इनमें एक-एक चरण में जो दो-दो योनि कही गई है उनमें परस्पर शत्रुता है। जैसे, घोड़ा, भैंस में इसलिए ये त्याज्य हैं।।२५-२६।।

योनिचक्र गुण ४ –

बैर		बैर		बैर		बैर		योनि
हय	महिष	सिह	हाथी	भेंड़ा	वानर	नेवला	सर्प	योनि
अश्वि. शत.	स्वाती हस्त	धनिष्ठा पू.भा.	भरणी रेवती	पुष्य कृत्ति.	श्रवण पू.षा.	उ.षा. अभि.	मृग रोहि.	नक्षत्र

बैर		बैर		बैर		बैर
मृग	श्वान	मार्जा०	मू०	व्या०	गौ०	योनि
ज्ये० अ०	मू० आ०	पु० श्ले०	म० पू०	वि० चि०	उ.भा. उ.फा.	नक्षत्र

ग्रहमैत्रीचक्र

मित्राणि द्युमणेः कुजेज्यशशिनः शुक्रार्कजौ वैरिणौ
सौम्यश्चास्य समो विधोर्बुधरवी मित्रे न चास्य द्विषत् ।
शेषाश्चास्य समाः कुजस्य सुहृदश्चन्द्रेज्यसूर्या बुधः
शत्रुः शुक्रशनी समौ च शशभृत्सूनोः सिताहस्करौ ।।२७।।
मित्रे चास्य रिपुः शशी गुरुशनिक्ष्माजाः समा गीष्पते-
र्मित्राण्यर्ककुजेन्दवो बुधसितौ शत्रू समः सूर्यजः ।
मित्रे सौम्यशनी कवेः शशिरवी शत्रू कुजेज्यौ समौ
मित्रे शुक्रबुधौ शनेः शशिरविक्ष्माजा द्विषोऽन्यः समः ।।२८।।

अन्वयः–द्युमणेः सूर्यस्य कुजेज्यशशिनः मित्राणि, शुक्रार्कजौ वैरिणौ, सौम्यः अस्य समः। विधोः बुधरवी मित्रे, अस्य द्विषत् शत्रुः न विद्यते, शेषाः सर्वे ग्रहाः अस्य समाः सन्ति। कुजस्य चन्द्रेज्यसूर्याः सुहृदः, बुधः शत्रुः, शुक्रशनी समौ। शशभृत्सूनोः (बुधस्य) सिताहस्करौ मित्रे, अस्य शशी रिपुः, गुरुशनिक्ष्माजाः समाः प्रोक्ताः। गीष्पतेः गुरोः अर्ककुजेन्दवः मित्राणि, बुधसितौ शत्रू, सूर्यजः समः। कवेः शुक्रस्य सौम्यशनी मित्रे, शशिरवी शत्रुः, कुजेज्यौ समौ शनेः शुक्र-बुधौ मित्रे, शशिरविक्ष्माजाः द्विषः शत्रवः सन्ति, अन्यो बृहस्पतिः समः।।२७-२८।।

भाषा–सूर्य के मंगल, चन्द्रमा और गुरु मित्र, बुध सम और शुक्र शनि शत्रु हैं। चन्द्र के रवि और बुध मित्र, मंगल गुरु शुक्र और शनि सम, शत्रु कोई नहीं। मंगल के रवि चन्द्र गुरु मित्र, शुक्र शनि सम, बुध शत्रु हैं। बुध के सूर्य शुक्र मित्र, मंगल गुरु शनि सम, चन्द्रमा शत्रु। गुरु के रवि, सोम, मंगल मित्र, शनि सम, बुध शुक्र शत्रु। शुक्र के बुध शनि मित्र, मङ्गल गुरु सम, रवि

सोम शत्रु। शनि के शुक्र बुध मित्र, गुरु सम, रवि सोम मंगल शत्रु ये नैसर्गिक मित्र, सम और शत्रु होते हैं॥२७-२८॥

ग्रहमैत्री चक्र-

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	ग्रहाः
मं.बृ. चं.	सू. बु.	बृ.सू. चं.	शु. सू.	सू.मं. चं.	बु.श.	शु.बु.	मित्राणि
बु.	मं.बृ.	शु.	श.बु.	श.	बृ.मं.	[illegible]	समाः
शु.श.	००	बु.	चं.	बु.शु.	सू.चं.	सू.चं. मं.	शत्रूः

गणविचार-

रक्षोनरामरगणाः क्रमतो मघाहि-
वस्विन्द्रमूलवरुणानलतक्षराधाः
पूर्वोत्तरात्रयविधातृयमेशभानि
मैत्रादितीन्दुहरिपौष्णमरुल्लघूनि ॥२९॥
निजनिजगणमध्ये प्रीतिरत्युत्तमा स्या-
दमरमनुजयोः सा मध्यमा सम्प्रदिष्टा।
असुरमनुजयोश्चेत् मृत्युरेव प्रदिष्टो
दनुविबुधयोः स्याद्वैरमेकान्ततोऽत्र ॥३०॥

अन्वयः-मघाहिवस्विन्द्रमूलवरुणानलतक्षराधाः, पूर्वोत्तरात्रयविधातृयमेशभानि मैत्रादितीन्दुहरिपौष्णमरुल्लघूनि क्रमशः रक्षोनरामरगणाः भवन्ति। निजनिजगणमध्ये अत्युत्तमा प्रीतिः (भवति), अमरमनुजयोः सा मध्यमा सम्प्रदिष्टा। असुरमनुजयोः चेत् स्यात्तदा मृत्युः एव प्रदिष्टः। दनुजविबुधयोः एकान्ततः वैरं भवेत् ॥२९-३०॥

भाषा-मघा, श्लेषा, धनिष्ठा, मूल, शतभिषा, कृत्तिका, चित्रा, विशाखा ये नक्षत्र राक्षस गण हैं, तीनों पूर्वा, तीनों उत्तरा, रोहिणी, भरणी, आर्द्रा ये मनुष्य गण हैं। अनुराधा, पुनर्वसु, मृगशिरा, श्रवण, रेवती, स्वाती और लघु संज्ञक (अश्विनी, हस्त, पुष्य) ये देवगण हैं। अपने-अपने गण में (स्त्री-पुरुष दोनों के एक गण हों तो) अति उत्तम प्रीति और देवगण में मध्यम, राक्षस और मनुष्य गण हो तो मृत्यु, राक्षस और देवगण हो तो परस्पर वैर होता है॥२९-३०॥

गणचक्र-

म.	श्ले.	ध.	ज्ये.	मू.	श.	कृ.	चि.	वि.	राक्षस
पू.फा.	पू.षा.	पू.भा.	उ.फा.	उ.षा.	उ.भा.	रो.	भ.	आ.	मनुष्य
अनु.	पुनर्वसु	मृ.	श्र.	रे.	स्वा.	अ.	ह.	पु.	देवता

राशिकूट–

मृत्युः षडष्टके ज्ञेयोऽपत्यहानिर्नवात्मजे ।
द्विर्द्वादशे निर्धनत्वं द्वयोरन्यत्र सौख्यकृत् ।।३१।।

अन्वयः–षडष्टके मृत्युः, नवात्मजे अपत्यहानिः स्यात् । द्विर्द्वादशे द्वयोः (कन्यावरयोः) निर्धनत्वं स्यात् । अन्यत्र सौख्यकृत् भवेत् ।।३१।।

भाषा–वर और कन्या के राशि परस्पर गिनने से ६।८ हो तो मृत्यु, ९।५ हो तो सन्तान हानि, २।१२ हो तो निर्धनता और इससे भिन्न पड़े तो सुख होता है।।३१।।

दुष्ट भकूट का परिहार–

प्रोक्ते दुष्टभकूटके परिणयस्त्वेकाधिपत्ये शुभो-
ऽथो राशीश्वरसौहृदेऽपि गदितो नाड्यृक्षशुद्धिर्यदि ।
अन्यर्क्षेशपयोर्बलित्वसखिते नाड्यृक्षशुद्धौ तथा
ताराशुद्धिवशेन राशिवशताभावे निरुक्तो बुधैः ।।३२।।

अन्वयः–प्रोक्ते दुष्टभकूटके एकाधिपत्ये (सति) परिणयः शुभः स्यात् । अथो राशीश्वरसौहृदेऽपि यदि नाड्यृक्षशुद्धिः स्यात्तदा दुष्टभकूटके परिणयः शुभः गदितः। अन्यर्क्षे अंशपयोः बलित्वसखिते नाड्यृक्षशुद्धौ तथा ताराशुद्धिवशेन राशिवशताभावेऽपि बुधैः परिणयः शुभः निरुक्तः।।३२।।

भाषा–पहले कहे हुए दुष्ट भकूट (अर्थात् ६।८) इत्यादि में यदि वर और कन्या का राशिपति एक हो अथवा दोनों के राशीश में मैत्री हो तो विवाह शुभ है। तथा यदि नाड़ी शुद्ध है और अंशपति (नवांश पति) में मित्रता हो एवं बलवान् हो तो विवाह शुभ है। नाड़ी नक्षत्र शुद्ध हो, तारा शुद्धि से यदि राशिवश नहीं भी हो तो पण्डितों ने विवाह शुभ कहा है।।३२।।

दुष्ट गणकूट, भकूट और ग्रहकूट का परिहार–

मैत्र्यां राशिस्वामिनोरंशनाथद्वन्द्वस्यापि स्याद् गणानां न दोषः ।
खेटारित्वं नाशयेत् सद्भकूटं खेटप्रीतिश्चापि दुष्टं भकूटम् ।।३३।।

अन्वयः–राशिस्वामिनोः मैत्र्यां, अपि वा अंशनाथद्वन्द्वस्यापि मैत्र्यां गणानां दोषः न स्यात् । सद्भकूटं खेटारित्वं नाशयेत् । च पुनः, खेटप्रीतिः अपि दुष्टं भकूटं नाशयेत् ।।३३।।

भाषा–वर और कन्या के राशीश में तथा अंशाधिपतियों में मित्रता होने पर गण-दोष नहीं होता, शुभ भकूट होने पर ग्रहों की शत्रुता को नाश करता है और ग्रहों में परस्पर मैत्री होने पर भकूट के दोष को नाश करता है।।३३।।

नाड़ीविचार और फल–

ज्येष्ठारौद्रार्यमाम्भःपतिभयुगयुगं दास्रभञ्चैकनाडी
पुष्येन्दुत्वाष्ट्रमित्रान्तकवसुजलभं योनिबुध्न्ये च मध्या ।

वाय्वग्निव्यालविश्वोडुयुगयुगमथो पौष्णभं चापरा स्याद्
दम्पत्योरेकनाड्यां परिणयनमसन्मध्यनाड्यां हि मृत्युः ।।३४।।

अन्वयः-ज्येष्ठारौद्रार्यमाम्भःपतिभयुगयुगं दास्रभं च एकनाडी (स्यात्)। पुष्येन्दुत्वाष्ट्र-मित्रान्तकवसुजलभं योनिबुध्न्ये च मध्या (नाडी भवति)। वाय्वग्निव्यालविश्वोडुयुगयुगमथो पौष्णभं च अपरा नाडी स्यात्। एकनाड्यां दम्पत्योः परिणयनं असत् (स्यात्)। मध्यनाड्यां हि निश्चयेन मृत्युः स्यात् ।।३४।।

भाषा-ज्येष्ठा, मूल, आर्द्रा, पुनर्वसु, उत्तराफाल्गुनी, हस्त, शतभिषा, पूर्वाभाद्रपदा और अश्विनी इन ९ नक्षत्रों की आदि नाड़ी है। पुष्य, मृगशिरा, चित्रा, अनुराधा, भरणी, धनिष्ठा, पूर्वाषाढ़ा, पूर्वाफाल्गुनी और उत्तराभाद्रपदा इन ९ नक्षत्रों की मध्य नाड़ी है। स्वाती, कृत्तिका, श्लेषा, उत्तराषाढ़ा, विशाखा, रोहिणी, मघा, श्रवण और रेवती इन ९ नक्षत्रों की अन्त्य नाड़ी है। वर-कन्या के नक्षत्र एक नाड़ी में हों तो विवाह अशुभ होता है। उसमें भी मध्य नाड़ी में दोनों का नक्षत्र हो तो मरण समझना।।३४।।

नाड़ीचक्र गुण ८

ज्ये.	आ.	उ.फा.	श.	मू.	ह.	पुन.	पू.भा.	अश्वि.	आ.ना.
पु.	मृ.	चि.	अनु.	भ.	ध.	पू.षा.	पू.फा.	उ.भा.	म.ना.
स्वा.	कृ.	श्ले.	उ.षा.	वि.	रो.	म.	श्र.	रे.	अं.ना.

मेलापक उदाहरण-

	वर		कन्या	
	पुनर्वसु चतुर्थ चरण में जन्म		पूर्वा फाल्गुनी प्रथम चरण में जन्म	
गुण	राशि	कर्क	सिंह	प्राप्त गुण संख्या
१	वर्ण	विप्र	क्षत्रिय	१।
२	वश्य	जलचर कीट	चतुष्पद	०
३	तारा	५	६	१।।
४	योनि	मार्जार	मूषक	०
५	राशीश	चन्द्र	सूर्य	५
६	गण	देव	मनुष्य	६
७	भकूट	२	१२	०
८	नाड़ी	आदि	मध्य	८

उदाहरण-यहाँ कन्या के वर्ण से वर का वर्ण श्रेष्ठ है, इसलिये वर्णगुण १, वर के वश्य कन्या नहीं है। इसलिये वश्य गुण ०। तारा एक से शुभ, एक से अशुभ

है इसलिये तारा गुण १।। । योनि में शत्रुता होने से योनि गुण ०। गण में मैत्री होने से गुण०। ग्रह मैत्री होने से गुण ६। भकूट द्विर्द्वादश होने से गुण ०। नाड़ी भिन्न होने के कारण नाड़ी गुण ८। सब गुणों के योग (२१।।) साढ़े इक्कीस हुआ। जो सर्व गुण योग (३६) के आधे १८ से अधिक है, इसलिये इन दोनों वर-कन्या में वैवाहिक सम्बन्ध शुभप्रद है।

अशुभोऽष्टादशाल्पश्चेत् शुभस्त्वष्टादशाधिकः ।
गुणयोगः शुभोऽतीव सप्तविंशाधिकः स्मृतः ।।

अर्थ-वर्णादि ८ कूट के गुणों का योग १८ से कम हो तो अशुभ, १८ से अधिक २७ तक शुभ तथा २७ से अधिक हो तो अत्यन्त शुभप्रद समझना चाहिये।।३४।।

नक्षत्र वश से पूर्व मध्य पर भाग का सम्मेलन-

पौष्णेशशाक्राद्रससूर्यनन्दाः
पूर्वाधमध्यापरभागयुग्मम् ।
भर्ता प्रियः प्राग्युजिभे स्त्रियाः स्या-
न्मध्ये द्वयोः प्रेम परे प्रिया स्त्री ।।३५।।

अन्वयः-पौष्णेशशाक्रात् रससूर्यनन्दाः (क्रमात्) पूर्वार्धमध्यापरभागयुग्मं ज्ञेयम् प्राक् युजिभे स्त्रियाः भर्ता प्रियः स्यात् । मध्ये द्वयोः प्रेम (भवति)। परे स्त्री प्रिया (भवति)।।३५।।

भाषा-पौष्ण-रेवती, ईश-आर्द्रा, शाक्र-ज्येष्ठा से यथाक्रम जैसे रेवती से ६ नक्षत्र पूर्वभाग, आर्द्रा से १२ नक्षत्र मध्यभाग और ज्येष्ठा से ९ नक्षत्र अपर भाग वाले हैं। ६।१२।९ क्रम से नक्षत्रों का मेलन होता हो तो पूर्व, मध्य और अपर भाग हैं। यदि पूर्व भाग के नक्षत्रों में वर-वधू के नक्षत्रों का मेलन होता हो तो स्त्री को स्वामी प्रिय होता है, मध्य भाग में परस्पर नाम वाले नक्षत्रों में मेलन होता हो तो परस्पर प्रीति होती है और अपर भाग में मेलन होता हो तो पुरुष को स्त्री प्यारी होती है।।३५।।

अकचटतपयशवर्गाः खगेशमार्जारसिंहशुनाम् ।
सर्पाखुमृगावीनां निजपञ्चमवैरिणामष्टौ ।।३६।।

अन्वयः-निजपञ्चमवैरिणां खगेशमार्जारसिंहशुनां सर्पाखुमृगावीनाम् अष्टौ (क्रमशः) अकचटतपयशवर्गाः (भवन्ति)।।३६।।

भाषा-अ, क, च, ट, त, प, य, श इन ८ वर्गों के क्रम से गरुड़, मार्जार, सिंह, कुत्ता, सर्प, मूषक, हिरण, भेंड़ा अधिपति हैं, इनमें अपने से पाँचवाँ परस्पर शत्रु है।।३६।।

अवर्गादिचक्र-

गरुड़	आ,आ, इ,ई,उ,ऊ,ऋ,ॠ, ऌ, ॡ, ए, ऐ, ओ, औ,	अवर्ण	सर्प
बिलाव	क, ख, ग, घ, ङ,	कवर्ग	मूषक
सिंह	च, छ, ज, झ, ञ,	चवर्ग	हिरण
कुत्ता	ट, ठ, ड, ढ, ण,	टवर्ग	भेंड़ा
सर्प	त, थ, द, ध, न,	तवर्ग	गरुड़
मूषक	प, फ, ब, भ, म,	पवर्ग	बिलार
हिरण	य, र, ल, व,	यवर्ग	सिंह
भेंड़ा	श, ष, स, ह,	शवर्ग	कुत्ता
ईश	वर्ण (अक्षर)	वर्ग	बैरी

नक्षत्र तथा राशि की एकता में विशेष-

राश्यैक्ये चेद्भिन्नमृक्षं द्वयोः स्यात्
नक्षत्रैक्ये राशियुग्मं तथैव ।
नाडीदोषो नो गणानां च दोषो
नक्षत्रैक्यै पादभेदे शुभं स्यात् ।।३७।।

अन्वयः-द्वयोः वरकन्ययोः,राश्यैक्ये चेत् भिन्नं ऋक्षं तथा नक्षत्रैक्ये चेत् राशियुग्मं स्यात् तदा नाडीदोषो गणानां दोषश्च न (भवेत्)। नक्षत्रैक्ये पादभेदे शुभं स्यात् ।।३७।।

भाषा-वर कन्या दोनों की एक राशि हो और नक्षत्र भिन्न हो, तथा नक्षत्र एक और राशि भिन्न हो तो नाड़ी और गण दोष नहीं होता है, एक नक्षत्र हो और चरण अलग-अलग हो तो शुभ है।।३७।।

राशीश तथा नवांश-

कुजशुक्रसौम्यशशिसूर्यचन्द्रजाः
कविभौमजीवशनिसौरयो गुरुः ।
इह राशिपाः क्रियमृगास्यतौलिके-
न्दुभतो नवांशविधिरुच्यते बुधैः ।।३८।।

अन्वयः-**इह कुजशुक्रसौम्यशशिसूर्यचन्द्रजाः कविभौमजीवशनिसौरयो गुरुः (क्रमशः) राशिपाः (राशिस्वामिनः) भवन्ति। क्रियमृगास्यतौलिकेन्दुभतः नवांशविधिः बुधैः उच्यते (कथ्यते) ।।३८।।**

भाषा-**मंगल,शुक्र, बुध, चन्द्रमा, सूर्य, बुध, शुक्र, मंगल, गुरु, शनि, शनि**

और गुरु ये क्रम से मेषादि राशियों के स्वामी हैं। मेषादि राशियों में नवमांश की मेष, मकर, तुला और कर्क से गणना होती है।।३८।।

राशिचक्र–

राशि	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.
स्वामी	मं.	शु.	मं.	च.	सू.	बु.
राशि	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.
स्वामी	शु.	मं.	बृ.	श.	श.	बृ.

नवांशचक्र –

नवांश	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.
३।२०	मे.	म.	तु.	क.	मे.	म.	तु.	क.	मे.	म.	तु.	क.
१।४०	वृ.	कु.	वृ.	सिं.	वृ.	कुं.	वृ.	सिं.	वृ.	कुं.	वृ.	सिं.
१०।०	मि.	मी.	ध.	क.	मि.	मी.	ध.	क.	मि.	मी.	ध.	क.
१३।२०	क.	मे.	म.	तु.	क.	मे.	म.	तु.	क.	मे.	म.	तु.
१६।४०	सिं.	वृ.	कुं.	वृ.	सि.	वृ.	कुं.	वृ.	सिं.	वृ.	कुं.	बृ.
२०।०	क.	मि.	मी.	ध.	क.	मि.	मी.	ध.	क.	मि.	मी.	ध.
२३।२०	तु.	क.	मे.	म.	तु.	क.	मे.	म.	तु.	क.	मे.	म.
२६।४०	वृ.	सिं.	वृ.	कुं.	वृ.	सिं.	वृ.	कुं.	वृ.	सिं.	वृ.	कुं.
३०।०	ध.	क.	मि.	मी.	ध.	क.	मि.	मी.	ध.	क.	मि.	मी.

होरा–

समगृहमध्ये शशिरविहोरा ।
विषमभमध्ये रविशशिनोः सा ।।३९।।

अन्वयः–समगृहमध्ये (क्रमेण) शशिरविहोरा (स्यात्) विषमभमध्ये सा (होरा) रविशशिनोः ज्ञेया।।३९।।

भाषा–सम राशि में पहले १५ अंश चन्द्रमा की होरा, बाद में १६ से ३० तक रवि की होरा होती है और विषम राशि में पहले १५ अंश तक रवि की होरा तथा १६ से ३० तक चन्द्रमा की होरा होती है।।३९।।

होराचक्र–

अं.	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.
१५	सू.	चं.	सू.	चं.	सू.	चं.	सू.	चं.	सू.	चं.	सू.	चं.
३०	चं.	सू.	चं.	सू.	चं.	सू.	चं.	सू.	चं.	सू.	चं.	सू.

त्रिंशांश और द्रेष्काण विधि-

शुक्रज्ञजीवशनिभूतनयस्य बाण-
शैलाष्टपञ्चविशिखाः समराशिमध्ये ।
त्रिंशांशको विषमभे विपरीतमस्माद्
द्रेष्काणपाः प्रथमपञ्चनवाधिपानाम् ।।४०।।

अन्वयः-समराशिमध्ये बाणशैलाष्टपञ्चविशिखाः अंशाः क्रमेण शुक्रज्ञजीव-शनिभूतनयस्य त्रिंशांशकाः भवन्ति। विषमभे अस्मात् विपरीतं (ज्ञेयम्)। तथा प्रथमपंचनवाधिपानां द्रेष्काणपाः ज्ञेयाः।।४०।।

भाषा-सम राशि में शुक्र, बुध, गुरु, शनि और मङ्गल के क्रम से ५।७।८।५।५ अंश त्रिंशांश होते हैं। विषम राशि में ५।५।८।७।५ अंश क्रम से मङ्गल, शनि, गुरु, बुध और शुक्र के त्रिंशांश होते हैं। किसी राशि का पहला द्रेष्काण अपना, दूसरा उससे पाँचवी राशि का, तीसरा उससे नवीं राशि का द्रेष्काण होता है।।४०।।

द्रेष्काण चक्र-

मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	अं.
मं.	शु.	बु.	चं.	सू.	बु.	शु.	मं.	बृ.	श.	श.	बृ.	१०
सू.	बु.	शु.	मं.	बृ.	श.	श.	बृ.	मं.	शु.	बु.	चं.	२०
बृ.	श.	श.	बृ.	मं.	शु.	बु.	चं.	सू.	बु.	शु.	मं.	३०

द्वादशांश और षड्वर्ग फल-

स्याद् द्वादशांश इह राशित एव गेहं
होराथ दृक्कनवमांशकसूर्यभागाः ।
त्रिंशांशकाश्च षडिमे कथितास्तु वर्गाः
सौम्यैः शुभं भवति चाऽशुभमेव पापैः ।।४१।।

अन्वयः-इह राशित एव द्वादशांशः स्यात् ।अथ गेहं होरां दृक्कनवमांशकसूर्यभागाः च (पुनः) त्रिंशांशकाः इमे षड्वर्गाः कथिताः (तत्र) सौम्यैः षड्वर्गैः शुभं, पापैः षड्वर्गैः अशुभं भवति।।४१।।

भाषा-द्वादशांश अपने राशि से आरम्भ कर क्रम से १२ राशियों का होता है। इस प्रकार गृह, होरा, द्रेष्काण, नवांश,द्वादशांश, त्रिंशांश यह षड्वर्ग कहलाता है। यह शुभ ग्रह के होने से शुभ और पाप ग्रह के होने से अशुभ होता है।।४१।।

द्वादशांशचक्रम्–

अं.	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.
२।३०	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.
५	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.	मे.
७।३०	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.	मे.	वृ.
१०	क.	सि.	क.	तु.	बृ.	ध.	म.	कु.	मी.	मे.	बृ.	मि.
१२।३०	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	मे.	वृ.	मि.	क.
१५	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.
१७।३०	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.
२०	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.
२२।३०	ध.	म.	कुं.	मी.	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.
२५	म.	कु.	मी.	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.
२७।३०	कुं.	मी.	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.
३०	मी.	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.

त्रिंशांशचक्रम्–

ग्रह	शु.	बु.	बृ.	श.	मं.	ईश०
समराशि	५	७	८	५	५	अंश
ग्रह	मं.	श.	बृ.	बु.	शु.	ईश०
वि०राशि	५	५	८	७	५	अंश

नृदूरदोष नक्षत्र से शुभाशुभ–

सेव्याधमर्णयुवतीनगरादिभं चेत्
पूर्वं हि भृत्यधनिभर्तृपुरादिसद्भात् ।
सेवाविनाशधननाशनभर्तृनाश-
ग्रामादिसौख्यहृदिदं क्रमशः प्रदिष्टम् ।।४२।।

अन्वयः–भृत्यधनिभर्तृपुरादिसद्भात् पूर्वं चेत् सेव्याधमर्णयुवतीनगरादिभं (स्यात्) तदा सेवाविनाशधननाशग्रामादिसौख्यहृद् इदं क्रमशः प्रदिष्टम् (प्रोक्तम्)।।४२।।

भाषा–सेव्य, ऋण लेने वाला, स्त्री और ग्राम इनका नक्षत्र यदि सेवक, ऋण देने वाला, पति और नगर से पहला हो तो सेवा विनाश, धननाश, स्वामी का नाश और नगर के सुख को हरने वाला होता है।।४२।।

गण्डान्तदोष-

ज्येष्ठापौष्णभसार्पभान्त्यघटिकायुग्मञ्च मूलाश्विनी-
पित्र्यादौ घटिकाद्वयं निगदितं तद्भस्य गण्डान्तकम् ।
कर्काल्यण्डजभान्ततोऽर्धघटिका सिंहाश्वमेषादिगाः
पूर्णान्ते घटिकात्मकं त्वशुभदं नन्दातिथेश्चादिमम् ॥४३॥

अन्वयः-ज्येष्ठापौष्णभसार्पभान्त्यघटिकामं च (पुनः) मूलाश्विनीपित्र्यादौ घटिकाः तद्भस्य नक्षत्रस्य गण्डान्तकम् निगदितम् । कर्काल्यण्डजभान्ततः अर्धघटिकाः सिंहाश्वमेषादिगाः अर्धघटिका लग्नगण्डान्तकं, अथ पूर्णान्ते घटिकात्मकं नन्दातिथेः आदिमं घटिकात्मकं तिथेः गण्डान्तकं अशुभदं (निगदितम्)॥४३॥

भाषा-ज्येष्ठा, रेवती, आश्लेषा की अन्त की दो घड़ी, मूल अश्विनी मघा के आदि की दो घड़ी को नक्षत्र गण्डान्त कहते हैं। कर्क वृश्चिक मीन के अन्त की आधी घड़ी, सिंह धनु मेष के आदि की आधी घड़ी लग्न गण्डान्त कहा जाता है। इसी तरह पूर्णा तिथि के अन्त की और नन्दा तिथि के आदि की १ घटी तिथि गण्डान्त कहलाता है। ये तीनों गण्डान्त अशुभ हैं॥४३॥

कर्तरीदोष-

लग्नात्पापावृज्व्यनृजू व्ययार्थस्थौ यदा तदा ।
कर्त्तरी नाम सा ज्ञेया मृत्युदारिद्र्यशोकदा ॥४४॥

अन्वयः-यदा ऋज्वनृजू पापौ लग्नात् व्ययार्थस्थौ स्याताम् तदा कर्तरि नाम ज्ञेया। सा कर्तरी मृत्युदारिद्र्यशोकदा भवति॥४४॥

भाषा-लग्न से व्यय तथा दूसरे स्थान में दो पाप ग्रह क्रम से मार्गी वाला होता है॥४४॥

सग्रह चन्द्रमा का योग-

चन्द्रे सूर्यादिसंयुक्ते दारिद्र्यं मरणं शुभम् ।
सौख्यं सापत्नवैराग्ये पापद्वययुते मृतिः ॥४५॥

अन्वयः-चन्द्रे सूर्यादिसंयुक्ते क्रमेण दारिद्र्यं, मरणं, शुभं सौख्यं, सापत्नवैराग्ये च भवेताम् तथा पापद्वययुते मृतिः मरणं स्यात्॥४५॥

भाषा-विवाह या प्रश्न लग्न में चन्द्रमा यदि सूर्य, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र और शनि से युत हो तो क्रम से दारिद्र्य, मरण, शुभ, सुख, शत्रुता और वैराग्य होता है और यदि दो पाप ग्रह से युत हो तो मृत्यु होती है॥४५॥

लग्न से अष्टम भाव का दोष एवं उसका परिहार-

जन्मलग्नभयोर्मृत्युराशौ नेष्टः करग्रहः ।
एकाधिपत्ये राशीशमैत्रे वा नैव दोषकृत् ॥४६॥

अन्वयः–जन्मलग्नभयोः मृत्युराशौ करग्रहः नेष्टः भवति। एकाधिपत्ये वा राशीशमैत्रे सति नैव दोषकृत्।।४६।।

भाषा–जन्मलग्न और जन्मराशि से अष्टमलग्न में विवाह अशुभ है। परन्तु राशि स्वामी एक हो वा दोनों में मित्रता हो तो शुभ होता है।।४६।।

अष्टम गृहदोष परिहार–

मीनोक्ष-कर्कालि-मृगस्त्रियोऽष्टमं
लग्नं यदा नाष्टमगेहदोषकृत्।
अन्योन्यमित्रत्ववशेन सा वधू-
र्भवेत्सुतायुर्गृहसौख्यभागिनी ।।४७।।

अन्वयः–मीनोक्षकर्कालिमृगस्त्रियः यदा अष्टमं लग्नं भवेत्तदा अष्टमगेहदोषकृत् न भवेत्। अन्योन्यमित्रत्ववशेन सा वधूः सुतायुर्गृहसौख्यभागिनी भवति।।४७।।

भाषा–मीन, वृष, कर्क, वृश्चिक, मकर, कन्या इन छः राशियों में से कोई अष्टम राशि लग्न में हो या जन्म लग्न से अष्टम हो तो अष्टम स्थान का दोष नहीं होता है। परस्पर ग्रहों में मैत्री होने से वर-वधू पुत्र, आयु और गृहस्थाश्रम के सुख के भागी होते हैं।।४७।।

मृतिभवनांशो यदि च विलग्ने
तदधिपतिर्वा न शुभकरः स्यात्।
व्ययभवनं वा भवति तदंश-
स्तदधिपतिर्वा कलहकरः स्यात् ।।४८।।

अन्वयः–मृतिभवनांशः, वा तदधिपतिः यदि च विलग्ने भवेत् तदा शुभकरः न स्यात्। यदि व्ययभवनं वा तदंशः वा तदधिपतिः विलग्ने तदा कलहकरः ज्ञेयः।।४८।।

भाषा–जन्मराशि या लग्न से अष्टम राशि का नवांश वा उसका स्वामी विवाह लग्न में हो तो विवाह शुभकारक नहीं होता है। बारहवाँ घर अथवा द्वादशांश वा उनका स्वामी लग्न में हो तो वह विवाह कलह कारक होता है।।४८।।

वर्ज्यविषघटी–

खरामतो ३० ऽन्त्यादितिवह्निपित्र्यभे
खवेदतः ४० के रदतश्च ३२ सार्पभे।
खबाणतो ५० ऽश्वे धृतितो १८ ऽर्यमाम्बुपे
कृते २० र्भगत्वाष्ट्रभविश्वजीवभे ।।४९।।
मनो १४ र्द्विदैवानिलसौम्यशाक्रभे
कुपक्षतः २१ शैवकरेऽष्टि १६ तोऽजभे।

युगाश्वितो २४ बुध्न्यभतोययाम्यभे
खचन्द्रतो १० मित्रभवासवश्रुतौ ।।५०।।
मूलेऽङ्गबाणा ५६ द्विषनाडिकाः कृता
वर्ज्याः शुभेऽथो विषनाडिका ध्रुवाः ।
निघ्ना भभोगेन खतर्क ६० भाजिताः
स्फुटा भवेयुर्विषनाडिकास्तथा ।।५१।।

अन्वयः-अन्त्यादितिवह्निपित्र्यभे खरामतः, के खवेदतः, सार्पभे रदतः, अश्वे खवाणतः, आर्यमाम्बुपे धृतितः, भगत्वाष्ट्रभजीवभे कृतेः, द्विदैवानिलसौम्यशाक्रभे मनोः, शैवकरे कुपक्षतः, अजभे अष्टितः, बुध्न्यभतोययाम्यभे युगाश्वितः, मित्रभवासवश्रुतौ खचन्द्रतः, मूले अङ्गबाणात् कृताः (चतस्रः) विष-नाडिकाः शुभे वर्ज्याः। अथो विषनाडिकाः ध्रुवाः भभोगेन भिन्नाः खतर्कभाजिताः तदा स्फुटा ध्रुवा ज्ञेयाः। विषनाडिका अपि तथा (भभोगेन) निघ्नाः खतर्कभाजिताः स्फुटाः भवेयुः।।४९-५१।।

भाषा-रेवती, पुनर्वसु, कृत्तिका, मघा में ३० घटी के बाद, रोहिणी में ४० घटी के बाद, आश्लेषा में ३२ घटी के बाद, अश्विनी में ५० घड़ी के बाद, उत्तराफाल्गुनी और शतभिषा में १८ घटी के बाद, पूर्वाफाल्गुनी, चित्रा, उत्तराषाढ़, पुष्य में २० घटी के बाद, विशाखा, स्वाती, मृगशिरा और ज्येष्ठा में १४ घटी के बाद, आर्द्रा, हस्त में २१ घटी के बाद, पूर्वाभाद्रपद में १६ घटी के उपरान्त, उत्तराभाद्रपद, पूर्वाषाढ़ा और भरणी में २४ घटी के बाद, अनुराधा, धनिष्ठा तथा श्रवण में १० घटी के बाद, मूल में ५६ घटी के बाद, ४-४ घटी विषघटी कहलाती है। ये शुभ कार्य में वर्जित हैं। कहे हुए घड़ी की संख्या की भभोग से गुणा कर ६० का भाग दे तो स्पष्ट ध्रुव घटी होती है। इस प्रकार ४ को भी भभोग से गुणा कर ६० का भाग देने से त्याज्य विषघटी का मान होता है।।४९-५१।।

दिवामुहूर्त-

गिरिशभुजगमित्राः पित्र्यवत्वम्बुविश्वे-
ऽभिजिदथ च विधातापीन्द्र इन्द्रानलौ च ।
निर्ऋतिरुदकनाथोऽप्यर्यमाथो भगः स्युः
क्रमश इह मुहूर्ता वासरे बाणचन्द्राः ।।५२।।

अन्वयः-गिरिशभुजगमित्राः पित्र्यवस्वम्बुविश्वे अभिजित् अथ च विधाता अपि च इन्द्रः इन्द्रानलौ, निर्ऋतिः उदकनाथः अर्यमापि अथो भगः इमे बाणचन्द्राः मुहूर्ताः (क्रमशः) वासरे स्युः।।५२।।

भाषा-शिव, सर्प, मित्र, पित्र्य, वसु, जल, विश्वेदेव, अभिजित्, ब्रह्मा,

इन्द्र, इन्द्राग्नि, राक्षस, वरुण, अर्यमा, भग–ये १५ मुहूर्त क्रम से दिन में होते हैं।।५२।।

रात्रि मुहूर्त–

शिवोऽजपादादष्टौ स्युर्भेशा अदितिजीवकौ।
विष्ण्वर्कत्वाष्ट्रमरुतो मुहूर्त्ता निशि कीर्त्तिताः ।।५३।।

अन्वयः–शिवः अजपादात् अष्टौ भेशाः, अदितिजीवकौ, विष्ण्वर्कत्वाष्ट्रमरुतः, एते निशि मुहूर्त्ताः स्युः।।५३।।

भाषा–शिव, अजपाद, अहिर्बुध्न्य, पूषा, अश्विनीकुमार, यम, अग्नि, ब्रह्मा, चन्द्रमा, अदिति, गुरु, विष्णु, सूर्य, त्वाष्ट्र, वायु– ये क्रम से रात्रि के १५ मुहूर्त हैं।।५३।।

निषिद्ध मुहूर्त–

रवावर्यमा ब्रह्मरक्षश्च सोमे
कुजे वह्निपित्र्ये बुधे चाभिजित्स्यात् ।
गुरौ तोयरक्षो भृगौ ब्राह्मपित्र्ये
शनावीशसार्पौ मुहूर्त्ता निषिद्धाः ।।५४।।

अन्वयः– रवौ अर्यमा, सोमे ब्रह्मरक्षः, कुजे वह्निपित्र्ये, बुधे अभिजित्, गुरौ तोयरक्षः, भृगौ ब्रह्मपित्र्ये, शनौ ईशसार्पौ इमे मुहूर्ताः निषिद्धाः भवन्ति।।५४।।

भाषा–रविवार में अर्यमा, सोमवार में ब्रह्म तथा राक्षस, मंगल में अग्नि, पित्र्य, बुध में अभिजित् , गुरुवार में जल तथा राक्षस, शुक्रवार में ब्रह्मा, पित्र्य, शनिवार में शिव, सर्प ये मुहूर्त निषिद्ध हैं।।५४।।

विवाह में विहित नक्षत्र तथा अभिजित् का मान–

निर्वेधैः शशिकरमूलमैत्रपित्र्य-
ब्राह्मान्त्योत्तरपवनैः शुभा विवाहः ।
रिक्तामारहिततिथौ शुभेऽह्नि वैश्व-
प्रान्त्यांघ्रिः श्रुतितिथिभागतोऽभिजित्स्यात् ।।५५।।

अन्वयः–निर्वेधैः शशिकरमूलमैत्रपित्र्यब्राह्मान्त्योत्तरपवनैः, एभिर्नक्षत्रैः रिक्तामारहिततिथौ शुभे अह्नि विवाहः शुभः स्यात् । तथा वैश्वप्रान्त्यांघ्रिः श्रुतितिथिभागतः अभिजित् स्यात् ।।५५।।

भाषा–मृगशिरा, हस्त, मूल, अनुराधा, मघा, रोहिणी, रेवती, तीनों उत्तरा, स्वाती ये नक्षत्र निर्वेध हो तो विवाह शुभ है। ९।४।१४।३० इन तिथियों को छोड़कर अन्य तिथियों में, शुभ अवसर में विवाह शुभ है। उत्तराषाढ़ का चतुर्थ चरण तथा श्रवण के आदि का १५वाँ भाग मिलकर अभिजित् कहलाता है।।५५"

पंचशलाका चक्रोद्धार–

वेधोऽन्योन्यमसौ विरिञ्च्यभिजितोर्याम्यानुराधर्क्षयो-
र्विश्वेन्द्वोर्हरिपित्र्ययोर्ग्रहकृतो हस्तोत्तराभाद्रयोः ।
स्वातीवारुणयोर्भवेन्निर्ऋतिमादित्योस्तथोपान्त्ययोः
खेटे तत्र गते तुरीयचरणाद्योर्वा तृतीयद्वयोः ।।५६।।

अन्वयः–विरिञ्च्यभिजितोः, याम्यानुराधर्क्षयोः, विश्वेन्द्वोः, हरिपित्र्ययोः, हस्तोत्तराभाद्रयोः, स्वातीवारुणयोः, निर्ऋतिमादित्योः, तथा उपान्त्ययोः, अन्योन्यं असौ ग्रहकृतः वेधः स्यात् । तत्र गते खेटे तुरीयचरणाद्योः, तथा तृतीयद्वयोः (वेधः) भवेत् ।।५६।।

भाषा–रोहिणी अभिजित् में, भरणी अनुराधा में, उत्तराषाढ़ मृगशिरा में, श्रवण मघा में, हस्त उत्तराभाद्रपद में, स्वाती शतभिषा में, मूल पुनर्वसु में, उत्तरा फाल्गुनी रेवती में परस्पर ग्रहकृत वेध होता है और प्रथम चरण का चतुर्थ चरण के साथ तथा द्वितीय चरण का तृतीय चरण के साथ परस्पर वेध होता है।।५६।।

स्पष्टार्थ–यदि कोई ग्रह भरणी पर हो तो उससे भरणी नक्षत्र विद्ध होता है अथवा अनुराधा पर कोई ग्रह हो तो उससे भरणी नक्षत्र विद्ध होता है।

इसी तरह यदि भरणी के चतुर्थ चरण पर कोई ग्रह हो तो अनुराधा का प्रथम चरण विद्ध हुआ और द्वितीय चरण पर कोई ग्रह हो तो तृतीय चरण पर विद्ध हुआ। अन्य नक्षत्रों में भी इसी तरह समझ लेना चाहिए।।५६।।

पञ्चशलाका चक्र–
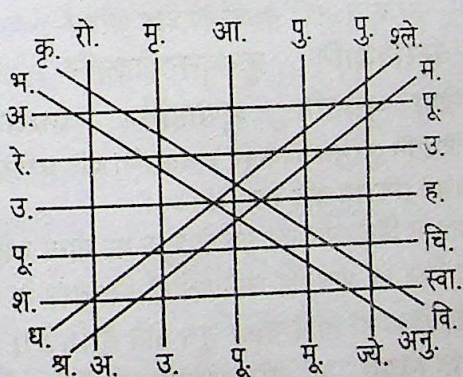
विवाहातिरिक्त मङ्गल कार्य में सप्तशलाका चक्रोद्धार–

शाक्रेज्ये शतभानिले जलशिवे पौष्णार्यमर्क्षे वसु-
द्वीशे वैश्वसुधांशुभे हयभगे सार्पानुराधे तथा ।
हस्तोपान्तिमभे विधातृविधिभे मूलादितो त्वाष्ट्रभा-
जाङ्घ्री याम्यमघे कृशानुहरिभे विद्धेऽरिरेखे मिथः ।।५७।।

अन्वयः-अद्रिरेखे (सप्तशलाकाचक्रे) शाक्रेज्ये शतभानिले जलशिवे पौष्णायमर्क्षे वसुद्वीशे वैश्वसुधांशुभे हयभगे सार्पानुराधे हस्तोपान्तिमभे विधातृविधिभे मूलादितो त्वाष्ट्रभाजांघ्री याम्यमघे कृशानुहरिभे मिथः परस्परं विद्धे स्तः।।५७।।

भाषा-ज्येष्ठा पुष्य में, शतभिषा स्वाती में, पूर्वाषाढ़ आर्द्रा में, रेवती उत्तराफाल्गुनी में, धनिष्ठा विशाखा में, उत्तराषाढ़ मृगशिरा में, अश्विनी पूर्वाफाल्गुनी में, हस्त उत्तराभाद्रपद में, रोहिणी अभिजित् में, चित्रा पूर्वाभाद्रपद में, भरणी मघा में, कृत्तिका श्रवण में परस्पर सप्तशलाका चक्र में वेध होता है।।५७।।

सप्तशलाका चक्र-

क्रूराक्रांत आदि नक्षत्रों का दोष परिहार-

ऋक्षाणि क्रूरविद्धानि क्रूरभुक्तादिकानि च ।
भुक्त्वा चन्द्रेण मुक्तानि शुभार्हाणि प्रचक्षते ।।५८।।

अन्वयः-क्रूरविद्धानि क्रूरभुक्तादिकानि च ऋक्षाणि यदि चन्द्रेण भुक्त्वा मुक्तानि तदा शुभार्हाणि प्रचक्षते (विद्वांस इति शेषः)।।५८।।

भाषा-क्रूरग्रह से विद्ध और क्रूर ग्रह से भुक्त या भोग्य नक्षत्र और पापग्रह जिन पर हों अथवा जिन पर पाप ग्रह जानेवाले हों इस तरह के नक्षत्रों को यदि चन्द्रमा भोगकर छोड़ दिया हो तो वे नक्षत्र शुभ होते हैं।।५८।।

ज्ञराहुपूर्णेन्दुसिताः स्वपृष्ठे भं सप्तगोजातिशरैर्मितं हि ।
संलत्तयन्तेऽर्कशनीज्यभौमाः सूर्याष्टतर्काग्निमितं पुरस्तात् ।।५९।।

अन्वयः-ज्ञराहुपूर्णेन्दुसिताः स्वपृष्ठे सप्तगोजातिशरैर्मितं भं संलत्तयन्ते। तथा अर्कशनीज्यभौमाः पुरस्तात् (अग्रे) सूर्याष्टतर्काग्निमितं भं संलत्तयन्ते।।५९।।

भाषा-बुध, राहु, पूर्ण चन्द्रमा, और शुक्र जिस नक्षत्र में हों उससे क्रम से ७ वें ९वें २२वें और ५वें पिछले नक्षत्र को अपने लात से मारता है और सूर्य,

शनि, गुरु तथा मंगल अपने नक्षत्र से १२वें ८वें ६ठें और ३रे अगले नक्षत्र को लात से मारते हैं इसलिए लत्ता दोष इसका नाम रखा गया है।।५९।।

पातदोष–

हर्षणवैधृतिसाध्यव्यतिपातकगण्डशूलयोगानाम् ।
अन्ते यन्नक्षत्रं पातेन निपातितं तत्स्यात् ।।६०।।

अन्वयः–हर्षणवैधृतिसाध्यव्यतिपातकगण्डशूलयोगानाम् अन्ते यत् नक्षत्रं तत् पातेन निपातितं स्यात् ।।६०।।

भाषा–हर्षण, वैधृति, साध्य, व्यतिपात, गण्ड, शूल इन योगों के अन्त में जो नक्षत्र हो वह पात दूषित होता है।।६०।।

क्रांतिसाम्यदोष–

पञ्चास्याजौ गोमृगौ तौलिकुम्भौ
कन्यामीनौ कर्क्यली चापयुग्मे ।
तत्रान्योन्यं चन्द्रभान्वोर्निरुक्तं
क्रान्तेः साम्यं नो शुभं मङ्गलेषु ।।६१।।

अन्वयः–पञ्चास्याजौ गोमृगौ तौलिकुम्भौ कन्यामीनौ कर्क्यली चापयुग्मे तत्र अन्योन्यं स्थितयोः चन्द्रभान्वोः क्रान्तेः साम्यं निरुक्तं तत् मङ्गलेषु नो शुभं स्यात् ।।६१।।

भाषा–सिंह, मेष, वृष, मकर, तुला, कुम्भ, कन्या, मीन, कर्क, वृश्चिक, धनु, मिथुन इन दो-दो राशियों पर परस्पर सूर्य और चन्द्रमा हो अर्थात् सिंह का सूर्य, मेष का चन्द्रमा अथवा मेष का सूर्य, सिंह का चन्द्रमा हो तो क्रान्ति साम्य दोष होता है। यह शुभ कार्य में अशुभ कहा गया है।।६१।।

खार्जूर अथवा एकार्गलदोष–

व्याघातगण्डव्यतिपातपूर्वे
शूलान्त्यवज्रे परिघातिगण्डे ।
एकार्गलाख्यो ह्यभिजित्समेतो
दोषः शशी चेद्विषमर्क्षगोऽर्कात् ।।६२।।

अन्वयः–व्याघातगण्डव्यतिपातपूर्वे शूलान्त्यवज्रे परिघातिगण्डे (अस्मिन् योगे) चेत् अभिजित्समेतः शशी अर्कात् विषमर्क्षगः विषमे विषमसंख्याके नक्षत्रे स्थितः तदा एकार्गलाख्यो दोषः स्यात् ।।६२।।

भाषा–व्याघात, गण्ड, व्यतिपात, विष्कम्भ, शूल, वैधृति, वज्र, परिघ, अतिगण्ड इन योगों में अभिजित् सहित सूर्य से विषम नक्षत्र में चन्द्रमा हो तो एकार्गल दोष होता है। इसी को खार्जूर दोष भी कहते हैं।।६२।।

उपग्रह दोष–

शराष्टदिक्शक्रनगातिधृत्यस्थितिर्धृतिश्च प्रकृतेश्च पञ्च।
उपग्रहाः सूर्यमतोऽब्जताराः शुभा न देशे कुरुवाह्लिकानाम् ।।६३।।

अन्वयः–सूर्यभतः अब्जताराः शराष्टदिक्शक्रनगातिधृत्यः तिथिः धृतिः प्रकृतेः पञ्च स्युश्चेत्तदा उपग्रहाः भवन्ति। ते कुरुवाह्लिकानां देशे शुभाः न भवन्ति।।६३।।

भाषा–सूर्य के नक्षत्र से ५।८।१०।१४।७।१९।१५।१८।२१।-२२।२३।२४।१५ इतने-इतने संख्या पर चन्द्रमा का नक्षत्र हो तो उपग्रह नामक दोष होता है। यह कुरुदेश और वाह्लीक देश में विवाह के लिए शुभ नहीं है।।६३।।

पातादि दोषों का परिहार और अर्द्धयाम–

पातोपग्रहलत्तासु नेष्टोऽङ्घ्रिः खेटपत्समः।
वारस्त्रिघ्नोऽष्टभिस्तष्टः सैकः स्यादर्द्धयामकः ।।६४।।

अन्वयः–पातोपग्रहलत्तासु खेटपत्समः अंघ्रिः नेष्टः स्यात् । वारः त्रिघ्नः सैकः अष्टभिः तष्टः अर्धयामकः स्यात् ।।६४।।

भाषा–पात, उपग्रह, लत्ता में ग्रह के चरण तुल्य नक्षत्र का चरण अनिष्टकारक है। वार की संख्या का ३ से गुणाकर ८ का भाग दे और जो शेष बच उसमें १ जोड़ दे तो अर्द्धयाम होता है।।६४।।

कुलिक दोष–

शक्रार्कदिग्वसुरसाब्ध्यश्विनः कुलिका रवेः।
रात्रौ निरेकास्तिथ्यंशाः शनौ चान्त्येऽपि निन्दितः ।।६५।।

अन्वयः–रवेः (रविमारभ्य) शक्रार्कदिग्वसुरसाब्ध्यश्विनः तिथ्यंशः मुहूर्ताः कुलिकाः कथ्यन्ते। ते निरेकाः रात्रौ कुलिकाः भवन्ति। शनौ अन्त्योऽपि मुहूर्तः निन्दितः स्यात् ।।६५।।

भाषा–रवि आदि वारों में क्रम से १४वाँ, १२वाँ, १०वाँ, ८वाँ, ६ठा, ४था, २रा–ये मुहूर्त कुलिक होते हैं। शनि का अन्तिम मुहूर्त भी निन्द्य है।।६५।।

दग्ध तिथि–

चापान्त्यगे गोघटगे पतङ्गे कर्काजगे स्त्रीमिथुने स्थिते च।
सिंहालिगे नक्रघटे समाः स्युस्तिथ्यो द्वितीयाप्रमुखाश्च दग्धाः।।६६।।

अन्वयः–चापान्त्यगे गोघटगे कर्काजगे स्त्रीमिथुने सिंहालिगे नक्रघटे पतङ्गे (सूर्ये) स्थिते क्रमशः द्वितीयाप्रमुखाः समाः तिथ्यः दग्धाः भवन्ति।।६६।।

भाषा–धनु, मीन। वृष, कुम्भ। कर्क, मेष। कन्या, मिथुन। सिंह, वृश्चिक। मकर, तुला, इन दो-दो राशियों में सूर्य रहे तो, क्रम से द्वितीया, चतुर्थी, षष्ठी, अष्टमी, दशमी तथा द्वादशी तिथियाँ दग्ध कही जाती हैं।।६६।।

जामित्र दोष-

लग्नाच्चन्द्रान्मदनभवनगे खेटे न स्यादिह परिणयनम् ।
किं वा बाणाशुगमितलवगे जामित्रं स्यादशुभकरमिदम् ।।६७।।

अन्वयः-लग्नात् वा चन्द्रात् मदनभवनगे किं वा बाणाशुगमितलवगे खेटे सति जामित्रं स्यात् । इह परिणयं न स्यात् । इदं अशुभकरमुक्तम् ।।६७।।

भाषा-लग्न अथवा चन्द्रमा से सप्तम भवन में कोई ग्रह हो तो विवाह अशुभकारक होता है। या उससे ५५ नवांश में ग्रह हो तो भी विवाह में अशुभ है। इसको जामित्र दोष कहते हैं।।६७।।

एकार्गल आदि दोष का अपवाद-

एकार्गलोपग्रहपातलत्ताजामित्रकर्त्तर्युदयास्तदोषाः ।
नश्यन्ति चन्द्रार्कबलोपपन्ने लग्ने यथार्काभ्युदये तु दोषाः ।।६८।।

अन्वयः-चन्द्रार्कबलोपपन्ने लग्ने सति एकार्गलोपग्रहपातलत्ताजामित्र-कर्त्तर्युदयास्तदोषाः नश्यन्ति। यथा अर्काभ्युदये दोषा रात्रिः नश्यति।।६८।।

भाषा-लग्न यदि सूर्य और चन्द्रमा के बल से युत हो तो एकार्गल, उपग्रह, लत्ता, कर्त्तरी तथा उदयास्त दोष का नाश हो जाता है। जिस तरह सूर्योदय होने पर रात्रि (अन्धकार) का नाश हो जाता है।।६८।।

देशभेद से दोष-परिहार-

उपग्रहर्क्षं कुरुबाह्लिकेषु कलिङ्गबङ्गेषु च पातितं भम् ।
सौराष्ट्रशाल्वेषु च लत्तित भं त्यजेत् तु विद्धं किल सर्वदेशे ।।६९।।

अन्वयः-कुरुबाह्लिकेषु देशेषु उपग्रहर्क्षं (पुनः) कलिङ्गबङ्गेषु लत्तितं भं त्यजेत् । विद्धं भं तु सर्वदिशे किल निश्चयेन त्यजेत् ।।६९।।

भाषा-काश्मीर के पश्चिम हिमपर्वत निकटस्थ कुरुक्षेत्र और वाह्लीक देश में, उपग्रह दोष उड़ीसा के दक्षिण और मद्रास के उत्तर तीरवर्त्ती कलिंग प्रदेश में तथा बंगदेश में पात दोष, अहमदाबाद से सोमनाथ तक सूरत नाम से प्रसिद्ध सौराष्ट्र और शाल्व देश में लत्ता दोष को त्याग दे। क्रूर ग्रह से अथवा शुभ ग्रह से विद्ध पञ्चशलाकादि चक्र द्वारा भिन्न नक्षत्र सब देशों में त्याज्य है।।६९।।

दशयोग-

शशाङ्कसूर्यर्क्षयुतैर्भशेषे खं भूयुगाङ्गानि दशेशतिथ्यः ।
नागेन्दवोऽकेन्दुमिता नखाश्चेद् भवन्ति चैते दशयोगसंज्ञाः।।७०।।

अन्वयः-शशांकसूर्यर्क्षयुतैः भशेषे खं भूयुगाङ्गानि दशेशतिथ्यः नागेन्दवः अर्केन्दुमिता नखाः चेत् भवन्ति तदा एते (क्रमशः) दशयोगसंज्ञाः भवन्ति।।७०।।

भाषा-जिस नक्षत्र में सूर्य और जिस नक्षत्र में चन्द्रमा हो उसको

अश्विनी से गिनकर इकट्ठा कर ले, उसमें २७ का भाग दे। यदि ०।१।४।६।१०।११।१५।१८।१९।२० इन संख्या में कोई अंक शेष रहे तो क्रम से दशयोग होता है।।७०।।

दशयोगों के नाम–

वाताभ्राग्निमहीपचौरमरणं रुग्वज्रवादाः क्षति-
र्योगाङ्के दलिते समे मनुयुतेऽथौजे तु सैकेऽर्धिते।
भं दास्रादथ सम्मितास्तु मनुभी रेखाः क्रमात् संलिखे-
द्वेधोऽस्मिन् ग्रहचन्द्रयोर्न शुभदः स्यादेकरेखास्थयोः ।।७१।।

अन्वयः–वाताभ्राग्निमहीपचौरमरणं रुग्वज्रवादाः क्षतिः (एतानि दशयोगनामानि भवन्ति) अथ समे योगाङ्के दलिते मनुयुते ओजे योगाङ्के सैके अर्धिते सति दास्रात् भं (ज्ञेयम्)। अथ मनुभिः सम्मिता रेखा क्रमात् संलिखेत् । अस्मिन् एकरेखास्थयोः ग्रहचन्द्रयोः वेधः न शुभदः स्यात् ।।७१।।

भाषा–शून्य शेष में वात-भय, १ शेष में मेघभय, ४ में अग्निभय, ६ में राजभय, १० में चोरभय, ११ में मृत्युभय १५ में रोगभय, १८ में वज्रभय, १९ में वादभय और २० शेष में क्षति [illegible]क धननाशक योग होता है। ऊपर कहे हुए सूर्य नक्षत्र और चन्द्र नक्षत्र का योग सम संख्या हो तो उसका आधा करके १४ जोड़े, यदि विषम संख्या हो तो १ जोड़कर आधा करे, वह अश्विनी आदि गिनकर नक्षत्र समझे। फिर तिरछी १४ रेखा खींचकर क्रम से उनमें उसी नक्षत्र से आरम्भ करके अभिजित् सहित २८ नक्षत्रों का न्यास करे। यदि कोई ग्रह और चन्द्रमा एक रेखा में पड़े तो यह वेध शुभप्रद नहीं होता है।।७१।।

दाक्षिणात्य पञ्चबाणदोष–

लग्नेनाढ्या याततिथ्योऽङ्कतष्टाः
शेषे नागद्व्यब्धितर्केन्दुसंख्ये ।
रोगो वह्नी राजचौरो च मृत्यु-
र्बाणश्चायं दाक्षिणात्यप्रसिद्धः ।।७२।।

अन्वयः–याततिथ्यः लग्नेन आढ्याः अङ्कतष्टाः नागद्व्यब्धितर्केन्दुसंख्ये शेषे (सति) क्रमेण रोगः, वह्निःराजचौरो तथा मृत्युः बाणः स्यात् । अयं दाक्षिणात्यप्रसिद्धः अस्ति।।७२।।

भाषा–शुक्लपक्ष की प्रतिपद् से गत तिथियों की लग्न संख्या को राशि की संख्या में जोड़ें, उसमें ९ का भाग दे। ८ शेष बचे तो रोगबाण, २ शेष बचे तो अग्निबाण, ४ बचे तो राजबाण, ६ बचे तो चोरबाण और १ शेष बचे तो मृत्यु नामक बाण होता है। यह बाणदोष दाक्षिणात्य प्रदेश में प्रसिद्ध है।।७२।।

रसगुणशशिनागाब्ध्याढ्यसंक्रान्तियातां-
शकमितिरथ तष्टाङ्कैर्यदा पञ्च शेषाः ।
रुगनलनृपचौरा मृत्युसंज्ञश्च बाणो
नवहतशरशेषे शेषकैक्ये सशल्यः ।।७३।।

अन्वयः-रसगुणशशिनागाब्ध्याढ्यसंक्रान्तियातांशकमितिः अङ्कैः तष्टा यदा पञ्च शेषा तदा क्रमेण रुगनलनृपचौराः मृत्युसंज्ञश्च बाणः स्यात् । शेषकैक्ये नवहतशरशेषे सति स बाणः सशल्यः स्यात् ।।७३।।

भाषा-सूर्य संक्रान्ति के गतांशों को पाँच स्थानों में रखकर ६।३।१।८।४ जोड़ दें और उनमें पृथक्-पृथक् ९ का भाग दे। जहाँ ५ बचे वहाँ क्रम से रोग, अग्नि, राजा, चोर और मृत्यु नामक बाण होता है। शेषों को इकट्ठा कर ९ का भाग देने पर ५ शेष बचे तो वह बाण सशल्य कहा जाता है। ये बाण दाक्षिणात्येतर प्रदेशों में त्याज्य हैं।।७३।।

रात्रौ चौररुजौ दिवा नरपतिर्वह्निः सदा संध्ययो-
र्मृत्युश्चाथ शनौ नृपौ विदि मृतिर्भौमेऽग्निचौरौ रवौ ।
रोगोऽथ व्रतगेहगोपनृपसेवायानपाणिग्रहे
वर्ज्याश्च क्रमतो बुधै रुगनलक्ष्मापालचौरा मृतिः ।।७४।।

अन्वयः-रात्रौ चौररुजो (वर्ज्यौ), दिवा नरपतिः (वर्ज्याः), वह्निः सदा (वर्ज्यः), सन्ध्ययोः मृत्युः (वर्ज्यः) स्यात् । अथ शनौ नृपः (वर्ज्यः), विदि, मृतिः (वर्ज्यः), भौमे अग्निचौरौ (वर्ज्यौ), रवौ रोगः वर्ज्यः, अथ व्रतगेहगोपनृपसेवायानपाणिग्रहे क्रमशः रुगनलक्ष्मापालचौरा मृतिश्च बुधे वर्ज्याः।।७४।।

भाषा-रात्रि में चोर तथा रोगबाण, दिन में राजबाण, सर्वदा अग्निबाण, दोनों संध्या में मृत्युबाण त्याज्य है। शनिवार में राजबाण, बुधवार में मृत्युबाण, मङ्गलवार में अग्नि और चोरबाण, रविवार में रोगबाण त्याग देना चाहिए। उपनयन, घर छवाने में, राजा की नौकरी करने में, यात्रा में, विवाह में, क्रम से रोग, वह्नि, अग्नि, राजा, चोर और मृत्युबाण छोड़ देना चाहिये।।७४।।

ग्रहों की दृष्टि-

त्र्यांशं त्रिकोणं चतुरस्रमस्तं
पश्यन्ति खेटाश्चरणाभिवृद्ध्या।
मन्दो गुरुर्भूमिसुतः परे च
क्रमेण सम्पूर्णदृशो भवन्ति ।।७५।।

अन्वयः-त्र्याशं, त्रिकोणं चतुरस्रं अस्तं खेटाः चरणाभिवृद्ध्या पश्यन्ति। मन्दो (शनिः), गुरुः, भूमिसुतः, परे (रविचन्द्रबुधशुक्राः)च क्रमेण सम्पूर्णदृशो भवन्ति।।७५।।

भाषा–सभी ग्रह अपने स्थान से ३।१० को, ९।५ को, ४।८ को और ७ को एक चरण वृद्धि से देखते हैं। जैसे ३।१० को एक चरण से, ५।९को दो चरणों से, ४।८ को ३ चरण से और ७ को चारों चरणों से देखते हैं। उनमें ३।१० को शनि सम्पूर्ण दृष्टि से देखते हैं, इसी तरह गुरु ९।५ को, मङ्गल ४।८ को तथा बाकी ग्रह ७ को सम्पूर्ण दृष्टि से देखते हैं।।७५।।

उदयास्तशुद्धि–

यदा लग्नांशेशो लवमथ तनुं पश्यति युतो
भवेद्वायं वोढुः शुभफलमनल्पं रचयति।
लवद्यूनस्वामी लवमदनभं लग्नमदनं
प्रपश्येद्वा वध्वाः शुभमितरथा ज्ञेयमशुभम्।।७६।।

अन्वयः–यदा लग्नांशेशः लवं अथवा तनुं पश्यति वा युतः भवेत् तदा अयं वोढुः अनल्पं शुभफलं रचयति। यदि लवद्यूनस्वामी लवमदनभं लग्नमदनं वा प्रपश्येत्तदा वध्वाः शुभं रचयति। इतरथा अशुभं ज्ञेयम्।।७६।।

भाषा–यदि लग्ननवमांशपति लग्न के नवमांश को या लग्न को देखता हो या उसमें बैठा हो तो वर को अधिक शुभ फल देता है तथा लग्न नवमांश से सप्तम राशि का स्वामी नवमांश से सप्तम या लग्न से सप्तम भाव को देखता हो तो कन्या का शुभकारक होता है। अन्यथा अशुभ फल समझना।।७६।।

लवेशो लवं लग्नपो लग्नगेहं
प्रपश्येन्मिथो वा शुभं स्याद् वरस्य।
लवद्यूनपोऽशद्युनं लग्नपोऽस्तं
मिथोऽवेक्षते स्याच्छुभं कन्यकायाः।।७७।।

अन्वयः–लवेशः लवं, लग्नपः लग्नगेहं वा मिथः यदि प्रपश्येत्तदा वरस्य शुभं भवति। लवद्यूनपः अंशद्युनं, पुनः लग्नपः अस्तं, वा मिथः अवेक्षते तदा कन्यकायाः शुभं स्यात्।।७७।।

भाषा–यदि नवमांश पति नवमांश राशि को और लग्नेश लग्न को अथवा नवमांशपति लग्न को और लग्नपति नवमांश को इस प्रकार परस्पर देखते हों तो वर को शुभ फल देते हैं तथा नवमांश से सप्तम का पति नवमांश से सप्तम को और लग्नपति लग्न से सप्तम को अथवा परस्पर (नवमांश से सप्तमेश लग्न से सप्तम को तथा लग्नपति नवमांश से सप्तम को) देखें तो कन्या को शुभफल देते हैं।।७७।।

लवपतिशुभमित्रं वीक्षतेंऽशं तनुं वा
परिणयनकरस्य स्याच्छुभं शास्त्रदृष्टम्।

मदनलवपमित्रं सौम्यमंशद्युनं वा
तनुमदनगृहं चेद् वीक्षते शर्म बध्वाः ।।७८।।

अन्वयः–लवपतिशुभमित्रं अंशं तनुं वा यदि वीक्षते तदा परिणयनकरस्य शास्त्रदृष्टं शुभं स्यात् । सौम्यं मदनलवपमित्रं चेत् अंशद्युनं वा तनुमदनगृहं वीक्षते तदा बध्वाः शर्म (कल्याणं) स्यात् ।।७८।।

भाषा–लग्नगत नवमांश का शुभग्रह मित्र यदि नवमांश या लग्न को देखता हो तो वर का शुभ, तथा सप्तम भाव के नवमांशपति शुभग्रह होकर नवमांश से सप्तम को अथवा लग्न से सप्तम को देखे तो कन्या का शुभ फल समझना ।।७८।।

संक्रान्ति के दोष–

विषुवायनेषु परपूर्वमध्यमान्
दिवसांस्त्यजेदितरसंक्रमेषु हि ।
घटिकास्तु षोडश शुभक्रिया विधौ
परतोऽपि पूर्वमपि सन्त्यजेद् बुधः ।।७९।।

अन्वयः–विषुवायनेषु (संक्रमेषु) परपूर्वमध्यमान् दिवसान् त्यजेत् । इतरसंक्रमेषु हि (निश्चयेन) परतः पूर्वं अपि षोडश घटिका शुभक्रियाविधौ बुधः त्यजेत् ।।७९।।

भाषा–मेष तुला और कर्क मकर को संक्रान्ति में आगे और पीछे तथा मध्य के एक-एक दिन इस तरह ३ दिन शुभ कार्य के लिये त्याज्य हैं और अन्य संक्रान्ति में आगे-पीछे का केवल १६ घड़ी मात्र त्याज्य है।।७९।।

वेदद्व्यङ्कर्त्तवोष्टाष्टौ नाड्योऽङ्काः खनृपाः क्रमात् ।
वर्ज्याः संक्रमणेऽर्कादेः प्रायोऽर्कस्यातिनिन्दिताः ।।८०।।

अन्वयः–अर्कादेः संक्रमणे क्रमात् वेदद्व्यङ्कर्तवः अष्टाष्टौ अङ्काः खनृपाः नाड्यः वर्ज्याः। अर्कस्य प्रायः अतिनिन्दिताः (भवन्ति)।।८०।।

भाषा–सूर्य के संक्रमण काल के पहले की १६।। घड़ी और संक्रमण काल के बाद की १६।। घड़ी इस तरह कुल ३३ घड़ी सूर्य की, इसी प्रकार संक्रमण काल के पूर्व की एक घड़ी और संक्रमण काल के बाद की एक-एक घड़ी इस तरह दो घड़ी चन्द्र की, आदि और अन्त की ४।।-४।। घड़ी मिलाकर मंगल की ९ घड़ी, आदि और अन्त की तीन-तीन घड़ी मिलाकर बुध की ६ घड़ी इसी तरह ४४-४४ आदि और अन्त की मिलाकर गुरु की ८८ घड़ी, आदि और अन्त की ४।।-४।। घड़ी मिलाकर शुक्र की ९ घड़ी और ८०-८० आदि अन्त की घड़ी मिलाकर १६० घड़ी शनि की निन्दित है। परन्तु विशेष कर सूर्य संक्रान्ति की ही घड़ियाँ अति निन्दित हैं।।८०।।

लग्नों की पंग्वादि संज्ञा-

घस्त्रे तुलाली बधिरौ मृगाश्वौ रात्रौ च सिंहाजवृषा दिवान्धाः ।
कन्यानृयुक्कर्कटका निशान्धा दिने घटोऽन्त्यो निशि पङ्गुसंज्ञः ॥८१॥

अन्वयः-घस्त्रे तुलाली बधिरौ स्याताम् , रात्रौ मृगाश्वौ बधिरौ स्याताम् । च (पुनः) सिंहाजवृषाः दिवान्धाः कन्यानृयुक्कर्कटकाः निशान्धाः सन्ति। दिने घटः (कुम्भः), निशि अन्त्यः मीनः पङ्गुसंज्ञः स्यात् ।।८१।।

भाषा-तुला और वृश्चिक लग्न दिन में बहरे होते हैं। मकर और धनु रात्रि में बहरे होते हैं। मेष, वृष और सिंह लग्न दिन में अन्धे और कन्या मिथुन कर्क रात्रि में अन्धे होते हैं। रात्रि में मीन और दिन में कुम्भ पंगु होते हैं।।८१।।

लग्नों के बधिरादि समय-

बधिरा धन्वितुलालयोऽपराह्णे
मिथुनं कर्कटकोऽङ्गना निशान्धाः ।
दिवसान्धा हरिगोक्रियास्तु कुब्जा
मृगकुम्भान्तिमभानि सन्ध्ययोर्हि ।।८२।।

अन्वयः-धन्वितुलालयः अपराह्णे बधिराः (भवन्ति)। मिथुनं कर्कटकः अङ्गना (एते) निशान्धाः। हरिगोक्रिया दिवसान्धाः (सन्ति) । तु (पुनः) मृगकुम्भान्तिमभानि सन्ध्ययोः हि (निश्चयेन) कुब्जा भवन्ति।।८२।।

भाषा-धनु तुला वृश्चिक दोपहर के बाद बधिर होते हैं। मिथुन कर्क कन्या रात्रि में अन्धे होते हैं। दिनमें सिंह वृष मेष अन्धे होते हैं। मकर कुम्भ मीन दोनों संध्याओं में पंगु होते हैं।।८२।।

पंगु आदि लग्नों के फल-

दारिद्र्यं बधिरतनौ दिवान्धलग्ने
वैधव्यं शिशुमरणं निशान्धलग्ने ।
पंग्वङ्गे निखिलधनानि नाशमीयुः
सर्वत्राधिपगुरुदृष्टिभिर्न दोषः ।।८३।।

अन्वयः-**बधिरतनौ (विवाहे जाते सति) दारिद्र्यं स्यात् । दिवान्धलग्ने वैधव्यम् । निशान्धलग्ने शिशुमरणं पंग्वङ्गे निखिलधनानि नाशं ईयुः, सर्वत्र अधिपगुरुदृष्टिभिः न दोषः स्यात् ।।८३।।**

भाषा-विवाह समय में बधिर लग्न हो तो दारिद्र्य, दिवान्ध लग्न हो तो वैधव्य, निशान्ध लग्न हो तो सन्तान मरण, पंगु लग्न हो तो सम्पूर्ण धन का नाश होता है। परन्तु ये लग्न अपने-अपने स्वामी और गुरु से दृष्ट हों तो उक्त दोष नहीं होता है।।८३।।

विवाह में विहित नवांश-

कार्मुकतौलिककन्यायुग्मलवे झषगे वा ।
यर्हि भवेदुपयामस्तर्हि सती खलु कन्या ।।८४।।

अन्वयः-कार्मुकतौलिककन्यायुग्मलवे वा झषगे सति यर्हि यदा, उपयामः (विवाहः) भवेत्तर्हि सा (कन्या) खलु (निश्चयेन) सती स्यात् ।।८४।।

भाषा-यदि धनु, तुला, मिथुन, कन्या, मीन इन राशियों के किसी भी राशि के नवांश में विवाह हो तो कन्या सती (पतिव्रता) होती है।।८४।।

नवांश में विशेष विचार-

अन्त्यनवांशे न च परिणेया काचन वर्गोत्तममिह हित्वा ।
नो चरलग्ने चरलवयोगं तौलिमृगस्थे शशभृति कुर्यात् ।।८५।।

अन्वयः-इह वर्गोत्तमं हित्वा अन्त्यनवांशे काचन कन्या न परिणेया। तौलिमृगस्थे शशभृति चरलग्ने चरलवयोगं नो कुर्यात् ।।८५।।

भाषा-लग्न के अन्तिम नवांश में किसी का विवाह न करे, किन्तु वह नवांश यदि वर्गोत्तम हो तो श्रेष्ठ है। तुला मकर में चन्द्रमा के रहने पर चर लग्न में चर नवांश का योग नहीं करना चाहिये।।८५।।

व्यये शनिः खेऽवनिजस्तृतीये भृगुस्तनौ चन्द्रखला न शस्ताः ।
लग्नेट् कविग्लौश्च रिपौ मृतौ ग्लौर्लग्नेट् शुभाराश्च मदे च सर्वे ।।८६।।

अन्वयः-शनिः व्यये, अवनिजः खे, भृगुः तृतीये, चन्द्रखलाः तनौ न शस्ताः। लग्नेट् कविः, ग्लौः, रिपौ, च (पुनः) ग्लौः लग्नेट् शुभाराः मृतौ, च (पुनः) सर्वे ग्रहाः मदे न शस्ताः भवन्ति।।८६।।

भाषा-विवाह लग्न से बारहवें में शनि, दसवें में मंगल, तीसरे में शुक्र और लग्न में चन्द्रमा तथा पाप ग्रह हो तो विवाह शुभ नहीं है। लग्नेश, शुक्र और चन्द्रमा छठे भाव में अशुभ हैं। चन्द्रमा लग्नेश शुभ ग्रह और मङ्गल आठवें स्थान में अशुभ हैं। परन्तु सप्तम में सभी ग्रह त्याज्य हैं।।८६।।

त्र्यायाष्टषट्सु रविकेतुतमोऽर्कपुत्रा-
स्त्र्यायारिगः क्षितिसुतो द्विगुणायगोऽब्जः ।
सप्तव्ययाष्टरहितौ ज्ञगुरू सितोऽष्ट-
त्रिद्यूनषड्व्ययगृहाद् परिहृत्य शस्तः ।।८७।।

अन्वयः-त्र्यायाष्टषट्सु रविकेतुतमोऽर्कपुत्राः शस्ताः (भवन्ति)। क्षितिसुतः त्र्यायारिगः, अब्जः द्विगुणायगः शुभः, ज्ञगुरू सप्तव्ययाष्टरहितौ शुभौ स्याताम् । अष्टत्रिद्यूनषड्व्ययगृहान् परिहृत्य सितः शस्तः स्यात् ।।८७।।

भाषा-३।११।८।६ इन स्थानों में सूर्य केतु राहु और शनि, ३।११।६

इन स्थानों में मङ्गल, २।३।११ इन स्थानों में चन्द्रमा शुभ है। ७।१२।८ इनसे भिन्न स्थानों में गुरु बुध शुभ होते हैं। ८।३।७।६।१२ इन स्थानों से भिन्न स्थानों में शुक्र शुभ होता है।।८७।।

कर्तरी आदि दोषों का अपवाद–

पापौ कर्तरिकारकौ रिपुगृहे नीचास्तगो कर्त्तरी-
दोषो नैव सितेऽरिनीचगृहगे तत् षष्ठदोषोऽपि न ।
भौमेऽस्ते रिपुनीचगे न हि भवेद् भौमोऽष्टमो दोषकृत्
नीचे नीचनवांशके शशिनि रिःफाष्टारिदोषोऽपि न ।।८८।।

अन्वयः–कर्तरिकारकौ पापौ (यदि) रिपुगृहे वा नीचास्तगौ तदा कर्तरीदोषो नैव भवति। अरिनीचगृहगे सिते तत्षष्ठदोषः अपि न भवेत् । भौमे अस्ते रिपुनीचगे अष्टमो भौमः दोषकृत् न हि भवेत् , शशिनि नीचे नीचनवांशके वा सति तस्य रिःफाष्टारिदोषः अपि न भवेत् ।।८८।।

भाषा–यदि पापग्रह कर्तरी योग कारक होकर नीच में वा शत्रु के घर में अथवा वह अस्त हो तो कर्तरी जन्य दोष नहीं होता है। शत्रु के घर का वा नीच का शुक्र हो तो वह षष्ठ स्थान स्थित दोष नहीं देता है अर्थात् शुभ हो जाता है। मङ्गल अस्त हो या शत्रु अथवा नीच घर का हो तो भौमाष्टक दोष नहीं होता है। नीच का या नीच के नवांश का चन्द्रमा हो तो १२।८।६ स्थान स्थित होने का दोष नहीं होता है।।८८।।

वर्षादि दोष का परिहार–

अब्दायनर्त्तुतिथिमासभपक्षदग्ध-
तिथ्यन्धकाणबधिराङ्गमुखाश्च दोषाः ।
नश्यन्ति विद्गुरुसितेष्विह केन्द्रकोणे
तद्वच्च पापविधुयुक्तनवांशदोषः ।।८९।।

अन्वयः–विद्गुरुसितेषु केन्द्रकोणे (स्थितेषु) अब्दायनर्त्तुतिथिमासभपक्षदग्ध-तिथ्यन्धकाणबधिराङ्गमुखाश्च दोषाः नश्यन्ति। तद्वच्च पापविधुयुक्तनवांशदोषः नश्यति।।८९।।

भाषा–बुध, गुरु, शुक्र ये केन्द्र त्रिकोण में हों तो वर्ष दोष, अयन दोष, ऋतुदोष, तिथि दोष, मास दोष, पक्ष दोष, दग्धतिथि,अन्ध, काण, बधिर लग्नादि दोषों का नाश होता है। जिस राशि में चन्द्रमा हो उस राशि में पापग्रह हो तो नवमांशजन्य दोष भी शान्त हो जाता है।।८९।।

अन्य परिहार–

केन्द्रे कोणे जीव आये रवौ वा लग्ने चन्द्रे वापि वर्गोत्तमे वा ।
सर्वे दोषा नाशमायान्ति चन्द्रे लाभे तद्वद्दुर्मुहूर्त्तांशदोषाः ।।९०।।

अन्वयः–जीवः केन्द्रे कोणे वा, रवौ आये वा, लग्ने वर्गोत्तमे अपि वा चन्द्रे वर्गोत्तमे (स्थिते सति) सर्वे दोषा नाशं आयान्ति। तद्वत् चन्द्रे लाभे सति दुर्मुहूर्त्तांशदोषाः नाशं आयान्ति।।९०।।

भाषा–गुरु केन्द्र त्रिकोण में, सूर्य ग्यारहवें में, लग्न वर्गोत्तम में वा चन्द्रमा वर्गोत्तम में हो तो सब दोष नाश हो जाते हैं। और चन्द्रमा ११वें हों तो दुष्ट मुहूर्त जन्य दोष नाश हो जाता है।।९०।।

सर्व सामान्य दोषों का अपवाद–

त्रिकोणे केन्द्रे वा मदनरहिते दोषशतकं
हरेत्सौम्याः शुक्रो द्विगुणमपि लक्षं सुरगुरुः ।
भवेदाये केन्द्रेऽङ्गप उत लवेशो यदि तदा
समूहं दोषाणां दहन इव तूलं शमयति ।।९१।।

अन्वयः–सौम्यः बुधः त्रिकोणे वा मदनरहिते केन्द्रे स्थितः दोषशतकं हरेत् (नाशयेत्)। शुक्रः द्विगुणं दोषं हरेत् । सुरगुरुः लक्षं दोषं हरेत् । अङ्गपः उत लवेशः यदि आये वा केन्द्रे स्यात्तदा दोषाणां समूहं दहनः (अग्निः) तूलमिव शमयति (नाशयति)।।९१।।

भाषा–९।५ इन स्थानों में तथा ७ से भिन्न केन्द्र १।५।१० में यदि बुध हो तो एक सौ दोष का नाश करता है, शुक्र उससे दूना दोष नाश करता है। गुरु लक्ष (एकलाख) दोष का नाश करता है। लग्नेश वा नवांशेश यदि आय ११ अथवा केन्द्र में हो तो दोष के समूह को नष्ट कर देता है। जिस तरह आग का एक कण सम्पूर्ण रूई के ढेर को नाश कर देता है।।९१।।

विंशोपक–

द्वौ द्वौ ज्ञभृग्वोः पञ्चेन्दौ रवौ सार्धत्रयो गुरौ ।
रामा मन्दागकेत्वारे सार्धैकैकं विंशोपकाः ।।९२।।

अन्वयः–ज्ञभृग्वोः द्वौ, द्वौ, इन्दौ पञ्च, रवौ सार्धत्रयः, गुरौ रामाः मन्दागुकेत्वारे सार्धैकैकं विंशोपकाः भवन्ति।।९२।।

भाषा–बुध के २, शुक्र के २, चन्द्र के ५, सूर्य के ३।३०, गुरु के ३, शनि राहु केतु और मङ्गल का डेढ़-डेढ़ विंशोपक बल होता है।।९२।।

ग्रहों की श्वसुरादि संज्ञा–

श्वश्रूः सितोऽर्कः श्वसुरस्तनुस्तनु-
र्जामित्रपः स्याद् दयितो मनः शशी ।
एतद्बलं सम्प्रतिभाव्य तान्त्रिक-
स्तेषां सुखं संप्रवदेद्विवाहतः ।।९३।।

अन्वयः–सितः श्वश्रूः, अर्कः श्वसुरः, तनुः (लग्नं), तनुः (शरीरं), जामित्रपः दयितः, शशी मनः स्यात् । तान्त्रिकः एतद् बलं सम्प्रतिभाव्य विवाहतः तेषां सुखं सम्प्रवदेत् ।।९३।।

भाषा–शुक्र सास, सूर्य श्वसुर, लग्न शरीर, जामित्र के स्वामी (सप्तमेश) पति तथा चन्द्रमा मन इनके बलों को देखकर विवाह में ज्यौतिषियों को उनके शुभाशुभ विचार करना चाहिये।।९३।।

अन्त्यजों के विवाह का मुहूर्त–

कृष्णे पक्षे सौरिकुजार्केऽपि च वारे
वर्ज्ये नक्षत्रे यदि वा स्यात्करपीडा ।
संकीर्णानां तर्हि सुतायुर्धनलाभ-
प्रीतिप्राप्त्यै सा भवतीह स्थितिरेषा ।।९४।।

अन्वयः–कृष्णे पक्षे अपि च कुजार्के वारे वर्ज्ये नक्षत्रे यदि चेत् संकीर्णानां करपीडा (विवाहः) स्यात्तदा सा (करपीडा) इह सुतायुर्धनलाभप्रीतिप्राप्त्यै भवति, एषा स्थितिर्ज्ञेया।।९४।।

भाषा–कृष्णपक्ष में शनि मंगल रविवार तथा विवाह में वर्जित नक्षत्रों में संकीर्ण जातियों का विवाह हो तो बालक, आयु, धनलाभ और प्रीतिदायक होता है।।९४।।

गान्धर्वादि विवाहार्थ नक्षत्रशुद्धि–

गान्धर्वादिविवाहेऽर्काद् वेद (४) नेत्र (२) गुणे (३)न्दवः ।
कु(१)युगां(४)गा(६)ग्नि(३)भू(१)रामा(३)स्त्रिपद्यामशुभः शुभाः।।९५।।

अन्वयः–गान्धर्वादिविवाहे त्रिपद्यां अर्कात् (अर्कनक्षत्रात्) वेद-नेत्रगुणेन्दवः कु-युगाङ्गाग्नि-भू-रामाः क्रमशः अशुभाः शुभाश्च कथिताः।।९५।।

भाषा–गान्धर्वादि विवाह में त्रिपदी के विचार में सूर्य नक्षत्र से ४ अशुभ, दो शुभ, ३ अशुभ, बाद १ शुभ, १ अशुभ, बाद ४ शुभ, ६ अशुभ, ३ शुभ, १ अशुभ, बाद ३ शुभ होता है।।९५।।

विवाह में मण्डपादि कर्तव्य का मुहूर्त–

विधोर्बलमवेक्ष्य वा दलनकण्डनं वारकं
गृहाङ्गणविभूषणान्यथ च वेदिकामण्डपान् ।
विवाहविहितोडुभिर्विरचयेत् तथोद्वाहतो
न पूर्वमिदमाचरेत् त्रिनवषण्मिते वासरे ।।९६।।

अन्वयः–विधोः बलं अवेक्ष्य विवाहविहितोडुभिः दलनकण्डनं वारकं गृहाङ्गणविभूषणानि (कर्तव्यानि)। अथ वेदिकामण्डपान् च विरचयेत् । उद्वाहतः पूर्वं त्रिनवषण्मिते वासरे इदं पूर्वोक्तं कर्म न आचरेत्।।९६।।

भाषा–विवाह विहित नक्षत्रों में अथवा वर के और कन्या के चन्द्रबल को देखकर, दाल दलना, चावल कूटना, मङ्गल कलश, घर आदि को लीपना-पोतना, वेदी और मण्डप बनाना चाहिये। किन्तु विवाह दिन से ३,६,९ दिन पूर्व इन कार्यों को नहीं करे।।९६।।

वेदी प्रमाण–

हस्तोच्छ्राया वेदहस्तैः समन्तात्
तुल्या वेदी सदमनो वामभागे।
युग्मे घस्रे षष्ठहीने न पञ्च-
सप्ताहे स्यान्मण्डपोद्वासनं सत् ।।९७।।

अन्वयः–सद्मनः वामभागे हस्तोच्छ्राया समन्तात् वेदहस्तैः तुल्या वेदी (कर्तव्या) च (पुनः) षष्ठहीने युग्मे घस्रे पञ्चसप्ताहे मण्डपोद्वासनं सत् स्यात् ।।९७।।

भाषा–घर के बायें भाग में एक हाथ ऊँची तथा चारों तरफ चार-चार हाथ वेदी बनाना शुभ है तथा सम दिनों में छठा दिन छोड़कर और पाँचवें वा सातवें दिन में मण्डप का उत्थापन शुभ है।।९७।।

विवाहादि में तेल आदि लगाने की दिनसंख्या–

मेषादिराशिजवधूवरयोर्बटोश्च
तैलादिलापनविधौ कथितात्र संख्या।
शैला दिशः शरदिगक्षनगाद्रिबाण-
बाणाक्षबाणगिरयो विबुधैस्तु कैश्चित् ।।९८।।

अन्वयः–अत्र मेषादिराशिजवधूवरयोः बटोः च तैलादिलापनविधौ कैश्चित् विबुधैः (क्रमशः) शैला दिशः शरदिगक्षनगाद्रिबाणबाणाक्षबाणगिरयः इति संख्या कथिता।।९८।।

भाषा–मेषादि राशियों में उत्पन्न कन्या वर एवं बालक जिसका संस्कार होने वाला हो उसको तेल आदि लगाने में विद्वानों ने क्रमशः ७।१०।५।१०।-५।७।७।५।५।५।५।७ दिनों की संख्या कही है।।९८।।

मंडप में स्तम्भस्थापन निर्णय–

सूर्य्येऽङ्गनासिंहघटेषु शैवे स्तम्भोऽलिकोदण्डमृगेषु वायौ।
मीनाजकुम्भे निर्ऋतौ विवाहे स्थाप्योऽग्निकोणे वृषयुग्मकर्के।।९९।।

अन्वयः–अङ्गनासिंहघटेषु (स्थिते) सूर्ये शैवे (ईशानकोणे), अलिकोदण्डमृगेषु वायौ, मीनाजकुम्भे निर्ऋतौ, वृषयुग्मकर्के अग्निकोणे विवाहे (प्रथमः) स्तम्भः स्थाप्यः।।९९।।

भाषा–कन्या, सिंह, तुला इन राशियों के सूर्य में ईशान कोण में, वृश्चिक, धनु, मकर इन राशियों के सूर्य में वायव्य कोण में, कुम्भ, मीन, मेष इन राशियों

के सूर्य में नैर्ऋत्य कोण में, वृष, मिथुन, कर्क इन राशियों के सूर्य में अग्नि कोण में स्तम्भ गाड़ना चाहिये।।९९।।

गोधूलिलग्न की प्रशंसा–

नास्यामृक्षं न तिथिकरणं नैव लग्नस्य चिन्ता
ना वा वारो न च लवविधिर्नो मुहूर्त्तस्य चर्चा।
नो वा योगो न मृतिभवनं नैव जामित्रदोषो
गोधूलिः सा मुनिभिरुदिता सर्वकार्य्येषु शस्ता ।।१००।।

अन्वयः–अस्यां (गोधूल्यां) ऋक्षं (नक्षत्रं) न, तिथिकरणं न, लग्नस्य चिन्ता नैव, वारः न च (पुनः) लवविधिः न, मुहूर्तस्य चर्चा नो, न वा योगः, मृतिभवनं नैव, जामित्रदोषोऽपि न (स्यात्) सा (गोधूलिः) सर्वकार्येषु मुनिभिः शस्ता शुभा उदिता (प्रोक्ता)।।१००।।

भाषा–नक्षत्र, तिथि,करण, लग्न, दिन, नवांश, मुहूर्त, योग, अष्टम स्थान, जामित्र दोष इनं सबों का विचार गोधूलि लग्न में नहीं करना चाहिये। गोधूलि सभी कार्य में प्रशस्त है ऐसा मुनियों ने कहा है।।१००।।

गोधूलि का भेद–

पिण्डीभूते दिनकृति हेमन्तर्तौ
स्यादर्द्धास्ते तपसमये गोधूलिः।
सम्पूर्णास्ते जलधरमालाकाले
त्रेधा योज्या सकलशुभे कार्यादौ ।।१०१।।

अन्वयः–हेमन्तर्तौ दिनकृति (सूर्ये) पिण्डीभूते सति, तपसमये अर्धास्ते सति, जलधरमालाकाले सम्पूर्णास्ते सूर्ये सति गोधूलिः स्यात्। एवं त्रेधा (त्रिप्रकारा गोधूलिः) सकलशुभे कार्यादौ योज्या।।१०१।।

भाषा–हेमन्त ऋतु में संध्या समय सूर्य जब गोलाकार हो जाते हैं, गर्मी में जब आधे अस्त हो जाते हैं तथा वर्षा ऋतु में सम्पूर्ण अस्त होने पर गोधूलि होती है। ये तीनों प्रकार के गोधूलि समय सब शुभ कार्य में देखें।।१०१।।

गोधूलि में वर्जनीय–

अस्तं याते गुरुदिवसे सौरे सार्के
लग्नान्मृत्यौ रिपुभवने लग्ने चेन्दौ।
कन्यानाशस्तनुमदमृत्युस्थे भौमे
वोढुर्लाभे धनसहजे चन्द्रे सौख्यम् ।।१०२।।

अन्वयः–गुरुदिवसे अस्तं याते (सूर्ये), सौरे (शनिवासरे) सार्के गोधूलिः शुभा भवति। लग्नात् मृत्यौ रिपुभवने च (पुनः) लग्ने इन्दौ कन्यानाशः स्यात्। तथा तनुमदमृत्युस्थे भौमे वोढुः स्यात्, लाभे धनसहजे चन्द्रे सति सौख्यं स्यात् ।।१०२।।

भाषा–गुरुवार में सूर्यास्त होने पर और शनिवार में सूर्य रहते गोधूलि शुभ है। लग्न से अष्टम षष्ठ वा लग्न में ही चन्द्रमा हो तो कन्या का नाश होता है। लग्न अथवा सप्तम वा अष्टम में मङ्गल हो तो वर का नाश होता है। ११।२।३ इनमें चन्द्रमा रहें तो सुख होता है।।१०२।।

मेषादि राशियों में क्रम से सूर्य की स्पष्ट गतिकला–

मेषादिगेऽर्केऽष्टशरा (५८) नगाक्षाः (५७)
सप्तेषवः (५७) सप्तशरा (५७) गजाक्षाः (५८)।
गोऽक्षाः (५९) खतर्काः (६०) कुरसाः (६१) कुतर्काः (६१)
क्वङ्गानि (६१) षष्टि (६०) र्नवपञ्च (५९) भुक्तिः ।।१०३।।

अन्वयः–मेषादिगे अर्के सति क्रमशः अष्टशराः, नगाक्षाः, सप्तेषवः, सप्तशरा, गजाक्षाः, गोऽक्षाः, खतर्काः, कुरसाः, कुतर्काः, क्वङ्गानि, षष्टिः, नवपञ्चभुक्तिः स्यात् ।।१०३।।

भाषा–मेष आदि बारहों राशियों में क्रम से ५८।५७।५७।५७।५८।-५९।६०।६१।६१।६१।६०।५९ कला सूर्य की स्पष्ट गति होती है।।१०३।।

तात्कालिक सूर्य बनाने का प्रकार–

संक्रान्तियातघस्राद्यैर्गतिर्निघ्नी खषड् (६०) हता।
लब्धेनांशादिना योज्यं यातर्क्षं स्पष्टभास्करः ।।१०४।।

अन्वयः–संक्रान्तियातघस्राद्यैः गतिः निघ्नी खषड्हता लब्धेन अंशादिना यातर्क्षं योऽयं सः स्पष्टभास्करः (स्यात्) ।।१०४।।

भाषा–अभीष्ट दिन में संक्रान्ति से बीते हुए दिन घटी पल को स्पष्ट गति से गुणाकर ६० का भाग देने से लब्धि अंश कलादि होती है। उस अंशकला विकला को सूर्य के भुक्त राशि में जोड़ दे तो वह स्पष्ट सूर्य होगा।।१०४।।

विवाह में विहित लग्नानयन–

तनोरिष्टांशकात्पूर्वं नवांशा दशसङ्गुणा।
रामाप्ता लब्धमंशाद्यं तनोर्वर्गादिसाधने ।।१०५।।

अन्वयः–तनोः इष्टांशकात् पूर्वं नवांशाः दशसङ्गुणाः रामाप्ता, लब्धं वर्गादि-साधने तनोः अंशाद्यं स्यात् ।।१०५।।

भाषा–अभीष्ट नवमांश से पूर्व के नवांश की संख्या को १० से गुणाकर ३ का भाग दे, जो लब्धि अंशादि हो वह षड्वर्गादि साधन में इष्ट लग्न का अंशादि होता है।।१०५।।

स्पष्टलग्न तथा स्पष्टसूर्य से इष्ट घटी साधन–

अर्काल्लग्नात्सायनाद्भोग्यभुक्तै-
र्भागैर्निघ्नात् स्वोदयात् खाग्निभक्तात्।

भोग्यं भुक्तं चान्तरालोदयाढ्यं
षष्ट्या भक्तं स्वेष्टनाड्यो भवेयुः ॥१०६॥

अन्वयः-सायनात् अर्कात् लग्नात् क्रमेण भोग्यभुक्तैः भागैः स्वोदयात् निघ्नात्, खाग्निभक्तात् (क्रमशः) यत् भोग्यं भुक्तं तत् अन्तरालोदयाढ्यं इष्टनाड्यो भवेयुः ॥१०६॥

भाषा-सायन सूर्य के भोग्यांश और लग्न के भुक्तांश को अपने स्वदेशीय उदयमान से गुणाकर ३० का भाग देकर जो लब्धि हो उसमें सूर्य और लग्न के मध्य के राशियों के उदयमान को जोड़े, फिर उसमें ६० से भाग दें तो घट्यादि इष्टकाल हो जाता है॥१०६॥

इष्टकाल के लाने में विशेषता-

चेल्लग्नार्कौ सायनावेकराशौ
तद्विश्लेषघ्नोदयः खाग्निभक्तः ।
स्वेष्टः कालो लग्नमूलं यदार्का-
द्रात्रे शेषोऽर्कात् सषड्भान्निशायाम् ॥१०७॥

अन्वयः-चेत् (यदि) सायनौ लग्नार्कौ एकराशौ स्याताम् तदा तद्विश्लेषघ्नोदयः खाग्निभक्तः स्वेष्टः कालः स्यात् । यदा लग्नं अर्कात् ऊनं स्यात्तदा रात्रेः शेषः स्यात् । तथा निशायां सषड्भात् अर्कात् लग्नं साध्यम् ॥१०७॥

भाषा-यदि सायन लग्न और सायन सूर्य एक राशि में हो तो दोनों के अन्तर (अन्तरांश) को राशि के उदयमान से गुणाकर गुणनफल में ३० के भाग देने से इष्टकाल होता है। सायन सूर्य से लग्न कम है तो सूर्योदय से पहले रात्रि शेष इष्टकाल होता है। सूर्य में ६ राशि जोड़कर रात्रिगत इष्टकाल से लग्नसाधन करना चाहिये॥१०७॥

विवाह में त्याज्य दोष-

उत्पातान् सह पातदग्धतिथिभिर्दुष्टांश्च योगांस्तथा
चन्द्रेज्योशनसामथास्तमयनं तिथ्याः क्षयर्द्धी तथा ।
गण्डान्तं च सविष्टिसंक्रमदिनं तन्वंशषास्तं तथा
तन्वंशेशविधूनथाष्टरिपुगान् पापस्य गर्गास्तथा ॥१०८॥
सेन्दुक्रूरखगोदयांशमुदयास्ताशुद्धिचण्डायुधान्
खार्जूरं दशयोगयोगसहितं जामित्रलत्ताव्यधम् ।
बाणोपग्रहपापकर्तरि तथा तिथ्यृक्षयोगोत्थितं
दुष्टं योगमथार्द्धयामकुलिकाद्यान् वारदोषानपि ॥१०९॥
क्रूराक्रान्तविमुक्तभं ग्रहणभं यत् क्रूरगन्तव्यभं
त्रेधोत्पातहतञ्च केतुहतभं सन्ध्योदितं भं तथा ।

तद्वच्च ग्रहभिन्नयुद्धगतभं सर्वानिमान् सन्त्यजे-
दुद्वाहे शुभकर्मसु ग्रहकृतान् लग्नस्य दोषानपि ।।११०।।

अन्वयः—पातदग्धतिथिभिः सह उत्पातान् तथा दुष्टान् योगान् अथ चन्द्रे ज्योशनसां अस्तमयनं तथा तिथ्याः क्षयर्धी च (तथा) संवृष्टिसंक्रमदिनं तथा तन्वंशयास्तं, अथ अष्टरिपुगान् तन्वंशेशविधून् , पापस्य वर्गान् सेन्दुक्रूरखगोदयांशम् उदयास्ताशुद्धि-चण्डायुधान् दशयोगयोगसहितं खार्जूरं जामित्रलत्ताव्यधम् तथा बाणोपग्रहपापकर्तरि तिथ्यृक्षयोगोत्थितं दुष्टं योगं अथ अर्धयामकुलिकाद्यान् वारदोषान् अपि क्रूराक्रान्तविमुक्तभं ग्रहभं तथा यत् क्रूरगन्तव्यम् त्रेधोत्पातहतं तद्वत् ग्रहभिन्नयुद्धगताभं ग्रहकृतान् लग्नस्य दोषान् अपि इमान् सर्वान् उद्वाहे शुभकर्मसु च सन्त्यजेत् ।।१०८-११०।।

भाषा—पात, व्यतीपात, दग्धतिथिसहित उत्पात, दुष्टयोग, चन्द्र, गुरु, शुक्र इन तीनों का अस्त, तिथिक्षय,वृद्धि, भद्रा सहित संक्रान्ति, लग्नेश और नवांशेश का अस्त, छठें और आठवें स्थित लग्नेश, अंशेश और चन्द्रमा, पापग्रह के वर्ग, पापग्रह युत चन्द्रमा के लग्न और नवांश, उदयास्त शुद्धि, चण्डायुध दशयोग सहित खार्जूर, जामित्र, लत्ता वेध, बाण उपग्रह पाप कर्त्तरी तिथि नक्षत्र योग से उत्पन्न दुष्टयोग, अर्धप्रहर कुलिक आदि योग, वार और क्रूरग्रह जिस नक्षत्र में हो और जिस नक्षत्र को क्रूरग्रह ने छोड़ दिया हो, जिस नक्षत्र में क्रूरग्रह जानेवाला हो, ग्रहण के नक्षत्र,त्रिविध उत्पात से हत नक्षत्र, इसी प्रकार ग्रहों से भिन्न खण्डित, जिस नक्षत्र में ग्रह के परस्पर युद्ध हुए हों उस नक्षत्र को तथा ग्रहकृत लग्नदोष इन सबको विवाह और शुभकर्म में छोड़ देना चाहिये।।१०८-११०।। ❑

इति मुहूर्तचिन्तामणौ विवाहप्रकरणम् ।

वधूप्रवेशप्रकरणम्

[1]वधूप्रवेश के लिये विहित काल-

समाद्रिपञ्चाङ्कदिने विवाहाद् वधूप्रवेशोऽष्टिदिनान्तराले ।
शुभः परस्ताद् विषमाब्दमासदिनेऽक्षवर्षात् परतो यथेष्टम् ।।१।।

१. (अ) नूतनविवाहिता कन्या के प्रथम-पतिगृह-प्रवेश को 'वधूप्रवेश' कहते हैं। चाहे कन्या विवाह के समय पति-गृह जाय अथवा एक वर्ष के भीतर या तीसरे अथवा पाँचवें आदि वर्षों में पति-गृह जाय, सभी स्थितियों में उसका यह प्रथम पति-गृह प्रवेश "वधूप्रवेश" कहा जायेगा।

(ब) वधू प्रवेश में सम्मुख शुक्र का दोष नहीं होता-

स्वभवनपुरप्रवेशे देशानां विप्लवे तथोद्वाहे ।
नूतनवध्वागमने प्रतिशुक्रविचारणा नास्ति ।।

अन्वयः-विवाहात् अष्टिदिनान्तरगले समाद्रिपञ्चाङ्कदिने वधूप्रवेशः शुभः स्यात् । परस्तात् विषमाब्दमासदिने शुभः स्यात् । अक्षवर्षात् परतः यथेष्टम् वधूप्रवेशः शुभः स्यात् ।।१।।

भाषा-विवाह से सोलह दिन के भीतर सम दिनों में वा सातवें पाँचवें और नवें दिन में वधूप्रवेश[1] शुभ होता है। सोलह दिन के बाद विषम वर्ष, विषममास, विषम दिन में वधूप्रवेश शुभ है। परन्तु ५ वर्ष के बाद किसी भी समय शुभ दिन में वधूप्रवेश हो सकता है।।१।।

वधूप्रवेश के नक्षत्र-

ध्रुवक्षिप्रमृदुश्रोत्रवसुमूलमघानिले ।
वधूप्रवेशः सन्नेष्टो रिक्तारार्के बुधे परैः ।।२।।

अन्वयः-ध्रुवक्षिप्रमृदुश्रोत्रवसुमूलमघानिले वधूप्रवेशः सत् स्यात् । रिक्तारार्के नेष्टः। परैः बुधेऽपि नेष्टः कथितः।।२।।

भाषा-ध्रुवसंज्ञक, क्षिप्रसंज्ञक, मृदुसंज्ञक, श्रवण, धनिष्ठा, मूल, मघा, स्वाती इन नक्षत्रों में वधूप्रवेश शुभ है। रिक्ता तिथि, रवि और मंगलवार में अशुभ है। अन्य आचार्यों ने बुधवार भी अशुभ कहा है।।२।।

विवाह के प्रथम वर्ष की विशेषता-

ज्येष्ठे पतिज्येष्ठमथाधिके पतिं
हन्त्यादिमे भर्तृगृहे वधूः शुचौ ।
श्वश्रूं सहस्ये श्वसुरं क्षये तनुं
तातं मधौ तातगृहे विवाहतः ।।३।।

अन्वयः-विवाहतः आदिमे ज्येष्ठे भर्तृगृहे स्थिता वधूः पतिज्येष्ठं, आदिमे अधिकमासे पतिं तथा आदिमे शुचौ श्वश्रूं, आदिमे सहस्ये श्वसुरं, अदिमे क्षये च तनुं हन्ति। तथा आदिमे मधौ तातगृहे स्थिता वधूः तातं (पितरं) हन्ति।।३।।

भाषा-विवाह के बाद प्रथम ज्येष्ठ मास में पति के घर में वधू रहे तो पति के बड़े भाई को, प्रथम मलमास में रहे तो पति को, प्रथम आषाढ़ में सास को, प्रथम पौष में ससुर को, प्रथम क्षयमास में अपने को ही नाश करती है। और प्रथम चैत्र में यदि पिता के घर रहे तो पिता को नाश करती है।।३।।

इति मुहूर्तचिन्तामणौ वधूप्रवेशप्रकरणम् ।

❑

---

१. विवाह के दिन के १६ दिन बाद एक मास के भीतर, विषम दिन में, एक मास के बाद एक वर्ष के अभ्यन्तर विषम मास में, एक वर्ष के बाद विषम वर्ष में और ५ वर्ष के पश्चात् किसी भी समय शुभ मुहूर्त में वधू-प्रवेश शुभ होता है ।

द्विरागमनप्रकरणम्

द्विरागमन मुहूर्त[1]-

चरेदथौजहायने घटालिमेषगे रवौ
रवीज्यशुद्धियोगतः शुभग्रहस्य वासरे।
नृयुग्ममीनकन्यकातुलावृषे विलग्नके
द्विरागमं लघुध्रुवे चरेऽस्रपे मृदूडुनि ।।१।।

अन्वयः-अथ ओजहायने (विषमवर्षे) घटालिमेषगे रवौ, रवीज्यशुद्धियोगतः शुभग्रहस्य वासरे, नृयुग्ममीनकन्यकातुलावृषे विलग्नके, लघुध्रुवे चरे अस्रपे मृदूडुनि द्विरागमनं चरेत् ।।१।।

भाषा-विवाह से विषम वर्ष में, कुम्भ, वृश्चिक, मेष के रवि में, रवि और गुरु शुद्ध हो, शुभ ग्रह के दिनों में, मिथुन, मीन,कन्या, तुला, वृष इन लग्नों में, लघुसंज्ञक, ध्रुवसंज्ञक, चरसंज्ञक और मूल इन नक्षत्रों में द्विरागमन करना शुभ है।।१।।

शुक्र का विचार तथा फल-

दैत्येज्यो ह्यभिमुखदक्षिणे यदि स्याद्
गच्छेयुर्न हि शिशुगर्भिणीनवोढाः।
बालश्चेत् व्रजति विपद्यते नवोढाः।
चेद्वन्ध्या भवति च गर्भिणी त्वगर्भा ।।२।।

अन्वयः-यदि दैत्येज्यः अभिमुखदक्षिणे स्यात्तदा शिशुगर्भिणीनवोढाः न गच्छेयुः। बालश्चेत् व्रजति तदा विपद्यते, नवोढा व्रजति चेत्तदा वन्ध्या भवति, च (पुनः) गर्भिणी नारी अगर्भा भवति।।२।।

भाषा-द्विरागमन में शुक्र यदि सम्मुख या दक्षिण हो तो नवविवाहिता, गर्भवती और बच्चेवाली स्त्री को पति घर नहीं जाना चाहिए। यदि पति के घर जाय तो बच्चेवाली का बच्चा मर जाता है। गर्भिणी का गर्भपात हो जाता है और नवविवाहिता बन्ध्या हो जाती है।।२।।

सम्मुख शुक्र का परिहार-

नगरप्रवेशविषयाद्युपद्रवे करपीडने विबुधतीर्थयात्रयोः।
नृपपीडने नववधूप्रवेशने प्रतिभार्गवो भवति दोषकृन्न हि ।।३।।

अन्वयः-नगरप्रवेशविषयाद्युपद्रवे करपीडने विबुधतीर्थयात्रयोः नृपपीडने नववधूप्रवेशने प्रतिभार्गवः (सम्मुखशुक्रः) दोषकृत् न हि भवति।।३।।

---

१. विवाहे गुरुशुद्धिः स्यात् शुक्रशुद्धिर्द्विरागमे।
त्रिगमे राहुशुद्धिश्च चन्द्रशुद्धिश्चतुर्गमे ।।

भाषा–नगरप्रवेश में, किसी प्रकार के उपद्रव में, विवाह में, देवता के दर्शन और तीर्थयात्रा में, राजा से निर्वासित होने में, नववधूप्रवेश में सम्मुख शुक्र का दोष नहीं होता है।।३।।

अन्य परिहार–

पित्र्ये गृहे चेत्कुचपुष्पसम्भवः
स्त्रीणां न दोषः प्रतिशुक्रसम्भवः ।
भृग्वङ्गिरोवत्सवसिष्ठकश्यपा-
स्त्रीणां भरद्वाजमुनेः कुले तथा ।।४।।

अन्वयः–चेत् यदि पित्र्ये गृहे स्त्रीणां कुचपुष्पसम्भवः स्यात्तदा प्रतिशुक्रसम्भवः दोषः न भवति। तथा भृग्वङ्गिरोवत्सवसिष्ठकश्यपात्रीणां तथा भरद्वाजमुनेः कुले प्रतिशुक्रसम्भवः दोषः न भवति।।४।।

भाषा–पिता के घर में कन्या को यदि पूर्ण युवती होने का चिह्न हो गया हो अथवा रजोवती हो गयी हो तो सम्मुख शुक्र का दोष नहीं होता है और भृगु, अंगिरा, वत्स, वसिष्ठ, कश्यप, अत्रि और भरद्वाज गोत्र वालों को भी सम्मुख शुक्र का दोष नहीं होता है।।४।।

इति मुहूर्तचिन्तामणौ द्विरागमन-प्रकरणम् । ❑

अग्निहोत्रप्रकरणम्

अग्न्याधान का मुहूर्त–

स्यादग्निहोत्रविधिरुत्तरगे दिनेशे
मिश्रध्रुवान्त्यशशिशुक्रसुरेज्यधिष्ण्ये ।
रिक्तासु नो शशिकुजेज्यभृगौ न नीचे
नास्तंगते न विजिते न च शत्रुगेहे ।।१।।

अन्वयः–उत्तरगे दिनेशे मिश्रध्रुवान्त्यशशिशुक्रसुरेज्यधिष्ण्ये अग्निहोत्रविधिः शुभः स्यात् । रिक्तासु नो, शशिकुजेज्यभृगौ नीचेन, अस्तंगतेऽपि न, विजिते न, शत्रुगृहे स्थिते च न शुभः स्यात् ।।१।।

भाषा–उत्तरायण सूर्य में, मिश्रसंज्ञक, ध्रुवसंज्ञक, रेवती, मृगशिरा, ज्येष्ठा और पुष्य इन नक्षत्रों में अग्न्याधान शुभ है। रिक्तातिथि में, चन्द्रमा, मंगल, गुरु और शुक्र ये नीच हों अथवा अस्त हों या अन्य ग्रहों से विजित हों और शत्रु के घर में हों तो अग्न्याधान कर्म अशुभ है।।१।।

लग्नशुद्धि–

नो कर्कनक्रझषकुम्भनवांशलग्ने
नोऽब्जे तनौ रविशशांज्यकुजे त्रिकोणे ।

केन्द्रर्क्षषड्भवनगे च परैस्त्रिलाभ-
षट्खस्थितैर्निधनशुद्धियुते विलग्ने ।।२।।

अन्वयः–कर्कनक्रझषकुम्भनवांशलग्ने नो, अब्जे तनौ शुभः। रविशशीज्यकुजे त्रिकोणे केन्द्रर्क्षषड्भवनगे च, परैः त्रिलाभषट्खस्थितैः, निधनशुद्धियुते विलग्ने अग्निहोत्रविधिः शुभो भवति।।२।।

भाषा–कर्क, मकर, मीन, कुम्भ इन राशियों के लग्न और नवांश में, जिस राशि में चन्द्रमा हो उस लग्न में अग्न्याधान न करे। सूर्य, चन्द्रमा, गुरु, मंगल ये ग्रह त्रिकोण, केन्द्र और छठें स्थान में हों तो अग्न्याधान शुभ है। ३।११।६।१० इनमें अन्य ग्रह हों, लग्न से ८वाँ स्थान शुद्ध हो तो अग्न्याधान शुभ है।।२।।

याज्ञिक योग–

चापे जीवे तनुस्थे मेषे भौमेऽम्बरे द्युने ।
षट्त्र्यायेऽब्जे रवौ वा स्याज्जाताग्निर्यजति ध्रुवम् ।।३।।

अन्वयः–जीवे चापे तनुस्थे, वा भौमे मेषे तनुस्थे, अम्बरे, द्युने, अब्जे (चन्द्रे), षट्त्र्याये रवौ वा षट्त्र्याये सति जाताग्निः ध्रुवं (निश्चयेन) यजति।।३।।

भाषा–धनु का गुरु लग्न में हो अथवा मेष का मंगल लग्न में हो अथवा सातवें या दसवें स्थान में हो और चन्द्रमा ३।६।११ में हो अथवा सूर्य ३।६।११ में हो तो इन योगों में अग्न्याधान करनेवाला अवश्य यज्ञ करनेवाला होता है।।३।।

इति मुहूर्तचिन्तामणौ अग्निहोत्र (अग्न्याधान) प्रकरणं समाप्तम् । ❑

राज्याभिषेकप्रकरणम्

राज्याभिषेकार्थ कालशुद्धि–

राजाभिषेकः शुभ उत्तरायणे गुर्विन्दुशुक्रैरुदितैर्बलान्वितैः ।
भौमार्कलग्नेशदशेशजन्मपैर्नो चैत्ररिक्तारनिशामलिम्लुचे ।।१।।

अन्वयः–उत्तरायणे गुर्विन्दुशुक्रे उदितैः भौमार्कलग्नेशदशेशजन्मपैः बलान्वितैः राजाभिषेकः शुभः स्यात् । चैत्ररिक्तारनिशामलिम्लुचे नो शुभः स्यात्।।१।।

भाषा–सूर्य उत्तरायण में हो, गुरु चन्द्रमा और शुक्र उदित हो और मंगल सूर्य तात्कालिक लग्न का स्वामी, सूर्य दशा का स्वामी और जन्म लग्नेश बली हो तो राज्याभिषेक शुभ होता है। चैत्र मास, रिक्ता तिथि, मंगलवार और रात्रि ये राज्याभिषेक में अशुभ हैं।।१।।

नक्षत्र एवं लग्नशुद्धि–

शाक्रश्रवः क्षिप्रमृदु-ध्रुवोडुभिः
शीर्षोदये वोपचये शुभे तनौ ।

पापैस्त्रिषष्ठायगतैः शुभग्रहैः
केन्द्रत्रिकोणायधनत्रिसंस्थितैः ॥२॥

अन्वयः-शाक्रश्रवः क्षिप्रमृदुध्रुवोडुभिः शीर्षोदये वा उपचये शुभे तनौ, पापैः त्रिषष्ठायगतैः, शुभग्रहैः केन्द्रत्रिकोणायधनत्रिसंस्थितैः राजाभिषेकः प्रशस्तो भवति ॥२॥

भाषा-ज्येष्ठा, श्रवण, क्षिप्रसंज्ञक, ध्रुवसंज्ञक नक्षत्र में, शीर्षोदय लग्न में या उपचय राशि के शुभलग्न में, पापग्रह ३।६।११ में हो और शुभग्रह केन्द्र त्रिकोण ११।२।३ इन स्थानों में हो तो राज्याभिषेक शुभ है॥२॥

लग्न से पाप का फल एवं परिहार-

पापैस्तनौ रुङ् निधने मृतिः सुते
पुत्रार्तिरर्थव्ययगैर्दरिद्रता ।
स्यात् खेऽलसो भ्रष्टपदो द्युनाम्बुगैः
सर्वं शुभं केन्द्रगतैः शुभग्रहैः ॥३॥

अन्वयः-पापैः तनौ, लग्ने रुक् , निधने स्थितैः मृतिः, सुते (पञ्चमे) पुत्रार्तिः, अर्थव्ययगैः दरिद्रता, खे (दशमे पापैः) अलसः स्यात् । द्युनाम्बुगैः पापैः भ्रष्टपदः स्यात्, केन्द्रगतैः शुभग्रहैः सर्वं शुभं स्यात् ॥३॥

भाषा-पापग्रह लग्न में हो तो सिंहासन पर बैठने वाला रोगी, ८वें में पापग्रह हो तो मृत्यु, ५वें में पाप ग्रह हो तो पुत्रकष्ट, दूसरे, बारहवें में पापग्रह हो तो दरिद्र, १० वें में आलसी, ७वें और ४थे में राज्यच्युत और शुभ ग्रह केन्द्र में हो तो सब शुभ होता है॥३॥

सम्पत्ति का स्थिर योग-

गुरुर्लग्ने कुजोऽरौ सितः खे
स राजा सदा मोदते राजलक्ष्म्या ।
तृतीयायगौ सौरिसूर्य्यौ खबन्ध्वो-
र्गुरुश्चेद् धरित्री स्थिरा स्यान्नृपस्य ॥४॥

अन्वयः-गुरुः लग्नकोणे, कुजः अरौ, सितः खे (दशमे स्थितस्तदा) स राजा सदा राजलक्ष्म्या मोदते। सौरिसूर्यौ तृतीयायगौ,गुरुः खबन्ध्वोः तदा नृपस्य धरित्री स्थिरा स्यात् ॥४॥

भाषा-राज्याभिषेक समय में लग्न या ५ और ९ वें स्थान में गुरु, ६ठें स्थान में मंगल, दशवें शुक्र हो तो वह राजा सदा राज्यलक्ष्मी से युत होकर आनन्द करता है। शनि ३रे, सूर्य ११वें और १०।४ इनमें गुरु हो तो राज्य सदैव स्थिर रहता है॥४॥

इति मुहूर्तचिन्तामणौ राज्याभिषेकप्रकरणम् । ❑

यात्राप्रकरणम्

यात्रा के मुहूर्त की कुछ विशेषतायें-

यात्रायां प्रविदितजन्मनां नृपाणां
दातव्यं दिवसमबुद्धजन्मनाञ्च ।
प्रश्नाद्यैरुदयनिमित्तमूलभूतै-
र्विज्ञाते ह्यशुभशुभे बुधः प्रदद्यात् ।।१।।

अन्वयः-**प्रविदितजन्मनां नृपाणां यात्रायां दिवसं दातव्यम् । अबुद्धजन्मनां नृपाणां च प्रश्नाद्यैः उदयनिमित्तमूलभूतैः अशुभशुभे विज्ञाते बुधः यात्रायां दिवसं प्रदद्यात् ।।१।।**

भाषा-जिसका जन्मसमय ज्ञात हो उन राजा आदि जनों को जन्म-नक्षत्र, राशि आदि से शुभ समय, चन्द्र तारा बल आदि देखकर यात्रा समय बनाकर देने चाहिये तथा जिनका जन्म समय नहीं ज्ञात हो उनको प्रश्न लग्नादि से निमित्त शकुनादि द्वारा शुभाशुभ विचार करके दिन (यात्रा समय) बना कर दें।।१।।

यात्रा के लिए प्रश्न से फल-

जननराशितनू यदि लग्नगे तदधिपौ यदि वा तत एव वा ।
त्रिरिपुखायगृहं यदि वोदयो विजय एव भवेद्वसुधापतेः ।।२।।

अन्वयः-**यदि जननराशितनू लग्नगे वा तदधिपौ लग्नगौ वा तत एव त्रिरिपुखायगृहं यदि उदयः स्यात्तदा वसुधाधिपतेः विजय एव स्यात् ।।२।।**

भाषा-यात्रा करने वालों की जन्मराशि या जन्मलग्न यदि प्रश्न कालिक या यात्राकालिक लग्न में हो अथवा जन्मराशि या जन्म लग्नेश अथवा उनसे ३,६,१०,११वीं राशि लग्न में हो तो पूछने वाले राजा की (राजा यहाँ उपलक्षण है, अन्य जनों को भी) विजय होती है।।२।।

अन्य योग-

रिपुजन्मलग्नममथाधिपौ तयोस्तत एव वोपचयसद्म चेद्भवेत् ।
हिबुके द्युनेऽथ शुभवर्गकस्तनौ यदि मस्तकोदयगृहं तदा जयः ।।३।।

अन्वयः-**रिपुजन्मलग्नभं अथवा तयोः अधिपौ वा तत एव उपचयसद्म चेद् हिबुके द्युनेऽथ भवेत्तदा वसुधापतेः जयः स्यात् । अथ यदि तनौ शुभवर्गकः वा मस्तकोदयगृहं तनौ स्यात्तदाऽपि जयः स्यात् ।।३।।**

भाषा-शत्रु की जन्मलग्न या जन्मराशि अथवा दोनों के स्वामी या उनसे उपचय (३,६,१०,११) स्थान में से कोई प्रश्नलग्न या यात्रा लग्न से ४,७ स्थान में हो अथवा शुभ ग्रह का वर्ग लग्न में हो या शीर्षोदय राशि (मिथुन, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, कुम्भ) लग्न में हो तो भी विजय होती है।।३।।

शकुन से विजययोग–

यदि पृच्छितनौ वसुधा रुचिरा शुभवस्तु यदि श्रुतिदर्शनगम् ।
यदि पृच्छति चादरतश्च शुभग्रहदृष्टयुतं चरलग्नमपि ।।४।।

अन्वयः–यदि पृच्छितनौ वसुधा रुचिरा स्यात् , यदि वा शुभवस्तु श्रुतिदर्शनगं भवेत्तथा यदि आदरतः पृच्छति अपि च शुभग्रहदृष्टयुतं चरलग्नं यदि स्यात् तदा तस्य जय एव स्यात्।।४।।

भाषा–यदि प्रश्न समय में पृथ्वी देखने में शोभायुक्त मालूम हो, मांगलिक वस्तु या शब्द देखने या सुनने में आवे, तथा पूछने वाला यदि आदर से पूछे तथा शुभ ग्रह से दृष्ट या युत चरराशि का लग्न हो तो प्रष्टा की विजय होती है।।४।।

अन्य प्रकार–

विधुकुजयुतलग्ने सौरिदृष्टेऽथ चन्द्रे
मृतिभमदनसंस्थे लग्नगे भास्करेऽपि ।
हिबुकनिधनहोराद्यूनगे वापि पापे
सपदि भवति भङ्गः प्रश्नकर्त्तुस्तदानीम् ।।५।।

अन्वयः–अथ विधुकुजयुतलग्ने सौरिदृष्टे सति, चन्द्रे मृतिभमदनसंस्थे, अपि वा भास्करे लग्नगे सति अपि वा पापे (पापग्रहे) हिबुकनिधनहोराद्यूनगे, तदानीं प्रश्नकर्तुः सपदि भङ्गः भवति।।५।।

भाषा–यदि लग्न में चन्द्रमा और मंगल शनि से दृष्ट हो अथवा चन्द्रमा यदि लग्न से ८वें, वा ७वें स्थान में हो, वा सूर्य लग्न में हो और अन्य पापग्रह ४,८,१,७ भावों में हो तो प्रश्नकर्ता की पराजय समझना चाहिये।।५।।

अन्य फल–

त्रिकोणे कुजात्सौरिशुक्रज्ञजीवा
यदैकोऽपि वा नो गमोऽर्काच्छशी वा ।
बलीयांस्तु मध्ये तयोर्यो ग्रहः स्यात्
स्वकीयां दिशं प्रत्युतासौ नयेच्च ।।६।।

अन्वयः–सौरिशुक्रज्ञजीवाः (एते सर्वेऽपि) वा एकोऽपि यदा कुजात् त्रिकोणे स्थितः, वा शशी अर्कात् स्यात्तदा गमः गमनं नो भवेत् । प्रत्युत तयोर्मध्ये यः ग्रहः बलीयान् स्यात् असौ स्वकीयां (निजां) दिशं नयेत् ।।६।।

भाषा–यदि मङ्गल से ५,९ स्थान में शनि, शुक्र, बुध और गुरु हो या इनमें से एक भी हो अथवा सूर्य से यदि चन्द्रमा ५,९ में हो तो यात्रा नहीं होती है। यदि यात्रा हो भी तो दोनों में जो प्रबल हो वह ग्रह अपनी दिशा में ले जाता है। अर्थात् इस योग में गन्तव्य स्थान में नहीं पहुँचता है।।६।।

अन्य योग–

प्रश्ने गम्यदिगीशात् खेटः पञ्चमो यः ।
बोभूयात् बलयुक्तः स्वामाशां नयतेऽसौ ।।७।।

अन्वयः–प्रश्ने (प्रश्नकाले) गम्यदिगीशात् यः पञ्चमगः खेटः बलयुक्तः बोभूयात् असौ (बलवान् खेटः) स्वां आशां नयते।।७।।

भाषा–यदि प्रश्न समय में गन्तव्य दिशा के स्वामी से पञ्चम स्थान में कोई बलवान् ग्रह हो तो वह भी अपनी ही दिशा को ले जाता है।।७।।

यात्रासमय–

धनुर्मेषसिंहेषु यात्रा प्रशस्ता
शनिज्ञोशनोराशिगे चैव मध्या ।
रवौ कर्कमीनालिसंस्थेऽतिदीर्घा
तनुःपञ्चसप्तत्रिताराश्च नेष्टाः ।।८।।

अन्वयः–धनुर्मेषसिंहेषु रवौ स्थिते यात्रा प्रशस्ता स्यात् । च (पुनः) शनिज्ञोशनोराशिगे रवौ यात्रा मध्या स्यात्। कर्कमीनालिसंस्थे रवौ अतिदीर्घा यात्रा स्यात् । तनुःपञ्चसप्तत्रिताराश्च नेष्टाः भवान्ति।।८।।

भाषा–धनु, मेष और सिंह राशि में सूर्य हो तो यात्रा प्रशस्त होती है। शनि, बुध और शुक्र की राशि में सूर्य हो तो यात्रा मध्यम तथा कर्क, मीन और वृश्चिक में सूर्य हो तो यात्रा लम्बी होती है। तथा यात्रा में १,५,७,३ तारा अशुभ होती है।।८।।

विहित तिथि एवं नक्षत्र–

न षष्ठी न च द्वादशी नाष्टमी नो सिताद्याः तिथिः पूर्णिमामा न रिक्ता।
हयादित्यमित्रेन्दुजीवान्त्यहस्तश्रवोवासवैरेव यात्रा प्रशस्ता ।।९।।

अन्वयः–षष्ठी न (शुभा), द्वादशी न, अष्टमी न, सिताद्या तिथिः पूर्णिमा अमा रिक्ता च यात्रायां न प्रशस्ता स्यात् । हयादित्यमित्रेन्दुजीवान्त्यहस्तश्रवोवासवैः एव नक्षत्रैः यात्रा प्रशस्ता स्यात् ।।९।।

भाषा–यात्रा में ६,१२,८ तिथियाँ तथा शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा, पूर्णिमा, अमावस्या, रिक्ता तिथियाँ भी प्रशस्त नहीं हैं। नक्षत्रों में अश्विनी, पुनर्वसु, अनुराधा, मृगशिरा, पुष्य, रेवती, हस्त, श्रवण और धनिष्ठा ये ही नौ नक्षत्र यात्रा में प्रशस्त हैं।।९।।

दिशाओं में वारशूल एवं नक्षत्रशूल–

न पूर्वदिशि शक्रभे न विधुसौरिवारे तथा
न चाजपदभे गुरौ यमदिशीनदैत्येज्ययोः ।
न पाशिदिशि धातृभे कुजबुधेऽर्यमर्क्षे तथा
न सौम्यककुभि व्रजेत् स्वजयजीवितार्थी बुधः ।।१०।।

अन्वयः–स्वजयजीवितार्थी बुधः पूर्वदिशि शक्रभे (ज्येष्ठाभे) तथा विधुसौरिवारे न गच्छेत् । च (पुनः) अजपदभे गुरौ च यमदिशि(दक्षिणस्यां) न व्रजेत् । इनदैत्येज्ययोः धातृभे पाशिदिशि न व्रजेत्, कुजबुधे अर्यमर्क्षे सौम्यककुभि (उत्तरस्यां) न गच्छेत् ।।१०।।

भाषा–ज्येष्ठा नक्षत्र और शनि, सोमवार में पूर्व दिशा में यात्रा न करे। पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र और गुरुवार में दक्षिण दिशा में न जाय। रवि और शुक्रवार, रोहिणी नक्षत्र में पश्चिम न जाय। मङ्गल, बुधवार तथा उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र में उत्तर दिशा की यात्रा अपनी विजय और जीवन चाहने वाला जन न करे।।१०।।

त्याज्यकाल–

पूर्वाह्णे ध्रुवमिश्रभैर्न नृपतेर्यात्रा न मध्याह्नके
तीक्ष्णाख्यैरपराह्णके न लघुभैर्नो पूर्वरात्रे तथा ।
मित्राख्यैर्न च मध्यरात्रिसमये चोग्रैस्तथा नो चरे
रात्र्यन्ते हरिहस्तपुष्यशशिभिः स्यात् सर्वकाले शुभा ।।११।।

अन्वयः–पूर्वाह्णे ध्रुवमिश्रभैः नृपतेः यात्रा न शुभा, मध्याह्नके तीक्ष्णाख्यैः न शुभा, अपराह्णके लघुभैः, पूर्वरात्रे मित्राख्यैः तथा मध्यरात्रिसमये उग्रैः, चरैः रात्र्यन्ते यात्रा न शुभा स्यात् । हरिहस्तपुष्यशशिभिः सर्वकाले नृपतेः यात्रा शुभा स्यात् ।।११।।

भाषा–ध्रुव और मिश्र संज्ञक नक्षत्रों में पूर्वाह्न काल में राजा की यात्रा शुभ नहीं होती है। मध्याह्न काल में, तीक्ष्ण संज्ञक नक्षत्रों में यात्रा शुभ नहीं होती है। अपराह्न समय में, लघुसंज्ञक नक्षत्रों में यात्रा शुभ नहीं होती है। मित्र संज्ञक नक्षत्रों में, रात्रि के पूर्वभाग में यात्रा शुभ नहीं होती और उग्र संज्ञक नक्षत्रों में रात्रि के मध्य भाग में यात्रा शुभ नहीं होती तथा चर नक्षत्रों में, रात्रि के अन्तिम भाग में यात्रा शुभ नहीं होती। श्रवण, हस्त, पुष्य और मृगशिरा इन ४ नक्षत्रों में सब काल में यात्रा शुभ होती है।।११।।

अशुभ नक्षत्र और उनकी त्याज्य घड़ियाँ–

पूर्वाग्निपित्र्यन्तकतारकाणां भूषप्रकृत्युग्रतुरङ्गमाः स्युः ।
स्वातीविशाखेन्द्रभुजङ्गमानां नाड्यो निषिद्धा मनुसम्मिताश्च ।।१२।।

अन्वयः–पूर्वाग्निपित्र्यन्तकतारकाणां भूषप्रकृत्युग्रतुरङ्गमाः नाड्यः च (पुनः) स्वातीविशाखेन्द्रभुजङ्गमानां मनुसम्मिताः नाड्यः निषिद्धा भवन्ति ।।१२।।

भाषा–तीनों पूर्वा, कृत्तिका, मघा और भरणी इन नक्षत्रों में क्रम से आदि की १६,२१,११ और ७ घड़ी अत्यन्त निषिद्ध है। स्वाती, विशाखा, ज्येष्ठा और आश्लेषा इन सबों की आरम्भ १४ घड़ी अत्यन्त निषिद्ध है। अर्थात् ये नक्षत्र यात्रा में निन्द्य हैं। आवश्यकता में इन नक्षत्रों की उक्त घड़ी को अवश्य त्याग करके शेष घड़ी में यात्रा करनी चाहिये।।१२।।

मतान्तर से त्याज्य नक्षत्र–

पूर्वार्द्धमाग्नेयमघानिलानां त्यजेद्धि चित्राहियमोत्तरार्द्धम् ।
नृपः समस्तां गमने जयार्थी स्वातीं मघाञ्चोशनसो मतेन।।१३।।

अन्वयः–जयार्थी नृपः गमने आग्नेयमघानिलानां पूर्वार्धं,चित्राहियमोत्तरार्धं, हि (निश्चयेन) त्यजेत् । उशनसः मतेन स्वातीं मघां च समस्तां त्यजेत् ।।१३।।

भाषा–कृत्तिका, मघा, स्वाती इन नक्षत्रों के पूर्वार्ध तथा चित्रा, आश्लेषा और भरणी के उत्तरार्ध को यात्रा में त्याग देना चाहिये। तथा उशना आचार्य के मत से स्वाती और मघा को विजय चाहनेवाले समस्त त्याग कर दें।।१३।।

नक्षत्रों की जीव मृत्यु संज्ञा–

तमोभुक्ततारा: स्मृता विश्वसंख्या: शुभो जीवपक्षो मृताश्चापि भोग्या:।
तदाक्रान्तभं कर्त्तरीसंज्ञमुक्तं ततोऽक्षेन्दुसंख्यं भवेद् ग्रस्तनाम ।।१४।।

अन्वयः–विश्वसंख्याः तमोभुक्तताराः जीवपक्षः शुभः स्मृतः। च (पुनः) भोग्याः विश्वसंख्याः मृता उक्ताः।तदाक्रान्तभं कर्तरी ततः राहोः अक्षेन्दुसंख्यं ग्रस्तनाम भवेत् ।।१४।।

भाषा–राहु के भुक्त (जिसमें राहु हो उसको छोड़कर आगे के) १३ नक्षत्र जीव पक्ष तथा शुभ कहे गये हैं। तथा भोग्य (जिस नक्षत्र में राहु हो उससे पीछे के) १३ नक्षत्र मृत पक्ष (अशुभ) कहे गये हैं। जिसमें राहु वर्तमान हो वह नक्षत्र कर्तरी तथा उससे १५वाँ नक्षत्र ग्रस्त संज्ञक कहा गया है।।१४।।

जीवपक्ष आदि के फल–

मार्त्तण्डे मृतपक्षगे हिमकरश्चेज्जीवपक्षे शुभा
यात्रा स्याद्विपरीतगे क्षयकरी द्वौ जीवपक्षे शुभा ।
ग्रस्तर्क्षं मृतपक्षतः शुभकरं ग्रस्तात्तथा कर्त्तरी
यायीन्दुः स्थितिमान् रविर्जयकरौ तौ द्वौ तयोर्जीवगौ ।।१५।।

अन्वयः–मार्तण्डे (सूर्ये)मृतपक्षगेचेत् हिमकरः (शशी) जीवपक्षे तदा यात्रा शुभा स्यात्। विपरीतगे क्षयकरी स्यात् । द्वौ (सूर्याचन्द्रमसौ) यदि जीवपक्षे (स्याताम्) तदा यात्रा शुभा स्यात् । ग्रस्तर्क्षं मृतपक्षतः शुभकरं ग्रस्तात् (शुभकरी) इन्दुः यायी, रविः स्थितिमान् तौ द्वावपि जीवगौ सन्तौ तयोः जयकरौ स्याताम् ।।१५।।

भाषा–यदि सूर्य मृत पक्ष नक्षत्र में और चन्द्रमा जीव पक्ष नक्षत्र में हो तो यात्रा अत्यन्त शुभप्रद होती है। इसमें विपरीत (अर्थात् जीवपक्ष में सूर्य और मृतपक्ष में चन्द्रमा) हो तो यात्रा हानि (पराजय) करानेवाली होती है। यदि सूर्य और चन्द्रमा दोनों जीव पक्ष में हों तो भी यात्रा शुभ होती है। मृत पक्ष नक्षत्रों की अपेक्षा ग्रस्त नक्षत्र शुभकारक तथा ग्रस्त नक्षत्र की अपेक्षा कर्तरी नक्षत्र शुभ होता है। चन्द्रमा यायी (पहिले युद्ध में चलनेवाला) अर्थात् मुद्दई तथा सूर्य

स्थायी (मुद्दालेह) ग्रह हैं। ये जीव पक्ष में रहकर अपने-अपने पक्षों को विजय करानेवाले हैं। अर्थात् चन्द्रमा जीव पक्ष में हो तो मुद्दई को और सूर्य जीव पक्ष में हो तो मुद्दालेह की विजय तथा दोनों जीव पक्ष में हों तो दोनों में यथोचित सन्धि होती है॥१५॥

अकुल, कुल तथा कुलाकुल नक्षत्र-

स्वात्यन्तकाहिवसुपौष्णकरानुराधा-
दित्यध्रुवाणि विषमास्तिथयोऽकुलाः स्युः।
सूर्येन्दुमन्दगुरवश्च कुलाकुलज्ञा
मूलाम्बुपेशविधिभं दशषड्द्वितिथ्यः ॥१६॥
पूर्वाश्वीज्यमघेन्दुकर्णदहनद्वीशेन्द्रचित्रास्तथा
शुक्रारौ कुलसंज्ञकाश्च तिथयोऽकष्टिन्द्रवेदैर्मिताः।
यायी स्यादकुले जयो च समरे स्थायी च तद्वत्कुले
सन्धिः स्यादुभयोः कुलाकुलगणे भूमीशयोर्युध्यतोः ॥१७॥

गण.	अकुलगण	कुलाकुल गण	कुलगण
नक्षत्र	म. पुन. श्ले. उ.फा. ह. स्वा. अनु. रो. उ.षा. ध. उ.भा. रे.	मूल. शत. आर्द्रा. अभि.	अश्वि. कृ. मृग. पुष्य. म. पू.फा. चि. विशा.ज्ये.पू.षा. श्रव.पू.भा.
तिथि	१,३,५,७,९ १२,१३,१५	२,६,१०	४,८,१२,१४
वार	श.र.च.बृ.	बुध	मंगल, शुक्र.

अन्वयः-स्वात्यन्तकाहिवसुपौष्णकरानुराधादित्यध्रुवाणि (नक्षत्राणि) विषमाः तिथयः, सूर्येन्दुमन्दगुरवश्च अकुलाः स्युः। ज्ञो बुधः, मूलाम्बुपेशविधिभं नक्षत्रं, दशषड्द्वितिथ्यः कुलाकुलाः स्युः। पूर्वाश्वीज्यमघेन्दुकर्णदहनद्वीशेन्द्रचित्राः तथा शुक्रारौ अकष्टिन्द्रवेदैर्मिताः तिथयः कुलसंज्ञकाः स्युः। अकुले समरे (संग्रामे) यायी जयौ स्यात्। तद्वत् कुले स्थायी जयी स्यात्। कुलाकुलगणे युध्यतोः उभयोः भूमीशयोः सन्धिः स्यात् ॥१६-१७॥

भाषा-स्वाती, भरणी, आश्लेषा, धनिष्ठा, रेवती, हस्त, अनुराधा, पुनर्वसु, ध्रुवसंज्ञक (३ उत्तरा, रोहिणी) ये नक्षत्र तथा विषम (१,३,५ आदि) तिथियाँ एवं रवि, सोम, शनि और गुरुवार ये अकुल नामक गण हैं। तथा मूल, शतभिषा,

आर्द्रा, अभिजित् ये नक्षत्र, १०, ६, २ ये तिथियाँ और बुधवार ये कुलाकुल गण हैं। तथा ३ पूर्वा, अश्विनी, पुष्य, मघा, मृगशिरा, श्रवण, कृत्तिका, विशाखा, ज्येष्ठा, चित्रा ये नक्षत्र, शुक्र, मङ्गलवार, १२, ८, १४, ४ ये तिथियाँ कुल नामक गण हैं। अकुल संज्ञक नक्षत्रादि में यायी (मुद्दई) की विजय और कुलसंज्ञक नक्षत्रादि में स्थायी (मुद्दालेह) की विजय होती है। तथा कुलाकुल नामक नक्षत्रादि में युद्धार्थ यात्रा करने से दोनों में सन्धि हो जाती है॥१६-१७॥

पथिराहुचक्र-

स्युर्धर्मे दस्रपुष्योरगवसुजलपद्वीशमैत्राण्यथार्थे
याम्याजांघ्रीन्द्रकर्णादितिपितृपवनोडून्यथो भानि कामे।
वह्न्यार्द्राबुध्न्यचित्रानिर्ऋतिविधिभगाख्यानि मोक्षेऽथ रोहि-
ण्यर्यम्णाऽप्येन्दुविश्वान्तिमभदिनकरर्क्षाणि पथ्यादिराहौ॥१८॥

अन्वयः-पथ्यादिराहौ दस्रपुष्योरगवसुजलपद्वीशमैत्राणि (नक्षत्राणि) धर्मे स्युः। अथ याम्याजांघ्रीन्द्रकर्णादितिपितृपवनोडूनि अर्थे स्युः। अथो वह्न्यार्द्राबुध्न्य-चित्रानिर्ऋतिविधिभगाख्यानि भानि कामे स्युः। अथ रोहिण्यर्यम्णाऽप्येन्दु-विश्वान्तिमभदिनकरर्क्षाणि मोक्षे स्युः॥१८॥

भाषा-अश्विनी, पुष्य, आश्लेषा, धनिष्ठा, शतभिषा, विशाखा और अनुराधा ये धर्म के नक्षत्र हैं। भरणी, पूर्वभाद्र, ज्येष्ठा, श्रवण, पुनर्वसु, मघा और स्वाती ये अर्थ के नक्षत्र हैं। कृत्तिका, आर्द्रा, उत्तरभाद्रपद, चित्रा, मूल, अभिजित् और पूर्व फाल्गुनी ये काम के नक्षत्र हैं। रोहिणी, उत्तर फाल्गुनी, पूर्वाषाढ़, मृगशिरा, उत्तराषाढ़, रेवती और हस्त ये मोक्ष मार्ग के नक्षत्र हैं। यह पथिराहु चक्र कहलाता है॥१८॥

अश्विनी से आरम्भ कर चतुर्नाडी चक्र बनाने से सर्पाकार चक्र बनता है। राहु का आकार सर्प सदृश है, इसलिए ही इसे पथिराहु चक्र कहा गया है॥१८॥

स्पष्टार्थपथिराहुचक्रम्-

धर्ममार्ग	अ०	पुष्य	श्ले०	वि०	अनु०	ध०	श०
अर्थमार्ग	भ०	पुन०	म०	स्वा०	ज्ये०	श्र०	पू०
काममार्ग	कृ०	आ०	पू०	चि०	मू०	अभि०	उ०
मोक्षमार्ग	रो०	मृ०	उ०	ह०	पू०	उ०	रे०

इसके फल-

धर्म्मगे भास्करे वित्तमोक्षे शशी
वित्तगे धर्म्ममोक्षस्थितः शस्यते।

कामगे धर्म्मामोक्षार्थगः शोभनो
मोक्षगे केवलं धर्मगः प्रोच्यते ।।१९।।

अन्वयः-धर्म्मगे भास्करे वित्तमोक्षे शशी शस्यते। वित्तगे भास्करे धर्म्ममोक्षे स्थितः, कामगे भास्करे धर्म्ममोक्षार्थगः शशी शोभनो भवति। मोक्षगे भास्करे केवलं धर्मगः शशी शुभः प्रोच्यते।।१९।।

भाषा-यदि धर्म नक्षत्र में सूर्य हो और अर्थ या मोक्ष में चन्द्रमा हो, अथवा अर्थ में सूर्य अैर धर्म या मोक्ष में चन्द्रमा हो तो यात्रा प्रशस्त होती है। काम नक्षत्र में सूर्य हो तो धर्म या मोक्ष में चन्द्रमा शुभ होता है। तथा मोक्ष में सूर्य हो तो केवल धर्म नक्षत्र में ही चन्द्रमा प्रशस्त होता है।।१९।।

अशुभ तथा शुभ तिथि-

पौषे पक्षत्यादिका द्वादशैवं
तिथ्यो माघादौ द्वितीयादिकास्ताः ।
कामात्तिस्रः स्युस्तृतीयादिवच्च
याने प्राच्यादौ फलं तत्र वक्ष्ये ।।२०।।

अन्वयः-पौषे पक्षत्यादिकाः द्वादश तिथ्यः एव माघादौ द्वितीयादिकाः ताः तिथयः च (पुनः) कामात् तिस्रः तृतीयादिवत् सन्ति। तत्र प्राच्यादौ याने फलं वक्ष्ये।।२०।।

भाषा-पौषमास में प्रतिपदा (१) से आरम्भ करके द्वादशी तक १२ तिथियाँ एवं माघ आदि मासों में (२) द्वितीया आदि तिथि से आरम्भ करके बारह तिथियाँ लिखें। यहाँ द्वादशी के बाद फिर तिथियाँ प्रतिपदादि को ही लिखें। इस प्रकार चक्र में तिथियों को लिख कर पूर्व आदि दिशाओं को यात्रा के फल समझे। तथा १३,१४,१५ इन तिथियों के क्रम से ३,४,५ तिथियों के सदृश ही फल समझना चाहिये।।२०।।

पूर्वादि के फल-

सौख्यं क्लेशो भीतिरर्थागमश्च शून्यं नैःस्वं निःस्वता मिश्रता च ।
द्रव्यक्लेशो दुःखमिष्टाप्तिरर्थो लाभः सौख्यं मङ्गलं वित्तलाभः ।।२१।।
लाभो द्रव्याप्तिर्धनं सौख्यमुक्तं भीतिर्लाभो मृत्युरर्थागमश्च ।
लाभः कष्टद्रव्यलाभौ सुखञ्च कष्टं सौख्यं क्लेशलाभौ सुखं च ।।२२।।
सौख्यं लाभं कार्यसिद्धिश्च कष्टं क्लेशः कष्टात्सिद्धिरर्थो धनञ्च ।
मृत्युर्लाभो द्रव्यलाभश्च शून्यं शून्यं सौख्यं मृत्युरत्यन्तकष्टम् ।।२३।।

अन्वयः-सौख्यं क्लेशः भीतिः अर्थागमः, शून्यं नैःस्वं निःस्वता मिश्रता च (पुनः) द्रव्यक्लेशः दुःखम् इष्टाप्तिः अर्थः, लाभः सौख्यं मङ्गलं, वित्तलाभः लाभः, द्रव्याप्तिः धनं सौख्यं च उक्तम् । भीतिर्लाभः मृत्युः अर्थागमः,लाभः कष्टद्रव्यलाभौ सुखं च, कष्टं सौख्यं क्लेशलाभौ सुखं च (पुनः) सौख्यं लाभः कार्यसिद्धिः कष्टं, क्लेशः कष्टात् सिद्धिः अर्थो धनं

मृत्युर्लाभः द्रव्यलाभः शून्यं च (पुनः), शून्यं सौख्यं मृत्युः अत्यन्तं कष्टं (इदं) प्राच्यादौ याने क्रमेण फलं ज्ञेयम् ।।२१-२३।।

भाषा–एवं पौषादिक मास के १ आदि तिथियों में क्रम से पूर्वादि दिशाओं में सौख्य, क्लेश, भय, धनागम। २ आदि तिथियों में शून्य, निर्धनता, निर्धनता, मिश्रता। ३ आदि तिथियों में द्रव्यहानि, दुःख, इष्टलाभ, धनप्राप्ति। ४ आदि तिथियों में लाभ, सुख, मङ्गल, धन लाभ। ५ आदि तिथियों में लाभ, धन लाभ, धन, सुख। ६ आदि तिथियों में भय, लाभ, मृत्यु, धनागम। ७ आदि तिथियों में लाभ, कष्ट, धनलाभ, सुख। ८ आदि तिथियों में कष्ट, सुख, क्लेश, सुख। ९ आदि तिथियों में सुख, लाभ, कार्यसिद्धि, कष्ट। १० आदि तिथियों में क्लेश, कष्ट से सिद्धि, धन लाभ, धन लाभ। ११ आदि तिथियों में मृत्यु, लाभ, धनलाभ, शून्य। १२ आदि तिथियों में शून्य, सुख, मृत्यु, कष्ट और अत्यन्त कष्टफल होते हैं। स्पष्टार्थ चित्र पृ० १४२ में देखिये।।२१-२३।।

यात्रा में सर्वाङ्क ज्ञान–

तिथ्यृक्षवारयुतिरद्रिगजाग्नितष्टा
स्थानत्रयेऽत्र वियति प्रथमेऽतिदुःखी ।
मध्ये धनक्षतिरथो चरमे मृतिः स्यात्
स्थानत्रयेऽङ्कयुजि सौख्यजयौ निरुक्तौ ।।२४।।

अन्वयः–तिथ्यृक्षवारयुतिः स्थानत्रये क्रमेण अद्रिगजाग्नितष्टा प्रथमे स्थाने वियति शून्ये सति अतिदुःखी स्यात् । मध्ये वियति धनक्षतिः स्यात् । अथो चरमे वियति मृतिः स्यात् । स्थानत्रयेऽङ्कयुजि सति सौख्यजयौ निरुक्तौ।।२४।।

भाषा–शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से तिथि की संख्या, अश्विनी आदि नक्षत्र, रवि आदि वार इन तीनों की संख्या का योग करके तीन स्थान में रखे। प्रथम स्थान में ७ के, द्वितीय स्थान में ८ के और तृतीय स्थान में ३ के भाग देने से यदि प्रथम स्थान में शेष शून्य हो तो उस दिन यात्रा करने से अत्यन्त दुःखी, द्वितीय स्थान में शून्य हो तो धन हानि और तृतीय स्थान में शेष शून्य हो तो मरण होता है। यदि तीनों स्थान में शेष बचे तो यात्रा करने से सुख और विजय होती है।।२४।।

यात्रा में महाडल तथा भ्रम दोष–

रवेर्भतोऽब्जभोन्मितिर्नगावशेषिता द्व्यगा ।
महाडलो न शस्यते त्रिषण्मिता भ्रमो भवेत् ।।२५।।

अन्वयः–रवेर्भतः अब्जभोन्मितिः नगावशेषिता द्व्यगा (द्विसप्तमिता) चेत्स्युस्तदा। महाडलः स्यात् । स (महाडलः) न शस्यते, यदि त्रिषण्मितः स्यात्तदा भ्रमो भवेत्, सोऽपि न शस्यते।।२५।।

तिथिचक्रम्—

पौ०	मा०	फा०	चै०	वै०	ज्ये०	आ०	श्रा०	भा०	आ०	का०	मा०	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर
१	२	३।१३	४।१४	५।१५	६	७	८	९	१०	११	१२	सौख्य	क्लेश	भीति	अर्थागम
२	३।१३	४।१४	५।१५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	शून्य	निर्धन	निर्धन	मिश्रता
३।१३	४।१४	५।१५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	द्रव्यक्लेश	दुःख	इष्टाप्ति	अर्थ
४।१४	५।१५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३।१३	लाभ	सौख्य	मंगल	वित्तलाभ
५।१५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३।१३	४।१४	लाभ	द्रव्याप्ति	धन	सौख्य
६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३।१३	४।१४	५।१५	भीति	लाभ	मृत्यु	अर्थागम
७	८	९	१०	११	१२	१	२	३।१३	४।१४	५।१५	६	लाभ	कष्ट	द्रव्यलाभ	सुख
८	९	१०	११	१२	१	२	३।१३	४।१४	५।१५	६	७	कष्ट	सौख्य	क्लेश	सुख
९	१०	११	१२	१	२	३।१३	४।१४	५।१५	६	७	८	सुख	लाभ	कार्यसिद्धि	कष्ट
१०	११	१२	१	२	३।१३	४।१४	५।१५	६	७	८	९	क्लेश	कष्टसिद्धि	अर्थ	धन
११	१२	१	२	३।१३	४।१४	५।१५	६	७	८	९	१०	मृत्यु	लाभ	द्रव्यलाभ	शून्य
१२	१	२	३।१३	४।१४	५।१५	६	७	८	९	१०	११	शून्य	सुख	मृत्यु	अतिकष्ट

भाषा–सूर्य जिस नक्षत्र में हो उससे चन्द्र नक्षत्र तक की संख्या जो हो उसमें ७ के भाग देने से २ या ७ (अर्थात् शून्य) शेष बचे तो महाडल नामक दोष अशुभ फल देने वाला होता है। तथा ३, ६ शेष बचे तो भ्रम नाम का दोष समझना। यह भी नाम तुल्य अशुभ फल को देता है। अर्थात् १, ४, या ५ शेष बचे तो यात्रा शुभ होती है॥२५॥

हिम्बर योग–

शशाङ्कभं सूर्यभतोऽत्र गण्यं पक्षादितिथ्या दिनवासरेण ।
युतं नवाप्तं नगशेषकं चेत् स्याद्धिम्बरं तद्गमनेऽतिशस्तम् ॥२६॥

अन्वयः–सूर्यभतः शशाङ्कभं गण्यं तत् पक्षादितिथ्या दिनवासरेण युतं नवाप्तं चेत् नगशेषकं भवेत् तदा हिम्बरं स्यात्, तत् गमने अतिशस्तं स्यात् ॥२६॥

भाषा–सूर्य नक्षत्र से चन्द्र नक्षत्र तक की संख्या तथा शुक्ल प्रतिपदादि तिथि संख्या और रवि आदि वार की संख्या का योग करके उसमें ९ के भाग देने से यदि ७ शेष बचे तो हिम्बर नामक योग होता है। वह यात्रा में अत्यन्त प्रशस्त कहा गया है॥२६॥

जन्म राशि से घातचन्द्र विचार–

भूपञ्चाङ्कद्व्यङ्गदिग्वह्निसप्त-
वेदाष्टेशार्काश्च घाताख्यचन्द्रः ।
मेषादीनां राजसेवाविवादे
यात्रायुद्धाद्ये च नान्यत्र वर्ज्यः ॥२७॥

अन्वयः–मेषादीनां क्रमात् भूपञ्चाङ्कद्व्यङ्ग-दिग्वह्निसप्तवेदाष्टेशार्काः घाताख्यचन्द्रः स्यात् । स राजसेवाविवादे च (पुनः) यात्रायुद्धाद्ये च वर्ज्यः॥२७॥

भाषा–मेष आदि जन्म राशि वालों के लिये क्रम से १, ५, ९, २, ६, १०, ३, ७, ४, ८, ११, १२ इतने संख्यक चन्द्रमा (जन्मराशि से चन्द्रराशि तक की संख्या) घातक है, जो राजसेवा (नौकरी आरम्भ), वाद-विवाद और युद्ध यात्रा में त्याज्य है। अन्य कार्यों में नहीं॥२७॥

घातचन्द्रचक्रम्–

मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	राशि
१	५	९	२	६	१०	३	७	४	८	११	१२	घातचन्द्र

घाततिथि–

गोस्त्रीझषे घाततिथिस्तु पूर्णा भद्रा नृयुक्कर्कटकेऽथ नन्दा ।
कौर्प्याजयोर्नक्रघटे च रिक्ता जया धनुःकुम्भहरौ न शस्ताः ॥२८॥

अन्वयः–गोस्त्रीझषे पूर्णा घाततिथिः स्यात् । तु (पुनः) नृयुक्कर्कटके भद्रा

घाततिथिः। अथ कौर्प्याजयोः नन्दा, नक्रघटे रिक्ता, धनुःकुम्भहरौ जया घाततिथिः (ताः) न शस्ताः सन्ति।।२८।।

भाषा–वृष, कन्या और मीन राशि वालों के लिए पूर्णा (५,१०,१५) तिथि, मिथुन कर्क राशि वालों के लिए भद्रा (२,७,१२) तिथि, वृश्चिक और मेष राशि वालों के लिए नन्दा (१,६,११) तिथि, मकर, तुला राशि वालों के लिए रिक्ता (४,९,१४) तिथि तथा धनु, कुम्भ और सिंह राशि वालों के लिए जया (३,८,१३) तिथि प्रशस्त नहीं अर्थात् घातक है।।२८।।

तिथिघातचक्रम्–

मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	राशि
१ २ ११	५ १० १५	२ ७ १२	२ ७ १२	३ ८ १३	५ १० १५	४ ९ १४	१ ६ ११	३ ८ १३	४ ९ १४	३ ८ १३	५ १० १५	घाततिथि

घातवार–

नक्रे भौमो गोहरिस्त्रीषु मन्दश्चन्द्रो द्वन्द्वेऽर्कोऽजभे ज्ञश्च कर्के।
शुक्रः कोदण्डालिमीनेषु कुम्भे जूके जीवो घातवारा न शस्ताः।।२९।।

अन्वयः–**नक्रे भौमः, गोहरिस्त्रीषु मन्दः, द्वन्द्वे चन्द्रः, अजभे अर्कः, च तथा कर्के ज्ञः, कोदण्डालिमीनेषु शुक्रः, कुम्भे जूके जीवः, इमे घातवारा न शस्ता भवन्ति।।२९।।**

भाषा–मकर राशि वाले को मङ्गल, वृष,सिंह, कन्या राशि वाले को शनि, मिथुन राशि वाले को सोम, मेष राशि वाले को रवि, कर्क राशि वाले को बुध, धनु, वृश्चिक, मीन राशि वाले को शुक्र तथा कुम्भ और तुला राशि वाले को गुरुवार घातक है। जो यात्रा में अशुभ है।।२९।।

घातवारचक्रम् –

मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	राशि
सू.	श.	च.	बु.	श.	श.	बृ.	शु.	शु.	मं.	बृ.	शु.	घातवार

घात नक्षत्र–

मघाकरस्वातिमैत्रमूलश्रुत्यम्बुपान्त्यभम्।
याम्यब्राह्मेशसार्पञ्च मेषादेर्घातभं न सत्।।३०।।

अन्वयः–**मघाकरस्वातिमैत्रमूलश्रुत्यम्बुपान्त्यभम् च (पुनः) याम्यब्राह्मेशसार्पं मेषादेः क्रमात् घातभं (भवति, तत् यात्रायां) न सत् स्यात् ।।३०।।**

भाषा–मेषादि राशि वाले को क्रम से मघा, हस्त, स्वाती, अनुराधा, मूल,

श्रवण, शतभिषा, रेवती, भरणी, रोहिणी, आर्द्रा और श्लेषा ये घात नक्षत्र हैं। जो यात्रादि में अशुभ हैं।।३०।।

नक्षत्रघातचक्रम् –

मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	राशि
म.	ह.	स्वा.	अ.	मू.	श्र.	श.	रे.	भ.	रो.	आ.	श्ले.	घातनक्षत्र

योगिनीविचार–

नवभूम्यः शिववह्नयोऽक्षविश्वेऽर्ककृताः शक्ररसास्तुरङ्गतिथ्यः ।
द्विदिशोऽमावसवश्च पूर्वतः स्युस्तिथयः सम्मुखवामगा न शस्ताः ॥३१॥

अन्वयः–नवभूम्यः शिववह्नयः अक्षविश्वे अर्ककृताः शक्ररसाः तुरङ्गतिथ्यः। द्विदिशः अमावसवश्च तिथयः पूर्वतः स्युः। ताः सम्मुखवामगा न शस्ता भवन्ति।।३१।।

भाषा–१,९ तिथियों में पूर्व दिशा में, ११, ३ तिथियों में अग्नि कोण में, ५,१३ तिथियों में दक्षिण दिशा में, १२,४ में नैर्ऋत्य कोण में, ६,१४ में पश्चिम में, ७,१५ में वायव्य कोण और २,१० तिथियों में उत्तर दिशा में, ८,३० तिथियों में ईशान कोण में योगिनी का वास रहता है। यात्रा में सम्मुख योगिनी और वाम दिशा की योगिनी अशुभ फल देती है।।३१।।

योगिनीवासचक्रम्–

८।३०ई०	१।९पू०	३।११आ०
२।१०उ०	योगिनी वास	५।१३द०
७।१५वा०	६।१४प०	४।१२नै०

घातलग्न–

भूमि (१) द्वय (२) ब्ध्य (४) द्रि (७) दिक् (१०) सूर्य्या (१२)
ङ्गा (६) ष्टा (८) ङ्के (९) शा (११) ग्नि (३) सायकाः (५)।
मेषादिघातलग्नानि यात्रायां वर्जयेत्सुधीः ।।३२।।

अन्वयः–भूमिद्वयब्ध्यद्रिदिक्सूर्याङ्गाष्टाङ्केशाग्निसायकाः (क्रमशः) मेषादि-घातलग्नानि सुधीः यात्रायां वर्जयेत् ।।३२।।

भाषा–मेषादि जन्म राशि वालों के लिये क्रम से १ मेष, २ वृष, ३ कर्क, ७ तुला, १० मकर, १२ मीन, ६ कन्या, ८ वृश्चिक, ९ धनु, ११ कुम्भ, ३ मिथुन और ५ सिंह के घात लग्न हैं। इनको भी यात्रा में विज्ञ जन छोड़ दें।।३२।।

घातलग्नचक्रम्–

मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	राशि
मे.	वृ.	क.	तु.	म.	मि.	क.	वृ.	ध.	कु.	मि	सिं.	घातलग्न

कालपाश–

कौबेरीतो वैपरीत्येन कालो वारेऽर्काद्ये सम्मुखे तस्य पाशः।
रात्रावेतौ वैपरीत्येन गण्यौ यात्रायुद्धे सम्मुखे वर्जनीयौ।।३३।।

अन्वयः–कौबेरीतः (उत्तरदिशमारभ्य क्रमशः) अर्काद्ये वारे कालः स्यात्। तस्य (कालस्य) सम्मुखे पाशश्च स्यात्। एतौ (कालपाशौ) रात्रौ वैपरीत्येन गण्यौ। यात्रायुद्धे च सम्मुखे वर्जनीयौ भवेताम्।।३३।।

भाषा–उत्तर दिशा से आरम्भ कर विलोम क्रम से उत्तर, वायव्य, पश्चिम, नैर्ऋत्य, दक्षिण, अग्नि, पूर्व दिशाओं में, रवि आदि वारों के दिन में काल रहता है और उसके सामने की दिशा में पाश रहता है। रवि आदि वारों की रात्रि में इन दोनों के विपरीत (दक्षिण आदि में काल और उत्तर आदि में पाश) समझना। इन दोनों काल और पाशों को युद्ध यात्रा में त्याग देना चाहिये।।३३।।

कालपाशचक्रम्–

सू.	च.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	दिन
उ.	वा.	प	नै.	द.	आ.	पू.	दिशाकालदिन
द.	आ.	पू	ई.	उ.	वा.	प.	दिशापाशदिन
[illegible]	आ.	पू.	ई.	उ.	वा.	प.	दिशाकालरात्रि
उ.	वा.	प.	नै.	द.	आ.	पू.	दिशापाशरात्रि

भानि स्थाप्यान्यग्निदिक्षु सप्त सप्तानलर्क्षतः।
वायव्याग्नेयदिक्संस्थं पारिघं नैव लङ्घयेत्।।३४।।

अन्वयः–अनलर्क्षतः (कृत्तिकातः) सप्त सप्त भानि पूर्वादिषु दिक्षु (भवन्ति) तत्र वायव्याग्नेयदिक्संस्थं पारिघं नैव लंघयेत्।।३४।।

भाषा–कृत्तिका से आरम्भ करके ७।७ नक्षत्र (अभिजित् सहित) पूर्व आदि दिशा में स्थापना करे और वायव्य कोण से अग्नि कोण तक परिघ दण्ड (रेखा रूप) रहता है। इसलिये जिस प्रकार परिघ दण्ड का उल्लंघन न हो उस प्रकार यात्रा करनी चाहिये।।३४।।

जैसे पूर्व के नक्षत्रों में पश्चिम, उत्तर के नक्षत्रों में दक्षिण जाने से परिघ दण्ड का लंघन होगा। चक्र देखने से स्पष्ट है।।३४।।

परिघदण्डचक्रम् –
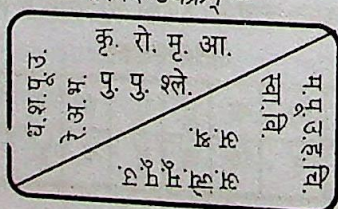
परिघ का परिहार–

अग्नेर्दिशं नृप इयात् पुरुहूतदिग्भै-
रेवं प्रदक्षिणगता विदिशोऽथ कृत्ये ।
आवश्यकेऽपि परिघं प्रविलङ्घ्य गच्छेत्
शूलं विहाय यदि दिक्तनुशुद्धिरस्ति ।।३५।।

अन्वय:–नृप: पुरुहूतदिग्भै: अग्ने: दिशं इयात् (चेत्) एवं प्रदक्षिणगता: विदिश: गच्छेत् । अथ आवश्यके कार्ये शूलं विहाय यदि दिक्तनुशुद्धिरस्ति तदा परिघं प्रविलंघ्य अपि गच्छेत् ।।३५।।

भाषा–पूर्व के नक्षत्रों में आग्नेय दिशा, दक्षिण के नक्षत्रों में नैर्ऋत्य, पश्चिम के नक्षत्रों में वायव्य और उत्तर के नक्षत्रों में ईशान कोण में यात्रा करनी चाहिए। तथा आवश्यक होने पर, यदि दिशाशूल न हो तथा दिग्द्वार लग्न (सम्मुख, दक्षिण राशि का लग्न) हो तो परिघ दण्ड का उल्लंघन करके भी यात्रा करनी चाहिए।।३५।।

सर्वदिग्यात्रा के नक्षत्र और विशेष–

मैत्रार्कपुष्याश्विनभैर्निरुक्ता यात्रा शुभा सर्वदिशासु तज्ज्ञै: ।
वक्री ग्रह: केन्द्रगतोऽस्य वर्गो लग्ने दिनञ्चास्य गमे निषिद्धम् ।।३६।।

अन्वय:–मैत्रार्कपुष्याश्विनभै: सर्वदिशासु तज्ज्ञै: यात्रा शुभा निरुक्ता। वक्री ग्रह: केन्द्रगत: वा लग्ने अस्य वर्ग:, दिनं च गमे (यात्रायां) निषिद्धम् ।।३६।।

भाषा–अनुराधा, हस्त, अश्विनी और पुष्य इन चार नक्षत्रों में सभी दिशाओं में यात्रा प्रशस्त है। अर्थात् इनमें परिघ दण्ड उल्लंघन, पृष्ठ चन्द्र और शूल का दोष नहीं होता है। तथा यात्रा समय में वक्रगति ग्रह केन्द्र में हो वा वक्री ग्रह के षड्वर्ग (राशि नवमांशादि) लग्न में हो और वक्री ग्रह का दिन यह सब यात्रा में निषिद्ध कहा गया है।।३६।।

अयनशुद्धि–

सौम्यायने सूर्यविधू तदोत्तरां प्राचीं व्रजेत्तौ यदि दक्षिणायने ।
प्रत्यग्यमाशाञ्च तयोर्दिवानिशं भिन्नायनत्वेऽथ वधोऽन्यथा भवेत् ।।३७।।

अन्वय:–यदि सूर्यविधू सौम्यायने स्यातां तदा उत्तरां प्राचीं दिशं व्रजेत् । यदि तौ (सूर्यविधू) दक्षिणायने तदा प्रत्यग्यमाशां व्रजेत् । अथ च तयोर्भिन्नायनत्वे क्रमेण दिवानिशं व्रजेत् । अन्यथा वध: भवेत् ।।३७।।

भाषा–यदि सूर्य और चन्द्रमा दोनों उत्तरायण (मकरादि ६ राशि) में हों तो उत्तर और पूर्व की यात्रा करे। यदि दोनों दक्षिणायन (कर्कादि ६ राशि) में हों तो पश्चिम और दक्षिण की यात्रा करे। दोनों भिन्न अयन में हों तो जिधर सूर्य हो

उधर दिन में तथा जिधर चन्द्रमा हो उधर रात्रि में यात्रा करनी चाहिए। अन्यथा मरण होता है।।३७।।

तीन तरह का सम्मुख चक्र-

उदेति यस्यां दिशि यत्र याति गोलभ्रमाद् वाऽथ ककुब्भसंघे ।
त्रिधोच्यते सम्मुख एव शुक्रो यत्रोदितस्तां तु दिशं न यायात् ।।३८।।

अन्वयः-शुक्रः यस्यां दिशि उदेति, गोलभ्रमात् यत्र (यस्यां दिशि) याति, अथवाककुब्भसंघे यत्र तिष्ठति त्रिधा सम्मुख एवोच्यते। शुक्रः यत्र उदितः तां दिशं तु न यायात् (गच्छेत्)।।३८।।

भाषा-सूर्य सान्निध्य से अस्त के बाद जिस दिशा में शुक्र उदित हुआ हो तथा भ्रमणवश आकाश गोल में जिस दिशा में वर्तमान हो और जिस दिशा के नक्षत्र में हों एवं तीनों प्रकार से शुक्र सम्मुख समझा जाता हो उस दिशा में यात्रा न करनी चाहिए।।३८।।

शुक्र का वक्रादि दोष और अपवाद-

वक्रास्तनीचोपगतेः भृगोः सुते राजा व्रजन्याति वशं हि विद्विषाम् ।
बुधोऽनुकूलो यदि तत्र सञ्चलन् रिपुञ्जयेन्नैव जयः प्रतीन्दुजे ।।३९।।

अन्वयः-भृगोः सुते वक्रास्तनीचोपगतेः व्रजन् सन् राजा हि (निश्चयेन) विद्विषां (शत्रूणां) वशं याति। बुधः अनुकूलः तत्र संचलन् रिपून् जयेत्। प्रतीन्दुजे (बुधे) सम्मुखे सति जयः नैव स्यात् ।।३९।।

भाषा-शुक्र जिस समय वक्र, अस्त या अपने नीच में हो उस समय में यात्रा करने वाला राजा शत्रु के वश में हो जाता है। यदि बुध अनुकूल हो तो यात्रा करने से शत्रुओं को जीतता है। किन्तु सम्मुख बुध हो तो यात्रा करने से विजय नहीं होती है।।३९।।

सम्मुख शुक्र का अपवाद-

यावच्चन्द्रः पूषभात्कृत्तिकाद्ये पादे शुक्रोऽन्धो न दुष्टोऽग्रदक्षे ।
मध्ये मार्गे भार्गवास्तेऽपि राजा तावत्तिष्ठेत् सम्मुखत्वेऽपि तस्य ।।४०।।

अन्वयः-पूषभात् कृत्तिकाद्ये पादे यावत् चन्द्रः (तिष्ठति) तावत् शुक्रः अन्धः (स्यात्) तदा अग्रदक्षे दुष्टः न (स्यात्), मार्गे मध्ये भार्गवास्ते अपि वा तस्य सम्मुखत्वे राजा तावत्तिष्ठेत् ।।४०।।

भाषा-जब तक रेवती, अश्विनी, भरणी और कृत्तिका के प्रथम चरण में शुक्र रहता है तब तक वह अन्ध रहता है, इसलिए उस समय में सम्मुख या दक्षिण शुक्र का दोष नहीं होता है। युद्ध यात्रा करने वाले राजा को चाहिए कि मध्यमार्ग में जाने पर भी यदि शुक्र अस्त पड़ जाय तो जब तक (शुक्रोदय तक) वहाँ ठहर जाय। तथा सम्मुख पड़े तो भी वहाँ ठहर जाना चाहिये।।४०।।

त्याज्य लग्न–

कुम्भकुम्भांशकौ त्याज्यौ सर्वथा यत्नतो बुधैः ।
तत्र प्रयातुर्नृपतेरर्थनाशः पदे पदे ।।४१।।

अन्वयः–**बुधैः पण्डितैः यत्नतः सर्वथा कुम्भकुम्भांशकौ त्याज्यौ। यतः तत्र प्रयातुः नृपतेः पदे पदे अर्थनाशः स्यात् ।।४१।।**

भाषा–कुम्भ लग्न, कुम्भ का नवमांश लग्न में हो तो उसको यात्रा में त्याग कर देना चाहिये। क्योंकि उसमें यात्रा करने वाले राजा का पद-पद में अर्थ का नाश होता है।।४१।।

निषिद्ध और शुभ लग्न–

अथ मीनलग्न उत वा तदंशके चलितस्य वक्रमिह वर्त्म जायते ।
जनिलग्नजन्मभपती शुभग्रहौ भवतस्तदा तदुदये शुभो गमः ।।४२।।

अन्वयः–**अथ मीनलग्ने उत वा तदंशके चलितस्य वर्त्म (मार्गम्) इह वक्रं जायते। यदि जनिलग्नजन्मभपती शुभग्रहौ भवतः तदा तदुदये गमः शुभः स्यात्।।४२।।**

भाषा–मीन लग्न या मीन के नवमांश में यात्रा करने से मार्ग वक्र होता है (अर्थात् उसको व्यर्थ भटकना पड़ता है)। यदि जन्म लग्न या जन्म की राशि का स्वामी शुभग्रह हो तो उस लग्न में यात्रा शुभप्रद होती है।।४२।।

दूसरा अनिष्ट लग्न–

जन्मराशितनुतोऽष्टमेऽथवा स्वारिभाच्च रिपुभे तनुस्थिते ।
लग्नगास्तदधिपा यदाथवा स्युर्गतं हि नृपतेर्मृतिप्रदम् ।।४३।।

अन्वयः–**जन्मराशितनुतः अष्टमे अथवा स्वारिभात् रिपुभे तनुस्थिते सति, अथवा तदधिपाः यदि लग्नगाः स्युः तदा नृपतेः गतं (गमनं) मृतिप्रदं स्यात् ।।४३।।**

भाषा–अपनी जन्म राशि से या जन्म लग्न से ८ आठवीं राशि अथवा शत्रु की राशि से ६ठीं राशि लग्न में हो अथवा उनके स्वामी लग्न में हों तो यात्रा करने वाले राजा का मरण होता है।।४३।।

शुभ लग्न और नौका यात्रा–

लग्ने चन्द्रे वापि वर्गोत्तमस्थे यात्रा प्रोक्ता ।ाञ्छितार्थैकदात्री ।
अम्भोराशौ वा तदंशे प्रशस्तं नौकायानं सर्वसिद्धिप्रदायि ।।४४।।

अन्वयः–**लग्ने अपि वा चन्द्रे वर्गोत्तमस्थे सति यात्रा वाञ्छितार्थैकदात्री प्रोक्ता। अम्भोराशौ वा तदंशे (जलचरनवमांशे) नौकायानं सर्वसिद्धिप्रदायि स्यात्।।४४।।**

भाषा–लग्न या चन्द्रमा वर्गोत्तम नवमांश में हो तो उस समय में यात्रा करने से अभीष्ट सिद्ध होता है। तथा जलचर राशि या जलचर नवमांश लग्न में हो तो नौका द्वारा यात्रा सर्वथा सिद्धिप्रद होती है।।४४।।

दिग्द्वार लग्न में यात्रा का फल–

दिग्द्वारभे लग्नगते प्रशस्ता यात्रार्थदात्री जयकारिणी च ।
हानिं विनाशं रिपुतो भयञ्च कुर्यात्तथा दिक्प्रतिलोमलग्ने ।।४५।।

अन्वयः–दिग्द्वारभे लग्नगते सति यात्रा प्रशस्ता, अर्थदात्री जयकारिणी च भवेत्। तथा दिक्प्रतिलोमलग्ने यात्रा हानिं विनाशं रिपुतः भयं च कुर्यात्।।४५।।

भाषा–गन्तव्य दिशा की राशि लग्न में हो तो यात्रा करने से धनलाभ और विजय होता है। तथा पृष्ठदिशा की राशि लग्न में हो तो हानि, मृत्यु और शत्रुओं का भय होता है।।४५।।

शुभ लग्न–

राशिः स्वजन्मसमये शुभसंयुतो यो
यः स्वारिभान्निधनगोऽपि च वेशिसंज्ञः ।
लग्नोपगः स गमने जयदोऽथ भूप-
योगैर्गमो विजयदो मुनिभिः प्रदिष्टः ।।४६।।

अन्वयः–स्वजन्मसमये यः राशिः शुभसंयुतः, यः स्वारिभात् निधनगः। अपि च यः वेशिसंज्ञः स लग्नोपगः जयदः स्यात् । अथ भूपयोगैः गमः विजयदः प्रदिष्टः।।४६।।

भाषा–अपने जन्म समय में शुभ ग्रह से युत जो राशि और शत्रु की जन्म राशि से ८वीं तथा जन्मकालिक सूर्य से द्वितीय राशि यदि यात्रा लग्न में हो तो विजय होता है। तथा जातक संहिता में जो राजयोग कहे गये हैं उनमें भी यात्रा करने से विजय होता है ऐसा मुनियों ने कहा है।।४६।।

दिशाओं के स्वामी–

सूर्यः सितो भूमिसुतोऽथ राहुः शनिः शशी ज्ञश्च बृहस्पतिश्च ।
प्राच्यादितो दिक्षु दिदिक्षु चापि दिशामधीशाः क्रमतः प्रदिष्टाः।।४७।।

अन्वयः–अथ सूर्यः सितः भूमिसुतः राहुः शनिः शशी ज्ञः च बृहस्पतिः (इमे) दिक्षु विदिक्षु अपि च (क्रमशः) प्राच्यादितः दिशः अधीशाः (स्वामिनः) प्रदिष्टाः।।४७।।

भाषा–१ सूर्य, २ शुक्र, ३ मङ्गल, ४ राहु, ५ शनि, ६ चंद्र, ७ बुध और ८ बृहस्पति ये क्रम से पूर्वादि दिशाओं के स्वामी हैं।।४७।।

पू०	आ०	द०	नै०	प०	वा०	उ०	ई०	दिशा
सू.	शु.	मं.	रा.	श.	चं.	बु.	बृ.	स्वामी

इनका प्रयोजन–

केन्द्रे दिगधीशे गच्छेदवनीशः ।
लालाटिनि तस्मिन्नेयादरिसेनाम् ।।४८।।

अन्वयः-दिगधीशे केन्द्रे सति अवनीशः गच्छेत् । तस्मिन् दिगधीशे लालाटिनि सति अवनीशः अरिसेनां न इयात् नो गच्छेत् ।।४८।।

भाषा-गन्तव्य दिशा का स्वामी केन्द्र में हो तो राजा को यात्रा करनी चाहिये और दिशा का स्वामी लालाटी हो तो शत्रु की सेना पर चढ़ाई करने के लिये नहीं चलना चाहिये।।४८।।

लालाटिकयोग लक्षण-

प्राच्यादौ तरणिस्तनौ भृगुसुतो लाभव्यये भूसुतः
कर्मस्थोऽथ तमो नवाष्टमगृहे सौरिस्तथा सप्तमे ।
चन्द्रः शत्रुगृहात्मजेऽपि च बुधः पातालगो गीष्पति-
र्वित्तभ्रातृगृहे विलग्नसदनाल्लालाटिकाः कीर्त्तिताः ।।४९।।

अन्वयः-अथ तरणिः तनौ (लग्ने), भृगुसुतः लाभव्यये, भूसुतः कर्मस्थः, तमः (राहुः) नवाष्टमगृहे तथा सौरिः सप्तमे, चन्द्रः शत्रुगृहात्मजे अपि च बुधः पाताले, गीष्पतिः वित्तभ्रातृगृहे (स्थितः) इमे विलग्नसदनात् प्राच्यादौ लालाटिकाः कीर्त्तिताः।।४९।।

भाषा-लग्न में सूर्य हो तो पूर्व दिशा में लालाटी होता है। लग्न से ११,१२वें भाव में शुक्र हो तो अग्निकोण में, १०वें भाव में मङ्गल हो तो दक्षिण में, ८वें और ९वें राहु हो तो नैर्ऋत्य कोण में, ७वें भाव में चन्द्रमा हो तो वायव्य कोण में, ४थे भाव में बुध हो तो उत्तर दिशा में, ३,२ भाव में गुरु हो तो ईशान कोण मे यात्रा करने में लालाटी होता है।।४९।।

प्रस्थान क्रम से यात्रा का समय-

मृगे गत्वा शिवे स्थित्वादितौ गच्छञ्जयेद्रिपून् ।
मैत्रे प्रस्थाय शाक्रे हि स्थित्वा मूले व्रजंस्तथा ।।५०।।

अन्वयः-मृगे (मृगशिरानक्षत्रे) गत्वा, शिवे (आर्द्रायां) स्थित्वा,अदितौ (पुनर्वसौ) गच्छन् सन् रिपून् जयेत् । तथा मैत्रे (अनुराधानक्षत्रे) प्रस्थाय, शाक्रे (ज्येष्ठायां) स्थित्वा, मूले व्रजन् हि निश्चयेन रिपून् जयेत् ।।५०।।

भाषा-मृगशिरा नक्षत्र में गन्तव्य दिशा में प्रस्थान करके आर्द्राभर विश्राम करे फिर पुनर्वसु में यात्रा करे तो वह निश्चय शत्रुओं को जीतता है। एवं अनुराधा में प्रस्थान करके ज्येष्ठा में विश्राम करे, पुनः मूल में चले तो भी शत्रुओं को जीतता है।।५०।।

प्रस्थाय हस्तेऽनिलतक्षधिष्ण्ये स्थित्वा जयार्थी प्रवसेद् द्विदैवे ।
वस्वन्त्यपुष्ये निजसीम्नि चैकरात्रोषितः क्ष्मां लभतेऽवनीशः ।।५१।।

अन्वयः-जयार्थी अवनीशः हस्ते प्रस्थाय अनिलतक्षधिष्ण्ये स्थित्वा, द्विदैवे प्रवसेत्। च (पुनः) वस्वन्त्यपुष्ये निजसीम्नि एकरात्रोषितः अवनीशः क्ष्मां (मेदिनीं) लभते।।५१।।

भाषा–विजय चाहने वाले को चाहिये कि हस्त में प्रस्थान करके, चित्रा और स्वाती में विश्राम कर पुनः विशाखा में यात्रा करे। धनिष्ठा, रेवती या पुष्य में यात्रा करके यदि अपने गाँव की सीमा में एक रात्रि वासकर चले तो वह राजा अपने शत्रु की भूमि को प्राप्त करता है।।५१।।

कालबल–

उषःकालो विना पूर्वां गोधूलिः पश्चिमां विना।
विनोत्तरां निशीथः सन् याने याम्यां विनाऽभिजित् ।।५२।।

अन्वयः–पूर्वां विना उषःकालः, पश्चिमां विना गोधूलिः, उत्तरां विना निशीथः, याने (यात्रायां) सन् (शुभः) स्यात् । तथा याम्यां विना अभिजिन्मुहूर्तः सन् स्यात् ।।५२।।

भाषा–पूर्व दिशा को छोड़ उषाकाल में अन्य सब दिशाओं में यात्रा शुभ है। पश्चिम को छोड़कर गोधूलि में एवं उत्तर को छोड़कर मध्य रात्रि में तथा अभिजित् (मध्याह्न) काल में दक्षिण को छोड़कर अन्य दिशाओं की यात्रा शुभ है।।५२।।

लग्नादि भावों की संज्ञा–

लग्नाद्भावाः क्रमाद्देह १ कोश २ धानुष्क ३ वाहनम् ४।
मन्त्रो५ऽरि६मार्ग७आयुश्च८हृद्९व्यापारा१०गम११व्ययाः१२।।५३।।

अन्वयः–देहकोशधानुष्कवाहनम् मंत्रः अरिः मार्गः आयुः च (पुनः) हृद्व्यापारागमव्ययाः (एते क्रमशः) लग्नात् भावाः (कथिताः)।।६३।।

भाषा–१ देह, २ कोश, ३ धानुष्क, ४ वाहन, ५ मंत्र, ६ अरि, ७ मार्ग, ८ आयु, ९ हृदय, १० व्यापार, ११ आगम और १२ व्यय ये क्रम से लग्न आदि द्वादश भावों के नाम हैं।।५३।।

लग्न में विशिष्ट शुभाशुभ–

केन्द्रे कोणे सौम्यखेटाः शुभाः स्युर्याने पापास्त्र्यायषट्खेषु चन्द्रः।
नेष्टो लग्नान्त्यारिरन्ध्रे शनिः खेऽस्ते शुक्रो लग्नेट् नगान्त्यारिरन्ध्रे।।५४।।

अन्वयः–केन्द्रे कोणे सौम्यखेटाः त्र्यायायषट्खेषु पापाः याने शुभाः स्युः, चन्द्रः लग्नान्त्यारिरन्ध्रे, नेष्टः शनिः खे नेष्टः स्यात्, शुक्रः अस्ते नेष्टः, नगान्त्यारिरन्ध्रे, लग्नेट् नेष्टः स्यात् ।।५४।।

भाषा–यात्रा में शुभ ग्रह १,४,७,१०,५,९ स्थानों में तथा पापग्रह ३,६,१०,११ भावों में शुभप्रद होते हैं। चन्द्रमा लग्न, १२,६,८ भावों में, शनि १० में, शुक्र ७ में तथा लग्नेश ७,१२,६,८ भावों में अशुभ होता है।।५४।।

सिद्धियोग–

योगात्सिद्धिर्धरणिपतीनामृक्षगुणैरपि भूदेवानाम् ।
चौराणां शुभशकुनैरुक्ता भवति मुहूर्त्तादपि मनुजानाम् ।।५५।।

अन्वयः–धरणिपतीनां योगयात् , भूदेवानां (विप्राणां) ऋक्षगुणैः, चौराणां शुभशकुनैः सिद्धिः उक्ता। मनुजानां मुहूर्तात् अपि सिद्धिः भवति।।५५।।

भाषा–आगे वर्णित योगों में यात्रा करने से क्षत्रियों की अभीष्ट सिद्धि होती है। विहित नक्षत्रों के गुणों से ब्राह्मणों की, सुन्दर शकुनों से चोरों की और शुभ मुहूर्त्त से अन्य जनों की यात्रा सिद्धिप्रद होती है।।५५।।

यात्राकाल के विजय योग–

सहजे रविर्दशमे शशी तथा शनिमङ्गलौ रिपुगृहे सितः सुते।
हिबुके बुधो गुरुरपीह लग्नगः स जयत्यरीन् प्रचलितोऽचिरान्नृपः ।।५६।।

अन्वयः–रविः सहजे, शशी दशमे, तथा शनिमङ्गलौ रिपुगृहे, सितः सुते, हिबुके (चतुर्थे) बुधः, गुरुः अपि लग्नगः (भवेत् चेत्) इह यः नृपः प्रचलितः स अचिरात् (शीघ्रं) अरीन् जयति।।५६।।

भाषा–यदि लग्न से ३रे भाव में सूर्य, १०वें में चन्द्रमा, ६ षष्ठभाव में शनि और मङ्गल, ५वें में शुक्र, ४थे में बुध और लग्न में गुरु हो तो ऐसे समय में यात्रा करने वाला शत्रुओं को जीतता है।।५६।।

जय योग–

भ्रातरि सौरिर्भूमिसुतो वैरिणि लग्ने देवगुरुः।
आयगतेऽर्के शत्रुजयश्चेदनुकूलो दैत्यगुरुः ।।५७।।

अन्वयः–भ्रातरि सौरिः, वैरिणि भूमिसुतः, लग्ने देवगुरुः, आयगते अर्के च (पुनः) दैत्यगुरुश्चेत् अनुकूलः स्यात्तदा शत्रुजयः स्यात् ।।५७।।

भाषा–यदि ३ में शनि, ६में मंगल, लग्न में गुरु, ११ में सूर्य तथा शुक्र अनुकूल (पृष्ठ या वाम भाग) हो तो विजय होता है।।५७।।

दूसरा जय योग–

तनौ जीव इन्दुर्मृतौ वैरिगोऽर्कः।
प्रयातो महेन्द्रो जयत्येव शत्रून् ।।५८।।

अन्वयः–यदि तनौ (लग्ने) जीवः (गुरुः) मृतौ इन्दुः, वैरिगः अर्कः, स्यात्तदा प्रयातः (प्रचलितः) महेन्द्रः शत्रून् जयत्येव।।५८।।

भाषा–लग्न में गुरु, ८ में चन्द्रमा, ६ में सूर्य हो तो ऐसे समय में यात्रा करने वाला राजा शत्रु को निश्चय जीतता ही है।।५८।।

जय योग–

लग्नगतः स्याद्देवपुरोधाः।
लाभधनस्थैः शेषनभोगैः ।।५९।।

अन्वयः–यदि देवपुरोधा लग्नगतः स्यात् , शेषनभोगैः लाभधनस्थैः सद्भिः नृपः शत्रून् जयत्येव।।५९।।

भाषा–लग्न में गुरु हो तथा अन्य सब ग्रह यदि २,११ भावों में हो तो निश्चय विजय होती ही है।।५९।।

जय योग–

द्यूने चन्द्रे समुद्रयगेऽर्के जीवे शुक्रे विदि धनसंस्थे ।
ईदृग्योगे चलति नरेशो जेता शत्रून् गरुड इवाहीन् ।।६०।।

अन्वयः–चन्द्रे द्यूने, अर्के समुद्रयगे, जीवे शुक्रे विदि धनसंस्थे, ईदृग्योगे यदि नरेशः चलति तदा सः गरुडः अहीनिव शत्रून् जेता।।६०।।

भाषा–७वें भाव में चन्द्रमा हो, लग्न में सूर्य हो, बृहस्पति शुक्र और बुध ये तीनों द्वितीय भाव में हो तो ऐसे योग में चलनेवाला राजा शत्रुओं को उसी प्रकार जीतता है जैसे सर्पों को गरुड़।।६०।।

पुनः जय योग–

वित्तगतः शशिपुत्रो भ्रातरि वासरनाथः ।
लग्नगतो भृगुपुत्रः स्युः शलभा इव सर्वे ।।६१।।

अन्वयः–शशिपुत्रः वित्तगतः वासरनाथः भ्रातरि, भृगुपुत्रे लग्नगते सति सर्वे शत्रवः शलभा इव स्युः।।६१।।

भाषा–द्वितीय भाव में बुध, ३रे में सूर्य और लग्न में शुक्र हो तो यात्रा करने वाले के सब शत्रु उसी प्रकार नष्ट हो जाते हैं जैसे दीपक पर पतंग अपने आप गिरकर नष्ट होते हैं।।६१।।

जय योग–

उदये रविर्यदि सौरिररिगः शशी दशमेऽपि ।
वसुधापतिर्यदि याति रिपुवाहिनी वशमेति ।।६२।।

अन्वयः–यदि रविः उदये, सौरिः अरिगः, शशी दशमे (संस्थिते) यदि वसुधाधिपतिः याति तदा रिपुवाहिनी वशम् एति।।६२।।

भाषा–लग्न में सूर्य, ६ में शनि, १० में चन्द्रमा हो तो ऐसे योग में जो राजा यात्रा करता है उसके वश में शत्रुओं की सेना हो जाती है।।६२।।

जय योग–

तनौ शनिकुजौ रविर्दशमे बुधो भृगुसुतोऽपि लाभदशमे ।
त्रिलाभरिपुभेषु भूसुतशनी गुरुज्ञभृगुजास्तथा बलयुताः ।।६३।।

अन्वयः–तनौ शनिकुजौ, रविर्दशमे, बुधो भृगुसुतोऽपि लाभदशमे, भृगुसुतशनी त्रिलाभरिपुभेषु (स्याताम्) गुरुज्ञभृगुजाः बलयुताः (स्युश्चेत्तदा) जयः स्यात् ।।६३।।

भाषा–लग्न में शनि तथा मंगल, १० में सूर्य, बुध और शुक्र ११ एवं १० में, ३,११,६ में मंगल तथा शनि हो और गुरु, बुध एवं शुक्र ये तीनों बली हों तो ऐसे योग में यात्रा करने वाला राजा विजयी होता है।।६३।।

जय योग-

समुदयगे विबुधगुरौ मदनगते हिमकिरणे ।
हिबुकगतौ बुधभृगुजौ सहजगताः खलखचराः ।।६४।।

अन्वयः-विबुधगुरौ समुदयगे, हिमकिरणे मदनगते (सति), बुधभृगुजौ हिबुकगतौ, खलखचराः सहजगताः (भवन्ति) तदाऽपि जयः स्यात् ।।६४।।

भाषा-लग्न में गुरु, ७ में चन्द्रमा, ४ में बुध, शुक्र और अन्य सब पाप ग्रह ३ में हों तो भी विजय होती है।।६४।।

जय योग-

त्रिदशगुरुस्तनुगो मदने हिमकिरणो रविरायगतः ।
सितशशिजावपि कर्मगतौ रविसुतभूमिसुतौ सहजे ।।६५।।

अन्वयः-त्रिदशगुरुः (बृहस्पतिः) तनुगः, हिमकिरणः मदने, रविः आयगतः, सितशशिजौ कर्मगतौ, रविसुतभूमिसुतौ सहजे (स्थितौ सन्तौ) तथापि जयः।।६५।।

भाषा-लग्न में गुरु, ७ में चन्द्रमा, ११ में सूर्य, १० में शुक्र और बुध तथा ३ मे शनि, मंगल हों तो भी विजय होती है।।६५।।

जय योग-

देवगुरौ वा शशिनि तनुस्थे वासरनाथे रिपुभवनस्थे ।
पञ्चमगेहे हिमकरपुत्रः कर्मणि सौरिः सुहृदि सितश्च ।।६६।।

अन्वयः-देवगुरौ वा शशिनि तनुस्थे, वासरनाथे रिपुभवनस्थे, हिमकरपुत्रः पञ्चमगेहे (स्थितः), सौरिः कर्मणि च (पुनः) सितः सुहृदि (स्यात्तदाऽपि जयः)।।६६।।

भाषा-लग्न में गुरु या चन्द्रमा हो, ६ में सूर्य, ४ में बुध, १० में शनि और ४ में शुक्र हो तो भी राजा विजयी होता है।।६६।।

जय योग-

हिमकिरणसुतो बली चेत्तनौ त्रिदशपतिगुरुर्हि केन्द्रस्थितः।
व्ययगृहसहजारिधर्मस्थितो यदि च भवति निर्बलश्चन्द्रमाः।।६७।।

अन्वयः-बली हिमकिरणसुतः तनौ चेत्, त्रिदशपतिगुरुः केन्द्रस्थितः, च (पुनः) यदि निर्बलः चन्द्रमाः व्ययगृहसहजारिधर्मस्थितः भवति (तदा) यातुः जय (एव) ।।६७।।

भाषा-लग्न में बलवान् बुध हो, केन्द्र में बृहस्पति हो और निर्ब्रल चन्द्रमा १२, ३, ६, ९ भाव में हो तो यात्रा करने से विजय होता है।।६७।।

विजय योग-

अशुभखगैरनवाष्टमदस्थैर्हिबुकसहोदरलाभगृहस्थः ।
कविरिह केन्द्रगगीष्पतिदृष्टो वसुचयलाभकरः खलु योगः।।६८।।

अन्वयः-अशुभखगैः अनवाष्टमदस्थैः कविः हिबुकसहोदरलाभगृहस्थः केन्द्रःगगीष्पतिदृष्टः इह खलु वसुचयलाभकरः योगः स्यात् ।।६८।।

भाषा–यदि ७,८,९ भावों से भिन्न भावों में पाप ग्रह हों तथा शुक्र यदि ४,३,११ भाव में हो, केन्द्रगत बृहस्पति से देखा जाता हो तो यह योग यात्रा करने वाले को धन समूह दिलाने वाला होता है॥६८॥

जय योग–

रिपुलग्नकर्म्महिबुके शशिजे परिवीक्षिते शुभनभोगमनैः ।
व्ययलग्नमन्मथगृहेषु जयः परिवर्जितेष्वशुभनामधरैः ॥६९॥

अन्वयः–शशिजे रिपुलग्नकर्महिबुके (गते) शुभनभोगमनैः परिवीक्षिते अशुभनामधरैः (पापग्रहैः) व्ययलग्नमन्मथगृहेषु परिवर्जितेषु जय एव स्यात् ॥६९॥

भाषा–यदि बुध ६,१,१०,४ भाव में हो, उस पर शुभ ग्रह की दृष्टि हो तथा पाप ग्रह यदि १२,१,७ इन भावों से भिन्न भाव में हों तो ऐसे योग में चलने से भी विजय होता है॥६९॥

जय लाभ योग–

लग्ने यदि जीवः पापा यदि लाभे कर्म्मण्यपि चेद्राज्याधिगमः स्यात् ।
द्यूने बुधशुक्रौ चन्द्रो हिबुके वा तद्वत्फलमुक्तं सर्वैर्मुनिवर्यैः ॥७०॥

अन्वयः–यदि जीवः लग्ने, पापाः यदि लाभे अपि वा कर्मणि चेत् स्युः तदा राज्याधिगमः स्यात् । वा बुधशुक्रौ द्यूने चन्द्रः हिबुके स्यात्तदापि सर्वैरपि मुनिवर्यैः तद्वत् फलमुक्तम् ॥७०॥

भाषा–लग्न में गुरु हो, ११ में या १० में पापग्रह हो तो इस योग में यात्रा करने से राज्यलाभ होता है। अथवा ७वें में बुध, शुक्र, ४ में चन्द्रमा हो तो भी सब मुनियों ने वही फल (राज्यलाभ) कहा है॥७०॥

राज्यप्राप्ति योग–

रिपुतनुनिधने शुक्रजीवेन्दवो ह्यथ बुधभृगुजौ तुर्यगेहस्थितौ ।
मदनभवनगश्चन्द्रमा अम्बुगः शशिसुतभृगुजान्तर्गतश्चन्द्रमाः ॥७१॥

अन्वयः–शुक्रजीवेन्दवः रिपुतनुनिधने (स्थिताः) अथ बुधभृगुजौ तुर्य गेहस्थितौ, चन्द्रमा अम्बुगः, चन्द्रमा मदनभवनगः, वा शशिसुतभृगुजान्तर्गतः स्यात्तदाऽपि यातुः जय एव स्यात् ॥७१॥

भाषा–६,१,८ भावों में यथाक्रम शुक्र, गुरु, चन्द्रमा हो अथवा चतुर्थ में बुध और शुक्र हो, चन्द्रमा सप्तम में हो अथवा ४ चतुर्थ चन्द्रमा बुध शुक्र के बीच में हो तो इन सब योगों में भी राज्य लाभ होता है॥७१॥

राज्यप्राप्ति योग–

सितजीवभौमबुधभानुतनूजास्तनुमन्मथारिहिबुकत्रिगृहे चेत् ।
क्रमतोऽरिसोदरखशात्रवहोराहिबुकायगैर्गुरुदिनेऽखिलखेटैः ॥७२॥

अन्वयः–सितजीवभौमबुधभानुतनूजाः तनुमन्मथारिहिबुकत्रिगृहे (स्थिताः स्युः)

चेत्तदाऽपि जय एव। बा गुरुदिने अखिलखेटैः (क्रमतः) अरिसोदरखशात्रवहोराहिबुकायगैः सद्भिः यातुः जयः स्यात् ।।७२।।

भाषा–१,७,६,४,३ भावों में क्रम से शुक्र, गुरु, मङ्गल, बुध, शनि हो तो राज्यलाभ होता है। अथवा बृहस्पति के दिन यदि सूर्यादि ग्रह क्रम से ६,३,१०,६,१,४,११ भावों में हो तो ऐसे योग में भी यात्रा करने से लाभ होता है।।७२।।

विजय योग–

सहजे कुजो निधनगश्च भार्गवो मदने बुधो रविररौ तनौ गुरुः ।
अथ चेत्स्युरिज्यसितभानवो जलत्रिगता हि सौरिरुधिरौ रिपुस्थितौ ।।७३।।

अन्वयः–कुजः सहजे, भार्गवश्च निधनगः, बुधः मदने, रविः अरौ गुरुः, तनौ अथ चेत् इज्यसितभानवः जलत्रिगताः सौरिरुधिरौ रिपुस्थितौ (स्याताम् तदा) हि (निश्चयेन) जयः स्यात् ।।७३।।

भाषा–३रे मङ्गल, ८ में शुक्र, ७ में बुध, ६ में सूर्य, लग्न में गुरु हो तो विजय होता है। अथवा ४, ३ भाव में गुरु, शुक्र, सूर्य हों और ६ में शनि, मंगल हों तो भी यात्रा करने से विजय होता है।।७३।।

योग अधियोग योगाधियोग–

एको ज्ञेज्यसितेषु पञ्चमतपःकेन्द्रेषु योगस्तथा
द्वौ चेत्तेष्वधियोग एषु सकला योगाधियोगः स्मृतः ।
योगे क्षेममथाधियोगगमने क्षेमं रिपूणां वध-
श्चाथो क्षेमयशोऽवनीश्च लभते योगाधियोगे व्रजन् ।।७४।।

अन्वयः–ज्ञेज्यसितेषु एकः यदि पञ्चमतपः केन्द्रेषु तदा योगः, द्वौ चेत् तदा अधियोगः स्यात् । एषु यदि सकलाः स्थिताः तदा योगाधियोगः स्यात् । अथ योगे (गमने विहिते सति) क्षेमं, अधियोगगमने रिपूणां वधं च लभते, योगाधियोगे व्रजन् क्षेमयशोऽवनीश्च लभते।।७४।।

भाषा–बुध, गुरु और शुक्र इनमें कोई एक ग्रह यदि लग्न से ५, ९,१,४,७,१० में हो तो योग, यदि दो ग्रह उक्त स्थान में हों तो अधियोग और तीनों उक्त स्थान में हों तो योगाधियोग कहलाता है। योग में यात्रा करने से कल्याण तथा अधियोग में चलने से कल्याण और शत्रुओं का नाश एवं योगाधियोग में चलने से कल्याण, सुयश और भूमि का लाभ होता है।।७४।।

विजया दशमी मुहूर्त–

इषमासि सिता दशमी विजया शुभकर्मसु सिद्धिकरी कथिता ।
श्रवणर्क्षयुता सुतरां शुभदा नृपतेस्तु गमे जयसन्धिकरी ।।७५।।

अन्वयः–इषमासि (आश्विने मासे) सिता (शुक्लपक्षीया)दशमी विजया (प्रोक्ता,सा) शुभकर्मसु सिद्धिकरी कथिता। श्रवणर्क्षयुता सा सुतरां शुभदा स्यात् । नृपतेः गमे तु जयसन्धिकरी भवेत् ।।७५।।

भाषा–आश्विन शुक्ल पक्ष की दशमी विजया दशमी कहलाती है। वह यात्रा तथा सब शुभकार्यों में सिद्धि देनेवाली कही गई है। यदि वह दशमी श्रवण नक्षत्र से युत हो तो अत्यन्त शुभप्रद होती है। राजा को युद्ध यात्रा में तो विजय अथवा सन्धि (मैत्री) कराने वाली होती है।।७५।।

चित्तशुद्धि और शकुन में यात्रा विचार–

चेतोनिमित्तशकुनैरति सुप्रशस्तै-
र्ज्ञात्वा विलग्नैर्बलमुर्व्यधिपः प्रयाति ।
सिद्धिर्भवेदथ पुनः शकुनादितोऽपि
चेतोविशुद्धिरधिका न च तां विनेयात् ।।७६।।

अन्वयः–यदि विलग्न बलं ज्ञात्वा अति सुप्रशस्तैः चेतोनिमित्तशकुनैः उर्व्यधिपः (भूपतिः) प्रयाति चेत्तदा खलु (निश्चयेन) सिद्धिः भवेत् । अथ पुनः शकुनादितोऽपि अधिका चेतोविशुद्धिः स्यात् तां विना न इयात् (न गच्छेत्)।।७६।।

भाषा–हृदय, निमित्त, शकुन (आगे कहे हुए) ये सब प्रशस्त हैं तब राजा लग्नबल आदि को देखकर यात्रा करे। इस प्रकार यात्रा करने से अभीष्ट सिद्ध होता है। शकुन आदि शब्द से और निमित्त तथा लग्नबलादि से भी मन की प्रसन्नता ही अधिक बल देनेवाली होती है। इसलिए मन की प्रसन्नता के विना अच्छे मुहूर्त में भी यात्रा नहीं करनी चाहिये।।७६।।

यात्रा में प्रतिबन्ध–

व्रतबन्धनदेवताप्रतिष्ठाकरपीडोत्सवसूतकासमाप्तौ ।
न कदापि चलेदकालविद्युद्घनवर्षातुहिनेऽपि सप्तरात्रम् ।।७७।।

अन्वयः–व्रतबन्धनदेवताप्रतिष्ठाकरपीडोत्सवसूतकासमाप्तौ कदापि न चलेत् । अकालविद्युद्घनवर्षातुहिनेऽपि सप्तरात्रं यावत् न चलेत्।।७७।।

भाषा–यदि घर में उपनयन, देवता की प्रतिष्ठा, विवाहादि उत्सव तथा जन्म या मरण जन्य सूतक हो तो इन सबों को समाप्त होने से पूर्व कदापि यात्रा नहीं करनी चाहिये। तथा अकाल (वर्षा ऋतु से भिन्न) समय में बिजली, मेघ, वर्षा एवं शिशिर से भिन्न समय में पाला (कोहरा) हो तो ७ दिन पर्यन्त यात्रा नहीं करनी चाहिये।।७७।।

एक दिन में गमन प्रवेश में दिक्शूलादि निषेध–

महीपतेरेकदिने पुरात्पुरे यदा भवेतां गमनप्रवेशकौ ।
भवारशूलप्रतिशुक्रयोगिनीर्विचारयेन्नैव कदापि पण्डितः ।।७८।।

अन्वयः–यदा महीपतेः एकदिने पुरे गमनप्रवेशकौ भवेताम् तदा भवारशूलप्रतिशुक्रयोगिनीः पण्डितः कदापि नैव विचारयेत् ।।७८।।

भाषा–राजा को चाहिये कि–यदि एक ही दिन में यात्रा करके गन्तव्य स्थान में पहुँच जाने की सम्भावना हो तो ऐसी स्थिति में वार या नक्षत्र शूल, सम्मुख शुक्र, योगिनी का विचार कदापि नहीं करे।।७८।।

प्रवेशमुहूर्त–

यदेकस्मिन् दिवसे महीपतेर्निर्गमप्रवेशौ स्तः ।
तर्हि विचार्यः सुधिया प्रवेशकालो न यात्रिकस्तत्र ।।७९।।

अन्वयः–यदि महीपतेः एकस्मिन् दिवसे निर्गमप्रवेशौ स्तः तर्हि तत्र सुधिया प्रवेशकालः विचार्यः, यान्त्रिकः न (विचार्यः)।।७९।।

भाषा–यदि एक ही दिन में एक गाँव से यात्रा का गन्तव्य गाँव में पहुँचना हो तो इस हालत में गन्तव्य गाँव में प्रवेश करने की ही मुहूर्त का विचार करे, यात्राकाल का विचार नहीं करे।।७९।।

त्रिनवमी दोष–

प्रवेशान्निर्गमं तस्मात् प्रवेशं नवमे तिथौ ।
नक्षत्रे च तथा वारे नैव कुर्यात् कदाचन ।।८०।।

अन्वयः–प्रवेशात् निर्गमं तस्मात् (निर्गमदिवसात्) नवमे तिथौ नवमे नक्षत्रे तथा च नवमे वारे कदाचन प्रवेशं नैव कुर्यात् ।।८०।।

भाषा–नगर या गाँव में प्रवेश दिन से नवें नक्षत्र, नवमी तिथि, ९ वें वार में फिर यात्रा तथा यात्रा दिन से नवमी तिथि, नवें नक्षत्र या नवें वार में गन्तव्य स्थान में प्रवेश कदापि नहीं करना चाहिए।।८०।।

यात्राविधि–

अग्निं हुत्वा देवतां पूजयित्वा
नत्वा विप्रानर्चयित्वा दिगीशम् ।
दत्वा दानं ब्राह्मणेभ्यो दिगीशं
ध्यात्वा चित्ते भूमिपालोऽधिगच्छेत् ।।८१।।

अन्वयः–अग्निं हुत्वा, देवतां पूजयित्वा, विप्रान् नत्वा, दिगीशं अर्चयित्वा, ब्राह्मणेभ्यो दानं दत्त्वा, दिगीशं ध्यात्वा, भूमिपालः अधिगच्छेत् ।।८१।।

भाषा–विधान पूर्वक अग्नि में हवन करके, इष्ट देवता की पूजा करके,

ब्राह्मणों को प्रणाम करके, गन्तव्य दिशा के स्वामी का पूजन करके, ब्राह्मणों को यथाशक्ति दान देकर और दिशास्वामी का ध्यान करता हुआ राजा यात्रा करे।।८१।।

दोषशान्त्यर्थ नक्षत्रदोहद–

कुल्माषांस्तिलतण्डुलानपि तथा माषांश्च गव्यं दधि ।
त्याज्यं दुग्धमथैणमांसमपरं तस्यैव रक्तं तथा ।
तद्वत् पायसमेव चाषपललं मार्गञ्च शाशं तथा
षाष्टिक्यञ्च प्रियं त्वपूपमथवा चित्राण्डजान् सत्फलम् ।।८२।।
कौर्मं सारिकगोधिकञ्च पललं शाल्यं हविष्यं हया-
द्यृक्षे स्यात् कृसरान्नमुद्गमपि वा पिष्टं यवानां तथा ।
मत्स्यान्नं खलु चित्रितान्नमथवा दध्यन्नमेवं क्रमाद् ।
भक्ष्याऽभक्ष्यमिदं विचार्य मतिमान् भक्षेत् तथाऽऽलोकयेत् ।।८३।।

अन्वयः–हयाद्यृक्षे (अश्विन्यादिनक्षत्रे क्रमात्) कुल्माषान् तिलतण्डुलान् तथा माषान् गव्यं दधि आज्यं दुग्धं अथ ऐणमांसं तस्यैव रक्तं, तथा पायसं, चाषपललं, मार्गं शाशं (मांसम्) तथा षाष्टिक्यं प्रियंग्वपूपम् अथ चित्राण्डजान् सत्फलम् कौर्मं पललं च (पुनः) सारिकगोधिकं पललं, शाल्यं हविष्यं, कृसरान्नम् मुद्गम् अपि वा यवानां पिष्टम् तथा मत्स्यान्नं चित्रितान्नं दध्यन्नं एवं कुलदेशानुसारेण भक्ष्याभक्ष्यं विचार्य मतिमान् भक्षेत् तथा आलोकयेत् ।।८२-८३।।

भाषा–१ उड़द, २ तिल और चावल, ३ माष (उड़द), ४ गाय की दही, ५ गोघृत, ६ गोदुग्ध, ७ मृग (हरिण) का मांस, ८ हरिण का शोणित, ९ खीर, १० चाष पक्षी का मांस, ११ मृगमांस, १२ खरगोश का मांस, १३ साठी धान्य का भात, १४ क्कुनी, १५ पूआ, १६ अनेक रंग के पक्षी का मांस, १७ सुन्दर फल, १८ कछुए का मांस, १९ सारिका पक्षी का मांस, २० गोह का मांस, २१ शाही का मांस, २२ मूँग आदि हविष्यान्न, २३ खिचड़ी, २४ मूँग, २५ जौ की पिट्ठी, २६ मछली-भात, २७ खिचड़ी, २८ दही-भात ये अश्विनी आदि (अभिजित् सहित) २८ नक्षत्रों के दोहद हैं। जिस नक्षत्र में यात्रा करनी हो उस नक्षत्र के दोहद को भक्ष्य-अभक्ष्य विचार कर भोजन करके या दर्शन करके यात्रा करनी चाहिए। इस प्रकार नक्षत्र जन्य दोष की शान्ति हो जाती है।।८२-८३।।

दिशाओं के दोहद–

आज्यं तिलौदनं मत्स्यं पयश्चापि यथाक्रमम् ।
भक्षयेद्दोहदं दिश्यमाशां पूर्वादिकां व्रजेत् ।।८४।।

अन्वयः-आज्यं तिलौदनं मत्स्यं अपि च पयः यथाक्रमं दिव्यं दोहदं भक्षयेत् (पश्चात्) पूर्वादिकां आशां (दिशं) व्रजेत् ॥८४॥

भाषा-१ घृत, २ तिल और भात, ३ मछली और दूध ये क्रम से पूर्व आदि चारों दिशाओं के दोहद हैं, अतः गन्तव्य दिशा के दोहद भक्षण करके उस दिशा की यात्रा करने से इष्टसिद्धि होती है॥८४॥

रवि आदि वारदोहद-

रसालां पायसं काञ्जीं शृतं दुग्धं तथा दधि ।
पयोऽशृतं तिलान्नञ्च भक्षयेद्वारदोहदम् ॥८५॥

अन्वयः-रसालां, पायसं, काञ्जीं, शृतं, दुग्धं तथा दधि, अशृतं पयः तिलान्नं च (रविमारभ्य क्रमशः) वारदोहदं भक्षयेत् ॥८५॥

भाषा-रविवार में रसाला (सिखरन), सोमवार को पायस (खीर), मंगलवार को काँजी, बुधवार को उबाला हुआ दूध, बृहस्पतिवार को दही, शुक्रवार को कच्चा दूध, शनि में तिल भात-ये वार दोहद हैं। जिस वार में यात्रा करनी हो उस दिन उसके दोहद भोजन करके यात्रा करनी चाहिए॥८५॥

प्रतिपदादि तिथिदोहद-

पक्षादितोऽर्कदलतण्डुलवारिसर्पिः
श्राणाहविष्यमपि हेमजलं त्वपूपम् ।
भुक्त्वा व्रजेद्रुचकमम्बु च धेनुमूत्रं
यावान्नपायसगुडानसृगन्नमुद्गाम् ॥८६॥

अन्वयः-पक्षादितः (क्रमशः) अर्कदलतण्डुलवारिसर्पिः श्राणाहविष्यं हेमजलं अपूपम् रुचकं अम्बु च (पुनः) धेनुमूत्रम् यावान्नपायसगुडानसृगन्नमुद्गाम् भुक्त्वा व्रजेत्॥८६॥

भाषा-१ मदार का पत्ता, २ चावल का धोवन जल, ३ घृत, ४ श्राणा (हलुआ), ५ हविष्य (मूँग, जौ आदि), ६ सुवर्ण से धोया जल, ७ मालपुआ, ८ अनार, ९ जल, १० गोमूत्र, ११ जौ का भात, १२ खीर, १३ गुड़, १४ खाद्य जन्तु के रक्त और भात, १५ मूँग ये क्रम से प्रतिपदादि १५ तिथियों के दोहद हैं। जिस तिथि में यात्रा करनी हो उसका दोहद खाकर यात्रा करने से तिथिदोष शान्त होकर इष्ट-सिद्धि होती है॥८६॥

यात्राविधि-

उद्धृत्य प्रथमत एव दक्षिणांघ्रिं
द्वात्रिंशत् पदमधिगत्य दिश्ययानम् ।
आरोहेत्तिलघृतहेमताम्रपात्रं
दत्वादौ गणकवराय च प्रगच्छेत् ॥८७॥

अन्वयः-प्रथमतः दक्षिणांघ्रिं एवं उद्धृत्य, द्वात्रिंशत्पदम् अधिगत्य, दिश्ययानं दिशोक्तवाहनम् आरोहेत् । च (पुनः) आदौ गणकवराय तिलघृतहोमताम्रपात्रं दत्त्वा प्रगच्छेत् ।।८७।।

भाषा-यात्रा समय में पहिले दाहिने पैर को उठाकर ३२ पद चलकर आगे कहे हुए गन्तव्य दिशा के सवारी पर चढ़कर तिल, घृत और सुवर्ण सहित ताँबे का पात्र ज्यौतिष शास्त्रज्ञों को देकर चलना चाहिये।।८७।।

दिशा में यात्रा का वाहन-

प्राच्यां गच्छेद् गजेनैव दक्षिणस्यां रथेन हि ।
दिशि प्रतीच्यामश्वेन तथोदीच्यां नरैर्नृपः ।।८८।।

अन्वयः-नृपः प्राच्यां गजेनैव, दक्षिणस्यां हि रथेन, प्रतीच्यां दिशि अश्वेन तथा उदीच्यां नरैः गच्छेत् ।।८८।।

भाषा-पूर्व दिशा में जाना हो तो हाथी पर, दक्षिण में रथ (घोड़ा गाड़ी आदि) पर, पश्चिम में घोड़े पर और उत्तर दिशा में नरयान (पालकी) पर चढ़कर जाना चाहिए।।८८।।

यात्रा कहाँ से करे-

देवगृहाद्वा गुरुसदनाद्वा स्वगृहान्मुख्यकलत्रगृहाद्वा ।
प्राश्य हविष्यं विप्रानुमतः पश्यन् श्रृण्वन् मङ्गलमेयात् ।।८९।।

अन्वयः-देवगृहात् वा गुरुसदनात् वा स्वगृहात् वा मुख्यकलत्रगृहात् विप्रानुमतः नृपः हविष्यं मङ्गलं पश्यन् श्रृण्वन् एयात् (व्रजेत्)।।८९।।

भाषा-अपने इष्टदेव के मन्दिर से अथवा गुरु के घर से अथवा मुख्य पत्नी के घर से हविष्य अन्नादि भोजन करके, ब्राह्मणों से आज्ञा लेकर मंगल वस्तुओं को देखता और मङ्गल शब्दों को सुनता हुआ चलना चाहिए।।८९।।

यात्रा में प्रस्थान की वस्तु-

कार्याद्यैरिह गमनस्य चेद् विलम्बो
भूदेवादिभिरुपवीतकायुधञ्च ।
क्षौद्राञ्चामलफलमाशु चालनीयं
सर्वेषां भवति यदेव हृत्प्रियं वा ।।९०।।

अन्वयः-कार्याद्यैः चेत् गमनस्य विलम्बो भवेत् तदा भूदेवादिभिः क्रमात् उपवीतं, आयुधं, च (पुनः) क्षौद्रं, आमूलफलं च आशु चालनीयम् । वा सर्वेषां यदेव (वस्तु) हृत्प्रियं भवति तदेव चालनीयम् ।।९०।।

भाषा-यदि किसी आवश्यक कार्यवश निश्चित किये हुए यात्रा लग्न में चलने में विलम्ब की सम्भावना हो तो निश्चित लग्न समय में ब्राह्मण यज्ञोपवीत,

क्षत्रिय शस्त्र, वैश्य शहद और शूद्रवर्ण आँवले का फल प्रस्थान करावे, अथवा जिस व्यक्ति को जो वस्तु परम प्रिय हो उसी को सुलग्न में प्रस्थान करावे, फिर पीछे अपने कार्य को सम्पन्न करके चलना चाहिये।।९०।।

प्रस्थान के स्थान की अवधि–

गेहाद् गेहान्तरमपि गमस्तर्हि यात्रेति गर्गः
सीम्नः सीमान्तरमपि भृगुर्बाणविक्षेपमात्रम् ।
प्रस्थानं स्यादिति कथयतेऽथो भरद्वाज एवं
यात्रा कार्या बहिरिह पुरात्स्यात् वसिष्ठो ब्रवीति ।।९१।।

अन्वयः–यदि गेहात् गेहान्तरमपि गमः तर्हि यात्रा (भवति) इति गर्गः (ब्रवीति)। तथा सीम्नः सीमान्तरं (यावत्) यात्रा भवति इति भृगुः ब्रवीति। अथो बाणविक्षेपमात्रं (यात्रा) स्यात् एवं भरद्वाजः कथयते, इह पुरात् बहिः यात्रा कार्या इति वसिष्ठः ब्रवीति।।९१।।

भाषा–ऊपर कहे हुए अपनी प्रिय वस्तु को अपने घर से दूसरे घर में भेजे तो यात्रा (प्रस्थान) समझी जाती है ऐसा गर्ग ऋषि ने कहा है। तथा अपनी गाँव की सीमा से दूसरी सीमा तक वस्तु को भेजे, ऐसा भृगु ऋषि ने कहा है। एवं धनुष बाण (शर) जहाँ तक जा सके उससे अधिक दूर प्रिय वस्तु को प्रस्थित करे, ऐसा भरद्वाज ऋषि ने कहा है। तथा अपने गाँव से बाहर प्रिय वस्तु को प्रस्थित करे ऐसा वसिष्ठ ने कहा है।।९१।।

प्रस्थान विशेष–

प्रस्थानमत्र धनुषां हि शतानि पञ्च
केचिच्छतद्वयमुशन्ति दशैव चान्ये ।
सम्प्रस्थितो य इह मन्दिरतः प्रयातो
गन्तव्यदिक्षु तदपि प्रयतेन कार्य्यम् ।।९२।।

अन्वयः–अत्र केचित् धनुषां पञ्चशतानि (दूरं यावत्) प्रस्थानं उशन्ति। इह यः संप्रस्थितः स मन्दिरतः गन्तव्यदिक्षु प्रयातः स्यात्तदपि प्रयतेन (सावधानतया) कार्यम् ।।९२।।

भाषा–कोई आचार्य कहते हैं कि, ५०० धनुष पर प्रिय वस्तु प्रस्थित करावे। कोई २०० धनुष और कोई १० ही धनुष पर्यन्त कहते हैं। तथा सर्वसम्मति यह है कि यात्रा करने वाले को चाहिए कि जिस दिशा में जाना हो उसी दिशा सें अपने घर से प्रिय वस्तु को प्रस्थित करावे।।९२।।

प्रस्थान के बाद ठहरने का परिणाम–

प्रस्थाने भूमिपालो दशदिवसमभिव्याप्य नैकत्र तिष्ठेत्
सामन्तः सप्तरात्रं तदितरमनुजः पञ्चरात्रं तथैव ।

ऊर्ध्वं गच्छेच्छुभाहेऽप्यथ गमनदिनात् सप्तरात्राणि पूर्वं
चाशक्तौ तद्दिनेऽसौ रिपुविजयमना मैथुनं नैव कुर्यात् ।।९३।।

अन्वयः-प्रस्थाने (सन्ति) भूमिपालः दशदिवसं अभिव्याप्य एकत्र न तिष्ठेत् । ऊर्ध्वं शुभाहे गच्छेत् । अथ रिपुविजयमनाः असौ गमनदिनात् पूर्वं सप्तरात्राणि मैथुनं न कुर्यात् । अशक्तौ तद्दिने मैथुनं नैव कुर्यात् ।।९३।।

भाषा-इस प्रकार प्रस्थान करने के बाद राजा को १० दिन एक स्थान में नहीं ठहरना चाहिए अर्थात् दश अहोरात्र के भीतर ही यात्रा भी कर देनी चाहिए एवं सीमन्त (माण्डलेश्वर राजा के अधीन छोटा राजा) ७ रात्रि तथा अन्य पुरुष ५ रात्रि तक ठहरे। यदि इससे अधिक समय ठहरना पड़े तो उसके बाद फिर शुभ लग्न मुहूर्त बनाकर यात्रा करे। तथा शत्रुओं को जीतने की कामना करनेवाले को चाहिए कि यात्रा समय से पूर्व ७ रात्रि मैथुन नहीं करे। यदि अशक्त हो तो १ दिन पूर्व अवश्य ही मैथुन त्याग करे।।९३।।

त्याज्य वस्तु-

दुग्धं त्याज्यं पूर्वमेव त्रिरात्रं क्षौरं त्याज्यं पञ्चरात्रञ्च पूर्वम् ।
क्षौद्रं तैलं वासरेऽस्मिन् वमिश्च त्याज्यं यत्नाद्भूमिपालेन नूनम् ।।९४।।

अन्वयः-गमनदिनात् पूर्वमेव दुग्धं त्याज्यम् , पञ्चरात्रं पूर्वं क्षौरं च (पुनः) अस्मिन् वासरे (गमनदिवसे) क्षौद्रं तैलं वमिश्च (एतत्सर्वं) भूमिपालेन यत्नात् नूनं त्याज्यम् ।।९४।।

भाषा-यात्रा दिन से पूर्व ३ दिन दूध, ५ दिन पूर्व क्षौर, तथा यात्रा के दिन में शहद (मधु), तेल और वमन राजा को छोड़ देना चाहिए।।९४।।

विशेष त्याज्य-

भुक्त्वा गच्छति यदि चेत् तैलगुडक्षारपक्वमांसानि ।
विनिवर्त्तते स रुग्णः स्त्रीद्विजमवमान्य गच्छतो मरणम् ।।९५।।

अन्वयः-यदि चेत् तैलगुडक्षारपक्वमांसानि भुक्त्वा गच्छति तदा स तरुणः सन् विनिवर्तते तथा स्त्रीद्विजमवमान्य गच्छतः मरणं भवेत् ।।९५।।

भाषा-यदि यात्री यात्रा के दिन तेल, गुड़, नमक और पकाया मांस का भोजन करके चलता है तो वह रोगी होकर लौटता है। तथा स्त्री और ब्राह्मण का अपमान करके यात्रा करनेवालों का मरण होता है।।९५।।

अकालवृष्टि-

यदि माःसु चतुर्षु पौषमासादिषु वृष्टिर्हि भवेदकालवृष्टिः।
पशुमर्त्यपदाङ्किता न यावद्वसुधा स्यान्न हि तावदत्र दोषः।।९६।।

अन्वयः-यदि पौषमासादिषु चतुर्षु माःसु वृष्टिर्भवेत् असौ अकालवृष्टिः स्यात् । अथ यावत् पशुमर्त्यपदाङ्किता वसुधा न भवेत् तावत् दोषः न हि स्यात् ।।९६।।

भाषा-पौष आदि चार (पौष, माघ, फाल्गुन, चैत्र) मासों में वर्षा हो तो

अकाल वृष्टि कहलाती है। इस समय में वृष्टि होने से जब तक पशु या मनुष्यों के पैर से पृथ्वी पर चिह्न नहीं होता है तब तक दोष नहीं कहा गया है॥९६॥

अकालवृष्टि दोषों की शान्ति–

अल्पायां वृष्टौ दोषोऽल्पो भूयस्यां दोषो भूयान्
जीमूतानां निर्घोषे वृष्टौ वा जातायां भूपः ।
सूर्य्येन्द्वोर्विम्बे सौवर्णे कृत्वा विप्रेभ्यो दद्याद्
दुःशाकुन्ये साज्यं स्वर्णं दत्त्वा गच्छेत्स्वेच्छाभिः ॥९७॥

अन्वयः–अल्पायां वृष्टौ अल्पो दोषः, भूयस्यां वृष्टौ भूयान् दोषः, जीमूतानां निर्घोषे वा वृष्टौ जातायां भूपः सूर्येन्द्वोः सौवर्णे बिम्बे कृत्वा विप्रेभ्यः दद्यात् , दुःशाकुन्ये (जाते सति) साज्यं स्वर्णं दत्त्वा स्वेच्छाभिः गच्छेत् ॥९७॥

भाषा–थोड़ी वर्षा में थोड़ा और अधिक वर्षा में अधिक दोष होता है। अकाल वृष्टि में मेघ का शब्द या वृष्टि हो तो उसकी शान्ति के लिये राजा को चाहिये कि सूर्य और चन्द्रमा की सोने की प्रतिमा बनवाकर ब्राह्मणों को देकर यात्रा करे तथा अपशकुन होने पर घृत और सुवर्ण दान करके इच्छानुसार यात्रा करे॥९७॥

यात्रा में शुभसूचक शकुन–

विप्राश्वेभफलान्नदुग्धदधिगोसिद्धार्थपद्माम्बरं
वेश्यावाद्यमयूरचाषनकुला बद्धैकपश्वामिषम् ।
सद्वाक्यं कुसुमेक्षुपूर्णकलशच्छत्राणि मृत्कन्यका-
रत्नोष्णीषसितोक्षमद्यससुतस्त्रीदीप्तवैश्वानराः ॥९८॥
आदर्शाञ्जनधौतवस्त्ररजका मीनाज्यसिंहासनं
शावं रोदनवर्जितं ध्वजमधुच्छागास्त्रगोरोचनम् ।
भारद्वाजनृयानवेदनिनदा माङ्गल्यगीताङ्कुशा
दृष्टाः सत्फलदा प्रयाणसमये रिक्तो घटःस्वानुगः ॥९९॥

अन्वयः–विप्राश्वेभफलान्नदुग्धदधिगोसिद्धार्थपद्माम्बरं वेश्यावाद्यमयूरचाषनकुला बद्धैकपश्वामिषम् सद्वाक्यं कुसुमेक्षुपूर्णकलशच्छत्राणि मृत्कन्यकारत्नोष्णीष-सितोक्षमद्यससुतस्त्रीदीप्तवैश्वानराः आदर्शाञ्जनधौतवस्त्ररजका मीनाज्यसिंहासनं रोदनवर्जितं शावं ध्वजमधुच्छागास्त्रगोरोचनम् भारद्वाजनृयानवेदनिनदामाङ्गल्यगीताङ्कुशाः (एते) प्रयाणसमये दृष्टाः सन्तः सत्फलदाः भवन्ति। (तथा) स्वानुगः रिक्तो घटः शुभः स्यात् ॥९८-९९॥

भाषा–ब्राह्मण, घोड़ा, हाथी, फल, अन्न, दूध, दही, गौ, सरसों, कमल, श्वेत वस्त्र, वेश्या, बाजा, मयूर, चाष (चाहा पक्षी), न्यौला, बाँधा हुआ एक पशु, मांस, प्रिय वाक्य, पुष्प, ऊँख, जलपूर्ण कलश, छाता, मिट्टी, कन्या, रत्न, पगड़ी.

श्वेत बैल, मदिरा, सन्तान सहित स्त्री, प्रज्वलित अग्नि, ऐना, अंजन, धोया हुआ वस्त्रसहित धोबी, मछली, घृत, सिंहासन, रोदनरहित मुर्दा, ध्वजा, शहद, बकरा, अस्त्र, शस्त्र, गोरोचन, भारद्वाज (भरदूल पक्षी), पालकी, वेदध्वनि, माङ्गल्यगीत, अंकुश ये यात्रा समय में सामने देख पड़े तो शुभफल देनेवाले होते हैं। तथा खाली घड़ा अपने पीछे भाग में देख पड़े तो भी इष्टसिद्धि होती है।।९८-९९।।

अपशकुन–

वन्ध्याचर्मतुषास्थिसर्पलवणांगारेन्धनक्लीबविट्-
तैलोन्मत्तवसौषधारिजटिलप्रवाट्तृणव्याधिताः ।
नग्नाभ्यक्तविमुक्तकेशपतिताव्यंगक्षुधार्त्ता असृक्
स्त्रीपुष्पं सरठः स्वगेहदहनं मार्जारयुद्धं क्षुतम् ।।१००।।
काषायीगुडतक्रपङ्कविधवाकुब्जाः कुटुम्बे कलि-
र्वस्त्रादेः स्खलनं लुलायसमरं कृष्णानि धान्यानि च ।
कार्पासं वमनञ्च गर्दभरवो दक्षेऽतिरुट्गर्भिणी
मुण्डार्द्राम्बरदुर्वचोऽन्धवधिरोदक्यो न दृष्टाः शुभाः ।।१०१।।

अन्वयः–वन्ध्याचर्मतुषास्थिसर्पलवणांगारेन्धनक्लीबविट्तैलोन्मत्तवसौषधारिजटिलप्रवाट्तृणव्याधिताः नग्नाभ्यक्तविमुक्तकेशपतिताः, व्यंगक्षुधार्त्ता असृक् स्त्रीपुष्पं सरठः स्वगेहदहनं मार्जारयुद्धं क्षुतं काषायीगुडतक्रपङ्कविधवाकुब्जाः कुटुम्बे कलिः वस्त्रादेः स्खलनं लुलायसमरं च (पुनः) कृष्णानि धान्यानि कार्पासं वमनं च (पुनः) दक्षे (दक्षिणभागे) गर्दभरवः अतिरुट् गर्भिणी मुण्डार्द्राम्बरदुर्वचोऽन्धवधिरोदक्यः प्रयाणसमये दृष्टाः न शुभाः (भवन्ति)।।१००-१०१।।

भाषा–वन्ध्या स्त्री, चाम, भूसा, हड्डी, साँप, नमक, अंगार (आग), जलावन की लकड़ी, नपुंसक, विष्ठा, तेल, पागल आदमी, चर्बी, औषध, शत्रु, जटाधारी, संन्यासी, तृण, रोगी मनुष्य, नंगा, तेल लगाया हुआ मनुष्य, खुले केश वाला मनुष्य, पतित (स्वकर्मच्युत), अङ्गहीन, शोणित, स्त्री का रज, गिरगिट, अपने घर का जलना, बिड़ाल की लड़ाई, छींक, गेरुआ वस्त्रधारी, गुड़, मट्ठा, कीचड़, विधवा स्त्री, कुबड़ा, कुटुम्बों में झगड़ा, निर्निमित्त हाथ से वस्त्रादि का गिरना, भैंसों की लड़ाई, काला धान्य, रूई, वमन, दाहिने भाग में गदहे का शब्द, दीर्घ रोगी, गर्भवती स्त्री, मुड़ाये हुए सिर वाला मनुष्य, भींगा वस्त्र वाला, कटु (अप्रिय) वचन, अन्धा, बहरा, रजस्वला स्त्री ये यात्रा के समय में सामने देख पड़ें तो अशुभ फल होते हैं।।१००- १०१।।

अन्य शुभ शकुन–

गोधाजाहकसूकराहिशशकानां कीर्तनं शोभनं
नो शब्दो न विलोकनञ्च कपिऋक्षाणामतो व्यत्ययः ।

नद्युत्तारभयप्रवेशसमरे नष्टार्थसंवीक्षणे
व्यत्यस्ताः शकुना नृपेक्षणविधौ यात्रोदिताः शोभनाः ।।१०२।।

अन्वयः–गोधाजाहकसूकराहिशशकानां कीर्तनं (एतेषां नामोच्चारणं) शोभनं (भवेत्)। (किन्तु एतेषां) शब्दः नो शुभं, विलोकनं च न शोभनं भवति, कपिऋक्षाणां अतो व्यत्ययो ज्ञेयः। नद्युत्तारभयप्रवेशसमरे नष्टार्थसंवीक्षणे शकुनाः व्यत्यस्ताः (भवन्ति)। नृपेक्षणविधौ यात्रोदिताः शकुनाः शोभनाः स्युः ।।१०२।।

भाषा–गोह, जाहक (देह के अवयवों को बटोरने वाला पशु), सूअर, सर्प, खरगोश के नाम का उच्चारण स्वयं या कोई दूसरा आदमी भी करे तो शुभ फल समझना चाहिये। किन्तु इन सबों का शब्द या दर्शन शुभ नहीं होता है। वानर, भालुओं का इसके विपरीत समझना (अर्थात् वानर और भालू का नाम लेना या सुनना अशुभ तथा इन दोनों का शब्द और दर्शन शुभ होता है)। नदी के पार उतरने में, भय से भागने के समय में, युद्ध में, गाँव या गृहप्रवेश में, नष्ट वस्तुओं की खोज में इनका फल विपरीत (शुभ को अशुभ और अशुभ फल वाले को शुभ) समझना चाहिये तथा राजा के दर्शन में, जैसे यात्रा में शुभ या अशुभ कहा गया है उसी प्रकार शुभ या अशुभ शकुन समझे।।१०२।।

पुनः शुभ शकुन–

वामाङ्गे कोकिला पल्ली पोतकी सूकरी रला ।
पिङ्गला छुच्छुकाः श्रेष्ठाः शिवाः पुरुषसंज्ञिताः ।।१०३।।

अन्वयः–कोकिला पल्ली पोतकी सूकरी रला पिङ्गला छुच्छुका तथा पुरुषसंज्ञिताः शिवाः वामाङ्गे (वामपार्श्वे) श्रेष्ठा भवन्ति।।१०३।।

भाषा–कोयला, छिपकली, कबूतरी, सूकरी, गौरैया, उल्लू, छुछुन्दरी, शृगाली तथा पुरुष नामक हंस, खञ्जन इत्यादि यात्रा करनेवाले को वाम भाग में देख पड़े तो शुभ फल होता है।।१०३।।

दक्षिण भाग में शुभ शकुन–

छिक्करः पिक्ककोभासः श्रीकण्ठो वानरो रुरुः ।
स्त्रीसंज्ञकाः काकऋक्षश्वानः स्युर्दक्षिणाः शुभाः ।।१०४।।

अन्वयः–छिक्करः पिक्ककः भासः श्रीकण्ठः वानरः रुरुः स्त्रीसंज्ञकाः काकऋक्षश्वानः दक्षिणाः शुभाः स्युः।।१०४।।

भाषा–छिक्कर नामक मृग विशेष, पिक्कक (पक्षी विशेष), भास, श्रीकण्ठ, वानर, रुरु (मृग विशेष), स्त्री संज्ञक, कौआ, भालू, कुत्ता ये यात्रा समय में दाहिने भाग में देख पड़ें तो शुभ फल समझना।।१०४।।

दाहिने सामान्य शकुन–

प्रदक्षिणगताः श्रेष्ठा यात्रायां मृगपक्षिणः ।
ओजा मृगा व्रजन्तोऽतिधन्या वामे खरस्वनः ॥१०५॥

अन्वयः–यात्रायां प्रदक्षिणगताः मृगपक्षिणः श्रेष्ठाः (भवन्ति)। ओजाः (विषमसंख्यकाः) व्रजन्तः मृगाः (दृष्टाः सन्तः) अतिधन्याः। वामे खरस्वनः शुभः॥१०५॥

भाषा–यात्रा के समय मृग और पक्षी यदि प्रदक्षिण (सामने से दाहिने भाग होकर पीछे की ओर) जाते देख पड़े तो श्रेष्ठ फल समझना। तथा विषम संख्या में १,३,५ इत्यादि मृग देख पड़ें और बायें भाग से गदहे का शब्द सुन पड़े तो भी अत्यन्त शुभ फल समझना चाहिए॥१०५॥

अपशकुन परिहार–

आद्येऽपशकुने स्थित्वा प्राणानेकादश व्रजेत् ।
द्वितीये षोडश प्राणांस्तृतीये न क्वचिद् व्रजेत् ॥१०६॥

अन्वयः–आद्ये अपशकुने एकादश प्राणान् स्थित्वा, द्वितीये षोडश प्राणान् स्थित्वा, व्रजेत् , तृतीये अपशकुने क्वचिदपि न व्रजेत् ॥१०६॥

भाषा–यात्रा-समय में प्रथम बार अपशकुन हो तो ठहर कर ११ प्राणायाम करके चलना चाहिए। दूसरा अपशकुन हो जाय तो फिर ठहर कर १६ प्राणायाम करके चलें, यदि तीसरे बार भी अपशकुन हो जाय तो यात्रा स्थगित कर देनी चाहिए ॥१०६॥

यात्रा से लौटकर गृहप्रवेश काल–

यात्रानिवृत्तौ शुभदं प्रवेशनं मृदुध्रुवैः क्षिप्रचरैः पुनर्गमः ।
द्वीशेऽनले दारुणभे तथोग्रभे स्त्रीगेहपुत्रात्मविनाशनं क्रमात् ॥१०७॥

अन्वयः–यात्रानिवृत्तौ मृदुध्रुवैः (नक्षत्रैः) प्रवेशनं शुभदं स्यात् । क्षिप्रचरैः पुनः गमनं स्यात् । द्वीशे अनले दारुणभे तथा उग्रभे (प्रवेशे सति) क्रमात् स्त्रीगेहपुत्रात्मविनाशनं स्यात् ॥१०७॥

भाषा–राजा के लिए यात्रा से लौटने पर मृदुसंज्ञक (मृगशिरा, रेवती, चित्रा, अनुराधा) तथा ध्रुव (तीनों उत्तरा, रोहिणी) नक्षत्रों में गृहप्रवेश शुभ है तथा क्षिप्र (हस्त, अश्विनी, पुष्य, अभिजित्) और चर (स्वाती, पुनर्वसु, श्रवण, धनिष्ठा, शततारका) संज्ञक नक्षत्रों में प्रवेश करने से फिर शीघ्र ही यात्रा करनी पड़ती है। इसलिये ये नक्षत्र मध्यम हैं तथा विशाखा, कृत्तिका, दारुण संज्ञक (मूल, ज्येष्ठा, आर्द्रा, श्लेषा) और उग्र संज्ञक (३ पूर्वा, भरणी, मघा) नक्षत्र में प्रवेश करने से क्रम से स्त्री, घर, पुत्र और अपना विनाश होता है॥१०७॥

पूर्वोक्त दोषों का पुनः स्मरण–

अयनर्क्षमासतिथिकालवासरोद्भवशूलसम्मुखसितज्ञादिक्कपाः।
भृगुवक्रतादिपरिघाख्यदण्डको युवतीरजोऽप्यशुचितोत्सवादिकम् ।।१०८।।

अन्वयः–अयनर्क्षमासतिथिकालवासरोद्भवशूलसम्मुखसितज्ञादिक्कपाः भृगुवक्रतादिपरिघाख्यदण्डको युवतीरजः अपि उत्सवादिकं यात्रायां त्यजेत् ।।१०८।।

भाषा–पूर्व कहे हुए अयन दोष, नक्षत्र दोष, मासदोष, तिथि दोष, काल पाश, वार शूल, सम्मुख शूल, सम्मुख शुक्र और बुध तथा दिशा स्वामी के दोष (लालाटिक), शुक्र की वक्रता, अस्त, क्षीण आदि, परिघदण्ड, अपनी स्त्री का रजोधर्म, अशौच, विवाहादि उत्सव ये सब यात्रा में त्याज्य हैं।।१०८।।

मृतपक्षरिक्तरवितर्कसंख्यकास्तिथयश्च सौरिरविभौमवासराः।
अपिवामपृष्ठगविधुस्तथाडलो वसुपञ्चकाभिजिदथापि दक्षिणे ।।१०९।।

अन्वयः–मृतपक्षरिक्तरवितर्कसंख्यकाः तिथयः च (पुनः) सौरिरविभौमवासराः अपि वामपृष्ठगविधुः तथा अडलः, वसुपञ्चकाभिजित् अपि दक्षिणे त्याज्यं भवेत्।।१०९।।

भाषा–मृतपक्ष, रिक्ता ४,९,१४,६,१२ तिथि, शनि, रवि, मङ्गल वार, वाम और पृष्ठ चन्द्र, अडल दोष तथा धनिष्ठादि पञ्चक, दक्षिण दिशा में अभिजित् मुहूर्त ये भी यात्रा में त्याज्य हैं।।१०९।।

लग्ने जन्मर्क्षतन्वोर्मृतिगृहमहिजर्क्षाच्च षष्ठं तदीशा
वा लग्ने कुम्भमीनर्क्षनवलतनू चापि पृष्ठोदयञ्च ।
पृष्ठाशासंस्थमृक्षं दशमशनिरथो सप्तमे चापि काव्यः
केन्द्रे वक्राश्च वक्रिग्रहदिवसविवाहोक्तदोषाश्च नेष्टाः ।।११०।।

अन्वयः–जन्मर्क्षतन्वोः मृतिगृहं च (पुनः) अहितर्क्षात् षष्ठं (लग्ने स्थितं) वा तदीशाः (लग्नस्थिताः) च पुनः कुम्भमीनर्क्षनवलतनू अपि च पृष्ठोदयं पृष्ठाशासंस्थं ऋक्षं अथो दशमशनिः सप्तमे काव्यः अपि च केन्द्रे वक्राः च (पुनः) वक्रिग्रहदिवसविवाहोक्तदोषाः (यात्रायां नेष्टाः)।।११०।।

भाषा–जन्म राशि, जन्म लग्न से अष्टम राशि लग्न में, अपने शत्रु की राशि से ६ठी राशि या उसका स्वामी लग्न गत, कुम्भ, मीन इन दोनों राशि की लग्न और नवांश, पृष्ठोदय राशि लग्न, पृष्ठ दिशा के नक्षत्र, लग्न से दशम शनि और सप्तम भावगत शुक्र, केन्द्र में वक्री ग्रह, वक्री ग्रह के वार तथा विवाह में कहे हुए समस्त दोष यात्रा में अशुभ समझकर त्याग देना चाहिये।।११०।।

इति मुहूर्तचिन्तामणौ यात्राप्रकरणम् ।

❑

वास्तुप्रकरणम्

ग्रामवास में लाभालाभ विचार–

**यद्भं द्व्यङ्कसुतेशदिङ्मितमसौ ग्रामः शुभो नामभात्
स्वं वर्गं द्विगुणं विधाय परवर्गाढ्यं गजैः शेषितम् ।
काकिण्यस्त्वनयोश्च तद्विवरतो यस्याधिकाः सोऽर्थदो-
ऽथ द्वारं द्विजवैश्यशूद्रनृपराशीनां हितं पूर्वतः ।।१।।**

अन्वयः–नामभात् यद्भं द्व्यङ्कसुतेशदिङ्मितं भवेत् असौ ग्रामः शुभः। स्वं वर्गं द्विगुणं विधाय परवर्गाढ्यं गजैः शेषितं अनयोः काकिण्यः भवन्ति। तद्विवरतो यस्य अधिकाः (काकिण्यः) स अर्थदः (धनी), अथ पूर्वतः द्विजवैश्यशूद्रनृपराशीनां द्वारं हितं (स्यात्) ।।१।।

भाषा–किसी गाँव में जाकर बसने की इच्छा करने वालों के नाम की राशि से जिस गाँव की राशि २,९,५,११,१० संख्या में हो तो वह गाँव शुभ (बसने योग्य) समझना चाहिये। अर्थात् अन्य संख्या में राशि पड़े तो अशुभ समझना। अब काकिणी (धन) विचार करते हैं–नाम और गाँव की काकिणी विचार करना हो तो नाम के वर्ग (अ-क-च-ट) की संख्या को दूना करके उसमें गाँव की वर्ग-संख्या जोड़े। फिर योगफल में ८ के भाग देने से जो शेष बचे वह नाम की (अपनी) काकिणी होती है। एक गाँव की वर्गसंख्या को दूना करके उसमें नाम की वर्गसंख्या जोड़कर योगफल में ८ के भाग देने से जो शेष बचे वह गाँव की काकिणी होती है। इन दोनों में जिसकी काकिणी अधिक हो वह अर्थद (धनदाता-उत्तर्मण) होता है।

अब द्वार विचार कहते हैं कि–द्विज (कर्क, वृश्चिक, मीन) राशि वालों के लिए पूर्व द्वार, वैश्य (वृष,कन्या, मकर) राशिवालों के लिये दक्षिण द्वार, शूद्र (मिथुन, तुला, कुम्भ) राशिवालों के लिए पश्चिम द्वार, क्षत्रिय (मेष, सिंह, धनु) राशि वालों के लिये उत्तर द्वार, इस तरह प्रत्येक दिशा में घर का द्वार शुभप्रद होता है।।१।।

उदाहरण–जैसे शिवप्रसाद को काशी में वास कैसा होगा? यह विचारना है तो 'शिवप्रसाद' की राशि कुम्भ के गाँव (काशी) की राशि मिथुन तक गिनने से ५ हुआ, इसलिये–'शिवप्रसाद' को काशी में बसना शुभप्रद सिद्ध हुआ।

अब काकिणी (धन) को विचारने के लिये नाम (शिवप्रसाद) की वर्गसंख्या ८ को दूना करने से १६ हुए, इसमें गाँव (काशी) की वर्गसंख्या २ जोड़कर १८ हुआ। इसमें ८ के भाग देने से शेष २ बचा। यह नाम की काकिणी हुई एवं गाँव की वर्गसंख्या २ को गुणा करके ४ हुआ। इसमें नाम की वर्गसंख्या ८ जोड़ने से १२ हुआ। फिर इसमें ८ के भाग से शेष ४ बचा यह गाँव की काकिणी हुई। यहाँ नाम की काकिणी अल्प है इसी लिये उत्तम नहीं हुआ। क्योंकि काकिणी धन को कहते हैं। अतः अपना धन अधिक होना चाहिये। परन्तु बहुत से लोग गाँव की

काकिणी को अधिक होने से शुभ मानते हैं। किन्तु यह युक्ति और अन्य ग्रन्थों से विरुद्ध होने के कारण मान्य नहीं है।।१।।

निषिद्धवासस्थानचक्रम्–

ई०	पू०	अग्नि
कुम्भ	वृश्चिक	मीन
मेष	वृष, सिंह मकर, मिथुन	कन्या
तुला	धनु	कर्क
वा०	प०	नै०

(बाएँ: उ०, दाएँ: द०)

राशिवश गाँव में निषिद्ध स्थान–

गोसिंहनक्रमिथुनं निवसेन्न मध्ये
ग्रामस्य पूर्वककुभोऽलिझषाङ्गनाश्च ।
कर्को धनुस्तुलभमेषघटाश्च तद्वद्-
वर्गाः स्वपञ्चमपरा बलिनः स्युरैन्द्र्याः ।।२।।

अन्वयः–गोसिंहनक्रमिथुनं ग्रामस्य मध्ये न निवसेत् । च (पुनः) अलिझषाङ्गनाः कर्कः धनुस्तुलभमेषघटाः (क्रमशः पूर्वतः अष्टासु दिक्षु) न निवसेयुः, च (पुनः) तद्वत् स्वपञ्चमपतीः वर्गाः ऐन्द्र्याः (पूर्वतः क्रमात्) बलिनः स्युः।।२।।

भाषा–वृष, सिंह, मिथुन और मकर राशिवाले किसी एक गाँव के बीच भाग में निवास न करें। यथा–वृश्चिक, मीन, कन्या, कर्क,धनु, तुला, मेष और कुम्भ राशि वाले क्रम से पूर्व आदि दिशाओं में न बसें तथा अवर्गादि ८ वर्ग क्रम से पूर्व आदि दिशाओं में बली होते हैं। इन ८ वर्गों में अपने-अपने से पाँचवाँ-पाँचवाँ वर्ग शत्रु होता है।।२।।

स्पष्टज्ञानार्थ वर्ग चक्र–

ईशान	पूर्व	अग्नि
शवर्ग	अवर्ग	कवर्ग
यवर्ग		चवर्ग
पवर्ग	तवर्ग	टवर्ग
वायु	पश्चिम	नैर्ऋत्य

(बाएँ: उत्तर, दाएँ: दक्षिण)

आमने-सामने की दिशा में परस्पर शत्रुता समझना। शत्रु की दिशा में वास नहीं करना चाहिये।।२।।

गृह का पिण्ड–

एकोनितेऽष्टर्क्षहता द्वितिथ्यो
रूपोनितेष्टायहतेन्दुनागैः ।
युक्ता धनै (१७) श्चापि युता विभक्ता
भूपाश्विभिः शेषमितो हि पिण्डः ॥३॥
स्वेष्टायनक्षत्रभवोऽथ दैर्घ्यहृत्
स्याद्विस्तृतिर्विस्तृतिहृच्च दीर्घता ॥३ $\frac{1}{2}$॥

अन्वयः–द्वितिथ्यः एकोनितेष्टर्क्षहताः रूपोनितेष्टायहतेन्दुनागैः युक्ताः घनैश्चापि युता भूपाश्विभिः विभक्ताः शेषमितः स्वेष्टायनक्षत्रभवः पिण्डः स्यात्, स दैर्घ्यहृत् विस्तृतिः स्यात्, विस्तृतिहृत् लब्धिः दीर्घता स्यात् ॥३-३ $\frac{1}{2}$॥

भाषा–उस इष्ट नक्षत्र (अपने नाम के नक्षत्र से जिस नक्षत्र के साथ विवाह-मेलापक विधि से अधिक गुण मिले वह इष्ट नक्षत्र कहलाता है) की संख्या में एक घटाकर शेष से १५२ को गुणा करें तथा इष्ट आय संख्या में १ घटा करके शेष से ८१ को गुणा करे फिर इन दोनों गुणनफलों को जोड़, फिर योगफल में १७ और जोड़कर पूरे योगफल में २१६ के भाग देने से जो शेष बच जाय वह घर का पिण्ड (क्षेत्रफल-अर्थात् लम्बाई- चौड़ाई का गुणनफल) होता है। इसको अपने इष्ट नक्षत्र और इष्ट आय सम्बन्धी समझना। इस पिण्ड में अपने अभिमत लम्बाई के भाग देने से लब्धि विस्तार और विस्तार के भाग देने से लब्धि दैर्ध्य (लम्बाई) समझें॥३-३ $\frac{1}{2}$॥

विशेष–यदि इस प्रकार लम्बाई-चौड़ाई थोड़ी हो तो पिण्ड में एकादि गुणित २१६ जोड़कर पिण्ड समझना।

उदाहरण–जैसे–'लक्ष्मीनाथ' नामक व्यक्ति का नाम नक्षत्र अश्विनी हुआ, उसको पुष्य नक्षत्र के साथ मेलापक विधि से ३१॥ गुण मिलते हैं इसलिए इष्ट नक्षत्र पुष्य हुआ। यदि पूर्वमुख का घर बनाना है तो इष्टआय वर्ष हुआ। अब इष्टनक्षत्र संख्या ८ में १ घटाकर शेष ७ से १५२ को गुणा करने से १०६४ हुआ, इसमें एकोन आयसंख्या ५-१=४ से ८१ को गुणा कर गुणनफल ३२४ को जोड़ा तो १३८८ हुआ। इसमें १७ और जोड़ा तो १४०५ हुआ। इसमें २१६ के भाग देने से शेष १०९ यह मूल गृह पिण्ड हुआ। परञ्च इस पर से लम्बाई-चौड़ाई थोड़ी है। इसलिए इस १०९ में २१६ और मिलाने से ३२५ यह द्वितीय पिण्ड हुआ, इसमें लम्बाई २५ हाथ का भाग दिया तो लब्धि १३ यह चौड़ाई हुई। इसलिए 'लक्ष्मीनाथ' याने अश्विनी नाम नक्षत्र वालों के लिए यह पिण्ड शुभप्रद कहना चाहिये॥३ $\frac{1}{2}$॥

आर्यों के नाम और घर के द्वार का विचार–

आया ध्वजो धूमहरिश्वगोखरे-
भध्वांक्षकाः पिण्ड इहाष्टशेषिते ।।४।।
ध्वजादिकाः सर्वदिशि ध्वजे मुखं
कार्यं हरौ पूर्वयमोत्तरे तथा ।
प्राच्यां वृषे प्राग्यमयोर्गजेऽथवा
पश्चादुदक् पूर्वयमे द्विजादितः ।।५।।

अन्वयः–अथ स दैर्घ्यहृत् विस्तृतः च (पुनः) विस्तृतहृत् दीर्घता स्यात् । इह पिण्डे अष्टशेषिते (क्रमशः) ध्वजः धूमहरिश्वगोखरेभध्वांक्षकाः इति ध्वजादिकाः आयाः स्युः। ध्वजे आये सति सर्वदिशि मुखं (स्यात्) हरौ पूर्वयमोत्तरे तथा वृषे प्राच्यां गजे प्राग्यमयोः अथवा द्विजादितः (क्रमेण) पश्चादुदक् पूर्वयमे द्वारं शुभं (भवति)।।४-५।।

भाषा–ऊपर कहे हुए पिण्ड में ८ के भाग देने से १ आदि शेष में क्रम से ध्वज, २ धूम, ३ सिंह, ४ श्वान, ५ वृष, ६ खर, ७ हस्ती, ८ काक ये आय होते हैं। यदि इस प्रकार ध्वज आय हो तो घर में चार दिशाओं में मुख करना, वृष आय हो तो पूर्व दिशा में तथा गज आय हो तो पूर्व और दक्षिण द्वार करना चाहिये तथा ब्राह्मण पश्चिम, क्षत्रिय उत्तर, वैश्य पूर्व और शूद्र दक्षिण में द्वार बनावे।।४-५।।

गृहारम्भ में निषेध–

गृहेशतत्स्त्रीसुतवित्तनाशोऽर्केन्द्विज्यशुक्रे विबलेऽस्तनीचे ।
कर्त्तुः स्थितिर्नो विधुवास्तुनोर्भे पुरःस्थिते पृष्ठगते खनिः स्यात् ।।६।।

अन्वयः–अर्केन्द्विज्यशुक्रे विबले अस्तनीचे सति (क्रमशः) गृहेशतत्स्त्रीसुतवित्तनाशः स्यात् । विधुवास्तुनोर्भे पुनः स्थिते कर्त्तुः स्थितिः नो भवेत् । पृष्ठगते सति खनिः स्यात् ।।६।।

भाषा–गृहारम्भ समय में यदि सूर्य, चन्द्र, बृहस्पति और शुक्र ये निर्बल, अस्त या नीच राशि में हों तो क्रम से गृह का मालिक, उसकी स्त्री, उसके पुत्र और धन का नाश होता है तथा चन्द्र नक्षत्र, या गृह नक्षत्र गृहारम्भ समय में सम्मुख हो तो उस घर में गृहपति की स्थिति (निवास) नहीं रहती है तथा पृष्ठ हो तो चोरी का भय होता है।।६।।

व्यय और अंशज्ञान–

भं नागतष्टं व्यय ईरितोऽसौ ध्रुवादिनामाक्षरयुक्सपिण्डः ।
तष्टो गुणैरिन्द्रकृतान्तभूपा ह्यंशा भवेयुर्न शुभोऽन्तकोऽत्र ।।७।।

अन्वयः–भं नागतष्टं व्यय ईरितः, असौ ध्रुवादिनामाक्षरयुक्सपिण्डः गुणैः तष्टः इन्द्रकृतान्तभूपा अंशा भवेयुः। अत्र अन्तकः अंशः न शुभः।।७।।

भाषा–पूर्वोक्त गृह नक्षत्र की संख्या में ८ के भाग देने से शेष व्यय होता है। तथा आगे कहे हुए गृह के ध्रुव आदि नामकी अक्षर संख्या को इस व्यय में जोड़कर फिर उसमें पिण्ड को जोड़े पुनः योगफल में ३ के भाग देने से १ शेष बचे

तो इन्द्र, २ बचे तो यम और ३ बचे तो राज अंश होता है। इस प्रकार यम का अंश हो तो अशुभ समझना चाहिये।।७।। इसका विवरण १०वें श्लोक में देखिये।

शालाध्रुवाङ्क–

दिक्षु पूर्वादितः शालाध्रुवा भूद्वौं कृता गजाः ।
शालाध्रुवाङ्कसंयोगः सैको वेश्म ध्रुवादिकम् ।।८।।

अन्वयः–पूर्वादितः (चतुर्षु दिक्षु क्रमशः) भूद्वौं कृताः गजाः शालाध्रुवाः स्युः। शालाध्रुवाङ्कसंयोगः सैकः ध्रुवादिकं वेश्म स्यात् ।।८।।

भाषा–पूर्व आदि चारों दिशाओं में क्रम से १,२,४,८ ये शाला ध्रुवाङ्क होते हैं। घर में जिस दिशा में शाला (मुख और बरामदा) हो उस ध्रुवाङ्क संख्या को जोड़कर योगफल में १ जोड़ने से जितनी संख्या हो उतनी संख्या का ध्रुव आदि घर का नाम समझना।।८।।

ध्रुवादि ग्रहों के नाम की अक्षर संख्या–

तिथ्यर्काष्टाष्टिगोरुद्रशक्रे नामाक्षरं त्रयम् ।
भूद्व्यब्धीष्वङ्गदिग्वह्निविश्वेषु द्वौ नगाब्धयः ।।९।।

अन्वयः–तिथ्यर्काष्टाष्टिगोरुद्रशक्रे नामाक्षरं त्रयं भवेत् । भूद्व्यब्धीष्वङ्गदिग्वह्निविश्वेषु द्वौ नगाब्धयः स्युः।।९।।

भाषा–यदि उपरोक्त सैक ध्रुवाङ्क योग की संख्या १५,१२,८,१६,९, ११,१४ हो तो गृह के नाम में ३ अक्षर समझें और १,२,४,५,६,१०,३,१३ हो तो घर की नामाक्षर संख्या २ समझें और ७ हो तो नामाक्षर संख्या ४ समझें।।९।।

उक्त षोडश गृहों के नाम–

ध्रुवधान्ये जयनन्दौ खरका न्तमनोरमं सुमुखदुर्मुखोग्रञ्च ।
रिपुदं वित्तदं नाशं चाक्रन्दं विपुलविजयाख्यं स्यात् ।।१०।।

अन्वयः–ध्रुवधान्ये जयनन्दौ खरकान्तमनोरमं सुमुखदुर्मुखोग्रं च (पुनः) रिपुदं वित्तदं नाशं आक्रन्दं विपुलविजयाख्यं च स्यात् ।।१०।।

भाषा–१ ध्रुव, २ धान्य, ३ जय, ४ नन्द, ५ खर, ६ कान्त, ७ मनोरम, ८ सुमुख, ९ दुर्मुख, १० उग्र, ११ रिपुद, १२ वित्तद, १३ नाश, १४ आक्रन्द, १५ विपुल और १६वाँ विजय नामक घर होता है।।१०।।

व्यय और अंश का उदाहरण–पूर्वकल्पित गृह नक्षत्र पुष्य की संख्या ८ में ८ के भाग देने से शेष–० बचा अर्थात् शून्य से ८ संख्या तुल्य व्यय हुआ क्योंकि जहाँ शेष ० शून्य हो वहाँ शेष की संख्या हर (भाजक) तुल्य ली जाती है।

अब पूर्व मुख का घर बनाना हो तो उसका शाला ध्रुवाङ्क १ में १ जोड़ने से २ हुआ, इससे ध्रुवादि गणना से दूसरा धान्य नामक गृह हुआ। इसकी नामाक्षर संख्या २ को व्यय ८ में जोड़ने से १० हुआ। फिर इसमें पूर्वोक्त पिण्ड १०९ को

जोड़ो तो ११९ हुआ, इसमें ३ के भाग देने से शेष यम का अंश हुआ, इसलिये इसको अशुभ समझना।।१०।।

घर के आय-वार आदि-

पिण्डे नवाङ्काङ्गगजाग्निनागनागाब्धिनागैर्गुणिते क्रमेण ।
विभाजिते नागनगाङ्कसूर्य्यनागर्क्षतिथ्यृक्षखभानुभिश्च ।।११।।
आयो वारांऽशको द्रव्यमृणमृक्षं तिथिर्युतिः ।
आयुश्चाथ गृहेशर्क्षगृहभैक्यं मृतिप्रदम् ।।१२।।

अन्वयः-पिण्डे नवाङ्काङ्गगजाग्निनागनागाब्धिनागैः क्रमेण गुणिते सति नागनगाङ्कसूर्य्यनागर्क्षतिथ्यृक्षखभानुभिः विभाजिते (क्रमात्) आयः वार अंशकः द्रव्यं ऋणं ऋक्षं, तिथिः युति आयुश्च स्यात् । अथ गृहेशर्क्षगृहभैक्यं मृतिप्रदं स्यात् ।।११-१२।।

भाषा-पूर्वोक्त पिण्ड को ९ स्थान में रखकर क्रम से ९, ९, ६, ८, ३, ८, ८, ४, ८ से पृथक्-पृथक् गुणा करें और गुणनफल में क्रम से ८, ७, ९, १२, ८, २७, १५, २७ और १२० के भाग देने से पृथक्-पृथक् क्रम से शेष तुल्य आय, वार, अंश, द्रव्य, ऋण, नक्षत्र, तिथि, योग और आयुर्दाय समझे। गृह के मालिक और गृह का नक्षत्र एक ही हो तो उसको मरणप्रद समझें।।११-१२।।

उदाहरण-जैसे पूर्वोक्त स्थित पिण्ड ३२५ को ९ से गुणा करने से २९२५, इसमें ८ के भाग देने से शेष ५ यह आय हुआ। पुनः पिण्ड ३२५ को ९ से गुणा करने से २९२५ में ७ के भाग देने से शेष ६ यह वार हुआ। पुनः पिण्ड ३२५ को ६ से गुणा करने से १९५० में ९ का भाग देने से शेष ६ यह अंश हुआ। पुनः पिण्ड ३२५ को ८ से गुणा करने से २६०० इसमें १२ के भाग देने से शेष ८ यह द्रव्य हुआ। पुनः पिण्ड ३२५ को ३ से गुणा करने से ९७५ इसमें ८ के भाग देने से शेष ७ यह ऋण हुआ। पुनः पिण्ड ३२५ को ८ से गुणा करने से २२६०० इसमें २७ के भाग देने से शेष ८ नक्षत्र संख्या हुई। इसी प्रकार तिथि आदि भी समझना चाहिये।।११-१२।।

वृषवास्तु चक्र-

गेहाद्यारम्भेऽर्कभाद्वत्सशीर्षे रामैर्दाहो वेदभैरग्रपादे ।
शून्यं वेदैः पृष्ठपादे स्थिरत्वं रामैः पृष्ठे श्रीर्युगैर्दक्षकुक्षौ ।।१३।।
लाभो रामैः पुच्छगैः स्वामिनाशो वेदैर्नैःस्वं वामकुक्षौ मुखस्थैः ।
रामैः पीडा सन्ततं वार्कधिष्ण्यादश्वैरुद्रैर्दिग्भिरुक्तं ह्यसत्सत् ।।१४।।

अन्वयः-गेहाद्यारम्भे अर्कभात् वत्सशीर्षे रामैः (त्रिभिर्नक्षत्रैः) दाहः अग्रपादे वेदभैः शून्यं, पृष्ठपादे वेदैः स्थिरत्वं, पृष्ठे रामैः श्रीः, दक्षकुक्षौ युगैः लाभः, पुच्छगैः रामैः स्वामिनाशः, वामकुक्षौ वेदैः नैःस्वम् , मुखस्थैः रामैः सन्ततं पीडा स्यात् , वा अर्कधिष्ण्यात् अश्वैः रुद्रैः दिग्भिः (क्रमशः) असत् सच्च उक्तम् ।।१३-१४।।

सूर्यभात् वृषभचक्रम्–

शिर.	अ.पा.	पृ.पा.	पृष्ठ	द.कु.	पुच्छ	वा.कु.	मुख	अङ्ग
३	४	४	३	४	३	४	३	नक्षत्र
दाह	शून्य	स्थिर	श्री	लाभ	नाश	दरिद्र	पीड़ा	फल

भाषा–गृहादि आरम्भ समय में सूर्य जिस नक्षत्र में हो उस नक्षत्र से आरम्भ करके नक्षत्र वत्स के मस्तक होते हैं, उसमें अग्नि भय, उसके आगे के ४ नक्षत्र अगले पैर के होते हैं, उसमें शून्य, उसके आगे के ४ पिछले पैर होते हैं, उसमें स्थिरता, उसके आगे के ३ नक्षत्र पृष्ठ के होते हैं, उसमें सम्पत्ति, उसके आगे के ४ नक्षत्र दाहिने भाग पेट में रहते हैं, उसमें लाभ, उसके आगे के ३ पुच्छ के नक्षत्रों में गृहपति का नाश, उसके आगे के ४ बायें भाग के पेट में होते हैं, उसमें निर्धनता और उसके आगे के ३ नक्षत्र मुख के होते हैं, उसमें सर्वदा पीड़ा होती है। अथवा इस प्रकार समझना कि सूर्य नक्षत्र से ७ नक्षत्रों में गृहारम्भ करने में अशुभ, उसके आगे ११ नक्षत्रों में शुभ और उसके आगे के १० नक्षत्रों में गृहारम्भ करने से अशुभ फल होता है॥१३-१४॥

सूर्यभात् गृहारम्भचक्रम् –

७	११	१०	वर्तमान नक्षत्र
अशुभ	शुभ	अशुभ	फल

प्रकारान्तर से द्वार निर्णय–

कुम्भेऽर्के फाल्गुने प्रागपरमुखगृहं श्रावणे सिंहकर्क्योः
पौषे नक्रे च याम्योत्तरमुखसदनं गोऽजगेऽर्के च राधे।
मार्गे जूकालिगे सद् ध्रुवमृदुवरुणस्वातिवस्वर्कपुष्यैः
सूतीगेहं त्वदित्यां हरिभविधिभयोस्तत्र शस्तः प्रवेशः ॥१५॥

अन्वयः–कुम्भे अर्के सति फाल्गुने, सिंहकर्क्योः अर्के सति श्रावणे मासे, नक्रे पौषे च प्रागपरमुखगृहं सत् (शुभं) स्यात्। च (पुनः) गोऽजगे अर्के राधे याम्योत्तरमुखसदनं स्यात्। ध्रुवमृदुवरुणस्वातिवस्वर्कपुष्यैः (गृहारम्भः शुभः स्यात्) अदित्यां सूतीगेहं सत्, तत्र सूतीगेहे हरिभविधिभयोः प्रवेशः शस्तः स्यात् ॥१५॥

भाषा–कुम्भ के सूर्य रहने पर फाल्गुन मास में पूर्व और पश्चिम मुख का तथा सिंह या कर्क के सूर्य रहने पर श्रावण मास में भी पूर्व-पश्चिम मुख का घर बनावे एवं पौष मास में मकर के सूर्य में दक्षिण या उत्तर मुख का तथा अगहन में तुला वृश्चिक के सूर्य में भी दक्षिण-उत्तर मुख का घर बनावे। इसी तरह ध्रुवसंज्ञक, मृदुसंज्ञक, शतभिषा, स्वाती, धनिष्ठा, हस्त और पुष्य नक्षत्रों में भी गृहारम्भ करना चाहिए। तथा पुनर्वसु में सूतिकागृह बनाना चाहिये और श्रवण तथा रोहिणी

नक्षत्र में सूतिकागृह में प्रवेश प्रशस्त कहा गया है।।१५।।

दूसरी रीति–

कैश्चिन्मेषरवौ मधौ वृषभगे ज्येष्ठे शुचौ कर्कटे
भाद्रे सिंहगते घटेऽश्वयुजि चोर्जेऽलौ मृगे पौषके।
माघे नक्रघटे शुभं निगदितं गेहं तथोर्जे न सत्
कन्यायाञ्च तपो धनुष्यपि न सत् कृष्णादिमासाद्भवेत् ।।१६।।

अन्वयः–कैश्चित् मेषरवौ मधौ, वृषभगे रवौ ज्येष्ठे, कर्कटे रवौ शुचौ, सिंहगते भाद्रे, घटे अश्वयुजि (आश्विने) च (पुनः) अलौ ऊर्जे, मृगे पौषके नक्रघटे रवौ माघे गेहं शुभं स्यात् तथा कन्यायां ऊर्जे (कार्तिके) धनुषि तथा अपि न सत् स्यात्। मासगणना कृष्णादिमासाद् भवेत् ।।१६।।

भाषा–किसी आचार्य का मत है कि, मेष का सूर्य हो तो चैत्र में, वृष का सूर्य हो तो ज्येष्ठ में, कर्क का सूर्य हो तो आषाढ़ में, सिंह का रवि हो तो भाद्रपद में, तुला का सूर्य हो तो आश्विन में, वृश्चिक का सूर्य हो तो कार्तिक में, मकर का रवि हो तो पौष में तथा मकर या कुम्भ का रवि हो तो माघ में भी गृहारम्भ शुभ होता है। किन्तु कन्या का रवि हो तो कार्तिक में तथा धनु का रवि हो तो माघ में गृहारम्भ अशुभ होता है। यहाँ मास कृष्ण पक्ष प्रतिपदा से समझना।।१६।।

गृहारम्भ में मासों के फल–

व्याधिं चैत्रे समाप्नोति यो गृहं कारयेन्नरः।
वैशाखे धनधान्यानि ज्येष्ठे मृत्युभयं तथा ।।
आषाढे भृत्यरत्नानि पशुं वर्जमवाप्नुयात्।
श्रावणे मित्रलाभं च हानिं भाद्रपदे तथा ।।
भार्याहानिमिषे मासि कार्तिके धनधान्यकम्।
मार्गशीर्षे वित्तलाभं पौषे तस्करतो भयम् ।।
माघे तु बहुशो लाभं तथैवाग्निभयं दिशेत्।
काञ्चनं फाल्गुने विन्द्यादिति मासफलं गृहे ।।

पुनः विशेष-पक्षफल–

"शुक्लपक्षे भवेत् सौख्यं कृष्णे तस्करतो भयम्।
गीर्वाण-पूर्वगीर्वाणमन्त्रिणोर्दृश्यमानयोः ।
शुक्ले पक्षे दिवा कार्यं निशायां न कदाचन ।।"

अन्वयः–शुक्लपक्षे सौख्यं भवेत् , कृष्णे तस्करतः भयं (भवेत्.) गीर्वाण-पूर्वगीर्वाणमन्त्रिणोः दृश्यमानयोः शुक्ले पक्षे दिवा (अपि गृहारम्भः कर्तव्यः) निशायां कदाचन (अपि) न कर्तव्यः।।१६।।

भाषा–शुक्ल पक्ष में गृहारम्भ से सुख होता है और कृष्ण पक्ष में चोर का भय होता है। बृहस्पति और शुक्र उदित होने चाहिये। गृहारम्भ रात्रि में कदापि नहीं करना चाहिये॥१६॥

द्वारनिषेध–

पूर्णेन्दुः प्राग्वदनं नवम्यादिषूत्तरास्ये त्वथ पश्चिमास्यम् ।
दर्शादितः शुक्लदले नवम्यादौ दक्षिणास्यं न शुभं वदन्ति ॥१७॥

अन्वयः–पूर्णेन्दुतः (पूर्णिमामारभ्य) प्राग्वदनं तु (पुनः) नवम्यादिषु उत्तरास्यम् । अथ दर्शादितः शुक्लदले पश्चिमास्यम्, नवम्यादौ दक्षिणास्यं गृहं शुभं न वदन्ति ॥१७॥

भाषा–पूर्णिमा से कृष्णपक्ष की अष्टमी पर्यन्त पूर्वमुख का, कृष्ण पक्ष नवमी से १४ पर्यन्त उत्तर मुख का, अमावस्या से शुक्ल पक्ष अष्टमी तक पश्चिम मुख का और नवमी से शुक्ल १ चतुर्दशी तक दक्षिण मुख का घर बनाना शुभ नहीं होता है॥१७॥

तृण काष्ठ में विशेष–

"पाषाणेष्ट्यादिगेहानि निन्द्यमासे न कारयेत् ।
तृणदारुगृहारम्भे मासदोषो न विद्यते ॥"

भाषा–ऊपर जो मास, तिथि आदि निन्दित कहे गये हैं, उनमें ईंटा-पत्थर आदि के घर नहीं बनावे। काष्ठ और तृण से घर बनाने में निन्द्य-मासों का दोष नहीं लगता है॥१७॥

पञ्चाङ्गशुद्धि–

भौमार्करिक्तामाद्यूने चरोनेऽङ्गे विपञ्चके ।
व्यष्टान्त्यस्थैः शुभैर्गेहारम्भस्त्र्यायारिगैः खलैः ॥१८॥

अन्वयः–भौमार्करिक्तामाद्यूने चरोनेऽङ्गे विपञ्चके नक्षत्रे शुभैः व्यष्टान्त्यस्थैः खलैः त्र्यायारिगैः गेहारम्भः स्यात् ॥१८॥

भाषा–मङ्गल और रविवार रिक्ता (४।९।१४), अमावस्या, प्रतिपदा इन सबों से भिन्न वार और तिथियों में, चर लग्न को छोड़कर अन्य लग्न में तथा पञ्चक (धनिष्ठादि ५ नक्षत्र) को छोड़ कर अन्य नक्षत्रों में, तथा लग्न से १२, ८ भिन्न स्थान में शुभ ग्रह और ३, ६, ११ भावों में पाप ग्रह हों तो गृहारम्भ शुभ होता है॥१८॥

देवालयादि में राहुमुख–

देवालये गेहविधौ जलाशये राहोर्मुखं शम्भुदिशो विलोमतः ।
मीनार्कसिंहार्कमृगार्कतस्त्रिभे खाते मुखात् पृष्ठविदिक् शुभा भवेत् ॥१९॥

अन्वयः–देवालये गेहविधौ जलाशये (क्रमशः) मीनार्कसिंहार्कमृगार्कतः त्रिभे शम्भुदिशः विलोमतः राहोः मुखं स्यात्, खाते मुखात् पृष्ठविदिक् शुभा भवेत् ॥१९॥

भाषा–देवालय, गृह और जलाशय के बनवाने में यथाक्रम मीन से ३, ३

राशियों के सूर्य में वायु, नैर्ऋत्य, आग्नेय और ईशान कोण में राहु का मुख रहता है तथा गृहारम्भ में सिंह से ३, ३ राशियों के सूर्य में, उसी प्रकार वायुकोण से विपरीत क्रम से चारों कोण में राहु का मुख समझना चाहिये। मुख दिशा से पृष्ठ दिशा में खात बनाना शुभ होता है। स्पष्टार्थ के लिये नीचे चक्र देखिये।।१९।।

राहुमुखचक्रम्–

राहु	ईशान	वायव्य	नैर्ऋत्य	आग्नेय	मुख
देवालयारम्भ	मी.मे.वृ.	मि.क.सिं.	क.तु.वृ.	ध.म.कु.	सूर्यस्थिति
गृहारम्भ	सिं.क.तु.	वृ.ध.म.	कु.मी.मे.	वृ.मि.क.	सूर्यस्थिति
जलाशयारम्भ	म.कु.मी.	मे.वृ.मि.	क.सिं.क.	तु.वृ.ध.	सूर्यस्थिति
राहु	आग्नेय	ईशान	वायव्य	नैर्ऋत्य	पृष्ठ

कूप का विचार–

कूपे वास्तोर्मध्यदेशेऽर्थनाशस्त्वैशान्यादौ पुष्टिरैश्वर्य्यबुद्धिः ।
सूनोर्नाशः स्त्रीविनाशो मृतिश्च सम्पत्पीडा शत्रुतः स्याच्च सौख्यम् ।।२०।।

अन्वयः–वास्तोः मध्यदेशे कूपे सति अर्थनाशः स्यात् । तु (पुनः) ऐशान्यादौ पुष्टिः ऐश्वर्यवृद्धिः सूनोर्नाशः स्त्रीविनाशः मृतिः सम्पत् शत्रुतः पीडा च (पुनः) सौख्यं स्यात् ।।२०।।

गृहकूपचक्रम्–

ईशान (पुष्टि)	पूर्व ऐश्वर्यवृद्धि	अग्निकोण पुत्रनाश
उत्तर (सौख्य)	धननाश	दक्षिण स्त्रीनाश
वायव्य शत्रुकृतपीडा	पश्चिम सम्पत्ति	नैर्ऋत्य स्वामिमरण

भाषा–वास्तुभूमि के मध्यभाग में कुँआ खोदवाने से धन का नाश होता है। ईशान कोण में पुष्टि, पूर्व में ऐश्वर्यवृद्धि, अग्निकोण में पुत्रहानि, दक्षिण में स्त्री का नाश, नैर्ऋत्य कोण में अपना मरण, पश्चिम में सम्पत्तिवृद्धि, वायुकोण में शत्रु द्वारा पीड़ा और उत्तर भाग में सुख-प्राप्ति होती है।।२०।।

दिशाओं में गृह के विभाग–

स्नानाग्निपाकशयनास्त्रभुजश्च धान्य-
भाण्डारदैवतगृहाणि च पूर्वतः स्युः ।
तन्मध्यतस्तु मथनाज्यपुरीषविद्या-
भ्यासाख्यरोदनरतौषधसर्वधाम ।।२१।।

अन्वयः-पूर्वतः (क्रमात्) स्नानाग्निपाकशयनास्त्रभुजः (सदनानि) च (पुनः) धान्यभाण्डारदैवतगृहाणि स्युः। तु (पुनः) तन्मध्यतः (क्रमशः) मथनाज्यपुरीषविद्याभ्यासाख्यरोदनरतौषधसर्वधाम (कार्यम्)।।२१।।

भाषा-वास्तु भूमि के पूर्व भाग में स्नान का, अग्निकोण में रसोई का, दक्षिण में शयन का, नैर्ऋत्य कोण में अस्त्र-शस्त्र का, पश्चिम में भोजन का, वायव्य कोण में अन्न आदि का तथा उत्तर में भण्डार घर बनवाना चाहिये तथा उक्त दो-दो स्थान के बीच-बीच में क्रम से दही मथने का, घृत रखने का, पैखाने का, विद्याभ्यास का, रोदन का, सुरत का, औषध रखने का और ८वाँ शेष सब वस्तुओं का स्थान (घर या कमरा) बनाना चाहिये।।२१।।

स्पष्टार्थ चक्र-

ईशान			पूर्व			आग्नेय
	देवतागृह	सर्व संग्रहगृह	स्नानगृह	मन्थनगृह	रसोई घर	
	औषधि गृह				घृतसंग्रह गृह	
उत्तर	भण्डार		आँगन		शयनगृह	दक्षिण
	स्त्रीप्रसङ्ग गृह				पायखाना	
	धान्य संग्रहालय	रोदनगृह	भोजन संग्रहालय	विद्याभ्यास गृह	शस्त्रागार	
वायव्य			पश्चिम			नैर्ऋत्य

गृह की आयु के योग-

जीवार्कविच्छुक्रशनैश्चरेषु लग्नारिजामित्रसुखत्रिगेषु ।
स्थितिः शतं स्याच्छरदां शिताकरिज्ये तनुत्र्यङ्गसुते शते द्वे ।।२२।।

अन्वयः-जीवार्कविच्छुक्रशनैश्चरेषु (क्रमशः) लग्नारिजामित्रसुखत्रिगेषु (गृहस्य) शरदां शतं स्थितिः स्यात् । सिताकरिज्ये (क्रमशः) तनुत्र्यङ्गसुते द्वे शते स्थितिः स्यात् ।।२२।।

भाषा-गृहारम्भ समय में यदि बृहस्पति, सूर्य, बुध, शुक्र और शनि ये क्रम से लग्न ६,७,४,३ भावों में हो तो उस घर की आयु १०० सौ वर्ष होती है तथा लग्न में शुक्र, तृतीय में सूर्य, षष्ठ भाव में मंगल और पञ्चम में बृहस्पति हो तो २०० दो सौ वर्ष उस घर की आयु होती है।।२२।।

गृह की आयु-

लग्नाम्बरायेषु भृगुज्ञभानुभिः केन्द्रे गुरौ वर्षशतायुरालयः ।
बन्धौ गुरुर्व्योम्नि शशी कुजार्कजौ लाभे तदाऽशीतिसमायुरालयः ।।२३।।

अन्वयः-भृगुज्ञभानुभिः लग्नाम्बरायेषु (स्थितैः सद्भिः), गुरौ केन्द्रे स्थिते सति आलयः वर्षशतायुः स्यात् । गुरुः बन्धौ, शशी व्योम्नि, कुजार्कजौ लाभे सति, अशीतिसमायु आलयः स्यात् ॥२३॥

भाषा-जिस घर के बनवाने के समय यदि लग्न १०,११ इन भावों में क्रम से शुक्र, बुध और सूर्य हों तथा गुरु केन्द्र में हों तो भी सौ वर्ष की आयु होती है। चतुर्थ में गुरु, दशम भाव में चन्द्रमा और एकादश में शनि या मङ्गल हो तो ८० वर्ष गृह की आयु होती है॥२३॥

लक्ष्मी युक्त गृहयोग-

स्वोच्चे शुक्रे लग्नगे वा गुरौ वेश्मगतेऽथ वा ।
शनौ स्वोच्चे लाभगे वा लक्ष्म्या युक्तं चिरं गृहम् ॥२४॥

अन्वयः-शुक्रे स्वोच्चे लग्नगे वा गुरौ स्वोच्चे वेश्मगते अथवा शनौ स्वोच्चे लाभगे सति चिरं लक्ष्म्या युक्तं गृहं स्यात् ॥२४॥

भाषा-यदि अपने उच्च (मीन) का शुक्र लग्न में, अथवा स्वोच्च (कर्क) का गुरु चतुर्थ भाव में, या स्वोच्च (तुला) का शनि एकादश भाव में हो तो ऐसे योग में गृह आरम्भ किया जाय तो वह चिरकाल पर्यन्त लक्ष्मी से युक्त रहता है॥२४॥

पराये हाथ में गृह जाने का योग-

द्यूनाम्बरे यदैकोऽपि परांशस्थो ग्रहो गृहम् ।
अब्दान्तः परहस्तस्थं कुर्याच्चेद्वर्णपोऽबलः ॥२५॥

अन्वयः-यदा एकोऽपि ग्रहः परांशस्थः द्यूनाम्बरे स्थितः तथा चेद् वर्णपः अबलः तदा अब्दान्तः गृहं परहस्तस्थं कुर्यात् ॥२५॥

भाषा-यदि गृहारम्भ समय में लग्न से ७ या १०वें भाव में शत्रु के नवमांश में कोई ग्रह हो तो वर्ष के भीतर ही वह घर दूसरों के हाथ में चला जाता है, यदि गृहपति का वर्णपति ग्रह निर्बल हो तभी यह फल समझना। अर्थात् ग्रह यदि अपने नवमांश में हो या वर्णपति सबल हो तो शुभ फल होता है॥२५॥

गृहारम्भ में नक्षत्र वार की विशेषता-

पुष्यध्रुवेन्दुहरिसर्पजलैः सजीवै-
स्तद्वासरेण च कृतं सुतराज्यदं स्यात् ।
द्वीशाश्वितक्षवसुपाशिशिवैः सशुक्रै-
र्वारे सितस्य च गृहं धनधान्यदं स्यात् ॥२६॥

अन्वयः-सजीवैः पुष्यध्रुवेन्दुहरिसर्पजलैः (नक्षत्रैः) तद्वासरेण (गुरुवासरेण) च कृतं (भवनम्) सुतराज्यप्रदं स्यात् । सशुक्रैः द्वीशाश्वितक्षवसुपाशिशिवैः सितस्य वारे च (कृतं) धनधान्यदं (भवेत्)॥२६॥

भाषा–यदि गृहारम्भ समय में–बृहस्पति से युत पुष्य, ध्रुवसंज्ञक, मृगशिरा, श्रवण, आश्लेषा या पूर्वाषाढ़ा में से कोई नक्षत्र हो तथा बृहस्पतिवार भी हो तो वह घर पुत्र और राज्य की वृद्धि करनेवाला होता है तथा शुक्र युत–विशाखा, अश्विनी, चित्रा,धनिष्ठा, शतभिषा या आर्द्रा नक्षत्र हो तथा शुक्रवार भी हो तो वह घर धन-धान्य की वृद्धि करने वाला होता है॥२६॥

दूसरा योग–

सारैः करेज्यान्त्यमघाम्बुमूलैः कौजेऽह्नि वेश्माग्निसुतार्त्तिदं स्यात् ।
सज्ञैः कदास्त्रार्यमतक्षहस्तैर्ज्ञस्यैव वारे सुखपुत्रदं स्यात् ॥२७॥

अन्वयः–**सारैः करेज्यान्त्यमघाम्बुमूलैः (नक्षत्रैः) कौजे अह्नि (कृतं) वेश्म अग्निसुतार्दिदं स्यात् । सज्ञैः कदास्त्रार्यमतक्षहस्तैः ज्ञस्यैव वारे वेश्म सुखपुत्रदं स्यात् ॥२७॥**

भाषा–यदि मङ्गल से युक्त हस्त, पुष्य, रेवती, मघा, पूर्वाषाढ़ या मूल नक्षत्र हो और मंगलवार हो तो वह घर अग्नि और सन्तान को पीड़ा देने वाला होता है तथा बुध से युत रोहिणी, अश्विनी, उत्तराफाल्गुनी, चित्रा, हस्त नक्षत्र हो और बुधवार हो तो वह घर सुख और सन्तान की वृद्धि करने वाला होता है॥२७॥

अशुभयोग–

अजैकपादहिर्बुध्न्यशक्रमित्रानिलान्तकैः ।
समन्दैर्मन्दवारे स्याद्रक्षोभूतयुतं गृहम् ॥२८॥

अन्वयः–**समन्दैः अजैकपादहिर्बुध्न्यशक्रमित्रानिलान्तकैः मन्दवारे कृतं गृहं रक्षोभूतयुतं स्यात् ॥२८॥**

भाषा–यदि शनि से युत पूर्वाभाद्र, उत्तरभाद्र, ज्येष्ठा, अनुराधा, स्वाती या भरणी नक्षत्र हो और शनिवार भी हो तो उस समय में बनाया हुआ घर राक्षस और भूत-प्रेत से युक्त होता है॥२८॥

सूर्य नक्षत्र से द्वार चक्र–

सूर्य्यर्क्षाद्युगमैः शिरस्यथ फलं लक्ष्मीस्ततः कोणभै-
र्नागैरुद्वसनं ततो गजमितैः शाखासु सौख्यं भवेत् ।
देहल्यां गुणभैर्मृतिर्गृहपतेर्मध्यस्थितैर्वेदभैः
सौख्यं चक्रमिदं विलोक्य सुधिया द्वारं विधेयं शुभम् ॥२९॥

अन्वयः–**सूर्यर्क्षात् शिरसि युगभैः (द्वारारम्भे सति) फलं लक्ष्मीः, अथ नागैः कोणभैः उद्वसनं, ततः शाखासु गजमितैः सौख्यं भवेत् । देहल्यां गुणभैः गृहपतेः मृतिः, मध्यस्थितैः वेदभैः सौख्यं स्यात् । सुधिया इदं चक्रं विलोक्य शुभं द्वारं विधेयम् ॥२९॥**

भाषा–घर में नवीन द्वार बनवाना हो तो सूर्य नक्षत्र से ४ नक्षत्र तक शिर के होते हैं। इनमें द्वार बनाने से लक्ष्मी की प्राप्ति,उसके आगे ८ नक्षत्र कोण के

होते हैं, उसमें द्वार बनाने से उद्वास, उसके बाद ८ नक्षत्र शाखा के होते हैं, उसमें द्वार बनाने से सुख, उसके बाद ३ देहली के नक्षत्र होते हैं, उसमें द्वार बनाने से गृहपति का मरण, उसके बाद ४ नक्षत्र मध्यभाग के होते हैं, उसमें द्वार बनाया जाय तो सुख की प्राप्ति होती है।।२९।।

द्वार चक्र–

सूर्य के नक्षत्र से नक्षत्रों की संख्या	४	८	८	३	४
फल	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ

इति मुहूर्तचिन्तामणौ वास्तुप्रकरणम् ।

गृहप्रवेशप्रकरणम्

अपूर्व-सपूर्व-गृहप्रवेशमुहूर्त[1]–

सौम्यायने ज्येष्ठतपोऽन्त्यमाधवे यात्रानिवृत्तौ नृपतेर्नवे गृहे ।
स्याद्वेशनं द्वाःस्थमृदुध्रुवोडुभिर्जन्मर्क्षलग्नोपचयोदये स्थिरे ।।१।।

अन्वयः–सौम्यायने ज्येष्ठतपोऽन्त्यमाधवे द्वाःस्थमृदुध्रुवोडुभिः जन्मर्क्षलग्नोपचयोदये स्थिरे यात्रानिवृत्तौ सत्यां नृपतेः नवे गृहे वेशनं शुभं स्यात् ।।१।।

भाषा–राजा को चाहिए कि, यात्रा से लौटने पर या नवीन घर में उत्तरायण समय में, ज्येष्ठ, माघ, फाल्गुन, वैशाख मासों में द्वार दिशा के नक्षत्र (कृत्तिकादि ७,७ जो पूर्वादि दिशा में कहे गये हैं) उनमें तथा मृदुसंज्ञक, ध्रुवसंज्ञक नक्षत्रों में, जन्म लग्न और जन्म राशि से उपचय (२,६,१०,११) राशि तथा स्थिर राशि के लग्न में प्रवेश करे।।१।।

जीर्णगृहप्रवेश मुहूर्त–

जीर्णे गृहेऽग्न्यादिभयान्नवेऽपि मार्गोर्जयोः श्रावणिकेऽपि सन् स्यात् ।
वेशोऽम्बुपेज्यानिलवासवेषु नावश्यमस्तादिविचारणाऽत्र ।।२।।

अन्वयः–जीर्णे गृहे अग्न्यादिभयात् नवेऽपि गृहे मार्गोर्जयोः श्रावणिकेऽपि मासे वेशः (गृहप्रवेशः) सन् (शुभः) स्यात् । अम्बुपेज्यानिलवासवेषु (नक्षत्रेष्वपि) वेशः शुभः स्यात् । अत्र (गृहप्रवेशविषये) अस्तादिविचारणा नावश्यकी।।२।।

भाषा–पुराने घर अथवा अग्नि आदि के भय से उसी स्थान पर बनाये नवीन घर में भी, अगहन, कार्तिक और श्रावण में भी तथा शतभिषा, पुष्य,

१. नवीन गृह प्रवेश को अपूर्व-प्रवेश, यात्रा से लौटने पर सपूर्वप्रवेश और जीर्णगृहप्रवेश को द्वन्द्वप्रवेश कहते हैं।

अपूर्वः प्रथमः प्रवेशो यात्रावसाने तु सपूर्वसंज्ञः ।
द्वन्द्वाभयः त्वग्निभयादिजातः त्वेवं प्रवेशस्त्रिविधः प्रदिष्टः ।।

स्वाती, धनिष्ठा नक्षत्रों में भी प्रवेश शुभ होता है। इसमें गुरु, शुक्र के अस्तादि दोष के विचार करने की आवश्यकता नहीं होती॥२॥

वास्तु पूजन और गृहप्रवेश विधि–

मृदुध्रुवक्षिप्रचरेषु मूलभे वास्त्वर्चनं भूतबलिञ्च कारयेत्।
त्रिकोणकेन्द्रायधनत्रिगैः शुभैर्लग्ने त्रिषष्ठायगतैश्च पापकैः॥३॥
शुद्धाम्बुरन्ध्रे विजनुर्भमृत्यौ व्यार्कारिरिक्ताचरदर्शचैत्रे।
अग्रेऽम्बुपूर्णं कलशं द्विजांश्च कृत्वा विशेद्वेश्म भकूटशुद्धम्॥४॥

अन्वयः–मृदुध्रुवक्षिप्रचरेषु मूलभे वास्त्वर्चनं भूतबलिं च कारयेत्। शुभैः (ग्रहैः) त्रिकोणकेन्द्रायधनत्रिगैः (सद्भिः) च (पुनः) पापकैः त्रिषष्ठायगतैः शुद्धाम्बुरन्ध्रे, विजनुर्भमृत्यौ (लग्ने) व्यार्कारिरिक्ताचरदर्शचैत्रे तथा अग्रे अम्बुपूर्णं कलशं द्विजांश्च कृत्वा भकूटशुद्धं वेश्म (गृहं) विशेत्॥३-४॥

भाषा–मृदुसंज्ञक, ध्रुवसंज्ञक, क्षिप्रसंज्ञक, चरसंज्ञक और मूल नक्षत्रों में वास्तुपूजन और भूतबलि करना चाहिये और शुभ ग्रह ५,९,१,४,७, १०,११,२,३ में हो और पापग्रह ३,६,११ स्थान में हो, लग्न से ४,८ स्थान ग्रहवर्जित हो, जन्म राशि, लग्न ८वीं राशि छोड़कर अन्य राशि लग्न में हो, रवि, मंगलवार, रिक्ता तिथि, चर लग्न, अमावस्या और चैत्र मास इन सबों को छोड़कर अन्य दिन, तिथि, लग्न, मासों में आगे पूर्ण कलश और ब्राह्मणों को लेकर भकूटादि से शुद्ध किये हुए घर में प्रवेश करना चाहिये॥३-४॥

गृह प्रवेश लग्न से वाम रविविचार–

वामो रविर्मृत्युसुतार्थलाभतोऽर्के पञ्चमे प्राग्वदनादिमन्दिरे।
पूर्णातिथौ प्राग्वदने गृहे शुभो नन्दादिके याम्यजलोत्तरानने॥५॥

अन्वयः–मृत्युसुतार्थलाभतः पञ्चमे अर्के (स्थिते सति) क्रमेण प्राग्वदनादिमन्दिरे वामः रविः स्यात्। पूर्णातिथौ प्राग्वदने गृहे नन्दादिके तिथौ याम्यजलोत्तरानने गृहे प्रवेशः शुभः स्यात्॥५॥

भाषा–गृहप्रवेश कालिक लग्न से ८,९,१०,११,१२ इन भावों में सूर्य हो तो पूर्व मुखवाले घर में प्रवेश करने में वाम होता है तथा ५,६,७,८,९ इन भावों में सूर्य हो तो दक्षिण मुख के घर में प्रवेश करने में वाम होता है। २,३,४,५,६ इन भावों में सूर्य हो तो पश्चिम मुख के घर मे प्रवेश करने से वाम भाग होता है तथा ११,१२,१,२,३ इन भावों में रवि हो तो उत्तर द्वार वाले घर में प्रवेश करने वाले को वाम रवि होता है। पूर्व मुख के घर में पूर्णा तिथि, दक्षिण मुख के घर में नन्दा तिथि, पश्चिम मुख के घर में भद्रा तिथि और उत्तर मुख के घर में जया तिथि प्रवेश में शुभ होती है॥५॥

गृहप्रवेश में कुम्भ चक्र–

वक्त्रे भू रविभात्प्रवेशसमये कुम्भेऽग्निदाहः कृताः
प्राच्यामुद्वसनं कृता यमगता लाभः कृताः पश्चिमे ।
श्रीर्वेदाः कलिरुत्तरे युगमिता गर्भे विनाशो गुदे
रामाः स्थैर्यमतः स्थिरत्वमनलाः कण्ठे भवेत् सर्वदा ।।६।।

अन्वयः–कुम्भे (निर्मिते कुम्भनामके चक्रे) वक्त्रे रविभात् भूः (एकं नक्षत्रं) प्रवेशसमये (स्याच्चेत्तदा) अग्निदाहः स्यात् । प्राच्यां कृताः चत्वारः (स्युश्चेत्तदा) उद्वसनम् । कृताः याम्यगताः (तदा) लाभः स्यात् । पश्चिमे कृताः (तदा) श्रीः। उत्तरे वेदाः (स्युस्तदा) कलिः। गर्भे युगमिताः (तदा) विनाशः। गुदे रामाः (त्रयः स्युस्तदा) स्थैर्यम् । अतः अनलाः कण्ठे (स्युस्तदा प्रवेशे सति) सर्वदा स्थिरत्वं स्यात् ।।६।।

गृहप्रवेश में सूर्य के नक्षत्रसे कुम्भ चक्र–

स्थान	मुख	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर	गर्भ	नीचे	कण्ठ
नक्षत्र	१	४	४	४	४	४	३	३
फल	अग्निभय	उद्वसन	लाभ	लक्ष्मीप्राप्ति	कलह	विनाश	स्थिरता	स्थिरत्व

भाषा–गृह प्रवेश समय में सूर्य जिस नक्षत्र में हो उससे १ नक्षत्र कलश के मुख का होता है, उसमें प्रवेश करने से अग्निभय, उसके आगे के ४ नक्षत्र– पूर्व दिशा के होते हैं, उनमें प्रवेश करने से उद्वास (घर को छोड़कर चले जाना) होता है। उसके बाद के ४ नक्षत्र दक्षिण दिशा के होते हैं, उनमें प्रवेश करने से धनादि सुख लाभ होता है। उससे आगे के ४ नक्षत्र पश्चिम दिशा के होते हैं, उनमें प्रवेश करने से सम्पत्ति लाभ होता है। उसके बाद के ४ नक्षत्र उत्तर दिशा के होते हैं, उनमें गृह प्रवेश करने से कलह होता है। तदनन्तर ४ नक्षत्र गर्भ (भीतर) के होते हैं, उनमें प्रवेश करने से विनाश होता है। उसके बाद ३ नक्षत्र अधोभाग के होते हैं, उनमें प्रवेश करने से स्थिरता और उसके आगे के नक्षत्र कण्ठ के होते हैं, उनमें भी गृहप्रवेश करने से स्थिरत्व होता है।।६।।

एवं सुलग्ने स्वगृहं प्रविश्य वितानपुष्पश्रुतिघोषयुक्तम् ।
शिल्पज्ञदैवज्ञविधिज्ञपौरान् राजार्चयेद् भूमिहिरण्यवस्त्रैः ।।७।।

अन्वयः–एवं राजा सुलग्ने वितानपुष्पश्रुतिघोषयुक्तं स्वगृहं प्रविश्य शिल्पज्ञदैवज्ञविधिज्ञपौरान् भूमिहिरण्यवस्त्रै अर्चयेत् (पूजयेत्)।।७।।

भाषा–इस प्रकार वितान (चँदवा), फूल, बन्दनवार आदि से सजे हुए वेदों के ध्वनि से युक्त अपने नवीन गृह में प्रवेश करके गृहपति को चाहिये कि–शिल्पज्ञ (कारीगर), ज्योतिषी (मुहूर्त बनाने वाले), विधिज्ञ (पुरोहित) तथा पुरवासियों का यथाशक्ति जमीन, सुवर्ण-रुपया-वस्त्रादि से सत्कार करे।।७।।

इति गृहप्रवेशप्रकरणम् ।

समाप्तोऽयं मुहूर्तचिन्तामणिः।

ग्रन्थकारवंशप्रशस्तिः

आसीद्धर्मपुरे षडङ्गनिगमाध्येतृद्विजैर्मण्डिते
ज्योतिर्वित्तिलकः फणीन्द्ररचिते भाष्ये कृतातिश्रमः।
तत्तज्जातकसंहितागणितकृन्मान्यो महाभूभुजां
तर्कालंकृतिवेदवाक्यविलसद्बुद्धिः सचिन्तामणिः ।।१।।

ज्योतिर्विद्गणवन्दितांघ्रिकमलस्तत्सूनुरासीत्कृती
नाम्नाऽनन्त इति प्रथाममधिगतो भूमण्डलाहस्करः।
ये रम्यां जनपद्धतिं समकरोद्दुष्टाशयध्वंसिनीं
टीकां चोत्तमकामधेनुगणितेऽकार्षीत् सतां प्रीतये।।२।।

तदात्मज उदारधीर्विबुधनीलकण्ठानुजो
गणेशपदपङ्कजं हृदि निधाय रामाभिधः ।
गिरीशनगरे वरे भुजभुजेषुचन्द्रैर्मिते (१५२२)
शके विनिरमादिमं खलु मुहूर्त्तचिन्तामणिम् ।।३।।

अन्वयः–षडङ्गनिगमाध्येतृद्विजैर्मण्डिते धर्मपुरे नगरं ज्योतिर्वित्तिलकः फणीन्द्ररचिते भाष्ये कृतातिश्रमः, तत्तज्जातकसंहितागणितकृत् महाभूभुजां मान्यः, स चिन्तामणिः आसीत् । तत्सूनुः ज्योतिर्विद्गणवन्दितांघ्रिकमलः नाम्ना जनिपद्धतिं समकरोत् । (पुनः) सतां प्रीतये उत्तमकामधेनुगणिते टीकां अकार्षीत् ।तदात्मजः उदारधीः विबुधनीलकण्ठानुजः रामाभिधः वरे गिरीशनगरे (काशीपुरे) हृदि गणेशपदपङ्कजं निधाय भुजभुजेषुचन्द्रैर्मिते (१५२२) शके खलु इमं मुहूर्तचिन्तामणिं विनिरमात् रचितवान् ।।१-३।।

भाषा–व्याकरणादि साङ्ग वेदाध्ययन करने वाले ब्राह्मणों से परिपूर्ण परमसुन्दर धर्मपुर नाम ग्राम में ज्यौतिष शास्त्रज्ञों में श्रेष्ठ, शेषकृत महाभाष्य को अच्छी तरह जाननेवाले जातक-संहिता और गणित ज्यौतिष ग्रन्थों के रचयिता, राजाओं के मान्य, न्याय, साहित्य, अलङ्कारादिकों में कुशाग्रबुद्धि वाले चिन्तामणि नामक पण्डित हुए। समस्त ज्यौतिष शास्त्रज्ञों से पूजित चरण-कमल वाले उनके पुत्र अनन्त नामक पण्डित हुए, जो भूमण्डल में सूर्य के समान समझे जाते थे, जिन्होंने दूषित जन्मपत्र पद्धति को सुधार कर अतिशुद्ध जन्मपत्रपद्धति बनायी। तथा अति श्रेष्ठ 'कामधेनु' नामक ग्रन्थ की सरल टीका सज्जनों के प्रसन्नतार्थ लिखी। उनके पुत्र और नीलकण्ठ के छोटे सहोदर 'राम' ने श्रीगणेशजी के चरण-कमल को हृदय में रखकर काशीपुरी में शाके १९५२ में इस मुहूर्तचिन्तामणि नामक ग्रन्थ को बनाया।।१-३।।

❒

परिशिष्टप्रकरणम्

नवीन भूमि में गृह बनाने के पूर्व परमावश्यक बातें

शुभाशुभ फल ज्ञानार्थ शिवाबलि–

रात्रौ मांसादिसंयुक्तं भक्तं भूमौ निधाय च ।
कियद्दूरे ततो स्थित्वा तच्छब्दं परिचिन्तयेत् ।।१।।

भाषा–जिस भूमि में वास करना हो उस भूमि में किसी अच्छे मुहूर्त में रात्रि के समय में मांस, भात आदि की बलि रखकर वहाँ से कुछ दूर हटकर बैठे और सावधान होकर सुने कि उस बलि को खाकर शिवा (शृगाली-सियार) वास्तु भूमि की किस दिशा में शब्द करती है।।१।।

शिवा के शब्द का फल–

नैर्ऋत्ये हि शिवा रौति तदा वासं न कारयेत् ।
ईशाने मरणं प्रोक्तमुत्तरे शुभमादिशेत् ।।
नादे वायव्यकोणेषु भयं किञ्चित् विनिर्दिशेत् ।
पश्चिमे वासकरणादानन्दः परिकीर्तितः ।
अन्यदिक्षु यदा रौति तदा वासं न कारयेत् ।।२।।

भाषा–यदि बलि को खाकर के नैर्ऋत्य कोण में शब्द करे तो उस स्थान में वास नहीं करना चाहिये। यदि वासभूमि के उत्तर में जाकर बोले तो वास करनेसे शुभ फल समझना। वायव्य कोण में शब्द करे तो भी वास करने से कुछ भय होता है। यदि पश्चिम भाग में जाकर शब्द करे तो वास करने से शुभ (आनन्द) समझना। अन्य दिशा में बोले तो उस स्थान में वास नहीं करना। अर्थात् यदि बलि को खाकर शब्द नहीं करे तो उस स्थान को बसने योग्य समझे।।२।।

अन्य प्रकार से भूमिपरीक्षा–

यत्र वृक्षाः प्ररोहन्ति सस्यं सम्यक् प्रवर्धते ।
सा ज्ञेया जीविता भूमिर्मृता चातोऽन्यथा स्मृता ।।३।।

भाषा–जिस भूमि में वृक्षादि रोपने से या अन्नादि बोने से अच्छी तरह से बढ़े और फले उस भूमि को जीवित समझे अन्यथा मृत समझना चाहिए। जीवित भूमि में वास करना चाहिये। मृत भूमि में वास नहीं करना चाहिये।।३।।

भूमि परीक्षा का तृतीय प्रकार–

श्वभ्रं हस्तमितं खनेदिह जलैः पूर्णं निशास्ये न्यसेत् ।
प्रातर्दृष्टजलं स्थलं सदजलं मध्यं त्वसत् स्फाटितम् ।।४।।

भाषा–सन्ध्याकाल में एक हाथ लम्बा एक हाथ चौड़ा तथा एक हाथ गहरा खात बनाकर उसको जल से पूर्ण करे। प्रातःकाल उस खात में कुछ भी जल

अवशेष रहे तो वह भूमि बसने में अत्यन्त शुभप्रद होती है, यदि जल शेष नहीं रहे तथा खात की मिट्टी फटी न हो तो मध्यम समझना, यदि जल सूख जाय और मिट्टी छिन्न-भिन्न होकर फट जाय तो अधम फल समझना चाहिए।।४।।

भूमि के वर्ण–

शुक्लमृत्स्ना च या भूमिः ब्राह्मणी सा प्रकीर्तिता ।
क्षत्रिया रक्तमृत्स्ना च हरिद् वैश्या प्रकीर्तिता ।।५।।
कृष्णा भूमिर्भवेच्छूद्रा चतुर्धा भूः प्रकीर्तिता ।
श्वेता शस्ता द्विजेन्द्राणां रक्तभूमिर्महीभुजाम् ।।६।।
विशां पीता च शूद्राणां कृष्णाऽन्येषां विमिश्रिता ।

भाषा–श्वेत वर्ण की मिट्टी वाली भूमि ब्राह्मणी, लाल वर्ण की क्षत्रिय, हरे वर्ण की वैश्या और काली मिट्टी वाली भूमि शूद्रा कहलाती है। श्वेत वर्ण वाली भूमि ब्राह्मणों के लिये, लालवर्ण की क्षत्रियों के लिये, हरे वर्ण की वैश्यों के लिए और कृष्ण वर्ण की भूमि शूद्रों के लिये शुभप्रद होती है। अन्य वर्णों (म्लेच्छादिकों) के लिए फलमिश्रित वर्ण की भूमि बसने योग्य होती है।।५-६ १/२।।

भूमि प्लव (झुकाव) के फल–

शम्भुकोणे प्लवा भूमिः कर्तुः श्रीसुखदायिनी ।।७।।
पूर्वप्लवा वृद्धिकरी धनदा तूत्तरप्लवा ।
मृत्युशोकप्रदा नित्यं सर्वथा दक्षिणप्लवा ।।८।।
गृहभयकरी सा च या भूमिर्नैर्ऋतिप्लवा ।
धनहानिकरी चैव कीर्तिदा वरुणप्लवा ।।९।।
वायुप्लवा च या भूमिः सा सदोद्वेगकारिणी ।

भाषा–जिस भूमि में ईशान कोण की तरफ प्लव (झुकाव) अर्थात् पानी बहता हो वह बसने वाले को सम्पत्ति और सुख देनेवाली होती है। पूर्व दिशा में झुकी हुई भूमि सदा सुख-सम्पत्ति को बढ़ानेवाली होती है। उत्तर दिशा में झुकी हुई भूमि धनवृद्धिकारिणी होती है। दक्षिण दिशा में झुकी भूमि मरण और शोक देनेवाली होती है। नैर्ऋत्य कोण में झुकी हुई भूमि गृह नाश करने वाली होती है। पश्चिम दिशा में झुकी हुई भूमि धन हानि करती है, किन्तु कीर्ति की वृद्धि करने वाली होती है। और वायु कोण में झुकी हुई भूमि सर्वदा उद्वेग करनेवाली होती है। इस प्रकार प्रथम भूमि की परीक्षा करके वास करना चाहिये।।७-९ १/२।।

विशेष–

मनसश्चक्षुषोर्यत्र सन्तोषो जायते भुवि ।।१०।।
तत्र कार्यं गृहं सर्वैरिति गर्गादिसम्मतम् ।।१० १/२।।

भाषा–गर्गादि आचार्यों का कहना है, कि बसनेवाले को जिस भूमि को देखने से मन प्रसन्न हो जाय वही भूमि उसके लिए शुभ होती है। शुभ लक्षणों से युक्त भूमि में भी अपना मन प्रसन्न नहीं हो तो वहाँ वास नहीं करना चाहिये और अशुभ लक्षण वाली भूमि को देखने से यदि अपने मन में प्रसन्नता हो तो उस भूमि में अवश्य वास करे। इस प्रकार उसको सदा शुभ फल की प्राप्ति होती है।।१०$\frac{१}{२}$।।

गृहारम्भ में वर्जनीय भूमिशयन नक्षत्र–

प्रद्योतनात् पञ्च-नगाऽङ्क-सूर्य-नवेन्दु-षड्विंशमितानि भानि ।
शेते मही नात्र गृहं विधेयं तडाग-वापी-खननं न शस्तम् ।।११।।

भाषा–जिस नक्षत्र में सूर्य हो उससे ५वाँ, ७वाँ, ९वाँ, १२वाँ, १९वाँ और २६वाँ इन नक्षत्रों में पृथिवी शयन करती है, इसलिए इनमें घर का आरम्भ या तालाब, वापी, कूप आदि का खनना नहीं करना चाहिए।।११।।

वास्तु भूमि में शल्याशल्य का ज्ञान–

अ-क-च-ट-त-प-य-श-वर्णाः पूर्वादिषु मध्यगा हपयाः ।
शल्यकरा इह नान्ये शल्यगृहे निवसतां नाशः ।।१२।।

भाषा–वास्तु भूमि में शल्य (हड्डी आदि) है या नहीं इसका विचार करना हो तो–वास्तुकर्ता अपने इष्टदेव के नाम का स्मरण कर ज्योतिषी से प्रश्न पूछे, ज्योतिषी को चाहिए कि प्रश्नकर्ता के मुख से जो शब्द निकले उसका प्रथम अक्षर ग्रहण करके शल्याशल्य का विचार करे। यथा–

यदि प्रश्नकर्ता के प्रश्न के प्रथम अक्षर में अ,क,च,ट,त,प,य,श इनमें से कोई अक्षर हो तो क्रम से पूर्व आदि दिशा में शल्य समझना तथा ह,प,य इनमें से कोई अक्षर हो तो वास्तु भूमि के मध्य भाग में शल्य समझना चाहिए। यदि प्रश्न के प्रथम अक्षर में इनसे भिन्न वर्ण हो तो शल्य नहीं है, ऐसा कहना। शल्य सहित भूमि में वास करने से कर्ता की मृत्यु होती है।।१२।।

शल्य ज्ञानार्थ चक्र–

ईशान	पूर्व	आग्नेय
श	अ	क
य (उत्तर)	ह प य	च (दक्षिण)
ष	त	ट
वायव्य	पश्चिम	नैर्ऋत्य

शल्य का रूप और फल–

पृच्छायां यदि अः प्राच्यां नरशल्यं तदा भवेत् ।
सार्धहस्तप्रमाणेन तच्च मानुष्यनाशकृत् ।।१३।।

आग्नेयां यदि कः प्रश्ने शशशल्यं करद्वये ।
राजदण्डं भवेत्तत्र भयं नैव निवर्तते ।।१४।।
याम्यां यदि चः प्रश्ने कुर्यादाकटिसंस्थितम् ।
नरशल्यं गृहेशस्य मरणं चिररोगिताम् ।।१५।।
नैर्ऋत्यां दिशि टः प्रश्ने सार्धहस्तादधस्तले ।
शुनोऽस्थि जायते तत्र बलानां जनयेन्मृतम् ।।१६।।
तः प्रश्ने पश्चिमायां तु शिशोः शल्यं प्रजायते ।
सार्धहस्तमिते तत्र स्वामिनं नेच्छति ध्रुवम् ।।१७।।
वायव्यां दिशि यः प्रश्ने तुषाङ्गाराश्चतुः करे ।
कुर्वन्ति मित्रनाशं च दुःस्वप्नदर्शनं तथा ।।१८।।
उदीच्यां दिशि यः प्रश्ने तदा शल्यं कटेरधः ।
तद्गृहे निर्धनायत्वं कुबेरसदृशो यदि ।।१९।।
ऐशान्यां दिशि शः प्रश्ने गोशल्यं सार्धहस्ततः ।
तद् गोधनानां नाशाय जायते गृहमेधिनाम् ।।२०।।
प्रश्ने च ह-प-या मध्ये वक्षोमात्रे भवेदधः ।
नृकपालमथो भस्म लौहं तत् कुलनाशकृत् ।।२१।।

भाषा-प्रश्न के प्रथम अक्षर 'अ' हो तो, वास्तु भूमि के पूर्व भाग में डेढ़ (१।।) हाथ नीचे मनुष्य की हड्डी समझना, उससे मनुष्य का नाश कहना। यदि प्रथम अक्षर 'क' हो तो अग्नि कोण में २ हाथ नीचे खरगोश की हड्डी समझे, उससे सदा राजदण्ड होता है और भय बना रहता है। यदि 'च' हो तो दक्षिण भाग में कमर बराबर नीचे मनुष्य का शल्य समझना, उससे गृहपति का मरण अथवा निरन्तर रोगी बना रहना होता है। यदि 'ट' हो तो नैर्ऋत्य भाग में कुत्ते की हड्डी (१।।) डेढ़ हाथ नीचे रहती है, उससे बच्चों का मरण होता है, यदि प्रथम अक्षर 'त' हो तो पश्चिम भाग में १।। हाथ नीचे बच्चों की हड्डी रहती है–उससे गृहकर्ता की हानि होती है, यदि 'प' हो तो वायव्य कोण में ४ हाथ नीचे धान्य की भूसी, कोयला आदि रहता है। यदि प्रथम अक्षर 'य' हो तो उत्तर भाग में कमर भर के नीचे शल्य रहता है, उससे गृहपति कुबेर तुल्य भी हो तो निर्धन हो जाता है। यदि 'श' हो तो ईशान कोण में १।। हाथ नीचे गोशल्य रहता है, वह गौ आदि पशुओं का नाशकारक होता है तथा प्रश्न के प्रथम अक्षर ह,प,य इनमें से कोई अक्षर हो तो वास्तु भूमि के मध्य भाग में छाती तुल्य नीचे मनुष्य का कपाल, भस्म या लोह रूप शल्य समझना। इससे वहाँ वास करने वाले के कुल का नाश होना कहना। इस प्रकार प्रश्न द्वारा शल्याशल्य विचार करके शल्य हो तो उसको निकलवा करके गृह निर्माण करे। प्रश्न के प्रथम

अक्षर में 'प' हो तो वायव्य कोण और मध्य भाग दोनों स्थान में तथा 'य' हो तो मध्य और उत्तर भाग में शल्य समझना चाहिये॥१३-२१॥

गृह में ग्रहों की दशा के अनुसार फल-

यन्नक्षत्रं गृहारम्भे यद्वशाद् भुक्तभोग्यतः ।
विंशोत्तरीमतेनात्र दशां ज्ञात्वा फलं वदेत् ॥२२॥

भाषा-गृहारम्भ समय में जो नक्षत्र हो उसके भुक्त और भोग्य के द्वारा विंशोत्तरी दशा के अनुसार महादशा, अन्तर्दशा आदि साधन करके फिर गृहारम्भ कालिक लग्न और आय भावों के स्वामी के शुभाशुभत्व वश फल समझना चाहिये॥२२॥

विवरण-जैसे मनुष्य के जन्म समय में नक्षत्र के भुक्त भोग्य द्वारा विंशोत्तरी महादशा बनाकर जीवनभर का फल लघुपाराशरी आदि में कहा गया है, उसी प्रकार गृह का भी शुभ या अशुभ फल का ज्ञान करना चाहिये। जब अशुभग्रह की दशा प्राप्त हो उस समय उस घर से बाहर हटकर दूसरे घर में वास ले जाना चाहिये, जिसमें तत्काल में शुभप्रद की दशा वर्तमान हो। इसीलिए लोग चारों दिशा में अनेक घर बनाकर रखते हैं॥२२॥

अन्यमत से गृहदशा-

गजशरं तु-युगाश्वकुवह्निदृङ्मितशरा मघवादिदिशां क्रमात् ।
गृहपतेरभिधापुरदिङ्मिता नवहृता भवनस्य दशा भवेत् ॥२३॥

भाषा-८, ५, ६, ४, ७, १, ३, २ ये पूर्व आदि दिशा के शर की संख्या है। इस प्रकार गृहपति के नाम के प्रथम अक्षर की वर्गसंख्या तथा ग्राम की प्रथम अक्षर की वर्ग संख्या और जिस दिशा में घर बनाना हो उस दिशा की शरसंख्या, तीनों को जोड़कर उसमें ९ के भाग देकर १ आदि शेष में क्रम से सूर्य आदि ग्रह की दशा समझे॥२३॥

रसा दशागा गज-भू-नृपाला नवेन्दवो सप्तभुवो नगाश्च ।
नखा दशाब्दाः कथिता दशेशा आ-चं-कु-रा-जी-श-बु-के-शु पूर्वा ॥२४॥

भाषा-६, १०, ७, १८, १६, १९, १७, ७, २० ये क्रम से पूर्व आदि दिशा और सूर्यादि ग्रह की दशा वर्ष संख्या है और आ०(रवि०) चं० (चन्द्र), कु० (कुज), रा० (राहु), जी० (जीव), श०(शनि), बु० (बुध), के० (केतु), शु० (शुक्र) ये क्रम से दशापति होते हैं॥२४॥

उदाहरण-जैसे काशी में देवदयाल को वास्तुभूमि के पूर्व भाग में पश्चिम मुख का मकान बनाना है, तो देवदयाल के तवर्ग की शरसंख्या ७, काशी के कवर्ग की शरसंख्या ५, और पूर्व दिशा की शरसंख्या ८ इन सबों को जोड़ने से २०,

इसमें ९ के भाग देने से २ शेष बचा इसलिए सूर्य आदि के क्रम से दूसरा चं० (चन्द्रमा) प्रथम दशापति हुआ। इससे ज्ञात हुआ कि गृहारम्भ समय से १० वर्ष तक चन्द्रमा की दशा, उसके बाद मङ्गल की ७ वर्ष फिर राहु की १८ वर्ष, फिर गुरु की १६ वर्ष एवं आगे भी समझे और गृहारम्भकालिक लग्न से दशापति के शुभाशुभत्व समझकर शुभ या अशुभ फल समझना चाहिए।।२४।।

इति परिशिष्टीयनूतनगृहनिर्माणे परमावश्यकविचारः समाप्तः।
इति श्रीदैवज्ञानन्तसुतदैवज्ञरामानुजाचार्यकृत-मुहूर्तचिन्तामणेर्दैवज्ञ-वाचस्पति-श्रीयागेश्वरपाठककृतसान्वयसुबोधिनीनाम-भाषाटीका समाप्ता।

❑

वरवध्वोर्ग्रहमेलापके

सपरिहार-मङ्गलीकादि-क्रूरग्रहयोगविचारः

-:१:-

सप्तमाष्टपती षष्ठे व्यये वा पापपीडितौ।
तदा वैधव्यमाप्नोति नारी नैवात्र संशयः।।

भावार्थ–जिस कन्या की कुण्डली में सप्तमभाव और अष्टमभाव का स्वामी पापग्रह से आक्रान्त होकर छठें किंवा बारहवें भाव में बैठे हों वह कन्या निःसन्देह विधवा होती है।

-:२:-

लग्ने व्यये चतुर्थे च सप्तमे वाऽष्टमे कुजः।
भर्तारं नाशयेद् भार्या भर्ता भार्यां विनाशयेत्।।

भावार्थ–कन्या के जन्म समय में, लग्न में, १२वें में, चतुर्थस्थान में, सप्तम स्थान में अथवा अष्टम स्थान में मंगल बैठा हो तो वह पति का नाश करती है और यदि वर की कुण्डली में उक्त स्थानों में से ही किसी स्थान में हो तो वह कन्या का नाश करता है।

-:३:-

भामिनीजन्मनक्षत्रात् द्वितीयं पतिजन्मभम्।
न शुभं भर्तृनाशाय कथितं ब्रह्मयामले।।

भावार्थ–कन्या के जन्म नक्षत्र से आगे का नक्षत्र यदि पति का जन्म नक्षत्र हुआ तो वह शुभ नहीं है, भर्ता का नाश करनेवाला, ऐसा ब्रह्मयामल में कहा है।

-:४:-

यदि लग्नगतश्चन्द्रस्तस्मात्सप्तमगः कुजः ।
विवाहानन्तरं भर्ता त्वष्टवर्षं न जीवति ।।

भावार्थ-यदि कन्या की जन्मकुण्डली में चन्द्रमा प्रथम भाव में और उससे सातवें भाव में मंगल हो तो उसके पति की आठ वर्षों के ही भीतर मृत्यु हो जाती है।

-:५:-

वागम्बुकन्दर्पमति व्ययस्थे कुजे तु पाणिग्रहणं न कुर्यात् ।
बुधार्ययुक्तेऽप्यथवा निरीक्षिते तद्दोषनाशं प्रवदन्ति सन्तः ।।

भावार्थ-जिसकी जन्मकुण्डली में पाँचवें, चौथे, सातवें, आठवें और बारहवें स्थानों में से किसी एक स्थान में भी यदि मंगल बैठा हो तो उसके साथ विवाह नहीं करना चाहिये। किन्तु यह मंगल बुध और गुरु से युक्त हो अथवा इनसे दृष्ट हो तो वह दुष्ट नहीं कहा जाता।

-:६:-

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।
कन्या भर्तृविनाशाय भर्ता कन्याविनाशः ।।

भावार्थ-कन्या की अथवा पति की जन्मकुण्डली में लग्न और लग्न से बारहवें में, चौथे में, सप्तम में और अष्टम में मंगल यदि बैठा हो तो परस्पर एक दूसरे का घातक होता है।

-:७:-

धनसुतसप्तममृत्युव्ययगो यदि भूमिसुतः पुंसाम् ।
जन्मनि दारविनाशं कुरुते स्त्रीणाञ्च वैधव्यम् ।।

भावार्थ-वर के जन्मसमय में द्वितीय, पञ्चम, सप्तम, अष्टम और बारहवें भाव में यदि मंगल बैठा हो तो वह उसकी स्त्री का नाश करता और इन्हीं स्थानों में से किसी स्थान में यदि कन्या की कुण्डली में बैठा हो तो वर का नाश करता है।

-:८:-

पापग्रहे सप्तमलग्नगेहे भर्ता दिवं गच्छति सप्तमाब्दे ।
निशाकरे चाष्टमवैरिभावे तदाष्टमाब्दे निधनं प्रयाति ।।

भावार्थ-जिस कन्या के जन्मकाल में उसके सप्तम भाव में तथा लग्न में पापग्रह हो तो उसके पति का देहान्त विवाह के सातवें वर्ष में हो जाता है। इसी तरह यदि चन्द्रमा भी छठें किंवा आठवें भाव में बैठा हो तो विवाह के आठवें वर्ष में देहान्त होता है।

-:९:-

सप्तमेशोऽष्टमे यस्याः सप्तमे निधनाधिपः ।
पापेक्षणयुतो बाला वैधव्यं लभते ध्रुवम् ।।

भावार्थ-कन्या के जन्म समय में सप्तमेश अष्टम में और अष्टमेश सप्तम में बैठा हो तो वह कन्या अपनी बाल्यावस्था में ही विधवा हो जाती है।

-:१०:-

निशाकरात्सप्तमभावसंस्था महीजमन्दागुदिवाकराश्चेत् ।
तनोरिमे जन्मनि नैधनं वा दिशन्ति वैधव्यमलं मदे वा ।।

भावार्थ-जिस कन्या की जन्मकुण्डली में चन्द्रमा से सप्तम भाव में मंगल, शनि, राहु और सूर्य बैठे हों वह कन्या विधवा होती है। इसी तरह ऊपर लिखे ही ग्रह जन्म लग्न में शत्रुराशि के अथवा अष्टम या सप्तम भाव में बैठे हों तो भी वह विधवा होती है।

-:११:-

एको लग्नगतः पापः पापोऽन्यः सप्तराशिगः ।
आसप्तमाद्वा मरणं पुरुषस्य न संशयः ।।

भावार्थ-कन्या की कुण्डली में एक पापग्रह लग्न में बैठा हो और दूसरा पापग्रह सप्तम भाव में हो तो सात वर्ष के भीतर ही उस कन्या के पति का निधन हो जाता है।

-:१२:-

पापे लग्नेऽशुभखगयुते पापखेटावरिस्थौ ।
स्यातां यस्यां जननसमये सा कुमारी विषाख्या ।।

भावार्थ-जिस कन्या की उत्पत्ति पापग्रह की राशि में हुई हो और उसमें पापग्रह बैठे हों तथा छठें स्थान में दो पापग्रह हों तो वह कन्या विषकन्या होती है और मंगलीक योग की तरह विषकन्या योगवाली कन्या भी पति के लिए अत्यन्त घातक है।

-:१३:-

धर्मगेहगते भौमे लग्नगे रविनन्दने ।
पञ्चमे दिवसाधीशे सा विषाख्या कुमारिका ।।

भावार्थ-कन्या की कुंण्डली में नवम स्थान में मंगल हो, लग्न मे शनि हो और पाँचवें स्थान में रवि हो तो वह कन्या विषकन्या कही जाती है।

-:१४:-

यदि लग्नगतः क्रूरस्तस्मात्सप्तमगः कुजः ।
विज्ञेयं मरणं पुंसः सप्तमाद्वान्तरे तदा ।।

भावार्थ-जिस कन्या की कुण्डली में क्रूर ग्रह लग्न में बैठा हो और लग्न से सप्तम स्थान में मंगल बैठा हो तो सात वर्ष के भीतर ही उसके पति का निधन होता है।

-:१५:-

यदि लग्नगतश्चन्द्रस्तस्मात्सप्तमगः कुजः ।
विवाहानन्तरं भर्ता त्वष्टवर्षं न जीवति ।।

भावार्थ-जिस कन्या की कुण्डली में चन्द्रमा लग्न में बैठा हो और उससे सप्तम में मंगल बैठा हो तो उस कन्या के विवाह हो जाने पर उसके पति का आठ वर्ष तक जीना असंभव है।

उक्त दोषों के परिहार वचन

-:१:-

कुजदोषवती देया कुजदोषवते किल ।
नास्ति दोषो न चानिष्टं दम्पत्योः सुखवर्धनम् ।।

भावार्थ-मंगलीक (मंगल दोषवाली) कन्या, मंगल दोषवाले वर को देने से मंगल का दोष नहीं लगता और कोई अनिष्ट भी नहीं होता। बल्कि वर-वधू का दाम्पत्य सुख बढ़ता है।

-:२:-

शनिर्भौमोऽथवा कश्चित्पापो वा तादृशे भवेत् ।
तेष्वेव भवनेष्वेव भौमदोषविनाशकृत् ।।

भावार्थ-लड़के अथवा लड़की की जन्मकुण्डली में अनिष्ट स्थान स्थित शनि, मंगल अथवा उसी के जोड़-तोड़ का अन्य कोई पापग्रह हो और उसका जबाब देने वाला लड़की अथवा लड़के की जन्मकुण्डली में उन्हीं स्थानों में स्थित शनि, मंगल अथवा तत्समान अन्य कोई पापग्रह हो तो मंगल का दोष नहीं लगता।

-:३:-

भौमेन सदृशो भौमः पापो वा तादृशो भवेत् ।
विवाहः शुभदः प्रोक्तश्चिरायुः पुत्रपौत्रदः ।।

भावार्थ-यदि कुमार अथवा कुमारी (वर-वधू) दोनों की ही कुण्डली में समान भावों में ही मंगल अथवा तत्सदृश अन्य कोई पाप ग्रह हो अर्थात् कन्या की कुण्डली में जिस भाव में मंगल बैठा हो और जिन भावों में अन्य पापग्रह बैठे हों, वर की कुण्डली में उन्हीं भावों में यदि उन्हीं के समान अनिष्ट कारक मङ्गल और अन्य पापग्रह हों तो वह विवाह कल्याण कारक है, पुत्र-पौत्र आदि को देनेवाला है और वर-वधू के आयुष्य को बढ़ानेवाला होता है।

-:४:-

वक्रिणि नीचारिस्थे वार्कस्थे वा न कुजदोषः ।

भावार्थ-वर-वधू की जन्मकुण्डली के किसी भी अनिष्ट स्थान में स्थित मङ्गल यदि वक्री हो वा नीच (कर्कराशि) का हो अथवा शत्रु (मिथुन वा कन्या) राशि का हो वा अस्तंगत हो तो उस प्रकार का मङ्गल अनिष्टकारक नहीं होता।

-:५:-

शुभयोगादिकर्तृत्वे नाऽशुभं कुरुते कुजः ।
कुजः कर्कटलग्नस्थो न कदाचन दोषकृत् ।।
नीचराशिगतः सोऽयं शत्रुक्षेत्रगतोऽपि वा ।
शुभाऽशुभफलं नैव दद्यादस्तंगतोऽपि च ।।

भावार्थ-शुभ ग्रहों के साथ सम्बन्ध करनेवाला मङ्गल अशुभकारक नहीं होता। कर्क लग्न में स्थित मंगल कभी भी अनिष्टकारक नहीं होता। अपने नीच राशि में स्थित हो अथवा शत्रु क्षेत्र (मिथुन वा कन्या राशि) का हो किंवा अस्तंगत हो तो शुभ वा अशुभ कोई फल नहीं देता।

-:६:-

तनुधनसुखमदनायुर्लाभव्ययगः कुजस्तु दाम्पत्यम् ।
विघटयति तद्गृहेशो न विघटयति तुङ्गमित्रगेहे वा ।।

भावार्थ-प्रथम, द्वितीय, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम,एकादश और द्वादश इनमें से किसी एक स्थान में भी मंगल बैठा हो तो वह वर-वधू का विघटन करता है, परन्तु यदि वह अपने घर का हो, उच्च का हो, किंवा मित्रक्षेत्री हो तो दोषकारक नहीं होता।

-:७:-

अजे लग्ने व्यये चापे पाताले वृश्चिके कुजे ।
द्यूने मीने घटे चाष्टौ भौमदोषो न विद्यते ।।

भावार्थ-मेष राशि का मंगल लग्न में, धन का मंगल व्यय स्थान में, वृश्चिक राशि का मंगल चतुर्थ स्थान में, मीन का मंगल सप्तम स्थान में, कुम्भ राशि का मंगल अष्टम स्थान में हो तो मंगल का दोष नहीं लगता।

-:८:-

कुजो जीवसमायुक्तो युक्तो वा शशिना यदा ।
चन्द्रः केन्द्रगतो वाऽपि तस्य दोषो न मङ्गली ।।

भावार्थ-जिस कुमार अथवा कुमारी की कुण्डली में चौथे, सप्तम, अष्टम.

द्वादश आदि अरिष्ट कारक स्थानों में-से किसी एक स्थान में मंगल बृहस्पति के अथवा चन्द्रमा के साथ बैठा हो किंवा चन्द्रमा केन्द्र में हो तो वह मंगल 'मंगली' दोष वाला नहीं कहा जाता।

-:९:-

चतुःसप्तमगे भौमे मेषकर्कालिनक्रगे ।
कुजदोषो न तत्र स्यात्स्वोच्चादिराशियोगतः ।।

भावार्थ-मेष, कर्क, वृश्चिक और मकर राशि का होकर मंगल चौथे या सातवें स्थान में हो तो स्वक्षत्री और स्वोच्चराशि के योग से वह मंगलीक जन्य दोष वाला नहीं होता।

-:१०:-

केन्द्रे कोणे शुभाढ्यश्चेत् त्रिषडायेऽप्यसद्ग्रहाः ।
तदा भौमस्य दोषो न मदने मदपस्तथा ।।

भावार्थ-केन्द्र और त्रिकोण में यदि शुभ ग्रह हो तथा ३-६-११ स्थानों में पापग्रह हों और सप्तम भाव का स्वामी सप्तम भाव में ही हो तो मंगलीक जन्य दोष से दूषित वह नहीं होता।

-:११:-

द्वितीये भौमदोषस्तु युग्मकन्यकयोर्विना ।
द्वादशे भौमदोषस्तु वृषतौलिकयोर्विना ।।
चतुर्थे भौमदोषस्तु मेषवृश्चिकयोर्विना ।
सप्तमे भौमदोषस्तु नक्रकर्कटयोर्विना ।।
अष्टमे भौमदोषस्तु धनुर्मीनद्वयोर्विना ।
कुम्भे सिंहे न दोषः स्याद्विशेषेण कुजस्य च ।।

भावार्थ-द्वितीय स्थान यदि मिथुन और कन्या राशि का हो, बारहवाँ स्थान यदि वृष और कर्क का हो, चतुर्थ स्थान यदि मेष और वृश्चिक का हो, सप्तम स्थान यदि मकर और कर्क का हो, अष्टम स्थान यदि धनु और मीन का हो तो उन-उन स्थानों में बैठे हुए मंगल का दोष नहीं लगता और कुम्भ तथा सिंह राशि यदि अनिष्ट स्थान की होवे तो उस स्थान में भी बैठे हुए मंगल का दोष नहीं लगता।

-:१२:-

जामित्रे निधने च पापरहिते युक्ते शुभैर्वीक्षिते
सौशील्यादिपतिव्रता बहुगुणैः सीमन्तिनीनां कुले ।
युक्ता ख्यातिभवा स्वभर्तृवशगा भूत्वा चिरं जीवति
यद्वा भाग्यगृहे शुभौ भवति चेत्सत्पुत्रपौत्रान्विता ।।

भावार्थ-जिस कन्या का सप्तम और अष्टम स्थान पापग्रह रहित हो और उन दोनों स्थानों में शुभग्रह बैठे हों अथवा उन स्थानों को देखते हों तो वह कन्या अच्छे स्वभाव वाली, पतिव्रता आदि अनेक गुणोंवाली, श्रेष्ठ स्त्रियों में अत्यन्त प्रसिद्ध तथा पति के वश में रहकर दीर्घायुष्य वाली होती है और भाग्य (नवम) स्थान में यदि शुभ ग्रह हो तो अच्छे पुत्र और पौत्र से सुखी रहा करती है।

-:१३:-

दम्पत्योर्जन्मकाले व्ययधनहिबुके सप्तमे रन्ध्रलग्ने
लग्नाच्चन्द्राच्च शुक्रादपि खलु निवसन् भूमिपुत्रस्तयोश्च।
दाम्पत्यं दीर्घकालं सुतधनबहुलं पुत्रलाभश्च सौख्यं
दद्यादेकत्र हीनो मृतिमखिलभयं पुत्रनाशं करोति ।।

भावार्थ-यदि वर और वधू दोनों की कुण्डली में लग्न से, चन्द्रमा से और शुक्र से प्रथम, द्वितीय, चतुर्थ, सप्तम और अष्टम एवं द्वादश इन छः स्थानों में से किसी भी एक स्थान में यदि मंगल एक ही प्रकार से बैठा हो अर्थात् वरकी कुण्डली में जिस स्थान में बैठा हो उसी स्थान में कन्या की कुण्डली में भी बैठा हो और वधू की कुण्डली में जिस स्थान में बैठा हो, वर की कुण्डली में भी उसी स्थान में बैठा हो तो उन दोनों का दाम्पत्य सुख चिरस्थायी रहता है, धन-धान्य-पुत्र-पौत्रादि की अभिवृद्धि होती है और दोनों सदा सुखी रहते हैं। किन्तु यदि वर-वधुओं में-से किसी एक ही की कुण्डली में उक्त प्रकार से मंगल बैठा हो और उसके जोड़ की दूसरी कुण्डली में उससे भिन्न-भिन्न स्थानों में बैठा हो तो ऊपर लिखे फल से सर्वथा विपरीत समझना चाहिये।

-:१४:-

जन्मोत्थश्च विलोक्य बालविधवायोगं विधाय व्रतं
सावित्र्या उत पैप्पलं हि सतया दद्यादिमां वा रहः ।
सल्लग्नेऽच्युतमूर्तिपिप्पलघटैः कृत्वा विवाहं स्फुटं
दद्यात्तां चिरजीविनेऽत्र न भवेद् दोषः पुनर्भूभवः ।।२४।।

भावार्थ-जिस-किसी कन्या की जन्मकालीन ग्रह संख्या के अथवा प्रश्न लग्न से उसका बालविधवा होना निश्चित हो जाय, उस कन्या को सावित्री का अथवा पिप्पल का व्रत कराकर एकान्त में विष्णु की मूर्ति, पिप्पल या घट इनमें से किसी एक का सुमुहूर्त में विवाह कराकर अनन्तर उस कन्या को किसी चिरंजीवि वर को वैवाहिक विधिपूर्वक दे देवें,ऐसा करने से वैधव्ययोग नष्ट हो जाता है।

इति जौनपुरमण्डलान्तर्गत-सरायत्रिलोकीग्रामनिवासि पं० उमाशङ्करशुक्ल-द्वारा-टिप्पण्यादिभिः सम्बर्धितो मुहूर्तचिन्तामणिः समाप्तः ।

□

अकाराद्यनुक्रमेण मुहूर्तचिन्तामणिस्थ-श्लोकानां सूची

हमारे महत्त्वपूर्ण धार्मिक प्रकाशन

पुस्तक	मूल्य
श्रीसूक्त-पुरुषसूक्त भा०टी०	१५)
सूक्त-संग्रह मूल	१०)
शिवपुराण भाषा ग्लेज	२००)
शिवपुराण भाषा गुटका	१००)
चाणक्यनीति दर्पण भा०टी०	२०)
रामायण मध्यम भा०टी०	२००)
रामायण मध्यम मूल दोहा चौपाई	७५)
सुन्दरकाण्ड बड़े लाल अक्षरों में	१२)
वाल्मीकीय रामायण भाषा	२००)
वाल्मीकीय रामायण सुन्दर-काण्ड मूल गुटका	४०)
अध्यात्म रामायण भा०टी०	२००)
आनन्द रामायण भाषा	२००)
राधेश्याम रामायण	८०)
भृगुसंहिता भाषा	१५०)
प्रेमसागर	६०)
श्रीमद्भागवत भा०टी० साँची	५००)
श्रीमद्भगवद्गीता भाषा	२५)
श्रीमद्देवी भागवत भा.टी.साँची	६००)
सुखसागर भाषा मध्यम	२००)
सुखसागर भाषा गुटका	१००)
दुर्गार्चन-पद्धति भाषा टीका	१००)
दुर्गासप्तशती भाषा टीका सजिल्द (मोटे अक्षरों में)	६०)
दुर्गा सप्तशती भाषा टीका	२५)
दुर्गा सप्तशती भाषा ग्लेज	२०)
दुर्गा सप्तशती ३२ पेजी मूल	२५)
दुर्गा सप्तशती ६४ पेजी मूल	२०)
दुर्गाकवच भाषा टीका	१०)
दुर्गाकवच ३२ पेजी मूल	३)
दुर्गा रामायण	१०)
गणेश सहस्रनाम भाषा टीका	२५)
मन्त्र-सागर भाषा टीका	८०)
वाञ्छाकल्पलता भाषा टीका	३०)
बगलोपासनपद्धति-बगलामुखी-रहस्य भाषा टीका	४०)
दत्तात्रेय तन्त्र-भाषा टीका	२०)
उड्डीश तन्त्र भाषा टीका	२०)
रसराजमहोदधि पाँचों भाग	२००)
बृहत्पाराशरहोराशास्त्र भा०टी०	२००)
मानसागरी भाषा टीका	१००)
जातकाभरण भाषा टीका	८०)
बृहज्ज्योतिषसार भाषा टीका	७५)
ताजिक नीलकण्ठी भाषा टीका	७५)
कर्मविपाक संहिता भाषा टीका	७५)
चमत्कार चिन्तामणि भाषा टीका	१०)
होड़ाचक्र भाषा टीका	५)
भावकुतूहल भाषा टीका	७५)
विश्वकर्मा प्रकाश भाषा टीका	७५)
मुहूर्तचिन्तामणि भाषा टीका	६०)
लघुसंग्रह भाषा टीका	५०)
लग्नचन्द्रिका भाषा टीका	४०)
घाघ-भड्डरी की कहावतें भा०टी०	२०)
जन्मपत्रप्रबोध भाषा टीका	५)
स्त्री जातक भाषा टीका	३०)
शीघ्रबोध भाषा टीका	२०)
हनुमान ज्योतिष	१०)
शिव स्वरोदय भाषा टीका	२०)
ग्रहशान्ति पद्धति भाषा टीका	८०)
यज्ञ मन्त्र संग्रह	२००)
विधान प्रकाश भाषा टीका	८०)
गरुड पुराण भाषा टीका	४०)
प्रभुविद्या प्रतिष्ठार्णव	२००)
कुण्ड निर्माण स्वाहाकार पद्धति	६०)

विष्णुयाग पद्धति भाषा टीका १५०)	ऋषिपञ्चमी व्रत कथा भाषा टीका ५)
विवाह पद्धति भाषा टीका २५)	महालक्ष्मी वसना पूजन भा० टी० ६)
पंचरत्न विवाह-पद्धति भाषा टीका २५)	महालक्ष्मी व्रत कथा भाषा टीका ५)
प्रेत-मञ्जरी भाषा टीका ३०)	हरितालिका (तीज) व्रत कथा भा०टी० ५)
उपनयन पद्धति भाषा टीका २५)	जीवित्पुत्रिका व्रत कथा भाषा टीका ३)
वाशिष्ठी हवन पद्धति भाषा टीका २५)	संकटा व्रत कथा भाषा ५)
नित्यकर्म पद्धति भाषा टीका १०)	एकादशी माहात्म्य भाषा १५)
गणपति प्रतिष्ठा पद्धति भा० टी० २५)	कार्तिक माहात्म्य भाषा टीका ५०)
कुम्भविवाह-प्रयोग भाषा टीका ८)	हनुमद्रहस्य भाषा टीका ६०)
पार्वण श्राद्ध पद्धति भाषा टीका ८)	गायत्री-रहस्य भाषा टीका ६०)
धनिष्ठादि पञ्चक शान्ति भा०टी० २०)	ऋणमोचन मङ्गलस्तोत्र भा० टी० १०)
मूल शान्ति भाषा टीका ५)	संकटा-स्तुति भाषा टीका १०)
विश्वकर्मा कथा-पूजा पद्धति भा० टी० ८)	बटुक भैरव स्तोत्र भाषा टीका ६)
लक्ष्मी उपासना भाषा टीका २५)	महामृत्युञ्जय जप-विधान भा०टी० ८)
गृहवास्तुशान्ति पद्धति भा० टी० ३०)	शिव-महिम्न स्तोत्र भाषा टीका ६)
सुगम वास्तु शान्ति प्रयोग भा०टी० १५)	बृहत्-स्तोत्र रत्नाकर बड़ा ७५)
सत्यनारायण व्रत कथा ७ अध्याय भाषा टीका १०)	रघुवंश महाकाव्य प्रथम सर्ग १५)
सत्यनारायण व्रत कथा ५ अध्याय भाषा टीका ८)	हितोपदेश मित्रलाभ भाषा टीका २०)
अन्नपूर्णा व्रत कथा भाषा टीका १५)	किरातार्जुनीयम् १-२सर्ग भाषा टीका १५)
शिवरात्रि व्रत कथा भाषा ८)	अमर कोष प्रथम काण्ड १०)
संकष्टीगणेशचतुर्थी व्रत कथा भाषा टीका ६०)	मूल रामायण संस्कृत हिन्दी टीका १०)
संकष्टीगणेशचतुर्थी व्रत कथा भाषा २५)	सोरठी बृजाभार ९६ भाग ७५)
वटसावित्री व्रत कथा भाषा टीका ६)	हनुमान चालीसा भाषा टीका ८)
प्रदोष व्रत कथा भाषा ५)	दुर्गा-चालीसा भाषा टीका ८)
अनन्त व्रत कथा भाषा टीका ५)	शिव-चालीसा भाषा टीका ८)
	हनुमान नवरत्न ५)
	अकबर बीरबल ५)

पुस्तक प्राप्ति-स्थान :

श्री ठाकुर प्रसाद पुस्तक भण्डार

कचौड़ीगली, वाराणसी-२२१००१

मुद्रक-यश प्रिंटोग्राफिक्स, नोएडा